लंबैर्वृषणैर्मेषोदरश्च संक्षिप्तवंक्षणाक्रोडः ॥ ज्ञेयो भाराध्वसहो जवे ऽश्वतुल्यश्च शस्तफलः ॥१६॥ सितवर्णः पिंगाक्षस्ताम्रविषाणेक्षणो महावक्त्रः ॥ हंसो नाम शुभफलो यूथस्य विवर्धनः प्रोक्तः ॥१७॥ भूस्पृग्वालधिराताम्रवंक्षणो रक्तदृक्ककुद्मी च ॥ कल्माषश्च स्वामिनमचिरात्कुरुते पतिं लक्ष्म्याः ॥१८॥ यो वा सितैकचरणो यथेष्टवर्णश्च सोऽपि शस्तफलः ॥ मिश्रफलोऽपि ग्राह्यो यदि नैकान्तप्रशस्तोऽस्ति ॥१९॥

॥ इति गोलक्षणम् ॥ ॥ अथ श्वलक्षणम् ॥ पादाः पंचनखास्त्रयोऽग्रचरणः षड्भिर्नखैर्दक्षिणस्ताम्रौष्ठाग्रनसो मृगेश्वरगतिर्जिघ्रन्भुवं याति च ॥ लांगूलं ससटं दृगृक्षसदृशी कर्णौ चलंबौ मृदू यस्य स्यात्स करोति पोष्टुरचिरात्पुष्टां श्रियं श्वा गृहे ॥१॥ पादे पादे पंच पंचाग्रपादे वामे यस्याः षण्नखा मल्लिकाक्ष्याः ॥ वक्रं पुच्छं पिंगलालंबकर्णा या सा राष्ट्रं कुक्कुरी पाति पोष्टुः ॥२॥ ॥ इति श्वलक्षणम् ॥ ॥ ॥

---

रंगका सुंदर पुच्छके शका अश्वके समान वेगका (शीघ्रगति) लंबा अंडयुक्त बकरेके समान पेटका वंक्षण (आटुके पीछेकी जंघा) और क्रोड (अग्रजंघांतर) यह संक्षिप्त (छोटा) है जिसका ऐसा बैल भार लेनेमें मार्ग चलनेमें अश्वके समान वेगका शुभफलदायक जानना ॥१५॥१६॥ श्वेतवर्ण पिंगट नेत्र लाल शींग और नेत्र बडा मुख यह लक्षणका बैल हंसनामक समुदाय बढावनेवाला शुभफलदायक कथन किया ॥१७॥ भूमीको स्पर्श करनेवाले हे पुच्छके केश जिनके ऐसे अल्पताम्रवर्णी है शींग जिनके ऐसे लाल नेत्रके वृषस्कंधसे युक्त कल्माष (बहुरंग युक्त) ऐसा वृषभ धनीको जलदी लक्ष्मीका पति (धनवान्) करता है ॥१८॥ अथवा सफेद एक पांव जिसका ऐसा और कोई भी वर्णका बैल शुभ होता है (यो वा सितैश्च चरणैः ऐसा पाठ कोई कहते हैं उनके मतमे श्वेत चार पांव) जो सर्व लक्षणयुक्त मिलता नहीं तो शुभाशुभ मिश्रफल ही लेना (शुभ और अशुभ इस फलका अंतर करके एक भी अशुभफल शेष रहे गा नहीं तो वह लेना ऐसा कोई कहते हैं) ॥१९॥ ॥ इति बृहत्संहितायां गोलक्षणं नामैकषष्टितमोऽध्यायः ॥६१॥ ॥ अथ श्वलक्षणं ॥ ॥ तीन पांव पांच पांच नखसे युक्त और चौथा आगेका दहिना पांव ६ नखसे युक्त ओष्ठ और नाकका अग्र यह लाल ऐसा सिंहके समान गति चलते समय भूमी सूंघे केशयुक्त पुच्छ वानरके समान दृष्टि लंबे और मृदु कर्ण यह लक्षण जिस श्वान मे (कुत्ता) होय तो वह अपने धनीके गृहमे लक्ष्मी शीघ्र पुष्ट करता है (द्रव्यवान करता है) ॥१॥ जिसके पांवमे पांच पांच नख और बांए आगेके पांवमे ६ नख ऐसी मल्लिकाक्षी (नेत्रके चारों त

अथकुक्कुटलक्षणम् ॥ कुक्कुटस्त्वृजुतनूरुहांगुलिस्ताम्रवक्त्रनखचू लिकः सितः ॥ रौतिसुस्वरमुषात्ययेचयोवृद्धिदःसनृपराष्ट्रवाजिनां ॥१॥ यवग्रीवोयोवाबदरसदृशोवापिविहगोबृहन्मूर्धावर्णैर्भवतिब हुभिर्यश्चरुचिरः ॥ सशस्तःसंग्रामेमधुमधुपवर्णश्चजयकृन्नशस्तो योतोन्यःकृशतनुरवःखंजचरणः ॥२॥ कुक्कुटीचमृदुचारुभाषिणी स्निग्धमूर्तिरुचिराननेक्षणा ॥ सादृदातिसुचिरंमहीक्षितांश्रीयशोवि जयवीर्यसंपदः ॥३॥ ॥ इतिकुक्कुटलक्षणं ॥ ॥ अथकूर्मलक्षणं ॥ स्फटिकरजतवर्णोनीलराजीविचित्रःकलशसदृशमूर्तिश्चारुवं शश्चकूर्मः ॥ अरुणसमवपुर्वासर्षपाकारचित्रःसकलनृपमहत्वं मंदिरस्थःकरोति ॥१॥ अंजनभृंगश्यामतनुर्वाबिंदुविचित्रोऽव्यं गशरीरः ॥ सर्पशिरावास्थूलगलोयःसोपिनृपाणांराष्ट्रविवृद्ध्यै ॥२ ॥ वैडूर्यत्विट्स्थूलकंठस्त्रिकोणोगूढच्छिद्रश्चारुवंशश्चशस्तः ॥ क्रीडावाप्यांतोयपूर्णेमणौवाकार्यःकूर्मोमंगलार्थंनरेंद्रैः ॥३॥ इतिकूर्मलक्षणं ॥

---

रफ श्वेतरेषा) टेढापुच्छ पिंगटवर्ण लंबेकानकी ऐसी जोकुकुरी वहअपनेको पोषण करनेवालेका राष्ट्र पालन करतीहै ॥२॥ ॥ इतिबृहत्संहितायां श्वलक्षणंनामद्विषष्टि तमोध्यायः ॥६२॥ अथकुक्कुटलक्षणं ॥ पंख और अंगुली सरल(सीधी) जिसकी ऐसा मुख नख चूलिक(मस्तकपरकीशिखा) यह लाल श्वेतवर्ण प्रातःकालमेसुस्वर श ब्दकरताहै ऐसाजोकुकुट (मुरगा) वह राजा राष्ट्र और अश्व इनकीवृद्धि करताहै ॥१॥ यवग्रीव(जिस्कीगरदनबीचमेमोटी ऐसा) बंदरसदृश (लोहितवर्ण) विस्तीर्ण मस्तक बहुतवर्णसेयुक्त निर्मल ऐसाकुकुट(मुरगा) युद्धमेशुभहोताहै अथवा म धुवर्णकावाभ्रमरकेसमान(काला) वहभीजयकारकहोताहै इससे अन्य कृश अल्प शब्द छोटेपांवका कुकुट शुभनही ॥२॥ मृदुऔरसुंदरशब्दकरनेवाली निर्मलशरी र मुख और नेत्रसुंदरहै जिस्के ऐसीकुकुटी(मुरगी) राजाको लक्ष्मी कीर्ति विजय बल और संपत्ति इस्को देतीहै इसवास्ते राजाने ऐसीकुकुटी रखना ॥३॥ इति बृह त्संहितायांकुकुटलक्षणंनामत्रिषष्टितमोध्यायः ॥६३॥ अथकूर्मलक्षणं ॥ स्फटिक मणि औरचांदी इनकेवर्णका नीलवर्णरेषासे चित्रित कलशके समान शरीरका चा रुवंश(बहुतऊंचीनहीऐसे पीठका) ऐसा अथवा लालशरीरका सर्षोंके समान श्वे तबिंदुसेयुक्त ऐसाकच्छ(कछुआ) गृहमेहोयतो सर्वराजाकामहत्व करताहै (अथवा) धिराजकरताहै ॥१॥ काजल और भ्रमर इनके समान काले शरीरका बिंदूसे विचित्रि त पूर्णअवयव सर्पकेसमानमुखका बडेकंठका ऐसाजो कच्छ वह भी राजाकीराष्ट्र वृद्धिकारकहोताहै ॥२॥

अथछागलक्षणम्॥ छागशुभाशुभलक्षणमभिधास्येनवदशाष्टदंता
स्ते॥धन्याः स्थाप्यावेश्मनिसंत्याज्याःसप्तदंताये॥१॥ दक्षिणपार्श्वेमं
डलमसितंशुक्लस्यशुभफलंभवति॥ ऋष्यनिभकृष्णलोहितवर्णानां
श्वेतमपिशुभदं॥२॥ स्तनवद्वलंबतेयः कंठेजानांमणिःसविज्ञेयः॥
एकमणिःशुभफलकृद्धन्यतमाद्वित्रिमणयोये॥३॥ मुंडाःसर्वेशुभदाः
सर्वसिताःसर्वकृष्णदेहाश्च॥ अर्धासिताःसितार्धा धन्याःकपिलार्ध
कृष्णाश्च॥४॥ विचरतियूथस्याग्रेप्रथमंचांभोवगाहतेयोऽजः॥सशु
भःसितमूर्धावामूर्धनिवाटिक्किकायस्य॥५॥ सपृषतकंठशिरावाति
लपिष्टनिभश्चताम्रदृक्शस्तः॥ कृष्णचरणःसितोवाकृष्णोवाश्वेतच
रणोयः॥६॥ यःकृष्णांडःश्वेतोमध्येकृष्णेनभवतिपट्टेन॥ योवाचर
तिसशब्दंमंदंचसशोभनश्छागः॥७॥ ऋष्यशिरोरुहपादोयोवाप्रा
क्पांडुरोपरेनीलः॥सभवतिशुभकृच्छागःश्लोकश्चाप्यत्रगर्गोक्तः॥८

---

वैडूर्यमणीकेसमान कांतीका(काला) स्थूलकंठ त्रिकोणआकृति गुप्तछिद्र सुंदरपृष्ट
भाग ऐसाभी कच्छपशुभहोताहै ऐसाकच्छपराजानेशुभार्थक्रीडा वापी(पुष्करिणी) अ
थवाजलपूर्णमृत्तिकाकेपात्रमेरखना॥३॥ इतिबृहत्संहितायांकूर्मलक्षणंनामचतुः
षष्टितमोध्यायः॥६४॥ अथछागलक्षणं॥ बकरेका शुभाशुभलक्षणकहतेहैं १०।७।८
दांतकाबकराशुभहोताहै वहघरमेरखना सातदांतकारखनानहीं॥१॥ श्वेतवर्ण
बकरेके दक्षिणबाजूमेमध्यभागमेकाला मंडल(वर्तुलाकृति) शुभहोताहै ऋष्यक
हियेमृगवि० उस्केसमाननीलरंगके कालाओर लोहितवर्ण ऐसेबकरेकेभी दहिने
बाजूमेश्वेतमंडल शुभसूचकहोताहै॥२॥ बकरेकेकंठकेविषेस्तनकेसमानजोलट
कताहै सोमणिजानना वहएकमणिशुभसूचक और दोतीन मणि कंठकेविषे जि
नकेहोय वहअतिशुभदायकहोतेहैं॥३॥ मुंडा(सींगसेरहित) बकरेकोईभीरंगके
होंय वहसर्वेशुभहोतेहैं सर्वश्वेत सर्वकृष्ण अर्धकाला अर्धश्वेत अर्धकपिल(पिंग
ट) और अर्धकृष्ण ऐसेबकरेभीशुभहोतेहैं॥४॥ जोबकरासमुदायके आगेचलताहै
और प्रथम(सर्वकेआदि) जलपीताहै सोऔर जिस्केमस्तकपरश्वेत सो और जिस्के
मस्तकपर टिक्किका(टीका) होयसो यहसर्वशुभहोतेहैं ऐसाबकराकुट्टकसंज्ञकहो
ताहै॥५॥ बिंदुयुक्तकंठवामस्तक जिस्काऐसा तिलपिष्टतुल्य(श्वेतकृष्णमिश्रित) वर्ण
लालनेत्रकाजोबकरा सोशुभ श्वेतरहतेकृष्णपाँवकाशुभअथवाकालारहते श्वेतपाँ
वकाजोबकरा सोशुभहोताहै यहकुटिलसंज्ञक॥६॥ जोबकराकालेअंडका श्वेतवर्ण
मध्यभागमेकालापट्टा और जो धीरेधीरेशब्द करतेचरताहै वहभीशुभहोताहै वहजं
टिलसंज्ञक॥७॥

कुक्कुटः कुटिलश्चैव जटिलो वामनस्तथा॥ ते चत्वारः श्रियः पुत्रा नालक्ष्मीके वसंति ते॥९॥ अथाप्रशस्ताः खरतुल्यनादाः प्रदीप्तपुच्छाः कुनखा विवर्णाः॥ निकृत्तकर्णा द्विपमस्तकाश्च भवंति ये चासितताल्वुजिह्वाः॥१०॥ वर्णैः प्रशस्तैर्मणिभिश्च युक्ता मुंडाश्च ये ताम्रविलोचनाश्च॥ ते पूजिता वेश्मसु मानवानां सौख्यानि कुर्वंति यशः श्रियश्च॥११॥ इति छागलक्षणम्॥ ॥अथ अश्वलक्षणं॥ दीर्घग्रीवाक्षिकूटस्त्रिकहृदयपृथुस्ताम्रताल्वोष्ठजिह्वः सूक्ष्मत्वक्केशवालः सुशफगतिमुखो ह्रस्वकर्णोष्ठपुच्छः॥ जंघाजानूरुवृत्तः समसितदशनश्चारुसंस्थानरूपो वाजी सर्वांगशुद्धो भवति नरपतेः शत्रुनाशाय नित्यं॥१॥ अश्रुपातहनुगंडहृद्गलप्रोथशंखकटिवस्तिजानुनि॥ मुष्कनाभिककुदे तथा गुदे सव्यकुक्षिचरणेषु चाशुभाः॥२॥ ये प्रपाणगलकर्णसंस्थिताः पृष्ठमध्यनयनोपरि स्थिताः॥ ओष्ठसक्थिभुजकुक्षिपार्श्वगास्ते ललाटसहिताः सुशोभनाः॥३॥

---

नीलवर्ण मस्तकपरके केश और पांव जिसके ऐसा बकरा शुभ· अथवा पूर्वभाग मे (मस्तकका अर्ध) श्वेत और पीछे नीलवर्ण वह भी शुभ होता है वह वामनसंज्ञक छाग· इसके विषेगर्गऋषीने श्लोक भी कहा है सो आगे कहते हैं·॥८॥ कुक्कुक· कुटिल· जटिल· वामन· यह चारनामके बकरे लक्ष्मी के पुत्र होते हैं वह दरिद्री मनुष्य के इहां रहते नही·॥९॥ गर्दभके समान शब्दके· टेढा और अति उष्ण पुच्छ जिनके ऐसे कुच्छित नखके विवर्ण (अशुभवर्ण·) छिन्नकर्ण (तूटे समान कर्ण) हाथी के समान मस्तक के तालु और जिव्हा यह काली· जिनकी· ऐसे बकरे अशुभ होते हैं·॥१०॥ पूर्वोक्त प्रशस्त (शुभ·) वर्ण १।२।६ मणि (गलस्तन) इससे युक्त· मुंड (शृंगरहित) और लाल नेत्र के ऐसे जो बकरे वह मनुष्य के घर मे सौख्य· यश· लक्ष्मी· इसको करते हैं·॥११॥ इतिश्री बृहत्संहितायां छागलक्षणं नाम पंचषष्टितमोध्याय·॥६५॥ अथ अश्वलक्षणं॥ कंठ और अक्षिकूट (दृष्टीका आश्रय नेत्रगोल) यह लंबा· कटिभाग और हृदय यह बडा विस्तीर्ण· ओष्ठ और जिव्हा यह लाल· चर्म· केश और पुच्छ केश यह सूक्ष्म (पतील· मृदु· महीन·) शफ (खुर) गमन· मुख· यह सुंदर· कान ओष्ठ· पुच्छ यह छोटे· पेंडुरी· जानु· ढेउना· यह वर्तुल· समसंख्य और सफेद दांत· आकार और शरीर शोभायमान· ऐसा सर्वांगसे शुद्ध घोडा· राजाके शत्रुनाशार्थ नित्य होता है·॥१॥ अश्रु· (नेत्रोदक) पतनस्थान· हनु (डाढी) गाल· हृदय· कंठ और (मुखभाग) कान केपासके शंख· कटी· नाभीके नीचेका और लिंगके ऊपरका भाग· ढेउना· अंडकोस· नाभी· ककुद (पीठ और गरदन इसका मध्य भाग) गुद· वामकुक्षी (कोख) पांव यह अवयवके विषे भौंरा घोडे के होय तो वह घोडा अशुभकारक होता है·॥२॥ प्रपाण (उरोस्थल)

तेषां प्रपाणएकोललाटकेशेषु च ध्रुवावर्तः॥ रंध्रोपरंध्रमूर्धनिवक्षसि चेतिस्मृतौ द्वौ द्वौ॥४॥ षड्भिर्दंतैः सिताभैर्भवतिहयशिशुस्तैः कषायैर्द्विवर्षः संदंशैर्मध्यमांत्यैः पतितसमुदितैस्त्र्यब्दपंचाब्दिकोश्वः॥ संदंशानुक्रमेणत्रिकपरिगणिताः कालिकापीतशुक्लाः काचामाक्षीकशंखावटचलनमतोदंतपातंच विद्धि॥५॥ ॥इतिअश्वलक्षणम्॥

अथगजलक्षणम्॥ मध्वाभदंताः सुविभक्तदेहानचोपदिग्धाश्च कृशाः क्षमाश्च॥ गात्रैः समैश्चापसमानवंशा वराहतुल्यैर्जघनैश्च भद्राः॥१॥ वक्षोथकक्षावलयः श्लथाश्चलंबोदरस्त्वग्बृहतीगलश्च॥ स्थूलाचकुक्षिः सहपेचकेनसैंहीचदृक्मंदमतंगजस्य॥२॥

---

गरदन· कान· पीठका मध्य भाग· नेत्रकेऊपरका भाग (भौ) ओष्ठ· जंघा· भुज· वामकुक्षि· पार्श्व भाग· ललाट· इनके विषे जो भौरा वह बहुत अशुभ होते हैं ॥३॥ वह भौरे मे १० ध्रुवावर्त उनके स्थान १ प्रपाणी मे· १ ललाटकेशमे· २ रंध्रामे (कुक्षि और नाभी इनके मध्य भाग मे· २ उपरंध्रमे (कुक्षि और नाभि इनके ऊपर के भाग मे·) २ मस्तक मे· २ उरस्थल मे· इस रीति से १० ध्रुवावर्त कथन किया है ॥४॥ घोडे के नीचे के दांत मे दो दाढ के मध्य मे ६ दंत स्पष्ट हैं· वह ६ दांत श्वेत होयतो वह घोडा एक वर्ष का· काला लाल होयतो ॰ २ वर्ष का· (दो दंत पंक्ती के मध्य मे सममध्य भाग मे जो दो दांत वह संदंश· संदंश के दो बाजू के २ मध्यम· मध्यम के दो बाजू के २ अंत्य) संदंश गिर के दूसरे आए होय तो ३ वर्ष का· मध्यम गि॰ ४ वर्ष का· अंत्य गि॰ ५ वर्ष का· संदंश काला होय तो ६ वर्ष का· मध्यम का॰ ७ व· अंत्य का॰ ८ व॰ सं॰ पीत हो॰ ९ व॰ म॰ पी॰ १० व॰ अं॰ ११ व॰ सं॰ श्वे॰ १२ व॰ म॰ श्वे॰ १३ व॰ अं॰ श्वे॰ १४ व॰ सं॰ काचवर्ण ॰ १५ व॰ म॰ का॰ १६ व॰ अं॰ का॰ १७ व॰ संदंश मधुवर्ण· हो॰ १८ व॰ म॰ म॰ १९ व॰ अं॰ म॰ २० संदंश शंख के समान आकार के हो॰ २१ व॰ म॰ शं॰ २२ व॰ अं॰ शं॰ २३ व॰ संदंश सच्छिद्र॰ २४ व॰ म॰ स॰ २५ व॰ अं॰ स॰ २६ व॰ सं॰ हिलते हो॰ २७ व॰ मं॰ हि॰ २८ व॰ अं॰ हि॰ २९ व॰ संदंश गिरे हो॰ ३० व॰ म॰ गि॰ ३१ व॰ अं॰ गि॰ ३२ व॰ इस प्रकार से एक से ३२ तक घोडे के उमर के वर्ष दांत पर से जानना ॥५॥ ॥इति बृहत्संहितायां अश्वलक्षणं नाम षट्षष्टितमोध्यायः ६६॥ ॥अथगजलक्षणम्॥ ॥मधुवर्ण दंत की कांती जिनके ऐसे· सुंदर विभक्त है देह जिनके ऐसे· अतिस्थूल और अति कृश नही· सर्व कर्म सहन करनेवाले· सर्व शरीरावयव समान· धनुष्य के समान है· वंश (पीठके हाड) जिनके ऐसे· सूकर के समान है कटिभाग जिनके ऐसे जो हाथी· वह भद्रजाती के भद्रसंज्ञक होते हैं ॥१॥ वक्षस्थल· कक्षा वलय· यह शिथिल· उदर लंबा· त्वचा और गरदन स्थूल· कुक्षि और पुच्छमूल· यह स्थूल· सिंह के समान दृष्टि· यह मंदसंज्ञक हाथी के लक्षण हैं ॥२॥

मृगास्तु ह्रस्वाधरवालमेढ्रास्तन्वंघ्रिकंठद्विजहस्तकर्णाः॥ स्थूले
क्षणाश्चेति यथोक्तचिन्हैः संकीर्णनागा व्यतिमिश्रचिन्हाः॥३॥ पंचो
न्नतिः सप्त मृगस्य दैर्घ्यमष्टौ च हस्ताः परिणाहमानं॥ एकाद्विवृद्धा
वथ मंदभद्रौ संकीर्णनागो नियतप्रमाणः॥४॥ भद्रस्य वर्णो हरितो
मदस्य मंदस्य हारिद्रकसंन्निकाशः॥ कृष्णो मदश्चाभिहितो मृग
स्य संकीर्णनागस्य मदो विमिश्रः॥५॥ ताम्रोष्ठतालुवदनाः कलविं
कनेत्राः स्निग्धोन्नताग्रदशनाः पृथुलायतास्याः॥ चापोन्नतायत
निगूढनिमग्नवंशास्तन्वेकरोमचितकूर्मसमानकुंभाः॥६॥ विस्ती
र्णकर्णहनुनाभिललाटगुह्याः कूर्मोन्नतद्विनवविंशतिभिर्नखैश्च॥ रे
खात्रयोपचितवृत्तकराः सुवालाधन्याः सुगंधिमदपुष्करमारुताश्च॥
॥७॥ दीर्घांगुलिरक्तपुष्कराः सजलांभोदनिनादबृंहिणः॥ बृहदाय
तवृत्तकंधरा धन्या भूमिपतेर्मतंगजाः॥८॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

ओष्ठ· पुच्छ· लिंग· यह ह्रस्व (छोटे) पांव· कंठ· दांत· शुंडा· कान· यह कृश· नेत्र विस्तीर्ण· यह
चिन्हसे युक्त जो गज वह मृगसंज्ञक होते हैं· पूर्वोक्त तीनों ही चिन्हसे जो मिश्रित वह मिश्र
संज्ञक गज होते हैं॥३॥ मृगसंज्ञक ऊंचा ५ हाथ· पुच्छ मूलसे गंडस्थलतक लंबाई ७ हाथ
परिणाह (घेर) ८ हाथ· मंदसंज्ञक की ६ उंचाई· ८ हाथ लंबाई ९ हाथ घेर· भद्रकी ७ हा
थ उंचाई ९ हाथ लंबाई· १० हाथ घेर· और संकीर्ण (मिश्र) संज्ञक हाथीके प्रमाणको नि
यम नहीं·॥४॥ भद्रसंज्ञक हाथीके मदका वर्ण हरा· मंदसं० वर्ण पीत· मृगसंज्ञक वर्ण
काला· संकीर्णसं० हाथीके मदका वर्ण मिश्र· (हरा· पीला· काला·) ऐसे मदके रंगपर
से हाथीकी जाती जाननी·॥५॥ ओष्ठ· तालु· मुख· यह· लाल· कलविंक (गौरा पक्षी) प
क्षीके समान नेत्र· स्निग्ध· और अग्र ऊंचा ऐसे दांत· विस्तीर्ण और लंबा ऐसे मुख जिन
के ऐसे· धनुष्यके समान ऊंचा और विस्तीर्ण· निगूढ (शिथिलसंधि) बहुत ऊंचा नहीं·
ऐसा है· वंश (पीठका हाड) जिनका ऐसे· कृश एक केशसे युक्त· और कच्छपके पीठसमा
न है· गंडस्थल जिनके ऐसे॥६॥ कर्ण· हनु· नाभि· ललाट· गुह्य· यह विस्तीर्ण· जिनके ऐ
से· कूर्मके समान उन्नत १८ वा २० है नख जिनको· लंबे तीन रेषासे युक्त· वर्तुल है शुंडा
जिनकी ऐसे· सुंदर है केश जिनके ऐसे· सुगंधयुक्त है मद (गंडस्थलमेका जल) और शुं
डामेका वायु जिनका ऐसे हाथी धन्य (शुभ·) होते हैं·॥७॥ लंबी अंगुली· (शुंडाके अंत
मे मांसका टुकडा रहता है सो) और लाल है शुंडाग्र जिनके ऐसे· सजल मेघके शब्दके
समान शब्द जिनके ऐसे· बडी विस्तीर्ण गोल है कंधरा (गरदन) जिनकी ऐसे हा
थी राजाको शुभकारक होते हैं·॥८॥

निर्मदाभ्यधिकहीननखांगान्कुब्जवामनकमेषविषाणान्॥ दृश्यकोशफलपुष्करहीनान्श्याववनीलशबलासिततालून्॥९॥ स्वल्पवक्त्ररुहमत्कुणषंढान्हस्तिनींच गजलक्षणयुक्तां॥ गर्भिणींचनृपतिः परदेशं प्रापयेद्तिविरूपफलास्ते॥१०॥ ॥इतिगजलक्षणम्॥ ॥अथपुरुषलक्षणं॥ उन्मानमान गतिसंहतिसारवर्णस्नेहस्वरप्रकृतिसत्वमनूकमादौ॥ क्षेत्रंमृजांचविधिवत्कुशलोवलोक्य सामुद्रविद्वदति यातमनागतंच॥१॥ अस्वेदनौमृदुतलौकमलोदराभौश्लिष्टांगुलीरुचिरताम्रनखौसुपार्ष्णी॥ उष्णौशिराविरहितौसुनिगूढगुल्फौ कूर्मोन्नतौचचरणौमनुजेश्वरस्य॥२॥ शूर्पाकारविरूक्षपांडुरनखौवक्रौशिरासंततौसंशुष्कौविरलांगुलीचचरणौदारिद्र्यदुःखप्रदौ॥ मार्गोत्कटौकषायसदृशौवंशस्यविच्छित्तिदौ ब्रह्मघ्नौपरिपक्वमृद्द्युतितलौपीतावगम्येरतौ॥३॥७॥

---

जो हाथी मदरहित अधिकवा कमती है नख और अवयव जिनके ऐसे कुब्ज वामन (छोटे) बकरेके रंगसमान दांत आंड और मुंडाके अग्रमे कमलके समान चिन्ह यह अदृश्य जिनके ऐसे मलिन नील और मिश्रित रंगकी तालू जिनकी ऐसे स्वल्पहै दांत तथा मुख लोम जिनके ऐसे और बाल्यदंतरहित षंढ ऐसे हाथी और यही हाथीके लक्षणसे युक्त और बडे दांतकी और मदयुक्त हथिनी गर्भिणी हथिनी यह सर्व अशुभ फलदायक हैं इसवास्ते राजाने दुसरे देशमे भेजदेना अपने देशमे रखना नही (जो हाथी गमन करते समयमे पांवमे पांव मिलता है वह षंढ॥९॥१०॥ ॥इतिबृहत्संहितायांगजलक्षणंनामसप्तषष्टितमोध्यायः ६७॥ ॥अथपुरुषलक्षणम्॥ ॥उन्मान (ऊंचाई) मान (तौल) गति संहति सार वर्ण स्नेह स्वर प्रकृति सत्व अनूक (उपजन्मस्वभाव प्रारब्ध) क्षेत्र (पादादिमस्तक दशविध) मृजा (छाया) यह सर्व लक्षण कुशल पुरुष देखके सामुद्रिक जाननेवाला होयके भूत और भविष्य फल कहता है॥१॥ पसीनेसे रहित तलपांव मृदु कमलके गर्भसमान पीतवर्ण मिली अंगुली तेजस्वी और लाल नख पीछेका भाग सुंदर गरम शिरा (नस) रहित बहुत गुप्त है लोंट जिनके ऐसे कूर्मके पीठ समान उन्नत उंचा ऐसे राजाके चरण (पांव) होते है॥२॥ सूपके समान रूक्ष श्वेत नख वक्र (टेढा सीधे) शिरायुक्त मांसरहित विरल अंगुली ऐसे पांव दारिद्र और दुःखदायक होते हैं उत्कटक (बीचमे ऊंचा पादुकाके आकार) पांव मार्गमे रहनेवाले होते हैं कषाय (काला लाल) सदृश पांव वंशनाशकारक भूंजी मट्टीके वर्ण पांव ब्रह्महत्याकरनेवाले होते हैं पीतवर्ण पांव अगम्य स्त्रीके विषे आसक्त होता है॥३॥

अविरलतनुरोमवृत्तजंघाद्विरदकरप्रतिमैर्वरोरुभिश्च॥ उपचितसमजानवश्च भूपा धनरहिताः श्वशृगालतुल्यजंघाः॥४॥ रोमैकैकं कूपके पार्थिवानां द्वेद्वे ज्ञेये पंडितश्रोत्रियाणां॥ त्र्याद्यैर्निःस्वा मानवा दुःखभाजः केशाश्चैवं निंदिताः पूजिताश्च॥५॥ निर्मांसजानुर्म्रियते प्रवासे सौभाग्यमल्पैर्विकटैर्दरिद्राः॥ स्त्रीनिर्जिताश्चापि भवंति निम्नै राज्यं समांसैश्च महद्भिरायुः॥६॥ लिंगेल्पे धनवानपत्यरहितः स्थूले विहीनो धनैर्मेढ्रे वामनते सुतार्थरहितो वक्रेऽन्यथा पुत्रवान्॥ दारिद्र्यं विनतेत्वधोल्पतनयो लिंगे शिरासंतते स्थूलग्रंथियुते सुखी मृदु करोत्यंतं प्रमेहादिभिः॥७॥ कोशनिगूढैर्भूपा दीर्घैर्भग्नैश्च वित्तपरिहीनाः॥ ऋजुवृत्तशेफसो लघुशिरालशिश्नाश्च धनवंतः॥८॥ जलमृत्युरेकवृषणो विषमैः स्त्रीचंचलः समैः क्षितिपः॥ ह्रस्वायुश्चोद्बद्धैः प्रलंबवृषणस्य शतमायुः॥९॥ ७॥ ७॥ ७॥ ७॥

---

विरल और सूक्ष्म है रोम जिसपर ऐसी और गोल जंघा (नली पेंडुरी) हाथीके समान जंघा पुष्ट और सम जानु यह लक्षणसे युक्त राजा होते हैं कुत्ता और सियार इनके समान जंघाके पुरुष दरिद्री होते हैं॥४॥ सर्व कूपमे (रोमरंध्र) मे एक एक रोम राजाके और दो दो रोम पंडित और वेदवेत्ता इनको रहते हैं तीन चार रोम होय तो वह मनुष्य निर्धन और दुःखी होते हैं इस प्रकारसे ही मस्तकपरके भी केश अशुभ और शुभ जानना॥५॥ जिस्के मांस रहित जानू (ठेउना) वह प्रवासमे मरता है कृशजानूसे सौभाग्य विकट (विस्तीर्ण) जानूसे दरिद्री निम्न (गहिरा) जानूसे स्त्रीजित मांसयुक्त (पुष्ट) जानूसे राज्य बडे जानूसे आयुष्य वृद्धि यह फल होते हैं॥६॥ लिंग छोटा होय तो धनवान् और पुत्ररहित होता है बडा होय तो दरिद्री वामभागमे झुका होय तो पुत्र और धन इस्करके रहित टेढा रहते दक्षिणमे झुका होय तो पुत्रवान् नीचे झुका होय तो दरिद्र लिंगपर शिरा बहुत होय तो थोडे पुत्र होंगे बडे ग्रंथीसे युक्त होय तो सुखी लिंग मृदु रहते प्रमेहादि रोगसे मृत्यु होता है॥७॥ जिनके लिंग (कोशनिगूढ (आधेके समान त्वचासे गुप्त) वह राजा होते हैं लंबा और फटा (अग्रबाहर निकला) रहते द्रव्यहीन सरल गोल छोटा शिरायुक्त जिनके लिंग वह धनवान् होते हैं॥८॥ वृषण (आंड) एक गोलीका होय तो जलमे मृत्यु होता है विषम (१ लंबी गोली और १ छोटी) होय तो स्त्रीकी इच्छा करनेवाला समान बराबर होय तो राजा ऊर्ध्वबद्ध होय तो अल्पायु लंबा वृषण होय तो शतायु होता है॥९॥ रक्तवर्ण मणि (लिंगका अग्र बडाभाग) होय तो राजा होता है श्वेत और मलिन होय तो दरिद्री होता है

रक्तैराढ्या मणिभिर्निर्द्रव्याः पांडुरैश्च मलिनैश्च ॥ सुखिनः सशब्दमूत्रा निःस्वा निःशब्दधाराश्च ॥१०॥ द्वित्रिचतुर्धाराभिः प्रदक्षिणावर्तवलितमूत्राभिः ॥ पृथ्वीपतयो ज्ञेया विकीर्णमूत्राश्च धनहीनाः ॥११॥ एकैकमूत्रधारावलिता रूपप्रदा न सुतदात्री ॥ स्निग्धोन्नतसममणयो धनवनितारत्नभोक्तारः ॥१२॥ मणिभिश्च मध्यनिम्नैः कन्यापितरो भवंति निःस्वाश्च ॥ बहुपशुभाजो मध्योन्नतैश्च नात्युल्बणैर्धनिनः ॥१३॥ परिशुष्कबस्तिशीर्षैर्धनरहिता दुर्भगाश्च विज्ञेयाः ॥ कुसुमसमगंधशुक्रा विज्ञातव्या महीपालाः ॥१४॥ मधुगंधे बहुवित्ता मत्स्यसगंधे बहून्यपत्यानि ॥ तनुशुक्रः स्त्रीजनको मांससगंधो महाभोगी ॥१५॥ मदिरागंधे यज्वा क्षारसगंधे च रेतसि दरिद्रः ॥ शीघ्रं मैथुनगामी दीर्घायुरतो न्यथाल्पायुः ॥१६॥ निःस्वोतिस्थूलस्फिक्सममांसलस्फिक्सुखान्वितो भवति ॥ व्याघ्रांतोध्यर्धस्फिग्मंडूकस्फिग्नराधिपतिः ॥१७॥ सिंहकटिर्मनुजेंद्रः कपिकरभकटिर्धनैः परित्यक्तः ॥ समजठरा भोगयुता घटपिठरनिभोदरा निःस्वाः ॥१८॥

---

जिसका मूत्र शब्दयुक्त वह सुखी· जिनकी निःशब्द मूत्रधारा वह दरिद्री ॥१०॥ जिनके मूत्रकी धारा २।३।४। और प्रदक्षिण फिरनेसे वेष्टित मूत्रधारा· वह राजा होतेहैं· जिनके विकीर्ण (रहरहके होना) मूत्र वह दरिद्री ॥११॥ जो मूत्रधारा एकही रहने वेष्टित· वह सुंदररूप कारकहै· पुत्रदायक नहीं (कोई रूप प्रधान सुतदात्री ऐसा कहतेहैं· उनके मतमे रूप और उत्तम पुत्र दायक·) स्निग्ध उचा· सम ऐसा मणि जिनका वह द्रव्य· स्त्री· रत्नइसको भोग करनेवाले होतेहैं· ॥१२॥ मणि· बीचमे गहिरा रहने कन्याका पिता और दरिद्री होताहै· बीचमे ऊंचा होय तो बहुत पशुका पालन करनेवाला होताहै बहुत बडा मणि न होय तो धनवान होताहै ॥१३॥ वस्ति (नाभीके नीचेका और लिंगके ऊपरका भाग·) शीर्ष शुष्क होय तो दरिद्री और लोकको प्रिय होतेहैं· पुष्पतुल्य सुगंधि रेत (धात) जिनकी वह राजा होते हैं ॥१४॥ मधुसमान रेनका गंध होय तो धनवान्· मत्स्यतुल्य रेतगंध होयतो बहुत संतान होतेहैं ॥१५॥ स्वल्प रेत होय तो कन्या होती है· मांसतुल्य रेतगंध होय तो महान् सुख भोग करनेवाला होताहै· शीघ्र जो मैथुन गामी सो दीर्घायु और बहुत काल मैथुन करनेवाला अल्पायु होताहै ॥१६॥ अति स्थूल स्फिक् (कुल्हा) बडा जिसका सो दरिद्री· वही कुल्हा मांसल होय तो सुखयुक्त होताहै· अध्यर्ध (डेड) कुल्हा जिसका उसको व्याघ्रसे मृत्यू· मंडूकके समान (मेडुकाके स·) जिनके कुल्हे वह राजा होतेहैं ॥१७॥ सिंहके कटीसमान जिसकी कटी वह राजा होताहै· वानर और ऊंट इनकेकटीसमान कटी वह दरिद्री· सम (ऊंचा फैलान ही·) जिनके उदर वह सुखी· घट और

अविकलपार्श्वा धनिनो निम्नैर्वक्रैश्च भोगसंत्यक्ताः॥ समकुक्षा भोगाढ्या निम्नाभिर्भोगपरिहीनाः॥१९॥ उन्नतकुक्षाः क्षितिपाः कुटिलाः स्युर्मानवा विषमकुक्षाः॥ सर्पोदरा दरिद्रा भवंति बह्वाशिनश्चैव॥२०॥ परिमंडलोन्नताभिर्विस्तीर्णाभिश्च नाभिभिः सुखिनः॥ स्वल्पा त्वदृश्यनिम्ना नाभिः क्लेशावहा भवति॥२१॥ वलिमध्यगता विषमा शूलाबाधं करोति नैःस्व्यं च॥ शाठ्यं वामावर्ता करोति मेधां प्रदक्षिणतः॥२२॥ पार्श्वायता चिरायुषमुपरिष्टाच्चेश्वरं गवाढ्यमधः॥ शतपत्रकर्णिकाभा नाभिर्मनुजेश्वरं कुरुते॥२३॥ शस्त्रांतं स्त्रीभोगिनमाचार्यं बहुसुतं यथासंख्यं॥ एकद्वित्रिचतुर्भिर्वलिभिर्विद्यान्नृपं त्ववलिं॥२४॥ विषमवलयो मनुष्या भवंत्यगम्याभिगामिनः पापाः॥ ऋजुवलयः सुखभाजः परदाराद्वेषिणश्चैव॥२५॥ मांसलमृदुभिः पार्श्वैः प्रदक्षिणावर्तरोमभिर्भूपाः॥ विपरीतैर्निर्द्रव्याः सुखपरिहीनाः परप्रेष्याः २६

---

पिठर (तपेला) इसके समान जिनके उदर वह दरिद्री होते हैं॥१८॥ परिपूर्ण मांसल पार्श्व (कटीके ऊपर चार अंगुल) भाग होयतो धनवान्· नम्र और वक्र पार्श्व होयतो दुःखी· कुक्षा (उदर मध्य भाग) सम होयतो भोगयुक्त· निम्नकुक्षा होयतो भोगरहित होते हैं॥१९॥ ऊंची कुक्षा होयतो राजा· विषम जिस मनुष्यका कुक्षा है वह कपटी· सर्पके समान जिनके उदर वह दरिद्री और बहुत खानेवाला होता है॥२०॥ वर्तुल· ऊंची और विस्तीर्ण नाभि होयतो सुख होता है· छोटी· अदृश्य और गहिरी नाभी होयतो दुःख होता है॥२१॥ त्रिवलीमें और ऊंची छोटी नाभी होयतो शूलसे मृत्यु और दरिद्री होता है· वामावर्त होयतो कपट स्वभाव होता है· दक्षिणावर्त होयतो बुद्धिमान् होता है॥२२॥ दूनो बाजूमें विस्तीर्ण नाभि होयतो चिरायु· ऊपर विस्तीर्ण होयतो समृद्ध· नीचे वि॰ गौइत्यादिकसे युक्त होता है· कमलके मध्य भाग समान मध्योन्नत नाभि होयतो राजा होता है॥२३॥ १।२।३।४ ऐसे पेटपर वलि होयतो· क्रमसे शस्त्रमृत्यु· स्त्रीभोगी· उपदेशक· बहुत पुत्र· यह फल होते हैं· वलि न होयतो राजा होता है॥२४॥ ऊंची छोटी वली होयतो अगम्यस्त्रीगमन करे और पापी होता है· सरल (सीधी) वलि हो॰ सुखी और परस्त्रीका द्वेष करनेवाले होते हैं॥२५॥ पुष्ट और मृदु और दक्षिणावर्त केश· ऐसा पार्श्व भाग (कुक्षीके ऊपरका चार अंगुल) ऐसा होयतो राजा होते है· इससे अन्यथा (पुष्ट नहीं· रूक्ष वामावर्त केश) होयतो दरिद्री· दुःखी और दूसरेका सेवक होता है॥२६॥ अनुद्वृद्ध (बहुत ऊंचा नहीं·) ऐसे चूचुक (स्तनाग्र) होयतो द्रव्यवान् होते हैं· दूनो समान नहीं·

दुर्भगा भवंत्यनुद्धद्धचूचुका निर्धना विषमदीर्घैः॥ पीनोपचितनिम
ग्नैः क्षितिपतयश्चूचुकैः सुखिनः॥२७॥ हृदयं समुन्नतं पृथु न वेपनं मां
सलं च नृपतीनां॥ अधमानां विपरीतं खररोमचितं शिरालं च॥२८
समवक्षसोऽर्थवंतः पीनैः शूरास्त्वकिंचनास्तनुभिः॥ विषमं वक्षो येषां
ते निःस्वाः शस्त्रनिधनाश्च॥२९॥ विषमैर्विषमो जत्रुभिरर्थविहीनो
ऽस्थिसंधिपरिणद्धैः॥ उन्नतजत्रुर्भोगी निम्नैर्निःस्वोऽर्थवान् पीनैः॥३०॥
चिपिटग्रीवो निःस्वः शुष्का सशिरा च यस्य वा ग्रीवा॥ महिषग्रीवः शू
रः शस्त्रांतो वृषसमग्रीवः॥३१॥ कंबुग्रीवो राजा प्रलंबकंठः प्रभक्षणो भ
वति॥ पृष्ठमभग्नमरोमशमर्थवतामशुभदमतोऽन्यत्॥३२॥ अस्वेद
न पीनोन्नतसुगंधिसमरोमसंकुलाः कक्षाः॥ विज्ञातव्या धनिनामतो
ऽन्यथार्थैर्विहीनानां॥३३॥ निर्मांसौ रोमचितौ भग्नावल्पौ च निर्धन
स्यांसौ॥ विपुलावव्युच्छिन्नौ सुश्लिष्टौ सौख्यवीर्यवतां॥३४॥ ७॥
करिकरसदृशौ वृत्तावाजानुवलंबिनौ समौ पीनौ॥ बाहू पृथि
वीशानामधमानां रोमशौ ह्रस्वौ॥३५॥

---

और लंबा चूचुक होय तो दरिद्री होता है कठिन पुष्ट निमग्न (गहिरा) चूचुक होय तो रा
जा और सुखी होते हैं॥२७॥ ऊंचा विस्तीर्ण अकंपन पुष्ट ऐसा हृदय राजों का होता है
पूर्वोक्त से विपरीत और रूक्ष केशसे युक्त शिरायुक्त ऐसा हृदय दरिद्री का होता है॥२८
वक्षस्थल सम (समान) होय तो द्रव्यवान् पुष्ट (कठिन) होय तो शूर कृश होय तो दरि
द्री विषम (ऊंचानीचा) होय तो दरिद्री और शस्त्र से मरण होता है॥२९॥ जत्रु (वक्षस्थ
ल और कंठ इनकी संधी हसुली) विषम होय तो क्रूर होता है हसुली के हाड की संधी से बद्ध
होय तो दरिद्री ऊंचा होय तो भोगयुक्त निम्न होय तो दरिद्री पुष्ट होय तो द्रव्यवान् होता
है॥३०॥ कंठ चिपटा शुष्क और शिरायुक्त होय तो निर्धन होता है महिष के समान कंठ
होय तो शूर बैल के समान होय तो शस्त्र से मरण॥३१॥ कंबु (त्रिवली युक्त) ग्रीवा होय तो
राजा लंबा कंठ होय तो भक्षणशील होता है पीठ अभग्न (सम) और केशरहित होय तो
धनवान् होता है इससे अन्य अशुभ होते हैं॥३२॥ पसीनारहित पुष्ट ऊंचा सुगंधि सम केशयु
क्त ऐसी कक्षा (बाहुमूल) द्रव्यवान् का जानना इससे अन्य दरिद्री के लक्षण जानना॥३३॥
मांसरहित केशयुक्त भग्न अविस्तीर्ण ऐसे स्कंध दरिद्री के होते हैं विस्तीर्ण अखं
डित और संलग्न ऐसे स्कंध सुखी और बलिष्ठ के होते हैं॥३४॥ हाथी के सुंडा समान गो
ल आजानु तक लंबे समान और पुष्ट ऐसे बाहू राजा के होते हैं केशयुक्त और छोटे बाहू
दरिद्री के होते हैं॥३५॥

हस्तांगुलयो दीर्घाश्चिरायुषामवलिताश्च सुभगानां ॥ मेधाविनां च सूक्ष्माश्चिपिटाः परकर्मनिरतानां ॥ ३६ ॥ स्थूलाभिर्धनरहिता बहिर्नताभिश्च शस्त्रनिर्याणाः ॥ कपिसदृशकरा धनिनो व्याघ्रोपमपाणयः पापाः ॥ ३७ ॥ मणिबंधनैर्निगूढैर्दृढैश्च सुश्लिष्टसंधिभिर्भूपाः ॥ हीनैर्हस्तच्छेदः श्लथैः सशब्दैश्च निर्द्रव्याः ॥ ३८ ॥ पितृवित्तेन विहीना भवंति निम्नेन करतलेन नराः ॥ संवृतनिम्नैर्धनिनः प्रोत्तानकराश्च दातारः ॥ ३९ विषमैर्विषमा निःस्वाश्च करतलैरीश्वरास्तु लाक्षाभैः ॥ पीतैरगम्यवनिताभिगामिनो निर्धना रूक्षैः ॥ ४० ॥ तुषसदृशनखाः क्लीबाश्चिपिटैः स्फुटितैश्च वित्तसंत्यक्ताः ॥ कुनखविवर्णैः परतर्कुकाश्च ताम्रैश्च भूपतयः ॥ ४१ ॥ अंगुष्ठयवैराढ्याः सुतवंतोंगुष्ठमूलगैश्च यवैः ॥ दीर्घांगुलिपर्वाणः सुभगा दीर्घायुषश्चैव ॥ ४२ ॥ स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां तद्व्यत्ययेन निःस्वानां ॥ विरलांगुलयो निःस्वा धनसंचयिनो घनांगुलयः ॥ ४३ ॥ ७ ॥

---

हस्तकी अंगुली लंबी रहते दीर्घायु होता है अवलित (सुस्पष्ट) रहते भाग्ययुक्त होता है सूक्ष्म (कृश) रहते ज्ञानी चपटी होयतो दुसरेके सेवक होते है ॥ ३६ ॥ हस्तांगुली मोटी होयतो दरिद्री बाहरनम्र होयतो शस्त्र मृत्यु वानरके हाथसमान होयतो धनवान् व्याघ्रके हाथके समान हाथ होयतो पापी होता है ॥ ३७ ॥ मणिबंध (गट्टा) अस्पष्ट दृढ सुसंलग्न संधि ऐसे होय सो राजा होते है मणिबंध हीन होयतो स्वहस्तच्छेद होता है शिथिल और शब्दयुक्त मणिबंध होयतो दरिद्री होता है ॥ ३८ ॥ हस्ततल ऊंचा न होयतो पितृद्रव्यरहित मनुष्य होते है समवर्तुल निम्न (गहिरा) होयतो धनवान् अत्यंत ऊंचा हस्त होयतो दान करनेवाले होते है ॥ ३९ ॥ असम (ऊंचा नीचा) करतल होयतो क्रूर और दरिद्री होते हैं लाखके समान लाल करतल होयतो राजे होते हैं पीतवर्ण होयतो अगम्यस्त्री गामी होते है रूक्ष होयतो दरिद्री होते है ॥ ४० ॥ तुष (धान्यकी भूसी) के ऐसे नख होयतो नपुंसक होता है चिपटे वा फूटे भए होयतो दरिद्री होता है कुत्सित और बिवर्ण नख होयतो परतर्कुक (दुसरेका सुख देखनेवाले) होते है लाल नख होयतो सेनापति होता है ॥ ४१ ॥ अंगुष्ठ मध्यभागमे यव (जवके आकार) होयतो द्रव्यवान् अंगुष्ठमूलमे यव होयतो पुत्रवान् लंबा अंगुली पर्व होयतो सौभाग्ययुक्त और दीर्घायु होते है ॥ ४२ ॥ धनवानके हस्तगत रेखा स्निग्ध और गहिरी रहती है इससे अन्य दरिद्रीके होता है विरल अंगुली जिनकी वह दरिद्री और घन (मिली) अंगुली वह द्रव्य संचय करनेवाले होते हैं ॥ ४३ ॥

तिस्रो रेखा मणिबंधनोत्थिताः करतलोपगा नृपतेः॥ मीनयुगांकितपाणिर्नित्यं सत्रप्रदो भवति॥ वज्राकारा धनिनां विद्याभाजां तु मीनपुच्छनिभाः॥ शंखातपत्रशिविकागजाश्वपद्मोपमा नृपतेः॥५५॥ कलशमृणालपताकांकुशोपमाभिर्भवंति निधिपालाः॥ दामनिभाभिश्चाढ्याः स्वस्तिकरूपाभिरैश्वर्यं॥५६॥ चक्रासिपरशुतोमरशक्तिधनुःकुंतसंनिभा रेखाः॥ कुर्वंति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकाराः॥५७॥ मकरध्वजकोष्ठागारसंन्निभाभिर्महाधनोपेताः॥ वेदीनिभेन चैवाग्निहोत्रिणो ब्रह्मतीर्थेन॥५८॥ वापीदेवकुलाद्यैर्धर्मं कुर्वंति च त्रिकोणाभिः॥ अंगुष्ठमूलरेखाः पुत्राः स्युर्दारिकाः सूक्ष्माः॥५९॥ रेखाः प्रदेशिनीगाः शतायुषां कल्पनीयमूनाभिः॥ छिन्नाभिर्द्रुमपतनं बहुरेखारेखिणो निःस्वाः॥६०॥ अतिकृशदीर्घैश्चिबुकैर्निर्द्रव्या मांसलैर्धनोपेताः॥ बिंबोपमैरवक्रैरधरैर्भूपास्तनुभिरस्वाः॥६१॥ छ॥ ॥

---

मणिबंधसे उत्पन्न होयके हस्ततल गत तीन रेषा राजा के होते हैं दो मत्स्यसे युक्त हस्त जिस्का वह यज्ञमे बहुत अन्न देनेवाला होता है (बहुत यज्ञ करता है)॥५५॥ धनवान् के हस्तपर वज्रके समान रेषा होती हैं विद्यावान् के हस्तपर मत्स्यपुच्छसमान रेषा होती है· शंख· छत्र· पालकी· हाथी· अश्व· कमल· इस्के समान रेषा राजोंके हस्तपर होती है॥५५॥ कलश· कमलका दंड· पताका· अंकुश· इस्के समान रेषासे द्रव्यवान् होते हैं· रज्जु (डोरी) समान रेषासे धनवान् होते हैं· स्वस्तिकके समान रेषासे ऐश्वर्यवान् होता है·॥५६॥ चक्र· तलवार· फरसा· गतका· शक्ति· (शस्त्रवि०) धनुष्य· भाला· इनके समान रेषा हस्तगत होय तो सेनापति होते हैं· उलूखल (उखरी) समान रेषा होय तो यज्ञकर्त्ता होते हैं॥५७॥ मकर (मगर· सुइस·) चिन्ह· कोठार· इस्के समान रेषासे बहुत धनसे युक्त होते हैं· वेदी (यज्ञभूमी) समान ब्रह्मतीर्थसे (अंगुष्ठमूलसे) अग्निहोत्री होते हैं·॥५८॥ वापी (जलाशय) देवालय· सिंहासन· इत्यादिकके समान रेषा हाथपर होय तो धार्मिक होता है· त्रिकोण रेषा होय तोभी धार्मिक होते हैं· अंगुष्ठ मूलमे जितनी स्थूल रेषा तितने पुत्र होते हैं· उस्मे सूक्ष्म जितनी होय उतनी कन्या होती है·॥५९॥ प्रदेशिनी (अंगुष्ठके पासकी) जहां गई रेखासे शतायुषी होते हैं· उस्से जैसे कमती होय तैसे आयुष्य कमती कल्पना करना· वह छिन्न (टूटी) होय तो वृक्षपरसे पतन होता है· बहुत रेषा होय अथवा रेषा न होय तो वह दरिद्री होता है·॥६०॥ चिबुक (अधरोष्ठके नीचेका भाग) बहुत कृश और दीर्घ होय तो दरिद्री होते हैं· पुष्ट होय तो द्रव्यवान् होते हैं· ओष्ठ पके कुंदूके समान लाल और

ओष्ठैस्तु स्फुटितविखंडितविवर्णरूक्षैश्च धनपरित्यक्ताः॥ स्निग्धा घना
श्च दशनाः सुतीक्ष्णदंष्ट्राः समाश्च शुभाः॥५२॥ जिह्वा रक्ता दीर्घा
श्लक्ष्णा सुसमा च भोगिनां ज्ञेया॥ श्वेता कृष्णा परुषा निर्द्रव्याणां तथा
तालु॥ वक्त्रं सौम्यं संवृतममलं श्लक्ष्णं समं च भूपानां॥ विपरीतं क्लेश
भुजां महामुखं दुर्भगाणां च॥५४॥ स्त्रीमुखमनपत्यानां शाठ्यवतां
मंडलं परिज्ञेयं॥ दीर्घं निर्द्रव्याणां भीरुमुखाः पापकर्माणः॥५५॥ चतु
रस्रं धूर्त्तानां निम्नं वक्त्रं च तनयरहितानां॥ कृपणानामतिह्रस्वं संपू
र्णं भोगिनां कांतं॥५६॥ अस्फुटिताग्रं स्निग्धं श्मश्रु शुभं मृदु च संनतं
चैव॥ रक्तैः परुषैश्चौराः श्मश्रुभिरल्पैश्च विज्ञेयाः॥५७॥ निर्मांसैः क
र्णैः पापमृत्यवश्चर्पटैः सुबहुभोगाः॥ कृपणाश्च ह्रस्वकर्णाः शंकुश्रव
णाश्च भूपतयः॥५८॥ रोमशकर्णा दीर्घायुषस्तु धनभोगिनो विपुल
कर्णाः॥ क्रूराः शिरावनद्धैर्व्यालंबैर्मांसलैः सुखिनः॥५९॥ भोगी त्वनिम्न
गंडो मंत्री संपूर्णमांसगंडो यः॥ सुखभाक् शुकसमनासश्चिरजीवी शुष्कनास
श्च॥६०

---

सरल होय तो राजा होते हैं· कृश होय तो निर्धन॥५१॥ उत्तरोष्ठ फूटा होय· टूटा होय· वि
गतवर्ण· रूक्ष ऐसे होय तो दरिद्री होते हैं· दांत निर्मल· घन· गझीन अत्यंत तीक्ष्ण दाढ
सम ऐसे शुभ होते हैं॥५२॥ जिह्वा रक्तवर्ण· दीर्घ· चिक्कण· और सम सुख युक्त की जा
नना· श्वेत· कृष्ण· परुष (कठोर) ऐसी जिह्वा दरिद्री की जानना· जिह्वा समान ही तालू
भी जानना·॥५३॥ सौम्य· संवृत (गोल) स्वच्छ· मृदु· सम· ऐसे मुख राजों के होते हैं·
इससे विपरीत दुःखी पुरुष के होते हैं· अति विस्तीर्ण मुख दुर्भाग्य पुरुष के होते हैं॥५४
॥ संतानरहित के मुख स्त्रीमुख के समान होते हैं· शठ कार्यवि मुख के गोल मुख जान
ना· दरिद्री का लंबा मुख जानना· भययुक्त समान मुख जिन के वह पापी जानना·॥
५५॥ धूर्त का मुख चतुष्कोण जानना· निम्न (गहिरा) मुख पुत्ररहित का जानना· बहु
त छोटा मुख कृपण का जानना· पुष्ट और तेजस्वी मुख सुखयुक्त का होता है॥५६॥
पुरुष के मुख पर के दाढी मोछ इ॰ केश अग्र मे फूटे न होय· स्निग्ध मृदु· नम्र· ऐसे शुभ
होते हैं· लाल· और रूक्ष· अल्प· ऐसे श्मश्रु (दाढी मोछ) होय तो चोर होता है॥५७॥ मां
सरहित कर्ण होय तो पापकर्म से मृत्यु होता है· चर्पट (विस्तीर्ण) रहते सुखी होते हैं· कर्ण
ह्रस्व रहते कृपण· तीक्ष्णाग्र कर्ण राजा होते हैं॥५८॥ केशयुक्त कर्ण के पुरुष दीर्घायु हो
ते हैं· विस्तीर्ण कर्ण धनवान् होते हैं· शिरायुक्त कर्ण॰ क्रूर होते हैं· लंबा और पुष्ट कर्ण रहते
सुखी होते हैं॥५९॥ गाल ऊंचा होय तो भोगयुक्त· मांसल (पुष्ट) होय तो प्रधान होता है·
नाक सुगे के चोंच के समान होय तो सुखी· शुष्क रहते चिरायुषी॥६०॥ [illegible]

छिन्नानुरूपयागम्यगामिनो दीर्घयानु सौभाग्यं। आकुंचितया चौरः स्त्रीमृत्युः स्याच्चिपिटनासः॥६१॥ धनिनोऽग्रवक्रनासा दक्षिणवक्राः प्रभक्षणाः क्रूराः॥ ऋज्वी स्वल्पच्छिद्रा सुपुटा नासा सभाग्यानां॥६२॥ धनिनां क्षुतं सकृद्द्वित्रिपिंडितं ह्लादिसानुनादं च॥ दीर्घायुषां प्रमुक्तं विज्ञेयं संहतं चैव॥६३॥ पद्मदलाभैर्धनिनो रक्तांतविलोचनाः पापाः॥६४॥ हरिणाक्षा मंडललोचनाश्च जिह्मैश्च लोचनैश्चौराः॥ क्रूराः केकरनेत्रा गजसदृशाश्च भूपतयः॥६५॥ ऐश्वर्यं गंभीरैर्नीलोत्पलकांतिभिश्च विद्वांसः॥ अतिकृष्णतारकाणामक्ष्णामुत्पाटनं भवति॥६६॥ मंत्रित्वं स्थूलदृशां श्यावाक्षाणां च भवति सौभाग्यं॥ दीना दृष्टिः स्वानां स्निग्धा विपुलार्थभोगवतां॥६७॥ अभ्युन्नताभिरल्पायुषो विशालोन्नताभिरतिसुखिनः॥ विषमभ्रुवो दरिद्रा बालेंदुनतभ्रुवः सधनाः॥६८॥ दीर्घासंसक्ताभिर्धनिनः खंडाभिरर्थपरिहीनाः॥ मध्यविनतभ्रुवो ये ते सक्ताः स्त्रीष्वगम्यासु॥६९॥ उन्नतविपुलैः शंखैर्धनिनो निम्नैः सुतार्थसंत्यक्ताः॥ विषमललाटा विधना धनवंतोऽर्धेंदुसदृशेन॥७०॥

---

नूटे समान होय तो अगम्यस्त्रीगमन कर्त्ता होय. लंबा होय तो सौभाग्यवान् आकुंचित (छोटा) होय तो चोर. चिपटा होय तो स्त्रीसे मृत्यु होता है॥६१॥ नाकका अग्र टेढा होय तो धनवान्. दक्षिण अंगमे वक्र (टेढा) होय तो बहुभक्षण करनेवाला. और क्रूर होता है सीधा. छोटे छेद. सुंदर पुट. ऐसे नाक भाग्ययुक्त पुरुषके होते है॥६२॥ धनवान् की छींक एक. दीर्घायुपुरुषकी छींक २ वा ३ आनंदकारक. सानुनाद (नादपूर्ण) अति दीर्घ. संहत (जोडा भया) ऐसा छींकका शब्द दीर्घायु पुरुषका होता है॥६३॥ नेत्र कमलपत्रके समान होय तो धनवान्. अंतमे लाल होय तो लक्ष्मीवान्. मधुवर्णसमान पिंगटवर्ण होय तो महाधन. विडालके समान होय तो पापी॥६४॥ हरिणके समान. गोल. जिह्म (कुटिल) ऐसे नेत्रके चोर. तिरछा होय तो क्रूर. हाथीके समान होय तो राजा होते है॥६५॥ गहिरे नेत्र होय तो ऐश्वर्य. नीलकमलके समान होय तो विद्यावान्. बहुत काली पुतरी होय तो नेत्रका उत्पाटन होता है॥६६॥ नेत्रमेकी पुतरी बडी होय तो प्रधान. श्याव (उदीरंग) नेत्र होय तो सौभाग्य. दीन दृष्टि होय तो निर्धन. निर्मल और विस्तीर्ण दृष्टि होय तो द्रव्यवान् और सुखी होते है॥६७॥ भौं क्रमसे ऊंची होय तो अल्पायु. विस्तीर्ण और ऊंची होय तो सुखी. विषम होय तो दरिद्री. बालचंद्रके समान होय तो धनवान्॥६८॥ दीर्घ और असंलग्न होय तो धनवान्. टूटी होय तो दरिद्री. बीचमे नम होय तो अगम्य स्त्रीके विषे आसक्त ऐसे होते हैं॥६९॥ कंठके ऊपरका शंख ऊं-

शुक्तिविशालैराचार्यता शिरासंततैरधर्मरताः ॥ उन्नतशिराभिराढ्याः स्वस्तिकवत्संस्थिताभिश्च ॥ ७१ ॥ निम्नललाटा वध बंधभागिनः क्रूरकर्मनिरताश्च ॥ अभ्युन्नतैश्च भूपाः कृपणाः स्युः संकटललाटाः ॥ ७२ ॥ रुदितमदीनमनश्रु स्निग्धं च शुभावहं मनुष्याणां ॥ रूक्षं दीनं प्रचुराश्रु चैव न शुभप्रदं पुंसां ॥ ७३ ॥ हसितं शुभदमकंपं विनिमीलितलोचनं च पापस्य ॥ हृष्टस्य हसितमसकृत्सोन्मादस्यासकृत्प्रांते ॥ ७४ ॥ तिस्रो रेखाः शतजीविनां ललाटायताः स्थिता यदि ताः ॥ चतसृभिरवनीशत्वं नवतिश्चायुः सपंचाब्दा ॥ ७५ ॥ विच्छिन्नाभिश्चागम्यगामिनो नवतिरप्यरेखेण ॥ केशांतोपगताभी रेखाभिरशीति वर्षायुः ॥ ७६ ॥ पंचभिरायुः सप्ततिरेकाग्रावस्थिताभिरपि षष्टिः ॥ बहुरेखेण शतार्धं चत्वारिंशच्च वक्राभिः ॥ ७७ ॥ त्रिंशद्भ्रूलग्नाभिर्विंशतिकश्चैव वामवक्राभिः ॥ क्षुद्राभिः स्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चांतरे कल्प्यं ॥ ७८

---

चा और विस्तीर्ण होय तो धनवान्. निम्न (नीचा) होय तो पुत्र और द्रव्य इस करके हीन होते हैं. ललाट असम होय तो निर्धन. अर्धचंद्र के समान होय तो धनवान् होते हैं. ॥ ७० ॥ सीप के समान विस्तीर्ण होय तो आचार्य. शिरा से व्याप्त होय तो अधर्मरत. ऊंचा और स्वस्तिक के समान शिरा होय तो धनवान् ॥ ७१ ॥ गहिरा होय तो वध और बंध भोग करते हैं और पापरत भी होते हैं. ऊंचा होय तो राजा होते हैं. संकट (संकुचित अल्प) ललाट होय तो कृपण (दानशील नहीं) होते हैं. ॥ ७२ ॥ दैन्यरहित अश्रु (नेत्रोदक) रहित और स्निग्ध ऐसा रोदन (रोना) मनुष्य को शुभ है. रूक्ष. दीन और बहुत नेत्रोदकयुक्त ऐसा रोदन पुरुष को अशुभकारक होता है ॥ ७३ ॥ कंपरहित हास्य (हसना) शुभ होता है. दुष्ट का हास्य आंखि मूंद के होता है. आनंद का हास्य वारंवार (बहुत) होता है. हास्य के अंत में वारंवार हास्य मद्यपानादिक से मत्त के होते हैं. ॥ ७४ ॥ ललाट पर लंबी तीन रेषा होय तो १०० वर्ष आयुष्य. चार रेषा होय तो राजा होता है. और ९५ वर्ष आयुष्य ॥ ७५ ॥ ललाट रेषा विच्छिन्न वा रेषारहित ललाट होय तो ९० वर्ष आयुष्य और अगम्य स्त्रीगमनकर्ता होता है. केशतक लंबी रेषा होय तो ८० वर्ष आयुष्य ॥ ७६ ॥ पांच रेषा होय तो ७० वर्ष आयुष्य. सर्व रेषा अंत में एकत्र मिली होय तो ६० वर्ष आ० बहुत रेषा होय तो ५० वर्ष आ० टेढी रेषा होय तो ४० वर्ष० ॥ ७७ ॥ और भौंये रेषा मिली होय तो ३० वर्ष० बाए अंग में टेढी होय तो २० वर्ष० सूक्ष्म (बहुत महीन) रेषा होय तो अल्पायुषी होते हैं. कथन किये से न्यून १।२ रेषा होय तो भी स्वल्पायु होते हैं. तीन रेषा से १०० और चार रेषा से ९५ इस्से बीच की आयुष्य की कल्पना करना ॥ ७८

परिमंडलैर्गवाढ्याश्छत्राकारैः शिरोभिरवनीशाः ॥ चिपिटैः पितृमातृ
घ्नाः करोटिशिरसां चिरान्मृत्युः ॥७९॥ घटमूर्धाध्वानरुचिर्द्विमस्त
कः पापकृद्धनैस्त्यक्तः ॥ निम्नंतु शिरो महतां बहुनिम्नमनर्थदं भवति
॥८०॥ एकैकभवैः स्निग्धैः कृष्णैराकुंचितैरभिन्नाग्रैः ॥ मृदुभिर्न चाति
बहुभिः केशैः सुखभाग्नरेंद्रो वा ॥८१॥ बहुमूलविषमकपिलाः स्थूल
स्फुटिताग्रपरुषह्रस्वाश्च ॥ अतिकुटिलाश्चातिघनाश्च मूर्धजा वि
त्तहीनानां ॥८२॥ यद्यद्गात्रं रूक्षं मांसविहीनं शिरावनद्धं च ॥ तत्तद
निष्टं प्रोक्तं विपरीतमतः शुभं प्रोक्तं ॥८३॥ त्रिषु विपुलो गंभीरस्त्रि
ष्वेव षडुन्नतश्चतुर्ह्रस्वः ॥ सप्तसु रक्तो राजा पंचसु दीर्घश्च सूक्ष्मश्च
॥८४॥ नाभिः स्वरः सत्त्वमिति प्रदिष्टं गंभीरमेतत्त्रितयं नराणां ॥ उरो
ललाटं वदनं च पुंसां विस्तीर्णमेतत्त्रितयं प्रशस्तं ॥८५॥ वक्षोऽथ कक्षा
नखनासिकास्यं कृकाटिका चेति षडुन्नतानि ॥ ह्रस्वानि चत्वारि च
लिंगपृष्ठं ग्रीवा च जंघे च हितप्रदानि ॥८६॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

परिमंडल (गोल) मस्तक होयतो गौसे युक्त होते हैं· छत्राकार (ऊपर बडा) मस्तक
होयतो राजा होते हैं चिपटा मस्तक होयतो पिता माता का नाश करते हैं· करोटी (टो
पी·पगडी के) समान मस्तक होयतो चिरायुषी होते हैं ॥७९॥ घट (कुंभ) सदृश म
स्तक होयतो अध्वानरुचि (मार्गगमनप्रीति) होते हैं दो मस्तक पापकर्त्ता और
निर्धन होते हैं· निम्न (गहिरा) मस्तक होयतो श्रेष्ठ होते हैं· बहुत गहिरा मस्तक
होयतो दुःखी होते हैं ॥८०॥ एक एक रोमछिद्रमे एक एक· स्निग्ध· कृष्णवर्ण अ
ग्रमे दो तीन शाखा फूटी नही· मृदु· बहुत नही· ऐसे केश रहते सुखी अथवा
राजा होते हैं ॥८१॥ एक रोम रंध्रमे बहुत कुछ छोटे और कुछ लंबे· कपिल वर्ण·
मोटे· फूटे अग्र· रूक्ष छोटे· बहुत टेढे· बहुत घन· ऐसे केश रहते दरिद्री होते हैं·
॥८२॥ जो जो शरीर के अवयव रूक्ष· मांसहीन· शिरायुक्त· वह वह अशुभ होते हैं·
इससे विपरीत कहिये स्निग्ध· मांसयुक्त· शिरारहित अवयव वह शुभ कथन किया
॥८३॥ तीन स्थानमे विस्तीर्ण· तीन स्थानमे गंभीर (गहीरा) छ स्थानमे ऊंचा· चार
स्थानमे ह्रस्व· सात स्थानमे लाल· पांच स्थानमे लंबा· पांच स्थानमे सूक्ष्म (महीन)
ऐसा जो पुरुष वह राजा होता है इसका विस्तार आगे है ॥८४॥ नाभि स्वर· धैर्य· यह
३ मनुष्य के गंभीर होय· उर· ललाट· मुख· यह विस्तीर्ण होयतो पुरुष को शुभ होता
है ॥८५॥ वक्षस्थल· कांख· नख· नाक· मुख· कंठका पृष्ठभाग· यह ६ ऊंचा शुभ होते
हैं· लिंग· पीठ· कंठ· जंघा (पेडुरी) यह ४ ह्रस्व हितकारक होते हैं ॥८६॥ ॥ ॥

नेत्रांतपादकरताल्वधरोष्ठजिह्वा रक्ता नखाश्च खलु सप्तसुखावहा
नि॥ सूक्ष्माणि पंच दशनांगुलिपर्वकेशाः सार्कं त्वचा कररुहाश्च न दुः
खितानां॥८७॥ हनुलोचनबाहुनासिकाः स्तनयोरंतरमत्र पंचमं॥ इति
दीर्घमिदं तु पंचकं न भवत्येव नृणामभूभृतां॥८८॥ इति क्षेत्रं॥ छायाशु
भाशुभफलानि निवेदयंती लक्ष्या मनुष्यपशुपक्षिषु लक्षणज्ञैः॥ तेजो
गुणान्बहिरपि प्रविकाशयंती दीपप्रभा स्फटिकरत्नघटस्थितेव॥८९
स्निग्धद्विजत्वङ्नखरोमकेशच्छाया सुगंधा च महीसमुत्था॥ तुष्ट्यर्थला
भाभ्युदयान्करोति धर्मस्य चाहन्यहनि प्रवृत्तिं॥९०॥ स्निग्धा सिता च्छ
हरितानयनाभिरामा सौभाग्यमार्दवसुखाभ्युदयान्करोति॥ सर्वार्थ
सिद्धजननी जननीव चाप्या छायाफलं तनुभृतां शुभमादधाति॥९१॥
चंडा धृष्या पद्महेमाग्निवर्णा युक्ता तेजोविक्रमैः सप्रतापैः॥ आग्नेयीति
प्राणिनां स्याज्जयाय क्षिप्रं सिद्धिं वांछितार्थस्य धत्ते॥९२॥ मलिनपरुषकृ
ष्णा पापगंधानिलोत्था जनयति वधबंधव्याध्यनर्थार्थनाशान्॥ स्फटिकसदृ
शरूपा भाग्ययुक्तात्युदारा निधिरिव गगनोत्था श्रेयसां स्वच्छवर्णा॥९३

---

नेत्रप्रांत॰ पाद॰ कर॰ तालु अधरोष्ठ जिह्वा॰ नख॰ यह ७ आरक्त॰ सुखकारक होतेहै॰ दां
त॰ अंगुलिकेपर्व॰ केश॰ त्वचा॰ नख यह पांच सूक्ष्महोयतो दुःखीहोते नही॥८७॥
ठुडी॰ नेत्र॰ बाहु॰ नाक दोस्तनके मध्यका अंतर॰ यह ५ राजाके विना लंबा होता नही
॥८८॥ इतिक्षेत्रं॥ शुभाशुभफलकहनेवाली ऐसी छाया॰ लक्षणज्ञपुरुषने मनु
ष्य॰ पशु॰ पक्षी॰ इनके विषे देखना॰ स्फटिकरत्नके घटमे रखी दीपकांति जैसे बाह
र प्रकाश करती है॰ तैसे शरीरस्थ छाया॰ बाहरके तेजके गुणको प्रगट करती है॰॥८९
भूमिसमुत्थ छाया (शरीरकांति) होयतो मनुष्यके दंत॰ त्वचा॰ नख॰ शरीरपरके केश॰ मस्तकपरके के
श॰ यह सर्व स्निग्ध होतेहै॰ और शरीरकांति सुगंध होतीहै॰ वह छाया तुष्टि॰ अर्थला
भ॰ अभ्युदय और दिनदिनके विषे धर्मकी प्रवृत्ती करतीहै॰॥९०॥ स्निग्ध॰ श्वेत॰ स्व
च्छ॰ हरिद्वर्ण॰ नेत्रको सौख्यकारक ऐसी छाया सौभाग्य॰ मृदुत्व॰ सुख॰ अभ्युदय॰
इनको करतीहै॰ और सर्वकार्यकी सिद्धिकारक॰ माताके समान वह छाया प्राणी
को शुभफलदायक होतीहै॥९१॥ चंड (क्रोध) अधृष्य (असह्य) कमल॰ सुवर्ण औ
र अग्नि इनके समान रंगकी तेज॰ पराक्रम॰ शौर्य॰ इनसे युक्त ऐसी (अग्निसंबंधी)
छाया प्राणीको जय॰ इच्छितार्थकी शीघ्र सिद्धि करती है॰॥९२॥ मलिन॰ परुष (रू
क्ष) कृष्णवर्ण॰ दुर्गंध ऐसी वायुसंज्ञ छाया वध॰ बंध॰ व्याधि॰ अनर्थ॰ द्रव्यनाश
यह करतीहै॰ स्फटिकसमान स्वच्छ भाग्ययुक्त॰ बहुत उदार॰ निधीसमान सर्व

छायाः क्रमेण कुजलाग्निनिलांबरोत्थाः केचिद्वदंति दशनाम्नपथा नुपूर्व्या॥ सूर्याग्निनाभपुरुहूतयमोडुपानांतुल्यास्तुलक्षणफलै रितितत्समासः॥९४॥ इतिछाया॥ मृजा॥ करिवृषरथौघभेरीमृदंगसिंहाब्दनिःस्वनाभूपाः॥ गर्दभजर्जररूक्षस्वराश्चधनसौख्यसंत्यक्ताः॥९५॥ इतिस्वरः॥ सप्तभवंतिचसारामेदोमज्जात्वगस्थिशुक्राणि॥ रुधिरंमांसंचेतिप्राणभृतांतत्समासफलं॥९६॥ ताल्वोष्ठदंतपाली जिह्वानेत्रांतपायुकरचरणैः॥ रक्तैस्तुरक्तसाराबहुसुखवनितार्थपुत्रयुताः॥९७॥ स्निग्धत्वक्काधनिनोमृदुभिःसुभगाविचक्षणास्तनुभिः॥ मज्जामेदःसाराःसुशरीराःपुत्रवित्तयुताः॥९८॥ स्थूलास्थिरस्थिसारोबलवान्विद्यांतगःसुरूपश्च॥ बहुगुरुशुक्राःसुभगाविद्वांसोरूपवंतश्च॥९९॥ उपचितदेहोविद्वान्धनीसुरूपश्चमांससारोयः॥ संघातइतिचसंश्लिष्टसंधितासुखभुजोज्ञेया॥१००॥ छ॥

---

अर्थदेनेवाली स्वच्छवर्णऐसीआकाशोत्पन्नछायाहोतीहै॥९३॥ यह पूर्वोक्तछाया क्रमसे पृथ्वी जल अग्नि वायु आकाश यह पंचमहाभूतसे उत्पन्न भईसोकथन किया कोईगर्गादिऋषि यह पांच और सूर्य विष्णु इन्द्र यम चंद्र इनकी ५ मिलके दसछायाऐसेकहतेहैं परंतुसूर्यऔर अग्नि विष्णुऔरआकाश इन्द्रऔरपृथ्वी यमऔरवायु चंद्रऔरजल यह दोनोदोनोकेलक्षणऔरफल इसकरकेसमानत्व है इसवास्तेहमनेइहांउनकापांचमेंही संक्षेपकियाहै॥९४॥ इतिछाया॥ मृजा॥ गज वृषभ रथसमूह दुंदुभि मृदंग सिंह मेघ इनकेसमान जिनकाशब्द वहराजा होतेहैं गर्दभ विकारयुक्त कठोर वाकर्कश जिनकास्वर वहद्रव्यऔर सौख्य इसकरके त्यक्त कहियेदरिद्री औरदुःखीहोतेहैं॥९५॥ इतिस्वरः॥ मेद(हाडकेमध्यकास्नेह भाग) कपालमेकीचरबी त्वचा हाड रेत रक्त मांस यह ७ प्राणीकेसार(मजबूत)होतेहैं उस्केसंक्षेपसेफलकहतेहैं॥९६॥ तालु ओष्ठ दंतकीमांसपंक्ती जिह्वा नेत्रप्रांत गुद हस्त पाद यहलालहोयतो वहरक्तसार पुरुष बहुतसुख स्त्री द्रव्य पुत्र इसकरकेयुक्तहोतेहैं॥९७॥ त्वचा स्निग्धहोयतो धनवान् मृदुहोयतोभाग्यवान् तनु(सूक्ष्म) त्वचाहोयतोपंडितहोतेहै मज्जा औरमेद बलिष्टहोयतोउत्तमशरीर पुत्र द्रव्य इसकरकेयुक्तहोतेहैं॥९८॥ स्थूल हाड जिनके वह अस्थिसार बलवान् विद्वान् सुरूप होताहै बहुत औरघनरेत जिनके वहसुभग विद्वान् रूपवान्ऐसेहोतेहैं॥९९॥ जोमांससार वहस्थूलशरीर विद्वान धनवान् सुरूपहोताहै इतिसारः सर्वांगके संधीकेविषे सुश्लिष्टत्व कहिये जोड उत्तम मजबूत मिले

स्नेहः पंचसु लक्ष्यो वाग्जिह्वादंतनेत्रनखसंस्थः ॥ सुतधनसौभाग्ययुताः स्निग्धैस्तैर्निर्धना रूक्षैः ॥१०१॥ इति स्नेहः ॥ द्युतिमान्वर्णः स्निग्धः क्षितिपानां मध्यमः सुतार्थवतां ॥ रूक्षो धनहीनानां शुद्धः शुभदो न संकीर्णः ॥१०२॥ इति वर्णः ॥ साध्यमनूकं वक्त्राद्गोवृषशार्दूलसिंहगरुडमुखाः ॥ अप्रतिहतप्रतापा जितरिपवो मानवेंद्राश्च ॥१०३॥ वानरमहिषवराहाजतुल्यवदनाः सुतार्थसुखभाजः ॥ गर्दभकरभप्रतिमैर्मुखैः शरीरैश्च निःस्वसुखाः ॥१०४॥ इति अनूकं ॥ (पूर्वजन्म) ॥ अष्टशतं षण्णवतिः परिमाणं चतुरशीतिरिति पुंसां ॥ उत्तमसमहीनानामंगुलसंख्या स्वमानेन ॥१०५॥ इत्युन्मानं ॥ भारार्धतनुः सुखभाक् तुलितोऽतो दुःखभाग्भवत्यूनः ॥ भारोऽतीवाढ्यानामध्यर्धः सर्वधरणीशः ॥१०६॥ विंशतिवर्षा नारी पुरुषः खलु पंचविंशतिभिरब्दैः ॥ अर्हति मानोन्मानं जीवितभागे चतुर्थे वा ॥१०७॥ भूजलशिख्यनिलांबरसुरनररक्षःपिशाचकतिरश्चां ॥ सत्त्वेन भवति पुरुषो लक्षणमेतद्भवत्येषां ॥ १०८

---

होय तो संहति होती है वह जिस पुरुष के होय वह सुखी जानना ॥१००॥ इति संहतिः ॥ वाणी॰ जिह्वा॰ दंत॰ नेत्र॰ नख॰ यह पांच स्थान मे स्नेह देखना यह ५ स्निग्ध होय तो पुत्र॰ धन॰ सौभाग्य॰ इस कर के युक्त होते हैं यही ५ रूक्ष होय तो दरिद्री होते हैं ॥१०१॥ इति स्नेहः ॥ राजों का वर्ण तेजस्वी और स्निग्ध होता है॰ पुत्र और द्रव्य इसे युक्त का वर्ण मध्यम (किंचित् स्निग्ध और किंचित् रूक्ष) होता है दरिद्री का वर्ण रूक्ष होता है॰ शुद्ध वर्ण शुभ और मिश्रित वर्ण अशुभ होता है ॥१०२॥ इति वर्णः ॥ मुख पर से पूर्वजन्म शुभाशुभ इसकी कल्पना करना॰ गो॰ वृषभ॰ वाघ॰ सिंह॰ गरुड इन के समान जिन के मुख वह अतिसामर्थ्य॰ जितशत्रु राजा होते हैं ॥१०३॥ वानर॰ महिष॰ सुवर॰ बकरा॰ इन के समान जिन के मुख वह पुत्रवान्॰ धनवान्॰ सुखी होते हैं॰ गर्दभ॰ ऊंट इन के समान जिन के मुख और शरीर वह दरिद्री और दुःखी होते हैं ॥१०४॥ इति अनूकं ॥ (पूर्वजन्म) १०८।९६।८४ अंगुल (उसके हाथ के) क्रम से उत्तम॰ मध्यम॰ कनिष्ठ॰ पुरुष के उंचाई के परिमाण जानना ॥५॥ इत्युन्मान ॥ मनुष्य तौलने से जो १००० पल वजन होय वह सुखी होते हैं॰ इसे कम तो दुःखी होते हैं॰ भार कहिये २००० पल वजन अति धनवान् होते हैं॰ ३००० पल वजन सार्वभौम राजा होते हैं॰ (४ तोले का १ पल २ हजार पल का १ भार ऐसा जानना॰ इहां ८० गुंजा का तोला लेना॰) ॥१०६॥ स्त्री बीसवे वर्ष मे और पुरुष पचीसवे वर्ष मे मान कहिये वजन और उन्मान कहिये ऊंचाई इसको योग्य होते हैं॰ अथवा १०० वर्ष के भीतर आयुष्य का निश्चय होय तो उ

महीस्वभावः शुभपुष्पगंधः संभोगवान्सुखसनः स्थिरश्च॥ तोय
स्वभावो बहुतोयपायी प्रियाभिलाषी रसभोजनश्च॥१०९॥ अग्निप्र
कृत्याचपलोतितीक्ष्णश्चंडः क्षुधालुर्बहुभोजनश्च॥ वायोः स्वभा
वेनचलः कृशश्च क्षिप्रंचकोपस्यवशंप्रयाति॥११०॥ स्वप्रकृतिर्नि
पुणोविवृतास्यः शब्दगतेः कुशलः सुषिरांगः॥ त्यागयुतः पुरुषोमृ
दुकोपः स्नेहरतश्चभवेत्सुरसत्वः॥१११॥ मर्त्यसत्वसंयुतोगीत
भूषणप्रियः॥ संविभागशीलवान्नित्यमेवमानवः॥११२॥ तीक्ष्ण
प्रकोपः खलचेष्टितश्च पापश्चसत्वेन निशाचराणां॥ पिशाचसत्व
श्चपलोमलाक्तो बहुप्रलापीचसमुल्वणांगः॥११३॥ भीरुः क्षुधा
लुर्बहुभुक्चयः स्यात्ज्ञेयः ससत्वेननरस्तिरश्चां॥ एवंनराणांप्रकृ
तिः प्रदिष्टायल्लक्षणज्ञाः प्रवदंतिसत्वं॥११४॥ इतिप्रकृतिः॥ शार्दू
लहंससमदद्विपगोपतीनांतुल्याभवंतिगतिभिः शिखिनांचभूपाः॥ ये
षांचशब्दरहितंस्तिमितंचयातंतेपीश्वराद्रुतपरिप्लुतगादरिद्राः॥११५

स्के चतुर्थभागमे मानोन्मानको योग्यहोते है॥१०७॥ इतिमानं॥ भूमि॰जल॰अग्नि॰वा
यु॰आकाश॰देव॰मनुष्य॰राक्षस॰पिशाच॰पशुपक्षि इनके सत्वसे कहिये प्रकृती
से पुरुष होते है उनके यह आगे कथित लक्षणजानना॥१०८॥ चंपकादि शुभ पुष्पस
मान है गंध जिनका ऐसा भोगशील॰सुंदर है वायु जिनका ऐसा पुरुष भूमिप्रकृति हो
ता है॰बहुत जलपान करनेवाला॰अनुकूल भाषण करनेवाला॰मधुरादि रसयुक्त भोजन करनेवा
ला ऐसा पुरुष जलप्रकृती होता है॥१०९॥ अग्निप्रकृतिकरके चपल अतितीक्ष्ण॰क्रूर॰क्षुधातु
र॰बहुत भोजन करनेवाला ऐसा पुरुष होता है वायुप्रकृतीसे चंचल॰कृश॰शीघ्रकोपी ऐसा पुरुष
होता है॥११०॥ सर्वकालमे निपुण प्रसन्नमुख॰शास्त्रगायनादिकमे कुशल॰सुषिर॰(पोला) शरी
ऐसा पुरुष आकाशप्रकृती होता है दानशील॰अल्पकोपी॰स्नेहयुक्त ऐसा पुरुष दे
वप्रकृति होता है॥१११॥ मनुष्यप्रकृतियुक्त पुरुष गायन और भूषण (अलंकार) इ
नके विषे प्रीतियुक्त उत्तम विभाग और चरित्र इसे युक्त ऐसा नित्य होता है॥११२॥
अत्यंत क्रोधी॰दुर्जनके समान व्यापार करनेवाला॰पापरत॰ऐसा राक्षसप्रकृती पुरुष होता
है॰चंचल॰मलयुक्त॰बहुत बडबड करनेवाला॰स्थूलशरीर ऐसा पिशाचप्रकृती पुरुष
होता है॥११३॥ भयार्त॰क्षुधार्त॰बहुत खानेवाला॰ऐसा पशुपक्षीके प्रकृतीयुक्त पुरुष
होता है॰इसप्रकारसे पुरुषकी प्रकृति कथन किया ऐसा प्रकृति लक्षण जाननेवाले प्रकृ
तिकहते है॥११४॥ इतिप्रकृतिः॥ व्याघ्र॰हंस॰उन्मत्तगज॰वृषभ॰मयूर॰इनके समान ग
मन करनेवाले पुरुष राजा होते है॰जिनके गमन शब्दरहित और मंद वह भी धनवान्

द्रुतिगतिः॥श्रांतस्य यानमशनं च बुभुक्षितस्य पानं तृषापरि[illegible]स्य भयेषु रक्षा॥एतानि यस्य पुरुषस्य भवंति काले धन्यं वदंति खलु तं नरलक्षणज्ञाः॥११६॥पुरुषलक्षणमुक्तमिदं मया मुनिमतान्यवलोक्य समासतः॥ इदमधीत्य नरो नृपसंमतो भवति सर्वजनस्य च वल्लभः॥११७॥ ॥इति पुरुषलक्षणम्॥ ॥अथ पंचमहापुरुषलक्षणं॥ताराग्रहैर्बलयुतैः स्वक्षेत्रस्वोच्चगैश्चतुष्टयगैः॥पंच पुरुषाः प्रशस्ता जायंते तानहं वक्ष्ये॥१॥जीवेन भवति हंसः सौरेण शशः कुजेन रुचकश्च॥भद्रो बुधेन बलिना मालव्यो दैत्यपूज्येन॥२॥सत्वमहीनं सूर्याच्छरीरं मानसं च चंद्रबलात्॥यद्राशिभेदयुक्तावेतौ तल्लक्षणः स पुमान्॥३॥तद्धातुमहाभूतप्रकृतिद्युतिवर्णसत्वरूपाद्यैः॥अबलरवींदुयुतैस्तैः संकीर्णा लक्षणैः पुरुषाः॥४॥भौमात्सत्वं गुरुता बुधात्सुरेज्यात्स्वरः सितात्स्नेहः॥वर्णः सौरादेषां गुणदोषैः साध्वसाधुत्वं॥५॥

---

होतेहैं द्रुत(जलदी) और ठहरके जो गमन करतेहैं वह दरिद्री होतेहैं॥११५॥ इतिगतिः॥श्रांत कहिये थकारहते वाहन भूखलगी रहते खानेको तृषालगी रहते जलपीनेको भयप्राप्तीमे रक्षणकर्ता यह जिस पुरुषको यथाकालमे मिलताहै वह पुरुषको पुरुषलक्षणजाननेवाले धन्य(शुभलक्षण)ऐसा कहतेहैं॥११६॥ ऋषीके मत देखके संक्षेपसे हमयह पुरुषलक्षणकथनकिया यह पठनकरके मनुष्य राजाको मान्य और सर्वलोकको प्रिय ऐसा होताहै॥११७॥ ॥इति बृहत्संहितायां पुरुषलक्षणं नामाष्टषष्टितमोध्यायः॥६८॥अथ पंचमहापुरुषलक्षणं॥ भौमादि पांच ग्रह बलवान स्वगृहमे स्वोच्चमे केंद्रमे होयतो पांच पुरुष उत्तम होते हैं वह कहतेहैं॥१॥ पूर्वोक्त स्थानमे बृहस्पति बलवान् होयतो हंससंज्ञक पुरुष होताहै शनि होयतो शशसंज्ञक भौम होयतो रुचकसंज्ञक बुध होयतो भद्रसंज्ञक शुक्र होयतो मालव्यसंज्ञक पुरुष होताहै॥२॥सूर्य बलवान् होयतो सत्वादिगुणपरिपूर्ण होतेहैं देहगुण और मानसगुण चंद्रबलसे होतेहैं जिस राशीके होराद्रेष्काणादि भेदयुक्त सूर्य चंद्र होय वह राशिभेदस्वामीके लक्षणका वह पुरुष होताहै॥३॥वह स्वामीके रसाद्यादि धातु महाभूतोकी प्रकृति (महीस्वभाव इत्यादि अ॰ ६८ श्लो॰ १०९।११७) कांति (अ॰ ६८ श्लो॰ ९९) वर्ण सत्व रूपादिकसे समान होतेहैं (जन्मकालमे सबल सूर्य चंद्र जिस ग्रहके गृहहोरादि षड्वर्गमे होय वह ग्रह के धात्वादि प्रकृतीयुक्त पुरुष होताहै) जन्मकालमे निर्बल सूर्य चंद्र युक्त ग्रह होरादि षड्वर्गमे होय तो लक्षणसे संकीर्ण(मिश्र) होतेहैं॥४॥सत्व(धैर्य) भौमसे होताहै शरीरका गुरुत्व बुधसे शब्द गुरुसे स्नेह

संकीर्णाःस्युर्नन्रृपादशासुतेषांभवंतिसुखभाजः॥रिपुगृहनीचोच्च
च्युतसत्पापनिरीक्षणेभेदः॥६॥षण्णवतिरंगुलानांव्यायामोदीर्घ
ताचहंसस्य॥शशरुचकभद्रमालव्यसंज्ञितास्त्र्यंगुलविवृद्ध्या॥७
॥षःसात्विकस्तस्यदयास्थिरत्वंसत्वार्जवंब्राह्मणदेवभक्तिः॥रजो
धिकःकाव्यकलाक्रतुस्त्रीसंसक्तचित्तःपुरुषोतिशूरः॥८॥तमोधि
कोवंचयितापरेषांमूर्खोलसःक्रोधपरोतिनिद्रः॥मिश्रैर्गुणैःसत्वर
जस्तमोभिर्मिश्रास्तुतेसप्तसहप्रभेदैः॥९॥मालव्योनागनासासम
भुजयुगलोजानुसंप्राप्तहस्तोमांसैःपूर्णांगसंधिःसमरुचिरतनु
र्मध्यभागेकृशश्च॥पंचाष्टौचोर्ध्वमास्यंश्रुतिविवरमपित्र्यंगुलोनंच
तिर्यक्दीप्ताक्षंसत्कपोलंसमसिततदशनंनातिमांसाधरोष्ठं॥१०॥
मालवान्सभरुकच्छसुराष्ट्रान्लाटसिंधुविषयप्रभृतींश्च॥विक्रमा
र्जितधनोवनिराजापारियात्रनिलयःकृतबुद्धिः॥११॥ ॥ ॥ ॥

---

(निर्मलत्व) शुक्रसे॰ बर्णशनैश्चरसे॰ यहहोतेहै॰ यहग्रहोंके॰ सबलत्वसे उत्तम और निर्ब
लत्वसे अशुभऐसाहोताहै ॥५॥ संकीर्ण (मिश्र) जो वह राजाहोतेनही॰ वहग्रहके
दशामे सुखी होतेहै॰ शत्रुगृह॰ नीच॰ उच्चइसेच्युतजोशुभऔरपापग्रह इनकेदृष्टी
से वह पुरुषका भेद कहियेसुखदुःखादि मिश्रत्वहोताहै ॥६॥ हंससंज्ञकपुरुषकी
(बाहूकी) लंबाई ९६ अंगुल और उंचाई भी ९६ अंगुल होतीहै॰ शश॰ रुचक॰ भद्र॰ मा
लव्य संज्ञकपुरुषकी चौडई और उंचाई तीनतीन अंगुल क्रमसे अधिकजानना॰ क
हिये ९९ शश १०२ रुचक॰ १०५ भद्र॰ १०८ मालव्य ऐसाजानना॥७॥ सत्वगुणाधिक ऐसे
पुरुषको दया॰ स्थिरचित्त॰ सत्यभाषण॰ सरलस्वभाव॰ ब्राह्मणऔरदेवता इनकी
भक्ती यहगुणहोतेहै॰ रजोगुण अधिकहोयतो काव्यनृत्यगीतादिकला॰ यज्ञ स्त्री
इनकेविषे आसक्तचित्त और अतिशूर ऐसे होतेहै ॥८॥ तमोगुण अधिकहोयतो
लोकको ठगाना॰ मूर्ख॰ आलसी॰ क्रोधी॰ अतिनिद्रा॰ ऐसेगुण होतेहै॰ सत्वरजतम यह
तीनोही गुणमिश्रितहोयतो पूर्वोक्तस्वभावमिश्र होतेहै उनके भेद सात होतेहै (१ सत्व॰
२ रज॰ ३ तम॰ ४ सत्वरज॰ ५ रजतम॰ ६ सत्वतम॰ ७ सत्वरजतम॰ ऐसे सातप्रकार राशिभे
दके वास्ते और संकीर्णके वास्ते होतेहै) ॥९॥ हाथीके सुंडासमान बाहु दूव-जानूतक लं
बाहस्त॰ मांससे परिपूर्ण अंगकी संधी॰ सम और तेजस्वी शरीर मध्यभागमे कृश॰ हनू
सेललाटतक १३ अंगुलमुख॰ कर्णछिद्र तिरछा त्र्यंगुलोन (तीन अंगुल कमती) कहिये
हनूसे कर्णविवर १० अंगुल॰ स्वच्छनेत्र॰ सुंदरगाल॰ समान और श्वेतदंत॰ बहुतबड़ा न
हीं ऐसाअधरोष्ठ॰ ऐसा मालव्यसंज्ञक पुरुष होताहै ॥१०॥ सुंदरबुद्धि॰ पारियात्र पर्वतपर

सप्ततिवर्षो मालव्योऽयं त्यक्ष्यति सम्यक् प्राणांस्तीर्थे॥ लक्षणमेतत्स
म्यक्प्रोक्तं शेषनराणां चातो वक्ष्ये॥१२॥ उपचितसमवृत्तलंब बाहु
र्भुजयुगलप्रमितः समुच्छ्रयोऽस्य॥ मृदुतनुघनरोमनद्धगंडो भवति
नरः खलु लक्षणेन भद्रः॥१३॥ त्वक्शुक्रसारः पृथुपीनवक्षाः सत्वाधि
कोव्याघ्रमुखः स्थिरश्च॥ क्षमान्वितो धर्मपरः कृतज्ञो गजेंद्रगामी
बहुशास्त्रवेत्ता॥१४॥ प्राज्ञो वपुष्मान् सुललाट शंखः कलास्वभिज्ञो
धृतिमान्सुकुक्षिः॥ सरोजगर्भद्युतिपाणिपादो योगी सुनासः समसं
हतभ्रूः॥१५॥ नवांबुसिक्तावनिपत्रकुंकुमद्विपेंद्रदानागुरुतुल्यगं
धता॥ शिरोरुहाश्चैकज कृष्णकुंचितास्तुरंगनागोपमगूढगुह्यता॥
॥१६॥ हलमुसलगदासिशंखचक्रद्विपमकराब्जरथांकितांघ्रिह
स्तः॥ विभवमपि जनोऽस्य वोभुजीति क्षमति हि न स्वजनं स्वतंत्रबुद्धिः
॥१७॥

---

रहनेवाला· स्वपराक्रमसे संपादित द्रव्य· ऐसा मालव्यसंज्ञक पुरुष· राजा होयके मालव
भरु· कच्छ· सुराष्ट्र· लाट· सिंधुदेश इत्यादिकको रक्षण करता है॥११॥ ७० वर्षका य
ह मालव्य तप करके पुण्यभूमीके विषे प्राण छोडेगा· यह उत्तम प्रकारका मालव्य पुरु
षका लक्षण कथन किया· भद्रादि पुरुषके लक्षण आगे कहते हैं॥१२॥ पुष्ट· सम·
गोल· लंबे ऐसे हैं बाहु जिस्के· दो भुज प्रमित है उंचाई जिस्की· मृदु· सूक्ष्म· घन·
ऐसे रोमसे (शरीर परके केशसे) युक्त है गाल जिस्के ऐसा पुरुष भद्रसंज्ञक होता है
॥१३॥ त्वचा बलिष्ठ· शुक्र बहुत· विस्तीर्ण और पुष्ट वक्षस्थल· सत्वगुणाधिक· व्या
घ्रसमान मुख· स्थिरबुद्धि· दयायुक्त· धर्मरत· उपकार जाननेवाला· मंदगति· बहु
त शास्त्र जाननेवाला॥१४॥ ज्ञानी· दृढदेह· उत्तम है ललाट और शंख जिनके· नृत्या
दि कला जाननेवाला· धैर्यवान्· उत्तम कुक्षि जिस्की· कमलके गर्भसमान तेजस्वी हा
थ और पांव जिनके· योगाभ्यासी· सुंदर नाक· समान और मिली भौं जिस्की· ऐसा भ
द्र पुरुष होता है॥१५॥ नवीन जलसे सिंचित भूमि· तमालपत्र· कुंकुम (रोरी)· हा
थीका मदोदक· धूप· इन्के समान गंध· एक रोमरंध्रमे एकरोम ऐसे· कृष्ण· आकुं
चित है केश जिस्के· घोडा और हाथी इनके समान है गुप्त लिंग जिस्का ऐसा भद्र पुरु
ष होता है॥१६॥ हल· मूसल· गदा· तलवार· शंख· चक्र· हाथी· मगर· कमल· रथ·
इन्के समान रेखासे युक्त है पांव और हाथ जिस्के· ऐश्वर्य (संपत्ति) लोक उप
योग करते हैं· स्वजनकी क्षमा करते नही· स्वाधीन है बुद्धि जिसकी· ऐसा भद्र पुरु
ष होता है॥१७॥ ६ अंगुल कमती ९० अंगुल कहिये ८४ अंगुल ऊंचा· दो हजार १
० तोल· ऐसा भद्रसंज्ञक पुरुष मध्यदेशका राजा होता है· जो वही पुरुष १०८ अंगु

अंगुलानि नवतिश्च षडूनान्युच्छ्रयेण तुलयापि च भारः॥ मध्यदेश
नृपतिर्यदि पुष्टास्त्र्यादयोऽस्य सकलावनिनाथः॥१८॥ भुक्त्वा सम्य
ग्वसुधां शौर्येणोपार्जितामशीत्यब्दः॥ तीर्थे प्राणांस्त्यक्त्वा भद्रो दे
वालयं याति॥१९॥ ईषद्दंतुरकस्तनुद्विजनखः कोशेक्षणः शीघ्रगो
विद्याधातुवणिक्क्रियासु निरतः संपूर्णगंडः शठः॥ सेनानीः प्रियमै
थुनः परजनस्त्रीसक्तचित्तश्चलः शूरो मातृहितो वनाचलनदीदु
र्गेषु सक्तः शशः॥२०॥ दीर्घांगुलानां शतमष्टहीनं साशंकचेष्टः पर
रंध्रवित्त्व॥ सारोऽस्य मज्जा निभृतप्रचारः शशो ह्ययं नातिगुरुः प्रदिष्टः
॥२१॥ मध्ये कृशः खेटकखड्गवीणापर्यंकमालामुरजानुरूपाः॥
शूलोपमाश्चोर्ध्वगताश्च रेखाः शशस्य पादोपगताः करे वा॥२२॥ प्रा
त्यंतिको मांडलिकोऽथवायं स्फिक्स्राव शूलाभिभवार्तमूर्तिः॥ एवं
शशः सप्ततिहायनोऽयं वैवस्वतस्यालयमभ्युपैति॥२३॥ रक्तपीनक
पोलमुन्नतनसं वक्त्रं सुवर्णोपमं वृत्तं चास्य शिरोऽक्षिणी मधुनिभे सर्वे
च रक्ता नखाः॥ स्रग्दामांकुशशंखमत्स्ययुगलक्रत्वंगकुंभांबुजै
श्चिन्हैर्हंसकलस्वनः सुचरणो हंसः प्रसन्नेंद्रियः॥२४॥ छ॥ ॥

लऊंचा होय तो सर्व पृथ्वीका राजा होगा (सातवे श्लोकमे त्र्यादिपुष्ट कथन कियाहै व
ही प्रमाणसे॥१८॥ पराक्रमसे प्राप्त किये पृथ्वीका उपभोग करके ८० वर्षके अनंतर पु
ण्यक्षेत्रमे प्राणत्याग करके भद्रसंज्ञक महापुरुष स्वर्गको जाता है॥१९॥ थोडे ऊंचे
दंतका सूक्ष्म दंत और नखका नेत्रकी पानी अधिक जिस्की शीघ्रगामी शब्द विद्या
गैरिकादि धातु क्रयविक्रयादि व्यापार इन्के विषे तत्पर पुष्टगाल परकार्य विमुख
सेनापति मैथुनप्रिय लोकके स्त्रीके विषे आसक्त चंचलबुद्धि युद्धशूर मातृभक्त
वन पर्वत नदी किल्ला इनके विषे आसक्तचित्त ऐसा शशसंज्ञक महापुरुष होता है
॥२०॥ यह शशसंज्ञक ९२ अंगुल ऊंचा शंकायुक्त व्यापार कर्त्ता शत्रूका छिद्र जाननेवा
ला मज्जासार स्थिरप्रचार (चंचल नही) बहुत स्थूल नही ऐसा होता है॥२१॥ मध्य
भागमे कृश ढाल तरवार वीणा मंचक माला मृदंग इन्के समान और शूलके समा
न ऊर्ध्वगत रेषा पांव पर वा हाथ पर ऐसा पुरुष शश संज्ञक होता है॥२२॥ शश गुहावा
सी लोकका राजा वा मांडलिक राजा होता है कुल्हेका स्राव और शूलरोगके पीडासे
पीडित शरीर ऐसा ७० वर्षसे मरता है॥२३॥ आरक्त पुष्टगाल ऊंचा नाक सुवर्णके समा
न मुख गोल मस्तक मधुवर्ण नेत्र सर्व नख लाल माला अंकुश शंख मत्स्य द्वय पलंग
(वेदीस्तुवादि) कुंभ कमल यह चिन्हसे चिन्हित हंसके समान मधुरशब्द सुंदर पांव

रतिरंभसि शुक्रसारता द्विगुणा चाष्टशतैः पलैर्मितिः॥ परिमाणमथास्य
षड्युता नवतिः संपरिकीर्तिता बुधैः॥२५॥ भुनक्ति हंसः खसशूरसेना
न्गांधारगंगायमुनांतरालं॥ शतं दशोनं शरदां नृपत्वं कृत्वा वनांते स
मुपैति मृत्युं॥२६॥ सुभ्रूकेशो रक्तश्यामः कंबुग्रीवो व्यादीर्घास्यः॥शू
रः क्रूरः श्रेष्ठो मंत्री चौरस्वामी व्यायामी च॥ २७॥ यन्मात्रमास्यं रुच
कस्य दीर्घं मध्यप्रदेशे च तुरस्रता सा॥ तनुच्छविः शोणितमांससारो
हंता द्विषां साहससिद्धकार्यः॥२८॥ खट्वांगवीणावृषचापवज्रशक्ती
दुशूलांकितपाणिपादः॥ भक्तो गुरुब्राह्मणदेवतानां शतांगुलः स्या
त्तुलया सहस्रं॥२९॥ मंत्राभिचारकुशलः कृशजानुजंघो विंध्यं ससं
ह्यगिरिमुज्जयनीं च भुक्त्वा॥ संप्राप्य सप्ततिसमा रुचको नरेंद्रः शस्त्रे
ण मृत्युमुपयात्यथवानलेन॥३०॥ पंचापरे वामनको जघन्यः कुब्जो
ऽपरो मंडलकोऽथ सामी॥ पूर्वोक्तभूपानुचरा भवंति संकीर्णसंज्ञाः शृणु ल
क्षणैस्तान् ३१

---

स्वच्छइंद्रिय ऐसा हंससंज्ञक महापुरुष होता है॥२४॥ हंसकी क्रीडा जलमे रत अ
धिक तौल १६०० पल ऊंचाई ९६ अंगुल पंडितने कथन किया॥ २५॥ खस शूरसेन
गांधार गंगा और यमुना इनका मध्यदेश इस्का उपभोग हंस महापुरुष करता है
९० वर्ष राज्य करके वनमे मृत्यूको प्राप्त होता है॥२६॥ सुंदर भौं और केश लाल
और काला वर्ण त्रिवली युक्त कंठ थोडासा लंबा मुख शूर क्रोधी श्रेष्ठ विचारवा
न् चौरका राजा श्रम करनेवाला रुचक संज्ञक महापुरुष होता है॥२७॥ रुच
कका जितना लंबा मुख उतनी ही उदर मध्यभागकी विपुलता (चौडई) सूक्ष्म
त्वचा रक्त और मांस यह मजबूत शत्रु मारनेवाला साहस कर्मसे कार्य सिद्ध कर
नेवाला रुचकसंज्ञक महापुरुष होता है॥२८॥ खट्वांग (आयुधविशेष) वीणा
वृषभ धनुष्य वज्र शक्ति चंद्र त्रिशूल इस्के समान रेषासे युक्त हाथ और पांव
गुरु ब्राह्मण देव इनका भक्त १०० अंगुल ऊंचा सहस्र पल तौल रुचक संज्ञक पुरु
ष होता है॥२९॥ मंत्रप्रयोग और जारण मारणादि इस्के विषे कुशल जानु और
जंघा महीन विंध्य और सह्यपर्वत और उज्जयनी इस्का राज्य करके ७० वर्ष होने
पर रुचक महापुरुष राजा शस्त्रसे अथवा अग्नीसे मृत्यु पावता है॥३०॥ पूर्वोक्त
पंच महापुरुषसे दुसरे वामनक जघन्य कुब्ज मंडलक सामी यह पांच पुरुष
पूर्वोक्त राजोंके अनुचर (सेवक) संकीर्ण (मिश्र) संज्ञक होते है उनके लक्षण क
हते है॥३१॥ पूर्ण अवयव वामन टेढी पीठ जंघा मध्यभाग कांख इस्के थोड
सा टेढा कीर्तिमान् भद्रसंज्ञक राजाका सेवक वृद्धिंगत दानशील वासुदेव

संपूर्णांगोवामनो भग्नपृष्ठः किंचिच्चोरुर्मध्यकक्षांतरेषु॥ख्यातोवाज्ञो भूपभक्तःश्रुतीवीक्ष्यतोदातावामुदेनस्यभक्तः॥३२॥मालव्यसेवी जघन्यनामा खंडेंदुतुल्यश्रवणः सुगंधिः॥शुक्रेणसारः पिशुनःक विश्वरूक्षच्छविःस्थूलकरांगुलीकः॥३३॥क्रूरोधनीस्थूलमतिःप्र तीनस्ताम्रच्छविःस्यात्परिहासशीलः॥उरोंघ्रिहस्तेष्वसिशक्तिपाश परश्वधांकश्चजघन्यनामा॥३४॥कुब्जोनाम्नायःसशुद्धोह्यधस्ता त्क्षीणःकिंचित्पूर्वकायेनतश्च॥हंसासेवीनास्तिकोर्थैरुपेतोविद्वा न्शूरःसूचकःस्यात्कृतज्ञः॥३५॥कलास्वभिज्ञःकलहप्रियश्चप्र भूतभृत्यःप्रमदाजितश्च॥संपूज्यलोकंप्रजहात्यकस्मात्कुब्जोऽप्र मुक्तःसततोद्यतश्च॥३६॥मंडलकनामधेयोरुचकानुचरोऽभिचा रवित्कुशलः॥कृत्यावैतालादिषुकर्मसुविद्यासुचानुरतः॥३७॥रू क्षाकारःखररूक्षमूर्धजःशत्रुनाशनेकुशलः॥द्विजदेवयज्ञयोगप्रस क्तधीःस्त्रीजितोमतिमान्॥३८॥सामीतियःसोतिविरूपदेहःशशा नुगामीखलुदुर्भगश्च॥दातापहारंभसमाप्तकार्योगुणैःशशस्यैवभ वेत्समानः॥३९॥पुरुषलक्षणमुक्तमिदंमयामुनिमतानिसमीक्ष्य समासतः॥इदमधीत्यनरोनृपसंमतोभवतिसर्वजनस्यचवल्लभः॥ ४०

का भक्त· वामन पुरुष होता है॥३२॥ मालव्यसंज्ञक महापुरुषकी सेवा करनेवाला· अ र्द्धचंद्रके समान कान· सुंदर अंगसंधी· रेत अधिक· पिशुन· कवि· कठिनत्वचा· करांगु ली स्थूल॥३३॥ क्रोधी· धनवान्· अल्पबुद्धी· प्रसिद्ध· लोहितवर्णत्वचा· हसनेवाला हृदय· चरण· हस्त· इस्के ऊपर· तलवार· शक्ति· पाश· फरसा· इस्के समान रेषा· ऐसा जघन्यनामक पुरुष होता है॥३४॥ कुब्जनामक अधोभागमे संपूर्णांग· पूर्वभा गमे (ऊपरके अंगमे) किंचित क्षीण और नत (अस्पष्ट) हंससंज्ञक महापुरुषकी सेवा करनेवाला· नास्तिक· द्रव्ययुक्त· विद्वान्· शूर· पिशुन· उपकार जाननेवाला॥३५॥ नृत्या दिकला जाननेवाला· कलहप्रिय· बहुत नौकर· स्त्रीजित· लोककी पूजा करके अक स्मात् छोडनेवाला· निरंतर उद्योगी· कुब्ज होता है॥३६॥ मंडलक पुरुष रुचकका सेवक· अभिचार कर्म करनेवाला· कुशल· कृत्या· (अभिचारिक मंत्रसे उत्पन्न भई स्त्री) वेताल इ॰ कर्मके विषे और विद्यामे तत्पर॥३७॥ वृद्ध समान शरीर· कठिन और रूक्ष ऐसे केश· शत्रु के नाशके विषे कुशल· ब्राह्मण· देव· यज्ञ· योगाभ्यास इस्के विषे आसक्त बुद्धि· स्त्रीजित· बुद्धिमान्· मंडलक होता है॥३८॥ सामि संज्ञक पुरुष बहुत विरूप देह· शशका सेवक· दुर्भगी· दानशील· महान् कार्यका आरंभ करके समाप्ती करनेवाला· सत्वादि गुणमे श

इतिपंचमहापुरुषलक्षणं॥ अथस्त्रीलक्षणं॥ स्निग्धोन्नताग्रतनुता
म्रनखौकुमार्याःपादौसमोपचितचारुनिगूढगुल्फौ॥ श्लिष्टांगुलीक
मलकांतितलौचयस्यास्तामुद्वहेद्यदिभुवोधिपतित्वमिच्छेत्॥१॥
मत्स्यांकुशाब्जयववज्रहलासिचिन्हावस्वेदनौमृदुतलौचरणौप्र
शस्तौ॥जंघेचरोमरहितेविशिरेसुवृत्तेजानुद्वयंसममनुल्बणसंधि
देशं॥२॥ऊरूघनौकरिकरप्रतिमावरोमावश्वत्थपत्रसदृशंविपुलंच
गुह्यं॥श्रोणीललाटमुरुकूर्मसमुन्नतंचगूढोमणिश्चविपुलांश्रियमा
दधाति॥३॥विस्तीर्णमांसोपचितोनितंबोगुरुश्चधत्तेरसनाकलापं
॥नाभिर्गभीराविपुलांगनानांप्रदक्षिणावर्तगताप्रशस्ता॥४॥मध्यंस्त्रि
यास्त्रिवलिनाथमरोमशंचवृत्तौघनावविषमौकठिनावुरस्यौ॥रोमा
पवर्जितमुरोमृदुचांगनानांग्रीवाचकंबुनिचितार्थसुखानिधत्ते॥५॥
बंधुजीवकुसुमोपमोधरोमांसलोरुचिरबिंबरूपभृत्॥ कुन्दकुड्म
लनिभाःसमाद्विजायोषितांपतिसुखामितार्थदाः॥६॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

---

शाकेसमान (श्लो॰२७)॥३९॥ यहश्लोकका अर्थ पूर्वअध्यायके अंतमे कथनकिया
है॥४०॥ इतिबृहत्संहितायांपंचमहापुरुषलक्षणंनामेकोनसप्ततितमोध्यायः६९
॥अथस्त्रीलक्षणं॥ स्नेहयुक्त·कूर्मपृष्ठोन्नत·अग्रभागमेसूक्ष्म·लाल नखसमान·
पुष्ट·सुंदर·गुप्तगुल्फ·मिली अंगुली·कमलकेकांतीसमान तल·ऐसा जिस्का पां
वहोय उस्को राज्यइच्छाकरनेवालेने उस्से विवाह करना॥१॥ मत्स्य·अंकुश·कम
ल·यव·वज्र·हल·तलवार इनके समान रेषासे चिन्हित·घर्मयुक्त नही·(पसीनान
ही) मृदुहैतलजिनके ऐसे पांव शुभहोतेहै·केशरहित·शिरा(नस) रहित·और
गोल पेंडुरी·समान·सूक्ष्मसंधी ऐसेजानु·॥२॥ घनहाथीके सुंडासमान·रोमरहि
त ऐसी जंघा·पीपलके पत्ते समान विस्तीर्ण योनी·श्रोणी ललाट(कमरके ऊपरका
भाग) विस्तीर्ण और कूर्मपृष्ठोन्नत·योनीमेका मणी गुप्त ऐसी स्त्री होयतो·बहुत
लक्ष्मीप्राप्तहोतीहै॥३॥ स्त्रीका नितंब (कटिप्रदेश) विस्तीर्ण·मांसल·गुरु·ऐसा
होयतो कमरपट्टा धारण करताहै·स्त्रीकी नाभी गंभीर(गहिरी) बडी·प्रदक्षिण भौरे
सेयुक्त ऐसी प्रशस्तहोतीहै॥४॥ स्त्रीका मध्यभाग (पेट) त्रिवलियुक्त और केश
रहित होय·स्तनगोल·समान·कठिनहोय·हृदयकेशरहित·मृदु·होय·कंठ·त्रि
वलीयुक्त होयतो·द्रव्य और सुख यहप्राप्तहोताहै॥५॥ बंधुजीव (दुपहरिया ला
ल) पुष्पके समान·मांसल(पुष्ट) सुंदर·पक्के कुंदुके समान रूपधारण करनेवाला·ऐसा
स्त्रीका ओष्ठ शुभहोताहै·कुंदके कलीसमान सम ऐसे दंत होयतो पतिसुख और द्र
व्यलाभ प्राप्तहोताहै ६

दाक्षिण्ययुक्तमशठंपरपुष्टहंसवल्गुप्रभाषितमदीनमनल्पसौख्यं नासासमासमपुटारुचिराप्रशस्ताहग्नीलनीरजदलद्युतिहारिणी च॥७॥नोसंगतेनातिपृथूनलंबेशस्ते भ्रुवौबालशशांकवक्रे॥अर्धेंदुसंस्थानमरोमशंचशस्तंललाटंननतंनतुंगं॥८॥कर्णयुग्ममपियुक्तमांसलंशस्यते मृदुसमंसमाहितं॥स्निग्धनीलमृदुकुंचितैकजामूर्द्धजाःसुखकराःसमंशिरः॥९॥भृंगारासनवाजिकुंजररथश्रीवृक्षयूपेषुभिर्मालाकुंडलचामरांकुशयवैःशैलैर्ध्वजैस्तोरणैः॥मत्स्यस्वस्तिकवेदिकाव्यजनकैःशंखातपत्रांबुजैःपादेपाणितलेऽपिवायुवतयोगच्छंतिराज्ञीपदं॥१०॥निगूढमणिबंधनौतरुणपद्मगर्भोपमौकरौनृपतियोषितांतनुविकृष्टपर्वांगुली॥ननिम्नमतिनोन्नतंकरतलंसुरेखान्वितंकरोत्यविधवांचिरंसुतसुखार्थसंभोगिनीं॥११॥मध्यांगुलिंयामणिबंधनोत्थारेखागतापाणितलेंऽगनायाः॥ऊर्ध्वस्थितापादतलेऽथवायापुंसोऽथवाराज्यसुखायसा स्यात्॥१२॥

---

चातुर्ययुक्त प्रमाणिक कोकिलऔर हंसइनकेसमान रमणीय दीननही ऐसा भाषणबहुतसुखदायक समान समपुट सुंदर ऐसीनासिका शुभ होतीहै नीलकमलपत्रके तेजहरणकरनेवाली (कमलपत्रसमान) दृष्टि(नेत्र)उत्तमहोतेहैं॥७॥भौं एकमेएक मिलीनहोंय बहुतस्थूलनहोंय छोटी हूनीयाकेचंद्रसमान वक्र ऐसी भौं शुभहोतीहै अर्धचंद्रके समानकेशरहित नीचानहीऔर ऊंचाभी नही (सम)ऐसा ललाटशुभहोताहै॥८॥कर्णद्वय पयापुष्ट मृदु तुल्य संलग्न ऐसे शुभहोतेहैं स्निग्ध नीलवर्ण मृदु कुंचित एकछिद्रमे एक ऐसेकेश सुखकारक होनेहैं मस्तकसम शुभहोताहै॥९॥जलपात्र(झारी) आसन अश्व गज रथ बिल्ववृक्ष यज्ञस्तंभ बाण माला कुंडल चंवर अंकुश यव पर्वत ध्वज(पताका) तोरण मच्छ स्वस्तिक वेदी व्यजन (पंखा) शंख छत्र कमल यहचिन्ह(रेखारूप) पांवपर वाहाथतलपर अथवा हृदयपर होंयतो वह राजस्त्रीहोतीहै॥१०॥अस्पष्टहै मणिबंध(हस्तमूल) जिस्का ऐसी नूतन कमलगर्भसमान और सूक्ष्मलंबीहैं अंगुलीपर्व जिनके ऐसे हाथराजस्त्री के होतेहैं गहिरे नहीं और अति ऊंचे नहीं और उत्तमरेषासेयुक्त हस्ततल ऐसी चिरकाल पति पुत्र और पुत्र सुख द्रव्य इस्का उपभोग करतीहै॥११॥स्त्रीकेहस्ततलमे मणिबंध(हस्तमूल) सेउत्पन्नहोयके मध्यमांगुलीतकगत रेषा अथवा पुरुषके पादतलमे ऊर्ध्वस्थित रेषाहोय अथवा हस्ततलमे — — — — — — होयतो वहराज्यसुखपाती होतीहै॥१२॥

कनिष्ठिकामूलभवागताया प्रदेशिनीमध्यमिकांतराले ॥ करोतिरेखापरमायुषः सा प्रमाणमूनातु तदूनमायुः ॥ १३ ॥ अंगुष्ठमूले प्रसवस्य रेखाः पुत्राबृहत्यः प्रमदास्तु तन्व्यः ॥ अच्छिन्नदीर्घा बृहदायुषां ताः स्वल्पायुषां छिन्नलघुप्रमाणाः ॥ १४ ॥ इतीदमुक्तं शुभमंगनानामतो विपर्यस्तमनिष्टमुक्तं ॥ विशेषतोऽनिष्टफलानि यानि समासतस्तान्यनुकीर्तयामि ॥ १५ ॥ कनिष्ठिका वा तदनंतरा वा महीं न यस्याः स्पृशती स्त्रियाः स्यात् ॥ गताथवांगुष्ठमतीत्य यस्याः प्रदेशिनी सा कुलटातिपापा ॥ १६ ॥ उद्बद्धाभ्यां पिंडिकाभ्यां शिराले शुष्के जंघे रोमशे चातिमांसे ॥ वामावर्तं निम्नमल्पं च गुह्यं कुंभाकारं चोदरं दुःखितानां ॥ १७ ॥ ह्रस्वयातिनिःस्वता दीर्घया कुलक्षयः ॥ ग्रीवया पृथूत्थया योषितः प्रचंडता ॥ १८ ॥ नेत्रे यस्याः केकरे पिंगले वा सा दुःशीला श्यावलोलेक्षणा च ॥ कूपौ यस्या गंडयोश्च स्मितेषु निःसंदिग्धं बंधकीं तां वदंति ॥ १९ ॥ प्रविलंबिनि देवरं ललाटे श्वशुरं हंत्युदरे स्फिजोः पतिं च ॥ अतिरोमचयान्विनोत्तरोष्ठी न शुभा भर्तुरतीव या च दीर्घा ॥ २०

---

कनिष्ठिका मूलसे उत्पन्न होय के प्रदेशिनी (अंगुष्ठके पासकी) और मध्यमा इनके बीचमें जो रेखा गई वह परमायु करती है. वह प्रमाण से न्यून होय तो वह परमायु के अपेक्षा न्यून आयुष्य जानना ॥ १३ ॥ अंगुष्ठमूलके विषे पुत्रादि संतानकी रेखा होती है. वह स्थूल होय तो पुत्र और सूक्ष्म होय तो कन्या होती हैं. उसमें टूटी नही और लंबी ऐसी दीर्घायूकी और टूटी और सूक्ष्म अल्पायूकी होती है ॥ १४ ॥ पूर्वोक्त प्रकारसे स्त्रीके शुभलक्षण कथन किया. इस्से जो विपरीत वह अशुभ होते हैं. बहुत अशुभ फल वह संक्षेपसे आगे कहते हैं ॥ १५ ॥ जिस स्त्रीके पांवकी कनिष्ठिका किंवा अनामिका भूमीमें स्पर्श करती नही. अथवा प्रदेशिनी अंगुष्ठके आगे गई होय तो वह स्त्री व्यभिचारिणी पापिष्ठ होगी ॥ १६ ॥ ऊपर बद्ध ऐसे गोलेसे युक्त. शिरासे युक्त. शुष्क. केशयुक्त. बहुत बडे ऐसे जंघा (पेंडुरी) अशुभ. वामावर्त केशसे युक्त. निम्न (गहिरी) अल्प ऐसी योनि अशुभ. कुंभके समान पेट उदर अशुभ. यह तीन दुःख कारक होते हैं ॥ १७ ॥ ग्रीवा (कंठ) बहुत छोटा होय तो निर्धनत्व. बहुत लंबा होय तो कुलक्षय. पृथूत्थ (चिपटा) होय तो स्त्री क्रूर होती है ॥ १८ ॥ नेत्र तिरछे और पिंगटवर्ण वह दुःशीला और काले रहते चंचल नेत्र वह भी दुःशीला होती है. जो स्त्रीके हंसते वखत गालमें गड्ढा पडता है वह निःसंशय व्यभिचारिणी होती है ॥ १९ ॥ कपाल लंबा होय तो देवरका नाश. पेट लंबा होय तो ससुरका नाश. कुल्हे लंबे होय

स्तनौ सरोमौ मलिनोल्बणौ च क्लेशं दधाते विषमौ च कर्णौ ॥ स्थूलाः
करालाविषमाश्च दंताः क्लेशाय चौर्याय च कृष्णमांसाः ॥ २१ ॥ क्रव्याद
रूपैर्वृककाककंकसरीसृपोलूकसमानचिन्हैः ॥ शुष्कैः शिरालैर्विष
मैश्च हस्तैर्भवंति नार्यः सुखवित्तहीनाः ॥ २२ ॥ यातून्नरोष्ठेन समुन्न
तेन रूक्षाग्रकेशी कलहप्रिया सा ॥ प्रायो विरूपासु भवंति दोषा यत्राकृ
तिस्तत्र गुणा वसंति ॥ २३ ॥ पादौ सगुल्फौ प्रथमं प्रदिष्टौ जंघे द्वितीयं
च सजानुचक्रे ॥ मेढ्रोरुमुष्कं च ततस्तृतीयं नाभिः कटिश्चेति चतुर्थ
माहुः ॥ २४ ॥ उदरं कथयंति पंचमं हृदयं षष्ठमतः स्तनान्वितं ॥ अथ
सप्तमं सजत्रुणी कथयंत्यष्टममोष्ठकंधरे ॥ २५ ॥ नवमं नयने च
सभ्रुणी सललाटं दशमं शिरस्तथा ॥ अशुभेष्वशुभं दशाफलं चरणा
द्येषु शुभेषु शोभनं ॥ २६ ॥ इति स्त्रीलक्षणं ॥ अथ वस्त्रच्छेदलक्षणं ॥
वस्त्रस्य कोणेषु वसंति देवा नराश्च पाशांतदशांतमध्ये ॥ शेषास्त्र
यश्चात्र निशाचरांशास्तथैव शय्यासनपादुकासु ॥ १ ॥ ७१ ॥ ७ ॥

---

तो पतीका नाश · बहुत केशसे युक्त ऊपरका ओष्ठ होय (मोछके ऐसा) और बहुत ऊं
ची ऐसी स्त्री पतीको शुभकारक होती नहीं · ॥ २० ॥ स्तन और कर्ण केशयुक्त · मलिन ·
अति स्थूल · दोनो समान नही ऐसे होय तो · वह दुःखी होती है · स्थूल · कराल · और
लंबे · समान नही ऐसे दंत दुःखकारक होते है · दंत के पासका मांस काला होय तो व
ह स्त्री चोर होती है · ॥ २१ ॥ राक्षस · हुंडार · कौवा · कंक (पक्षि वि०) सर्प · घुघू · इनके स
मान रेषासे चिन्हित · मांसरहित · शिरायुक्त · अतुल्य ऐसे जिस स्त्रीके हस्त वह दुःखी
और दरिद्री होती है · ॥ २२ ॥ जिस स्त्रीका ऊपरका ओष्ठ ऊंचा और केशके अग्र रूक्ष ·
वह कलहप्रिय होती है · बहुतकरके विरूप स्त्रीके विषे दोष रहते है · जिस्की आकृ
ती (शरीर) सुंदर उस्के विषे गुण रहते है · ॥ २३ ॥ गुल्फसहित पांव प्रथम दशाफल
देते है · ऐसा कथन किया · ठेउने सहित पेंडुरी द्वितीय द० फ० दे० लिंग · जंघा · वृषण ·
(अंडकोस) तिसरा द० फ० दे० नाभि और कमर यह चतुर्थ द० फ० दे० ॥ २४ ॥ उदर पं
चम द० फ० दे० स्तनयुक्त हृदय छटवा द० फ० दे० कंधा और जत्रु (बाहु और कंठ इन
की संधी · हसुली ·) यह सप्तम द० फ० दे० ओष्ठ और कंठ यह अष्टम द० फ० दे० ॥ २५ ॥
नेत्र और भौं यह नवम द० फ० दे० ललाट और शिर यह दशम द० फल शुभाशुभ देते है ·
यह चरणादि इंद्रिय अशुभ रहते अशुभ फल और शुभ रहते शुभ फल जानना · ॥ २६ ॥
इति बृहत्संहितायां स्त्रीलक्षणं नाम सप्तति तमोध्याय : ७० ॥ अथ वस्त्रछेदलक्षणं ॥
वस्त्रके चार कोनेपर देवता रहते है · पाशांत और दशांत · मध्य इनके विषे मनुष्य रह

क्लिन्नेमषीगोमयपंककर्दमाद्यैश्छिन्नेप्रदग्धेस्फुटितेचविंद्यात्॥पुष्टंनवेस्वाल्पतरंचभुक्तेपापंशुभंचाधिकमुत्तरीये॥२॥रुग्राक्षसांशेष्वथवापिमृत्युःपुंजन्मतेजश्चमनुष्यभागे॥भागेमराणामथभोगवृद्धिःप्रांतेषुसर्वत्रवदंत्यनिष्टं॥३॥कंकप्लवोलूककपोतकाकक्रव्यादगोमायुखरोष्ट्रसर्पैः॥छेदाकृतिर्दैवतभागगापिपुंसांभयंमृत्युसमंकरोति४ छत्रध्वजस्वस्तिकवर्धमानश्रीवृक्षकुंभांबुजतोरणाद्यैः॥छेदाकृतिर्नैर्ऋतभागगापिपुंसांविधत्तेनचिरेणलक्ष्मीं॥५॥प्रभूतवस्त्रदाश्विनीभरणप्यथापहारिणी॥प्रदह्यतेग्निदैवतेप्रजेश्वरेर्थसिद्धयः॥६॥मृगेतुमूषकाद्भयंव्यसुत्वमेवशांकरे॥पुनर्वसौशुभागमस्तदग्रभेधनैर्युतिः॥७॥भुजंगभेविलुप्यतेमघासुमृत्युमादिशेत्॥भगाह्वयेनृपाद्भयंधनागमायचोत्तरा॥८॥करेणकर्मसिद्धयःशुभागमस्तुचित्रया॥शुभंचभोज्यमानिलेहिदैवतेजनप्रियः॥९॥सुहृद्युतिश्चमित्रभेपुरंदरेंबरक्षयः॥जलप्लुतिश्चनैर्ऋतेरुजोजलाधिदैवते॥१०॥ ॥

---

तेहैं बीचके तीन भागमे राक्षस रहते हैं ऐसेही शय्या·आसन·पादुका-इनके विषे भी देवादि रहते हैं ॥१॥ काजल वगैरे·गोमय कीचड·इत्यादिकसे लिप्त·कटा·दग्ध फटा·होयतो·यह वस्त्रका शुभाशुभफल जानना· नवीनवस्त्र होयतो पूर्णफल मध्यमहोयतो अल्पफल· जीर्णहोयतो बहुत थोडाफल होताहै· उत्तरीय(अंगोछा) वस्त्र लिप्त आदि होयतो शुभाशुभफल अधिक होताहै॥२॥राक्षस भागमे छेदादि होयतो वस्त्रस्वामीको रोग वा मृत्यु होताहै· मनुष्य भागमे पुरुषकी तेजवृद्धि होतीहै· देवभागमे सुखादि भोगवृद्धि होतीहै· सर्व भागमे अंतमे छेदादि होयतो अशुभफल होताहै ॥३॥ कंक(पक्षिवि०) प्लव(पानीपर तरनेवाले हंसादि पक्षि) घुघू·कबूतर·कौवा·मांसभक्षकपक्षी·सियार·खर·ऊंट·सर्प· इनके समान वस्त्रछेदकी आकृती देवभागमे होय तथापि पुरुषको मृत्युसमान भय करताहै॥४॥ छत्र· ध्वज·स्वस्तिक·वर्धमान·(परई इ०मृत्तिकापात्र) विल्ववृक्ष·कुंभ·कमल·तोरण इ०के समान वस्त्र छेदकी आकृति राक्षस भागमे होयतो भी पुरुषको शीघ्र लक्ष्मी प्राप्त होतीहै ॥५॥ अश्विनीनक्षत्रपर नवीन वस्त्र धारण करेतो बहुत वस्त्र मिलता है· भरणीपर न०व०धा०करेतो वस्त्रहरण· कृत्तिका० वस्त्रदहन· रोहिणी० द्रव्यप्राप्ती॥६॥ मृग०मूषाका भय· आर्द्रा० मरण· पुनर्वसु०शुभप्राप्ती· पुष्य०धनप्राप्ती॥७॥ आश्लेषा० वस्त्रछेदन· मघा०मरण· पूर्वा० राजभय· उत्तरा० धनप्राप्ती॥८॥हस्त०कर्मसिद्धि· चित्रा०शुभप्राप्ती· स्वाती०शुभभोजन· विशाखा०लोकप्रिय॥९॥अनुराधा०

मिश्रं च नक्षत्रफलं तु प्रदिष्टं वस्त्रस्य नवस्य भवति नेत्ररोगमथो धान्यलब्धिं च विषभयं ... वासवे विदुर्वारुणे विषकृतं महद्भयं॥११॥ भद्रपदासु भयं सलिलोत्थं तत्सुतरत्नश्च भवेत्सुतलब्धिः॥ रत्नयुतिं कथयन्ति च पौष्णे योऽभिनवांबरमिच्छति भोक्तुं॥१२॥ विप्रमताद्थ भूपतिदत्तं यच्च विवाहविधावभिलब्धं॥ तेषु गुणै रहितेष्वपि भोक्तुं नूतनमंबरमिष्टफलं स्यात्॥१३॥ (भोक्तुं नवांबरं शस्तं मृक्षेऽपि गुणवर्जिते॥ विवाहे राजसन्माने ब्राह्मणानां च संमते॥१४॥) इति वस्त्रच्छेदलक्षणं॥ अथ चामरलक्षणं॥ देवैश्चमर्यः किल वालहेतोः सृष्टा हिमक्ष्माधरकंदरेषु॥ आपीतवर्णाश्च भवंति तासां कृष्णाश्च लांगूलभवाः सिताश्च॥१॥ स्नेहो मृदुत्वं बहुवालता च वैशद्यमल्पास्थिनिबंधनत्वं॥ शौक्ल्यं च तेषां गुणसंपदुक्ता विद्धाल्पलुप्तानि न शोभनानि॥२॥ अध्यर्धहस्तप्रमितोऽस्य दंडो हस्तोऽथवारत्निसमोऽथवान्यः॥ काष्ठाच्छुभात्कांचनरूप्यगुप्ताद्रत्नैर्विचित्रैश्च हिताय राज्ञां॥३॥ यष्ट्यातपत्रांकुशवेत्रचापवितानकुंतध्वजचामराणां॥ व्यापीततंत्रीमधुकृष्णवर्णा वर्णक्रमेणैव हिताय दंडाः॥४॥

---

मिश्रयोग· ज्येष्ठा० वस्त्रनाश· मूल० जलमे नाश· पूर्वाषा० रोग॥१०॥ उत्तराषा० मिष्टान्नप्राप्ती· श्रवण० नेत्ररोग· धनिष्ठा० धान्यप्राप्ती· शततारका० विषभय॥११॥ पूर्वाभाद्र० जलभय· उत्तराभा० पुत्रप्राप्ती· रेवती० रत्नप्राप्ती· अश्विन्यादिनक्षत्रपरनवीनवस्त्र धारणकरने वालेको पूर्वोक्त फल होने है॥१२॥ ब्राह्मणकी आज्ञासे· राजानेदिया· विवाहविधीमे प्राप्त ऐसे नवीन वस्त्र गुणरहित नक्षत्रादिकमे भी धारण करे तो· इष्टफलप्राप्त होता है॥१३॥ विवाहकालमे· राजानेदिया और ब्राह्मणके आज्ञासे गुणरहित नक्षत्रमे भी नवीन वस्त्र धारण करना प्रशस्त होता है॥१४॥ ॥इति बृहत्संहितायां वस्त्रच्छेदलक्षणं नामैकसप्ततितमोऽध्यायः॥७१॥ अथ चामरलक्षणं॥ देवताने चमर (मृगवि० वनगौ) प्राणी केशके वास्ते हिमालयके गुफामे उत्पन्न किया· उनके पुच्छसे उत्पन्न जो केश सो थोडे पीत· काले· सफेद ऐसे होने है॥१॥ स्निग्धत्व· मृदुत्व· बहुकेशत्व· स्वच्छता· पुच्छ सूक्ष्म· शुक्लत्व यह चमरकी गुणसंपत्ती कथन किया वह खंडित· छोटा· तूटा· होय तो शुभ नही॥२॥ चवरका दंडा॥ हाथ १ हाथ अथवा १॥ अंगुल लंबा करना वह शुभकाष्ठका करके· सुवर्ण· रौप्य इनसे मढावना और चित्रवर्ण रत्नसे युक्त· ऐसा राजाको कल्याणकारक होता है॥३॥ लाठी· छत्र· अंकुश· वेत्रदंड (भालदारका) धनुष्य· वितान (सुरज मुखी) ... ध्वज· चामर इनके दंड ब्राह्मणादि वर्णक्रमसे क्या पीत (बहुत पीत)

मातृभूधनकुलक्षयावहाः रोगमृत्युजननाश्च पर्वभिः ॥ द्व्यादिभिर्द्विक
विवर्धितैः क्रमाद् द्वादशान्तविरतैः समैः फलम् ॥५॥ यात्राप्रसिद्धिर्द्वि
षतां विनाशो लाभः प्रभूतो वसुधागमश्च ॥ वृद्धिः पशूनामभिवाञ्छिता
प्तिस्त्र्याद्येष्वयुग्मेषु तदीश्वराणाम् ॥६॥ इति चामरलक्षणम् ॥ अथ छ
त्रलक्षणम् ॥ निचितं तु हंसपक्षैः कृकवाकुमयूरसारसानां च ॥ दौकू
लेन नवेन तु समन्ततश्छादितं शुक्लम् ॥१॥ मुक्ताफलैरुपचितं प्रलंब
मालाविलं स्फटिकमूलम् ॥ षड्ढस्तशुद्धहेमनवपर्वनगैकदण्डं च ॥२॥
दण्डार्धविस्तृतं तत्समावृतं रत्नविभूषितमुदग्रम् ॥ नृपतेस्तदातपत्रं क
ल्याणपरं विजयदं च ॥३॥ युवराजनृपतिपत्न्याः सेनापतिदण्डनाय
कानां च ॥ दण्डोऽर्धपञ्चहस्तः समपञ्चकृतार्धविस्तारः ॥४॥ अन्येषा
मुष्णघ्नं प्रसादपट्टैर्विभूषितशिरस्कम् ॥ व्यालंबिरत्नमालं छत्रं कार्यं
च मायूरम् ॥ अन्येषां च नराणां शीतातपवारणं तु चतुरस्रम् ॥ समवृ
त्तदण्डयुक्तं छत्रं कार्यं तु विप्राणाम् ॥६॥ ॥ इति छत्रलक्षणम् ॥ ७३ ॥

---

तंत्री (पीतलोहित) मधु (इषत्पीत) कृष्ण इस वर्ण के शुभ होते हैं ॥४॥ दोसे द्विकवर्धित
द्वादशमे क्रमसे मातृनाश इ० फल दंडादिकके पोरका जानना २ पोर होयतो मातृनाश
४ भूमिनाश ६ धनक्षय ८ कुलक्षय १० रोगजनन १२ मृत्युप्राप्ति ऐसे लाठी इ० पो
रके फल होते हैं ॥५॥ तीन इ० विषम दंडादिकके पोर होयतो उनके धनीको ३ यात्राज
य ५ शत्रुनाश ७ बहुलाभ ९ भूमिलाभ ११ पशुवृद्धि १३ इच्छितप्राप्ति यह फल हो
ते हैं ॥६॥ ॥ इति बृहत्संहितायां चामरलक्षणं नाम द्वासप्ततितमोऽध्यायः ॥७२॥ अथ छ
त्रलक्षणम् ॥ हंसपक्षी अथवा कृकवाकु (मुरगा) मोर सारस यह पक्षीके परसे शोभित
और चारोतरफ नवीन वस्त्रसे आच्छादित शुभ्रवर्ण ॥१॥ मोतीसे युक्त लंबे मुक्ताफ
लके मालासे युक्त स्फटिकमणीके है दंडमूल जिसका ऐसा ६ हाथ लंबा दंड शुद्ध
सुवर्णसे आच्छादित दंड ९ पोरका अथवा ७ पोरका एक वृक्षके दंडसे युक्त ॥
२॥ दंडार्ध कहिये तीन हाथ विस्तार चारोतरफ आवृत रत्नसे शोभित ऊंचा ऐसा छ
त्र राजाको कल्याण और विजय देता है ॥३॥ युवराज राजस्त्री सेनापति दंडनायक
(न्यायाधीश) इनके छत्रका दंड साढे चार हाथ लंबा और छत्रकी चौडई सवा हाथ
होय ॥४॥ युवराजादिकके बिना अन्यका छत्र उष्णनाशक शुभवस्त्रसे शोभित
शिर रत्नमालायुक्त ऐसा मयूरपक्षका करना ॥५॥ अन्य मनुष्यका शीत और उष्ण
निवारण करनेवाला ऐसा चतुरस्र छत्र करना ब्राह्मणका छत्र चारोतरफसे वर्तुल
और दंडयुक्त ऐसा करना ॥६॥ इति बृहत्संहितायां छत्रलक्षणं नाम त्रिसप्ततितमोऽध्या

अथस्त्रीप्रशंसा॥ जयेथधरित्र्याः पुरमेवसारं पुरेगृहंसद्मनिचैकदेशः ॥तत्रापिशय्याशयनेवरास्त्रीरत्नोज्वलाराज्यसुखस्यसारः॥१॥र त्नानिविभूषयंतियोषाभूष्यंतेवनितानरत्नकांत्या॥चेतोवनिताहरं त्यरत्नानोरत्नानिविनांगनांगसंगात्॥२॥आकारंविनिगूहतांरिपुब लंजेतुंसमुत्तिष्ठतांतंत्रंचिंतयतांकृताकृतशतव्यापारशाखाकुलं ॥मंत्रिप्रोक्तनिषेविनांक्षितिभुजामाशंकिनांसर्वतोदुःखांभोनिधिव र्तिनांसुखलवःकांतासमालिंगनं॥३॥श्रुतंदृष्टंस्पृष्टंस्मृतमपिनृणां ल्हादजननंनरत्नंस्त्रीभ्योन्यत्क्वचिदपिकृतंलोकपतिना॥तदर्थंधर्मा र्थौसुतविषयसौख्यानिचततोगृहेलक्ष्म्योमान्याःसततमबलामान विभवैः॥४॥येप्यंगनानांप्रवदंतिदोषान्वैराग्यमार्गेणगुणान्विहा य॥तेदुर्जनामेमनसोवितर्कःसद्भाववाक्यानिनतानितेषां॥५॥प्र ब्रूतसत्यंकतरोंगनानांदोषोस्तियोनाचरितोमनुष्यैः॥धार्ष्ट्येनपुं भिःप्रमदानिरस्तागुणाधिकास्तामनुनात्रचोक्तं॥६॥७॥८॥९॥

---

अथस्त्रीप्रशंसा॥ सर्वपृथ्वीजीतातोभीउस्मेएकनगरहीश्रेष्ठ होताहै·नगरमेगृह· गृहमेभीउस्काएकदेश(निद्राकरनेकास्थान) उस्मेभी शय्या (बिछोना) वह शयनमेभी· मणिसुवर्णइत्यादिकसेभूषितउत्तमस्त्री· यहराज्यसुखकासारहै· ॥१॥ स्त्रीरत्नकोशोभायमानकरतीहै· रत्नकांतीसेस्त्रीशोभितहोतीनहीं· रत्नयुक्त जोभीस्त्रीनहोंयतथापिपुरुषकेचित्तहरणाकरतीहै· स्त्रियोंकेअंगसंगबिनारत्न चित्तहरणकरतेनहीं·॥२॥सुखदुःखादिआकारआच्छादनकरनेवाले· शत्रुसै न्यजीतनेमेउद्युक्तःकृतऔरअकृतजोहजारोव्यापारविस्तारइसकरकेव्याप्तऐसे राजतंत्रकाचिंतनकरनेवाले· प्रधानकेकथितमार्गसेचलनेवाले· पुत्रादिसर्वसेशंका माननेवाले· दुःखसमुद्रमेरहनेवाले· ऐसेराजाकोप्रियस्त्रीकादृढालिंगनयहसौ ख्यलेशहै(क्षणमात्रसुखकारकहै·)॥३॥स्त्रीनामश्रवणकरनेसे·देखनेसे·स्पर्श करनेसे·स्मरणभीकरनेसे पुरुषकोआनंदकारक ऐसारत्नस्त्रीसेअन्यकोईभी ब्रह्मदेवनेउत्पन्नकियानहीं· स्त्रियोंकेअर्थ (स्त्रीसहायसे) धर्मऔरअर्थ·प्राप्त होतेहैं· पुत्रऔरविषयसुखउन्हीसेहोतेहैं· गृहमेलक्ष्मीरूपहीस्त्रीहोतीहै इ सवास्तेस्त्रीसत्कारऔरऐश्वर्यइस्को निरंतरयोग्यहोतीहै·(स्त्रियोंकासत्कारकरना·) ॥४॥स्त्रीकेगुणछोडके·वैराग्यमार्गसे·जोस्त्रियोंका दोषयुक्तकहतेहैं· वहदुर्ज नहै·ऐसाहमारेमनकानिश्चयहै औरवहउनकेभाषण परमार्थपर(सत्य) नहीं· ॥५॥सत्यकहो·ऐसाकौनदोषहै·जोमनुष्यने आचरणकियानहीं· ऐसाबडादोषस्त्रियोंकाक्याहै·

सोमस्तासामदाच्छौचं गंधर्वाः शिक्षितां गिरं ॥ अग्निश्च सर्वभक्षित्वं तस्मान्निष्कसमाः स्त्रियः ॥७॥ ब्राह्मणाःपादतो मेध्या गावो मेध्यास्तु पृष्ठतः ॥ अजाश्वा मुखतो मेध्याः स्त्रियो मेध्यास्तु सर्वतः ॥८॥ स्त्रियः पवित्रमतुलं नैता दुष्यंति कर्हिचित् ॥ मासि मासि रजो ह्यासां दुष्कृतान्यपकर्षति ॥९॥ जामयो यानि गेहानि शपंत्यप्रतिपूजिताः ॥ तानि कृत्याहतानीव विनश्यंति समंततः ॥१०॥ जाया वा स्याज्जनित्री वा संभवः स्त्रीकृतो नृणां ॥ हे कृतघ्नास्तयोर्निंदां कुर्वतां वः कुतः सुखं ॥११॥ दंपत्योर्व्युत्क्रमे दोषः समः शास्त्रे प्रतिष्ठितः ॥ नरा न तमवेक्षंते तेनात्र वरमंगनाः ॥१२॥ बहिर्लोम्ना तु षण्मासान्वेष्टितः खरचर्मणा ॥ दारातिक्रमणे भिक्षां देहीत्युक्त्वा विशुध्यति ॥१३॥ न शतेनापि वर्षाणामपैति मदनाशयः ॥ तत्राशक्त्या निवर्तंते नरा धैर्येण योषितः ॥१४॥ ॥

---

यह तुम सत्य कहो परदारगमनादि दोष प्रथम पुरुषने आचरण किया पश्चात् उन्होने उन्हीसे ग्रहण किया तस्मात् पुरुषने निर्लज्जतासे स्त्री दोषित किया परंतु वह उत्तम गुणवान् है इस्के विषे धर्ममार्गकहनेवाले मनूनेवही स्त्रियोंका प्राधान्य कथन किया वह आगे कहते है ॥६॥ वह स्त्रियोको चंद्र शुद्धि देते भए गंधर्व आनंदकारक वाणी देते भए अग्नि सर्वभक्षित्व देते भए इसवास्ते सर्व वर्णकी स्त्री सुवर्णके समान शुभ होती हैं ॥७॥ ब्राह्मण पांवमे पवित्र गौ पृष्ठभागमे पवित्र बकरा और अश्व यह मुखमे पवित्र स्त्री तो सर्वतः पवित्र है ॥८॥ स्त्री बहुत शुद्ध हैं कबही भी वह दुषित होती नही मासमासमे रजोधर्म इनके पातकका नाश करता है ॥९॥ सत्कार होता नही ऐसी जो कुलस्त्री जिस गृहको शापती है वह गृह महामारीसे मारनेके समान सर्वत्र नाश पावता है (सर्वत्र मनुष्य मरते है) ॥१०॥ भार्या होय अथवा माता होय पुरुषकी उत्पत्ति स्त्रीसे है इसवास्ते उनकी निंदा करनेवाले हे कृतघ्न तुमको सुख कहासे होगा ॥११॥ स्त्री और पुरुष यह दूनोको भी व्युत्क्रमसे (पुरुषको परस्त्रीगमन और स्त्रीको परपुरुषगमन) इस्का दोष शास्त्रमे समान कथन किया है पुरुष वह दोषको देखते नही स्त्री देखती है इसवास्ते विचार करनेसे स्त्री ही श्रेष्ठ है ॥१२॥ बाहर लोम ऐसा खरका चर्म ओढके हमने परदारगमन किया है हमको भिक्षा डालो ऐसा कहके छ महिना भिक्षा मांगे तब परस्त्रीगमन करनेवाला पुरुष शुद्ध होता है ॥१३॥ पुरुषकी कामवासना १०० वर्षसे भी जाती नही यह कामवासना पुरुषकी शक्तिहीनतासे निवृत्त होती है और स्त्रियोंकी धैर्यसे निवृत्त होती है तस्मात् स्त्रियोंका सामर्थ्य पुरुषसे अधिक है ॥१४॥

अहोधार्ष्टर्यमसाधूनांनिंदतामनघाः स्त्रियः॥ मुष्णतामिव चौराणां
तिष्ठचौरेतिजल्पतां॥१५॥पुरुषश्चटुलानिकामिनीनांकुरुते यानि
रहोनतानिपश्चात्॥सुकृतज्ञतयांगनागतासूनवगूह्यप्रविशंतिसप्त
निर्च्य॥१६॥स्त्रीरत्नभोगोस्तिनरस्ययस्यनिःस्वोपिसंप्रत्यवनीश्व
रोसौ॥ राज्यस्यसारोशनमंगनाश्चतृष्णानलोद्दीपनदारुशेषं॥१७
॥कामिनींप्रथमयौवनान्वितांमंदवल्गुमृदुपीडितस्वनां॥उत्तनीं
समवलंब्ययारतिःसानधातृभवनेस्तिमेमतिः॥१८॥तत्रदेवमुनि
सिद्धचारणैर्मान्यमानपितृसेव्यसेवनात्॥ब्रूतधातृभवनेस्तिकिंसु
खंयद्रहःसमवलंब्यनस्त्रियं॥१९॥आब्रह्मकीटांतमिदंनिबद्धंपुं
स्त्रीप्रयोगेणजगत्समस्तं॥व्रीडात्रकायत्रचतुर्मुखत्वमीशोपिलो
भाद्गमितोयुवत्याः॥२०॥ ॥इतिस्त्रीप्रशंसा॥ ॥

---

निष्पापस्त्रियोंकी निंदाकरनेवाले दुर्जनपुरुषका धैर्य· जिस्केइहां चोरीकियाऊ
सीको चोरखडेरहो ऐसेकहनेवाले चोरकेसमानहै॥१५॥पुरुषस्त्रीकेपासएकांतमे
(रतिसमयमे) जोप्रियभाषणकरतेहै· वहरतीकेनंतरकरतेनही· औरदुष्टत्वभी
करतेहै· स्त्रीतोसुंदरकृतज्ञताजोउसकरके मृतपतीकोआलिंगनकरके अग्नीमे
प्रवेशकरतीहै·(पतीकाउपकारस्मरणकरके अग्नीमे सतीजातीहै·॥१६॥ स्त्री
रत्नकाउपभोगजिसपुरुषकोहैवहनिर्धनहोयतोभी·अपनेकोराजामानताहै·
राज्यकासार स्त्रियोंकाउपभोगकरनायहीहै और तृष्णाग्नीकाप्रज्वलितकरने
वाला· ऐसेशेषरहेसोकाष्टहीस्त्रीहै·॥१७॥प्रथमयौवनसेयुक्त· थोडारमणीय
मधुर· स्खलब्धऐसाहै भाषणजिस्का ऐसा उच्चस्तनी· ऐसेस्त्रीका आलिंगनकर
केजोरतिसुखप्राप्तहोताहै· वहब्रह्मदेवकेघरभीनही ऐसाहमकोमालूमहोता
है·॥१८॥ब्रह्मलोकमेदेव· मुनि·सिद्ध·चारण· इनकोमान्य(पूजनीय) पूजक·से
वनीय· इनकेसेवासेदुसरासुखक्याहैसोकहो· एकांतमेस्त्रीका आलिंगनक
रकेजोसुखप्राप्तहोताहै वहजोसुखनहीतो ब्रह्मलोकमेभीइस्सेसुखकौनहै·॥१९
॥ब्रह्मदेवसे कृमीतक सर्वजगत् स्त्रीपुरुषयोगसेबद्धहै· इसवास्ते यहजगतमेपु
रुषकोस्त्रीकेविषयमेक्यालाजहै· शिवस्त्रीकेलोभसे चतुर्मुखभए(इस्केविष
यमेकथा– तिलोत्तमाअप्सराशिवकोप्रदक्षिणाकरनेकालमे· अतिसुंदरपार्वती
पासरहीसोक्रोधकरेगी इसवास्ते· चारदिशामे चारमुखकरके अप्सराकेतरफ
शिवदेखतेभए· एकमुखसेपार्वतीकेतरफदेखतेरहे)॥२०॥ इतिवृहत्सं
हितायांभट्टउत्पलटीकायांस्त्रीप्रशंसानामचतुःसप्ततितमोऽध्यायः॥७४॥

अथ सौभाग्यकरणं ॥ जात्यंयमनोभवसुखंसुभगस्यसर्वमाभासं
मात्रमितरस्यमनोवियोगात् ॥ चित्तेनभावयतिदूरगतापियंस्त्री
गर्भंबिभर्तिसदृशंपुरुषस्यतस्य ॥ १ ॥ भङ्क्त्वाकांडपादपस्योप्त
मुर्व्यांबीजंवास्यांनान्यतामेतियद्वत् ॥ एवंह्यात्माजायतेस्त्रीषुभू
यःकश्चित्तस्मिन्क्षेत्रयोगाद्विशेषः ॥ २ ॥ आत्मासहैतिमनसामन
इंद्रियेणस्वार्थेनचेंद्रियमितिक्रम एष शीघ्रः ॥ योगोऽयमेवमनसः
किमगम्यमस्तियस्मिन्मनोव्रजतितत्रगतोऽयमात्मा ॥ ३ ॥ आत्मा
यथात्मनिगतोहृदयेतिसूक्ष्मोग्राह्योऽचलेनमनसासततामियोगा
त् ॥ योयंविचिंतयतियानिसतन्मयत्वंयस्मादतःसुभगमेवगता
युवत्यः ॥ ४ ॥ दाक्षिण्यमेकंसुभगत्वहेतुर्विद्वेषणंतद्विपरीतचेष्टा ॥ मं
त्रौषधाद्यैःकुहकप्रयोगैर्भवंतिदोषाबहवोनशर्म ॥ ५ ॥ वाल्लभ्यमा
यातिविहायमानंदौर्भाग्यमापादयतेभिमानः ॥ कृच्छ्रेणसंसाधय
तेऽभिमानीकार्याण्ययत्नेनवदन्प्रियाणि ॥ ६ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

---

अथ सौभाग्यकरणं ॥ संपूर्णकामजन्यसुखसुपुरुषकोहीहोताहै अन्यकोक्षणभरभास
मात्र(स्त्रीमनवियोगइसवास्ते) कारणस्त्रीकामनसुंदरपुरुषपरलुब्धहोताहै
दूररहतेभीस्त्रीजिसपुरुषकोचित्तमेंल्यावेवहपुरुषकेस्वरूपसमानगर्भमेंवे
बालककास्वरूपहोगा ॥ १ ॥ वृक्षकीडारभूमीपरलगायाकिंवाबीजारोपणकियातोवह
पूर्ववृक्षकेअपेक्षाअन्यप्रकारकाहोतानहीं तैसेआत्मास्त्रीकेविषेपुनःउत्पन्न
होताहै कदाचित्कुछक्षेत्रयोगसेउसमेंविशेषहोताहै २ ॥ मनकेसहितआत्मा
जाताहै इंद्रियकेसहितमनजाताहै शब्दादिअर्थसहितइंद्रियजातेहैं ऐसा
शीघ्रक्रमहोताहै यहीसंबंधमनकाहै इसवास्तेमनकोअगम्यक्याहै जहांम
नजाताहै तहांयहआत्माजाताहीहै ॥ ३ ॥ यहजीवात्माहृदयमेंपरमात्माकेवि
षेमग्नरहते अतिसूक्ष्मरहतेभीनिरंतरयोगकेवास्तेनिश्चलमनसेग्राह्यहोताहै
अंतर(जो)पुरुषजिसवस्तूकाचिंतनकरताहै वहवस्तूरूपसोआत्माहोताहै इस
वास्तेस्त्रीसुंदरपुरुषकेपासजातीहै ॥ ४ ॥ दाक्षिण्य(चित्तसंतुष्टकरकेअनुकूल
करना) यहएकहीसुभगत्वकाकारणहै उसेविपरीतजोचेष्टा वहविद्वेषणहै
वशीकरणआदिमंत्रऔरऔषधविशेषऔरभोजनादिकपटप्रयोगइसकरकेबहु
तदोषहोतेहैं कल्याणहोतानहीं ॥ ५ ॥ गर्वत्यागकरनेवालापुरुषसर्वजनकोप्रि
यहोताहै गर्वितपुरुषदुर्भगत्वकोप्राप्तहोताहै अभिमानीपुरुषकष्टसेकार्यसा
धनकरताहै प्रियभाषणकरनेवालायत्नकेविनाकार्यसाधनकरताहै ॥ ६ ॥ ७ ॥

तेजो न तद्यत्प्रियसाहसत्वं वाक्यं न चानिष्टमसत्प्रणीतं ॥ कार्यस्य गत्वांतमनुद्धतायेतेजस्विनस्तेन विकत्थनाये ॥७॥ यः सार्वजन्यं सुभगत्वमिच्छेद्गुणान्स सर्वस्य वदेत्परोक्षे ॥ प्राप्नोति दोषानसतोऽप्यनेकान्परस्य यो दोषकथां करोति ॥८॥ सर्वोपकारानुगतस्य लोकः सर्वोपकारानुगतो नरस्य ॥ कृत्वोपकारं द्विषतां विपत्सु याकीर्तिरल्पेन न सा शुभेन ॥९॥ तृणैरिवाग्निः सुतरां विवृद्धिमाच्छाद्यमानोऽपि गुणैरुपैति ॥ स केवलं दुर्जनभावमेति हंतुं गुणान्वांछति यः परस्य ॥१०॥ ॥ इति सौभाग्यकरणम् ॥ ॥अथ कांदर्पिकं ॥ रक्तेऽधिके स्त्री पुरुषस्तु शुक्रे नपुंसकं शोणितशुक्रसाम्ये ॥ यस्मादतः शुक्रविवृद्धिदानि निषेवितव्यानि रसायनानि ॥१॥ हर्म्यं पृष्ठमुडुनाथरश्मयः सोत्पलं मधु मदालसा प्रिया ॥ वल्लकी स्मरकथा रहः स्रजो वर्ग एष मदनस्य वागुरा ॥२॥

---

जो प्रिय वस्तूके विषे साहस करना वह तेज नही· जो वाक्य अनिष्ट (मर्मवेधक) और दुष्टभाषित वह वाक्य नही· कार्यका अंत करके जो गर्वरहित· वही तेजस्वी (सुभग) है जो निरर्थक दुष्ट भाषण करते है वह सुभग नही·॥७॥ जो सर्वजनप्रियत्वकी इच्छा करता है उन्होने सर्वके परोक्ष वा अपरोक्ष गुणही वर्णन करना (उस करके लोकप्रिय होता है·) दुसरेके दोषको जो वर्णन करते है· वह दुर्जन से बहुत दोषको प्राप्त होते है· (दुसरेके स्तुतीसे सज्जन और निंदासे दुर्जन होते है·)॥८॥ सर्वके ऊपर उपकार करने वाला जो पुरुष उसके ऊपर सर्व लोक उपकार करते है· शत्रूपर भी विपत्तिकाल मे उपकार करके जो कीर्ती प्राप्त होती है सो अल्प पुण्यसे प्राप्त होती नही·॥९॥ तृणसे आच्छादित रहते भी अग्नी अपने गुणसे अत्यंत वृद्धीको पावता है तैसे दुसरे के गुणका नाश करनेके विषे इच्छा करनेवाले दुर्जन अधिक हीनत्वको प्राप्त होते है ॥१०॥ इति बृहत्संहितायां अंतःपुरचिंतायां सौभाग्यकरणं नाम पंचसप्ततितमोऽध्यायः॥७५॥ ॥अथ कांदर्पिकं॥ गर्भाधानकालमे रक्त अधिक होय तो स्त्री जन्म होता है· रेत अधिक होय तो पुरुषजन्म होता है· रक्त और रेत इसका साम्य (बराबर) होय तो नपुंसकजन्म होता है· इसवास्ते शुक्र (धातु) वृद्धि करनेवाला रसायन सेवन करना·॥१॥ गृहपृष्ठ (अटारी·) चंद्रकिरण· नीलकमल सहित मद्य मद्यको (ब्राह्मणादिकको इच्छित पान) मद्यपानसे अलसत्ती· मधुर शब्द करनेवाली वीणा· मदनकी कथा· एकांतस्थल· सुगंधपुष्पमाला यह समुदाय कामका बंधनरज्जु है (यह सब

मासीकधातुमधुपारदलोहचूर्णपथ्याशिलाजतुविडंगघृतानियो:
यात्॥ सेकानिविंशतिरहानिजरान्वितोपिसोऽशीतिकोपिरमयत्यबलां
युवेव॥३॥ क्षीरंशृतंयःकपिकच्छुमूलैःपिवेत्सयंस्त्रीषुनसोऽभ्युपैति
॥माषान्पयःसर्पिषिवाविपक्वान्षड्ग्रासमात्रांश्चपयोनुपानात्॥
४॥विदारिकायाःस्वरसेनचूर्णमुहुर्मुहुर्भाविनशोपिनंच॥ शृतेनदु
ग्धेनसशर्करेणपिवेत्सयस्यप्रमदाःप्रभूताः॥५॥ धात्रीफलानांस्वर
सेनचूर्णंसुभावितंसौद्रसिताज्ययुक्तं॥लीढ्वानुपीत्वाचपयोमिश
त्याकामंनिकामंपुरुषोनिषेवेत्॥६॥ क्षीरेणवस्तांडयुजाशृतेन
संप्लाव्यकामीवहुशस्तिलान्यः॥सुशोषितानत्तिपिवेत्पयश्चतस्या
ग्रतःकिंचटकःकरोति॥७॥ माषसूपसहितेनसर्पिषाषष्टिकौदन
मदंतियेनराः॥क्षीरमप्यनुपिवंनितासुतेशर्वरीषुमदनेनशेरते ८
तिलाश्वगंधाकपिकच्छुमूलैर्विदारिकाषष्टिकपिष्टयोगः॥आजे
नपिष्टःपयसाघृतेनपक्वाभवेच्छष्कुलिकानिरप्या॥९॥४॥ ॥

---

पदार्थकामोद्दीपकहै)॥२॥ माक्षिकधातु(माक्षिकभस्म) मधु·पारा·लोहचूर्ण(मंडू
र) हर्र·शिलाजित·वाविडंग·घृत यहसर्वघृत·समभाग और घृत·माक्षिकसम
भाग इस्कीगुटिकाकरकेजो २१दिनभक्षणकरेतो ८०वर्षकावृद्ध होयतथापि त
रुणाकेसमानस्त्रीकोरमयाणकरेगा॥३॥ कपिकच्छुमूल(केंवाचकामूल) दूधमे
काढाकरकेवह·जोकामीपुरुषप्राशनकरे· वहस्त्रीकेविषेरतिसमयमेअशक्तताको
प्राप्तहोगानही· दूधकोमंथनकरके जोमक्खन उस्केघृतमे उडदीपक्ककरकेवह छ
ग्रासभक्षणकरकेपश्चात्दुग्धपानकरेतोस्त्रीकेरतीमेअशक्तहोतानही॥४॥
विदारि(पतालकोहडा) इस्काचूर्णकरकेउसीकेरससेवहचूर्णको७पुटपुनःपुनः सु
ष्ककरकेदेनावहचूर्ण·जिस्कोवहुतस्त्रीहोयउसने शर्करायुक्तगरमदूध केसाथ प्रा
शनकरना॥५॥ आंवरेकाचूर्णकरकेउस्कोउसीकेरससेउत्तमपुटदेकेवहचूर्ण·
मधु·शर्करा·घृत·समभागलेकेवहमिश्रणचाटके नंतरजठराग्निकेशक्तीप्रमाणदु
ग्धपानकरनेवालापुरुषयथेच्छमैथुनकरताहै· ६॥ वकरेकेआंडसेयुक्त एसादू
धमरमकरकेउस्सेतिलसातवेरभिंगोकेसुष्ककरकेभक्षणकरनानंतरदुग्धपानकर
नेवालेपुरुषकेआगेगौरापक्षी वहुतस्त्रीगमनक्याकरेगा·(वहुतस्त्रीकेविषेवहु
तकालशीघ्रगमनकरताहै·)॥७॥ जोपुरुषउडदकीदालघृतसेयुक्त साठीकेचाव
लकेभातसेभक्षणकरतेहै·नंतरदुग्धपानभीकरतेहै वहउसरात्रीकेविषेमद
नकेसहितनिद्राकरतेहै(वारंवारस्त्रीगमनहीकरतेहै निद्राआवतीनही॥८॥तिल·

क्षीरेण वा गोक्षुरकोपयोगं विदारिकाकंदकभक्षणं वा॥ कुर्वन्नसौ रेतसि जीर्यते स्यमंदाग्निता चेदिदमत्र चूर्णं॥१०॥ साजमोदलवणा हरीतकी शृंगवेरसहिता च पिप्पली॥ मद्यतक्र तरलोष्णवारिभिश्चूर्णपानमुदराग्निदीपनं॥११॥ अत्यम्लतिक्तलवणानि कटूनि वापि यः क्षारशाकबहुलानि च भोजनानि॥ दृक्शुक्रवीर्यरहितः स करोत्यनेकान् व्याजान्जरन्निव युवाप्यबलामवाप्य॥१२॥ ॥इति कांदर्पिकम्॥

अथ गंधयुक्तिः॥ स्रग्गंधधूपांबरभूषणाद्यं न शोभते शुक्लशिरोरुहस्य॥ यस्मादतो मूर्धजरागसेवां कुर्याद्यथैवांजनभूषणानां॥१॥ लोहपात्रे तंडुलान्कोद्रवाणां शुक्ले पक्वांल्लोहचूर्णेन साकं॥ पिष्टान्सूक्ष्मं मूर्ध्नि शुक्ला म्लकेशे दत्त्वा तिष्ठेद् वेष्टयित्वार्कपत्रैः॥२॥ याते द्वितीये प्रहरे विहाय दद्याच्छिरस्यामलकप्रलेपं॥ संछाद्य पत्रैः प्रहरद्वयेन प्रक्षालितं कार्ष्ण्यमुपैति शीर्षं॥३॥

---

असगंध· केवांच· पनालकोहडा· साठी के चावल का पिष्ट (सर्व औषध आधे और चावल का पिष्ट आधा) ऐसा योग करके बकरी के दूध में पीके उसकी पूरी वा समोसा करके घी में तलना· वह शुक्र वृद्धिकारक होती है·॥९॥ दूध के बराबर गोखरू का उपयोग अथवा पनालकोहडे के कंद का भक्षण करने से· स्त्री के विषे रेतस्खलन होता नहीं· वह जो पुरुष कोपचे तो अग्निमंद होगा· उसको यह आगे का चूर्ण लेना·॥१०॥ अजवाइन· लवण (सैंधव) हरीतकी· सोंठ· पीपर· यह सम भाग चूर्ण करके· मद्य· मठा· मांड उष्णोदक इनमें से एक के बराबर वह चूर्ण का पान करना· तो जठराग्नि प्रदीप्त होता है·॥११॥ बहुत खट्टा· बहुत कडवा· बहुत खारा· बहुत तीता· क्षारयुक्त शाक बहुत जिसमें ऐसे भोजन जो पुरुष भक्षण करता है· वह दृष्टि· रेत· बल इस करके रहित होता है· स्त्री में प्राप्त होय के· तरुण रहते भी· वृद्ध के समान बहुत निमित्त· कपट करता है· (उस करके स्त्री का रती में समाधान होता नहीं·॥१२॥ इति रतसंहिताभाषांतः पुरचिंतायां कांदर्पिकं नाम षट्सप्ततितमोऽध्यायः॥७६॥ अथ गंधयुक्तिः ॥ माला· सुगंधद्रव्य· सुधूप· वस्त्र· अलंकार· अनुलेपन इत्यादि श्वेत केश के पुरुष को शोभायमान होता नहीं· इस वास्ते केशों की रंजन रूप सेवा जैसे अंजन से नेत्र की शोभा और भूषण की सेवा करते हैं तैसे करना·॥१॥ कोद्रव (कोदो के चावल) लोहे के पात्र में सफेद खट्टी मांड में पक्व करके नंतर लोह चूर्ण सहित उसका महीन पिष्ट करके श्वेत खट्टी मांड इत्यादिक से आर्द्र केश ऐसे मस्तक के विषे लेप करके मंदार के पत्ते से वेष्टन करके दो प्रहर रहना·॥२॥ दो प्रहर के अनंतर वह लेप निकाल के मस्तक

पश्चाच्छिरःस्नानसुगंधतैलैर्लोहाद्यगंधं शिरसोपनीय ॥ इत्थं स्वगंधै-
र्विविधैश्च धूपैरंतःपुरे राज्यसुखं निषेवेत् ॥ ४ ॥ त्वक्कुष्ठरेणुनलिका-
स्पृक्कारसतगरवालकैस्तुल्यैः ॥ केसरपत्रविमिश्रैर्नरपतियोग्यं शि-
रःस्नानं ॥ ५ ॥ मंजिष्ठया व्याघ्रनखेन शुक्त्या त्वचा सकुष्ठेन रसेन चू-
र्णः ॥ तैलेन युक्तोर्कमयूखतप्तः करोति तच्चंपकगंधितैलं ॥ ६ ॥ तुल्यैः
पत्रतुरुष्कबालतगरैर्गंधः स्मरोद्दीपनः सव्यामो बकुलोयमेव कटु-
काहिंगुप्रधूपान्वितः ॥ कुष्ठेनोत्पलगंधिकः समलयः पूर्वो भवेच्चंप-
कोजातीत्वक्सहितोतिमुक्तक इति ज्ञेयः सकुस्तुंबुरुः ॥ ७ ॥ शतपुष्पा-
कुंदुरुकौ पादेनार्धेन नखतुरुष्कौ च ॥ मलयप्रियंगुभागौ गंधो धूप्यो
गुडनखेन ॥ ८ ॥ गुग्गुलुवालकलाक्षामुस्तानखशर्कराः क्रमाद्धूपः
॥ अन्यो मांसीबालकतुरुष्कनखचंदनैः पिंडः ॥ ९ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ७ ॥

---

पर आंवरेका लेप देना और दो प्रहर तक ओदे पत्रसे आच्छादन करके मस्तक धो-
ना तो काला होता है (मस्तक परके केश काले होते हैं) ॥ ३ ॥ नंतर मस्तकस्नान सु-
गंध तैल इस करके मस्तकका लोहा भू गंध धो पके नंतर मनोहर ऐसे नाना प्रकार
के गंध और धूप इस करके युक्त ऐसे अंतःपुरमे राज्यसुखका सेवन करना (स्त्रीके
सहित क्रीडा करना ॥ ४ ॥ दालचिनी· कुलंजन· मेंहदीका बीच· गुलकबू· वेला·
वोलवाराल· तगर· खस· नागकेसर· तालीसपत्र· यह समभाग चूर्ण करके उसे
शिरस्नान राजाको योग्य है (यह उपटन मस्तकमे लगावना ॥ ५ ॥ मजीठ· नख-
ला· शंखोद्भव चर्म· दालचिनी· कुलंजन· मुसवर· वाराल इसका चूर्ण समभाग
करके तैल युक्त करना· और सूर्यकिरणमे गरम करना तो वह तेल चंपकगंधी हो-
ता है· ॥ ६ ॥ तालीसपत्र· ऊद· खस· तगरमूल यह समभाग चूर्ण करना· वह गंधका
मोद्दीपक होता है· यही व्याम (रोहीसतृणसे) सहित और कटुका (सुगंधित तृण वि·)
और हिंगुल· इनके धूम्रसे धूपित करना तो· बकुलसंज्ञक गंध होता है· वह पूर्वोक्त
गंध कुलंजन युक्त करे तो उत्पलगंधिक होता है· वह पूर्वोक्त चंदनयुक्त करे तो चंपक
सं० होता है· वह पूर्वोक्त जायपत्री और दालचिनी इसे युक्त और धनियासहित करे
तो अतिमुक्त (वेला) सरस गंध होता है ॥ ७ ॥ सोवाका बीज और लोहबाण यह २ चतुर्थांश·
नख (शंखोद्भव चर्म वा नखला) यह अर्धभाग चंदन और फूलप्रियंग यह २ भाग ऐसा
एकत्र करना· यह गंध गुड और नख इसके बराबर अग्नीमे डारके धूम करना (उत्तम
सुगंध होता है· ॥ ८ ॥ गुग्गुल· खस· लाह· नागरमोथा· नखला· शर्करा· यह समभाग
लेके धूप करना· जटामांसि· खस· धूप· नखला· चंदन यह समभाग लेके धूप करना·
वह पिंड धूप होता है· ॥ ९ ॥

हरीतकीशंखघनद्रवांबुभिर्गुडोत्पलैः शैलकमुस्तकान्वितैः ॥ नवां
तपादादिविवर्धितैः क्रमाद्भवंति धूपा बहवो मनोहराः ॥ १० ॥ भागै
श्चतुर्भिः सित शैलमुस्ताः श्रीसर्जभागौ नखगुग्गुलू च ॥ कर्पूरबो
धो मधुपिंडितो यं कोपच्छदो नाम नरेंद्रधूपः ॥ ११ ॥ त्वगुशीरपत्रभा
गैः सूक्ष्मैलार्धेन संयुतैश्चूर्णः ॥ पटवासः प्रवरोऽयं मृगकर्पूरप्रबोधे
न ॥ १२ ॥ घनवालुकशैलेयककर्पूरोशीरनागपुष्पाणि ॥ व्याघ्रन
खस्पृक्कागुरुदमनकनखनरगधान्यानि ॥ १३ ॥ कर्पूरचोरमल
यैः स्वेच्छापरिवर्तितैश्चतुर्भिरतः ॥ एकद्वित्रिचतुर्भिर्भागैर्गंधार्ण
वो भवति ॥ १४ ॥ अत्युल्बणधूपत्वादेकांशो नित्यमेव धान्यानां ॥
कर्पूरस्य तदूनो नैतौ द्व्यादिभिर्देयौ ॥ १५ ॥ ॥ ॥ ॥

---

१हर्रादल २नखला ३नागरमोथा ४चौल ५खस ६गुड ७कोष्ट ८पत्थरफूल ९कचू
र किंवा नागरमोथा · यह नव चतुर्थांश वर्धित एकत्र करके बहुत मनोहर धूप होते हैं
(हर्र १भाग · नखला २भाग · नागरमोथा ३भाग · इ० मुस्ता ९भाग एकत्र करने से
धूप होता है · अथवा · हरीतकी नखला · नागरमोथा · मुसबर · खस · यह पादादिवि
वर्धित और गुड और कोष्ठ इससे युक्त करे तो दूसरा धूप · यही पत्थरफूल और कचू
र इससे युक्त करे तो तिसरा धूप · ऐसे बहुत धूप होते हैं · ॥ १० ॥ शर्करा · पत्थरफूल · ना
गरमोथा · इनके चार चार भाग · विशेष धूप · राल इनके दो दो भाग · नखला · गुग्गु
ल · इनके दो दो भाग यह सूक्ष्म करके महीन · उसमें कपूर महीन करके उसका एक
भाग डालना · नंतर मधु से गोली करना · यह कोपच्छेद नामक राजधूप होता है ·
॥ ११ ॥ दालचिनी · खस · तालीसपत्र · इनके २भाग · इसके अर्ध इलायचीका चूर्ण
डालना तो पटवास (अंगोत्पुलन) सुगंध होता है · इसमें कस्तूरी और कपूर इसके
चूर्ण मिश्र करे तो श्रेष्ठ धूप होता है ॥ १२ ॥ १नागरमोथा · २लोहबाण · ३पत्थरफूल
४कपूर · ५खस · ६नागकेशर ७समुद्रफेन · ८वेला · ९अगुरु · १०दवना · ११नखला १२
तगरमूल १३धनिया · १४कपूर १५अजमोदा · १६चंदन · यह १६ द्रव्य चार चार स्वेच्छा
से एक · दो · तीन चार भाग से फेर के मिश्रित करना · तो गंधसमुद्र होता है (बहुत गं
ध होते हैं) सो ऐसे – नागरमोथा १भाग · लो० २भा० पत्थरफूल ३भाग · कपूर ४भा० यह ए
क गंध · नाग० १भाग · लोह० भा० २ पत्थ० ४भा · कपूर · ३भाग · यह दूसरा · ना० १ लो०
३ पत्थ० २ कपूर ४भाग · यह तिसरा · नागर० १ लो० ३ प० ४ कपूर २भाग यह चौथा ·
ना० १ लो० ४ प० २ कपूर ३ यह पंचम · ना० १ लो० ४ प० ३ कपूर दो भाग · यह छठ गंध ·
ऐसे भेद से अनेक गंध होते हैं · ॥ १३ ॥ १४ ॥ धनिया को बहुत धूप है इस वास्ते सर्व

श्रीकर्णेर्युक्तनखैर्लेधूपयित्वाकः कमात्वपिंदुस्यैः॥ बोधःकस्तूरिक यादेयः कर्पूरसंयुतया॥१६॥अत्रसहस्त्रचतुष्टयमन्यानिचसप्तति सहस्राणि॥लक्षंशतानिसप्तविंशतियुक्तानिगंधानां॥१७॥एकैक मेकभागंद्वित्रिचतुर्भागिकैर्युतंद्रव्यैः॥षड्गंधकरंतद्वद्द्वित्रिचतुर्भा गिकंकुरुते॥१८॥द्रव्यचतुष्टयोगाद्गंधचतुर्विंशतिर्यथैकस्य॥ए वंशेषाणामपिषण्णवतिःसर्वपिंडोत्र॥१९॥षोडशकेद्रव्यगणेच तुर्विकल्पेनभिद्यमानानां॥अष्टादशजायंतेशतानिसहितानिविंश त्या॥२०॥षण्णवतिभेदभिन्नश्चतुर्विकल्पोगणोयतस्तस्मात्॥ षण्णवतिगुणःकार्यःसासंख्याभवतिगंधानां॥२१॥पूर्वेणपूर्वेण गतेनयुक्तंस्थानंविनांत्यंप्रवदंतिसंख्यां॥इच्छाविकल्पैःक्रमशो भिनीयनीतेनिवृत्तिःपुनरन्यनीतिः॥२२॥द्वित्रींद्रियाष्टभागैरगुरुः पत्रंतुरुष्कशैलेयौ॥विषयाष्टपक्षदहनाःप्रियंगुमुस्तारसाःकेशः॥ ॥२३॥

---

गंधमेउस्का एकही अंशदेना · कपूर भी अत्युल्वणगंधहै इसवास्ते कमती देना ५।२ इत्यादिभागजो भी अनुक्रमसे प्राप्तहोयतथापि देनानही · कपूरकातोउस्से कमतीहोय · (कारणउस्कागंध बहुत इसवास्ते अन्यद्रव्यकागंधनाश होताहै ·) ॥१५॥ विशेषधूप · राल · गुड · शंखोद्भवचर्म यहचारद्रव्यसे वह पूर्वोक्तक्रमसे भि न्नभिन्नमिश्रितकरना · एकत्रकरके मिश्रित नहिकरना · अनंतर कपूरयुक्त कस्तूरीसेबोध · स्तूस्पकरके युक्तकरना ·॥१६॥ इहागंधद्रव्य गण मे · १७४७२० एकलाख७४हजार · सातसे · बीसगंधहोते हे॥ १७॥ पूर्वोक्त (श्लो० १३।१४) एकएकद्रव्योका एकभाग अन्यतीनद्रव्यके २।३।४ भागिकद्रव्यसे युक्तकरने सेछगंधहोतेहे · तैसेही २।३।४ भागयुक्तकरना ·॥१८॥ पूर्वोक्तचारद्रव्यकेयोग से २४ गंधहोतेहे · ऐसेहीशेष तीनचारके भी होतेहै · एकट्ठे सर्वगंधसमुदाय ९६ होताहै ·॥१९॥ सोलद्रव्य (श्लो० १३।१४) चौबीसविकल्पसे भिद्यमानहोय तो बीससहित १८ सेगंधहोते हे (१८२०)॥२०॥ चारसे विकल्पितजो गंधसमूह उस्के ९६ भेदहोतेहै इसवास्ते वह ९६ से गुणनातो जितनी संख्या आवे उतनी गंध की संख्या होती है ·॥२१॥ १६ से १ तक अंक लिखके पूर्वका अंत्य १५ द्वितीय १४ मिश्रित करना · इसीरीतिसे १६ केबिनाकरनातोसंख्याहोती है ऐसाकहतेहे · इच्छाप्र माण अनुक्रमसे लेजायके पुनः पीछेफिरना ऐसाकरेतो अनेक गंधसंख्याहो तीहै ·॥२२॥ अगुरु २भाग · तालीसपत्र ३ धूप · ५ पत्थरफूल ८ फूलप्रियंगु ५ नागरमोथा ८ बोल २ खस ३॥२३॥ ॥

सृक्कात्वक्तगराणां मांस्याश्च कृतैकसप्तषड्भागाः॥ सप्तर्तुवेदचंद्रैर्मलयनखश्रीककुंदुरुकाः॥२४॥ षोडशके कच्छपुटे यद्वत्तद्वामिश्रितैश्चतुर्द्रव्यैः॥ येऽत्राष्टादशभागास्तेऽस्मिन् गंधार्णवे योगाः॥२५॥ नखतगरतुरुष्कयुता जातीकर्पूरमृगकृतोद्बोधाः॥ गुडनखधूप्या गंधाः कर्त्तव्याः सर्वतोभद्राः॥२६॥ जातीफलमृगकर्पूरबोधितैः ससहकारमधुसिक्तैः॥ बहवोऽत्र पारिजाताश्चतुर्भिरिच्छापरिगृहीतैः॥२७॥ सर्जरसश्रीवासकसमन्विता येऽत्र धूपयोगास्तैः॥ श्रीसर्जरसवियुक्तैः स्नानानि सबालकत्वग्भिः॥२८॥ रोध्रोशीरनतागुरुमुस्तापत्रप्रियंगुवनपथ्याः॥ नवकोष्ठात्कच्छपुटाद्द्रव्यत्रितयं समुद्धृत्य॥२९॥ चंदनतुरुष्कभागौ शुक्त्यर्धं पादिकस्तु शतपुष्पा॥ कटुहिंगुलगुडधूप्याः केसरगंधाश्चतुरशीतिः॥३०॥ सप्ताहं गोमूत्रे हरीतकीचूर्णसंयुते क्षिप्त्वा॥ गंधोदके च भूयो विनिक्षिपेद्दंतकाष्ठानि॥३१॥ एलात्वक्पत्रांजनमधुमरिचैर्नागपुष्पकुष्ठैश्च॥ गंधांभः कर्त्तव्यं कंचित्कालं स्थिता न्यस्मिन्॥ ॥३२॥

---

वेला ४ दालचिनी १ नगर ७ जटामांसी ६ चंदन ७ नखला ६ विशेष धूप ४ लोहबाण १ ऐसे चार चार द्रव्यके इस रीतिसे भाग एकत्र करना तो गंध होते हैं॥२४॥ यह पूर्वोक्त षोडशक कच्छपुटमें कोई भी प्रकारसे मिश्रित जो चार द्रव्य उस करके जो इहां १८ भाग होते हैं वह इहां गंधयोग जानना॥२५॥ नखला तगरमूल ऊद इससे युक्त और जावपत्री कपूर कस्तूरी इनसे उद्बोधित (मिश्रित) और गुड नखला इसे धूप्य ऐसे गंध करना तो वह सर्वतोभद्र होते हैं॥२६॥ स्वेच्छासे गृहीत पूर्वोक्त चार चार द्रव्य जायफल कस्तूरी कपूर इसे बोधित और आम्ररस युक्त मधुसे सिंचित करनेसे बहुत पारिजात सदृश गंध होते हैं॥२७॥ राल धूप इसे युक्त जो धूपयोग उस करके और धूप और राल इस करके रहित और खस और दालचिनी इसे युक्त करके चूर्ण स्नान योग्य होता है (अपटन)॥२८॥ १ लोध २ खस ३ तगरमूल ४ अगुरु ५ नागरमोथा ६ तालीसपत्र ७ फूलफिरंग ८ छोटामोथा ९ हरी यह नवकोष्ठ कच्छपुटसे तीन तीन द्रव्य निकालके॥२९॥ उसमें चंदन और धूप इनका एक एक भाग और शंखोद्भव चर्म इसके दो भाग सोवेका चतुर्थ भाग ऐसे योजना करके कपूर हिंगुल गुड इसे धूपित करे तो ८४ केसर गंध होते हैं॥३०॥ दंतकाष्ठ लक्षणाध्यायोक्त दंतकाष्ठ हरीसे मिश्रित गोमूत्रमें सात दिन रखना पुनः स्वच्छ गंधोदकमें आधा दिन रखना॥३१॥ वह गंधोदक एलायची दालचिनी तालीसपत्र बेर मधु मरिच नागकेसर कुलंजन इनके सम भाग करके युक्त जल करनेसे वह गंधोदक होता है॥३२॥ जायफल ४ भाग तालीसपत्र २ भाग कोतीलाप

जातिफलमृगमदैलाकर्पूरैः कृतयथैवशिविभागैः॥अवचूर्णितानिभानो
मरीचिभिः शोषणीयानि॥३३॥ वर्णप्रसादं वदनस्य कांतिं वैशद्यमा
स्यस्य सुगंधितां च॥ संसेवितुः श्रोत्रसुखां वचां च कुर्वंति काष्ठान्यस
कृद्भवानां॥३४॥ कामं प्रदीपयति रूपमभिव्यनक्ति सौभाग्यमावह
ति वक्त्रसुगंधितां च॥ ऊर्जं करोति कफजांश्च निहंति रोगांस्तांबूलमे
वमपरांश्च गुणान्करोति॥३५॥ युक्तेन चूर्णेन करोति रागं रागक्षयं पू
गफलातिरिक्तं॥ चूर्णाधिकं वक्त्रविगंधकारि पत्राधिकं साधु करोति गं
धं॥३६॥ पत्राधिकं निशि हितं सफलं दिवा च प्रोक्तान्यथाकरणमस्य वि
डंबनैव॥ कक्कोलपूगलवलीफलपारिजातैरामोदितं मदमुदा मुदितं क
रोति॥३७॥ ॥इति गंधयुक्तिः॥ ॥अथ पुंस्त्रीसमायोगः॥ ॥शस्त्रेण
वेणीविनिगूहितेन विदूरथं स्वा महिषी जघान॥ विषप्रदिग्धेन च नूपुरे
ण देवी विरक्ता किल काशिराजं॥१॥ एवं विरक्ता जनयंति दोषान्प्राणच्छि
दोन्यैरनुकीर्तितैः किं॥ रक्ताविरक्ताः पुरुषैरतोऽर्थात्परीक्षितव्याः प्रमदाः प्र
यत्नात्॥२॥

---

वी १ भाग· कपूर १ भाग यह एकत्र करके उसे अवचूर्णित करके वह दंतकाष्ठ सूर्यकि
रणमे शुष्क करना ॥३३॥ पूर्वोक्त गंधयुक्त दंतकाष्ठसे दंतधावन करनेसे दंतधावन
करनेवालेको· उत्तम कांति· मुखसुंदर· मुखस्वच्छ और सुगंध· वाणी कर्णसुखकार
क ऐसे गुण दंतकाष्ठ करते हैं ॥३४॥ तांबूलसेवन करनेसे यह और अन्यभी गुण होते
है ॥ कामोत्पत्ति होती है· शरीरशोभा करता है· सौभाग्य करता है· मुखको सुगंधिकर
ता है· बल करता है· कफोत्पन्न रोगका नाश करता है· ऐसे यह और अन्य पूर्वोक्त गु
णभी करता है ॥३५॥ योग्य (अधिक और कमती नही) चूनेसे रंग होता है· सुपारी अ
धिक होय तो रंगका नाश होता है· चूना अधिक होय तो मुखको दुर्गंध होता है· पत्राधिक
तांबूल होय तो उत्तम गंध करता है ॥३६॥ रात्रीमे पत्राधिक तांबूल हितकारक होता है
दिनमे पूगीफलसहित हित है· इससे अन्यथा करना विडंबन होता है· कंकोल· सुपारी
लवंग· जायफल· इनसे सुगंधित तांबूल पुरुषको मदानंदसे आनंदित करता है ॥३७
॥ इति बृहत्संहितायां पं० पुरचिंतायां गंधयुक्तिर्नाम सप्तसप्ततितमोऽध्यायः॥७७॥
॥अथ पुंस्त्रीसमायोगः॥ विदूरथ राजाकी स्त्री विदूरथको केशपाशमे छुपाकर रक्खे शस्त्र
से मारती भई· ऐसेही काशीराजको उसीकी स्त्री विषलिप्त पैंजनसे मारती भई यह प्र
सिद्ध है ॥१॥ इस प्रकार करके विरक्त स्त्री प्राणनाशकारक ऐसे दोषको उत्पन्न करती
है· इससे अन्य कथन करके क्या उपयोग· इसवास्ते स्त्री अनुरक्त किंवा विरक्त· इसकी
परीक्षा पुरुषने प्रयत्नसे करना· (अंतर संयोग करना) ॥२॥

स्नेहं मनोभवकृतं कथयंति भावा नाभीभुजस्तनविभूषणदर्शनानि वस्त्राभिसंयमनकेशविमोक्षणानि भ्रूक्षेपकंपितकटाक्षनिरीक्षणानि ॥३॥ उच्चैः ष्ठीवनमुत्कटप्रहसितं शय्यासनोत्सर्पणं गात्रास्फोटनजृंभणानि सुलभद्रव्याल्पसंप्रार्थना ॥ बालालिंगनचुंबनान्यभिमुखे सख्याः समालोकनं दृक्पातश्च पराङ्मुखे गुणकथाकर्णस्य कंडूयनं ॥४॥ इमांच विंद्यादनुरक्तचेष्टां प्रियाणि वक्ति स्वधनं ददाति ॥ विलोक्य संहृष्यति वीतरोषा प्रमार्ष्टि दोषान् गुणकीर्तनेन ॥५॥ तन्मित्रपूजा तदरिद्विषत्वं कृतस्मृतिः प्रोषितदौर्मनस्यं ॥ स्तनौष्ठदानान्युपगूहनं च स्वेदोथ चुंबाप्रथमाभियोगः ॥६॥ विरक्तचेष्टा भ्रुकुटीमुखत्वं पराङ्मुखत्वं कृतविस्मृतिश्च ॥ असंभ्रमो दुष्परितोषता च तद्द्विष्टमैत्री परुषं च वाक्यं ॥७॥ स्पृष्ट्वाथवा लोक्य धुनोति गात्रं करोति गर्वं न रुणद्धि यांतं ॥ चुंबाविरामे वदनं प्रमार्ष्टि पश्चात्समुत्तिष्ठति पूर्वसुप्ता ॥८॥

मदनकृत स्नेहकी चेष्टा (व्यापार) कथन करती है· वह ऐसे— नाभी· भुज· स्तन· अलंकार यह देखावना· वस्त्रका नियमन (घुंघट लेना) बेनी छोडना· भौं फेरके कंपित नेत्रप्रांतसे देखना यह चेष्टा प्रियदेखके अनुरक्तस्त्री करती है ॥३॥ बडेसे मुख शब्द (खकारना) शब्दयुक्तहास्य· शय्या और आसन इसके पास जाना· शरीराव यवका शब्द करना· जभाई देना· थोडे मोल्यका और· अल्प पदार्थ मांगना· सन्मुख प्रिय रहते बालकका आलिंग और चुंबन करना· सखीके तरफ देखना· प्रिय अन्यत्र देखते रहते उसके तरफ देखना· और उसके गुण वर्णन करना· अपना कान खजवावना ॥४॥ प्रियभाषण करना· स्वकीय धन देना· गतक्रोध होय के प्रियके तरफ देखके आनंद होना प्रियके गुण वर्णन करके उसके दोष नाश करना ॥५॥ प्रियके मित्रका सत्कार और शत्रूका द्वेष करना· प्रियने किये जो उपकार उसका स्मरण करना· प्रिय प्रवास मे जाने से दुःखित होना· स्तन स्पर्श और ओष्ठ चुंबन देना· आलिंगन करना· अंगमे पसीना आवना· मुख संयोग· यह सर्व लक्षण प्रथम संयोग मे होते हैं· यह चेष्टा अनुरक्त स्त्रीकी जानना ॥६॥ पतीको दुष्ट समान देखके भौं मुखके नरक करना· पतीके तरफ पीठ करना उपकारका विस्मरण करना· आदर न करना· अर्थदानसे भी संतोष नहीं पावना पतीके शत्रूकी मैत्री करना कठोर भाषण करना· उसको देखके किंवा स्पर्श करके शरीर कंपित करना· अभिमान करना· क्रोध करके जाने [illegible] समय मार्ग रोधन करना· चुंबन समाप्त होने पर मुख पोछना· पतीके पूर्व निद्रा करके पश्चात् उठना· यह चेष्टा विरक्त स्त्रीकी होती है ॥७॥८॥

भिक्षुणिकाप्रव्रजितादासीधात्रीकुमारिकारजिका॥मालाकारी दुष्टांगनासखीनापिनीदूत्यः॥९॥कुलजनविनाशहेतुर्दूत्यो यः स्यादतःप्रयत्नेन॥ताभ्यःस्त्रियोभिरक्ष्यावंशयशोमानवृद्ध्यर्थं॥ १०॥रात्रीविहारजागररोगव्यपदेशपरगृहेक्षणिकाः॥व्यसनोत्स वाश्चसंकेतनहेतवस्तेषुरक्ष्याश्च॥११॥आदौनेच्छतिनोज्झतिस्म रकथांव्रीडाविमिश्रालसामध्येह्रीपरिवर्जिताभ्युपरमेलज्जाविन म्राननाभावैर्नैकविधैःकरोत्यभिनयंभूयश्चयासाद्रागुक्त्वापुंप्र कृतिंचयानुचरतिग्लानेतरैश्चेष्टितैः॥१२॥स्त्रीणांगुणायौवनरूप वेषदाक्षिण्यविज्ञानविलासपूर्वाः॥स्त्रीरत्नसंज्ञाचगुणान्विताःस्त्र स्त्रीव्याधयोन्याश्चतुरस्यपुंसः॥१३॥नग्राम्यवर्णैर्मलदिग्धकायानिग्रा गसंबंधिकथांचकुर्यात्॥नचान्यकार्यस्मरणंरहस्यामनोहिमूलंहरदग्ध मूर्तेः॥१४

भीखमांगनेवाली·तपस्वी(विरक्तकेसमान भटकनेवाली)दासी·उपमाता(दाई) कुमारिका·धोबीन·मालिन·दुष्टस्त्री·सखी·हज्जामकी स्त्री·यहपरपुरुषवश्यक रकेदेनेकेविषयमेदूतीहोतीहै॥९॥यहदूतीकुलस्त्रीकेनाशविषयमेकारणहो तीहै·इसवास्तेप्रयत्नसेवहदूतीसे·उत्तमवंशकीर्ति·सम्मानइसकेवृद्ध्यर्थ·कुली नस्त्रीकारक्षणकरना॥१०॥रात्रीमेफिरना·जागरण·रोगनिमित्त·परगृहमेरहना ज्योतिषीकेपास प्रश्नपूछना·किंचित्रोगहोनेसेकोईकारणलेकेदुःखकरना· विवाहादिउत्साह·यहसंकेतनकेकारणहोतेहै इसकेविषेभीस्त्रियोंकारक्षणकर ना॥११॥प्रथमशय्यापरजायतोमैथुनकीइच्छाकरतीनही· स्मर(काम) कथाकथनकरनेसेश्रवणकरतीहै·मैथुनारंभमेलज्जामिश्रित आलस्ययुक्त मध्यमेलज्जारहित औरमैथुनांतमेलज्जासेनम्रमुखहोताहै·पुनःलीलाविला सादि अनेकविधभावसेआदरयुक्तचेष्टाकरतीहै·पुरुषकीग्लानीकिंवाप्रस न्नताइ॰नानके चेष्टासेहीअनुचरणकरतीहै·कहियेपुरुषकीग्लानीहोयतो अपनीभीग्लानीऔरपुरुषप्रसन्नताहोयतोअपनीभीप्रसन्नतादेखावतीहै· ॥१२॥तारुण्य·सुंदरस्वरूप·अलंकारादिधारण·अनुकूलदया·कामशास्त्रोक्तकला औरपुरुषइनकेचित्तग्रहण·मधुरवचन औरकटाक्षनिरीक्षणादिविलासप्रथमक रना·इ॰स्त्रियोंकेगुणहोतेहै·यहगुणसेयुक्त जोस्त्री उन्हीकोस्त्रीरत्नऐसानामहै· इतरअन्यस्त्री·चतुरपुरुषको·स्त्रीव्याधि(चित्तकोखेदकारक)होतीहै·॥१३॥ग्रा म्यवर्णसे(हलकीभाषासे)पुनःमलिन·कुत्सितशरीरऐसेस्त्रियोंकेवरसवरमैथुन संबंधीकथाबोलनानही·मैथुनाश्रितस्त्रीनेगृहाश्रितकर्मकास्मरणभीकरनानही·कार णमदनकामूलमनहै·१४

श्वासं मन्दुःखेन समुत्सृजन्ती बाहूपधानस्तनदाननदक्षा ॥ सुगंधकेशा सुसमीपरागा सुप्तेऽनुसुप्ता प्रथमं विबुद्धा ॥ १५ ॥ दुष्टस्वभावाः परिवर्जनीया विमर्दकाले षु च न क्षमा याः ॥ यासामसृग्वासितनीलपीतमाताम्रवर्णं च न ताः प्रशस्ताः ॥ १६ ॥ या स्वप्नशीला बहुरक्तपित्ता प्रवाहिनी वातकफातिरिक्ता ॥ महाशना स्वेदयुतांगदुष्टा या ह्रस्वकेशी पलितान्विता च ॥ १७ ॥ मांसानि यस्याश्च चलंति नार्या महोदरा विक्लिबमिनी च या स्यात् ॥ स्त्रीलक्षणे याः कथिताश्च पापास्ताभिर्न कुर्यात्सह कामधर्मं ॥ १८ ॥ शशशोणितसंकाशं लाक्षारससंनिकाशमथवा यत् ॥ प्रक्षालितं विरज्यति यच्चासृक्तद्भवेच्छुद्धं ॥ १९ ॥ यच्छुद्धं वेदनावर्जितं त्र्यहात्सन्निवर्तते रक्तं ॥ तत्पुरुषसंप्रयोगाद्विचारं गर्भतां याति ॥ २० ॥ न दिनत्रयं निषेवेत्स्नानं माल्यानुलेपनं च स्त्री ॥ स्नायाच्चतुर्थदिवसे शास्त्रोक्तेनोपदेशेन ॥ २१ ॥ पुष्यस्नानौषधयो याः कथितास्ताभिरंबु मिश्राभिः ॥ स्नायात्तथाश्च मंत्रः स एव यस्तत्र निर्दिष्टः ॥ २२ ॥

---

श्वासोश्वास छोडने मे पती को जितना काल लगता है उतनेही काल मे श्वासोश्वास छोडना· भुजाकी तकिया और स्तन इनके दान विषे चतुर ना· सुगंधयुक्त केश रहना सुरतारंभमेही प्रेम बढावना· पति सूतने पर सूतना और पती के पहिले उठना· यह स्त्रियों के गुण होते है· ॥ १५ ॥ सुरतकाल मे समर्थ नहीं वह दुष्टस्वभाव स्त्री कर्त्यकरना· अथवा जिनका रक्त (रज) काला· नील· पीत· थोडा लाल· ऐसी भी प्रशस्त नही· ॥ १६ ॥ अतिनिद्रायुक्त स्त्री· बहुत रक्त और पित्त इससे युक्त· जिस्की योनि बहती है· वात और कफ यह बहुत जिस्का वह· बहुत खानेवाली· घर्मयुक्त· सदोष अवयवकी छोटे केशकी· सफेद केश भए जिस्के· ॥ १७ ॥ जिस्के शरीर के मांस शिथिल भए वह बडे पेटकी· अस्पष्ट शब्द जिस्का वह और स्त्रीलक्षण मे जो अशुभ कथन किया वह यह सर्व स्त्री के बराबर मैथुन करना नही ॥ १८ ॥ जो रक्त (अशुद्ध — — ) शशाके रक्त समान अथवा लाह के रस समान और वस्त्र पर गिरा सो धोने पर जाता है· वह रक्त शुद्ध होता है· ॥ १९ ॥ जो रक्त शब्द और वेदना इससे रहित और तीन दिन से नाश होता है· वह पुरुषयोग से निःसंशय गर्भत्व को प्राप्त होता है (गर्भ होता है) ॥ २० ॥ तीन दिन तक स्त्री ने स्नान· पुष्प· अनुलेपन यह सेवन करना नही· चतुर्थ दिन मे शास्त्रोक्त विधान से स्नान करना· ॥ २१ ॥ पुष्यस्नान (अ० ४८) इसमे कथन किया औषधीसे मिश्रित जल भरके वह जलसे रजस्वला ने स्नान करना और तहां कथित मंत्र भी कहना· ॥ २२ ॥

युग्मासु किल वर्युग्यानिशासु नार्यो भवंति विषमासु॥ दीर्घायुषः सुरू पाः सुखिनश्च विरुद्धयुग्मासु॥२३॥ दक्षिणपार्श्वे पुरुषो वामे नारी च यावुभयसंस्थौ॥ यदुदरमध्योपगतं नपुंसकं तन्निबोद्धव्यं॥२४॥ केन्द्रत्रिकोणेषु शुभस्थितेषु लग्ने शशांके च शुभैः समेते॥ पापैस्त्रिला भारिगतैश्च यायात्पुंजन्मयोगे सुचसंप्रयोगं॥२५॥ नखदशन विक्षितानि कुर्यादृतुसमये पुरुषः स्त्रियाः कथंचित्॥ ऋतुरपि दश षट् च वासराणि प्रथमनिशात्रितयं न तत्र गम्यं॥२६॥ ॥ इति पुंस्त्री समायोगः॥ ॥ अथ शय्यासनलक्षणम्॥ ॥ सर्वस्य सर्वकालं य स्मादुपयोगमेति शास्त्रमिदं॥ राज्ञां विशेषतोतः शयनासनलक्ष णं वक्ष्ये॥१॥ असनस्यंदनचंदनहरिद्रसुरदारुतिंदुकीशालाः॥ काश्मर्यंजनपद्मकशाकावाशिंशपाश्च शुभाः॥२॥ अशनिजलानिलहस्तिप्रपातिता मधुविहंगकृतनिलयाः॥ चैत्यश्मशानपथिजोर्ध्वशुष्कवल्ली निबद्धाश्च॥३॥

रजोदर्शनसे ४ पतबसे सम रात्रीके विषे पुत्र होते हैं और विषम रात्रीके विषे कन्या होती है। उसमें भी दूरस्थ सम ६।८।१२।१४।१६ यह रात्रीके विषे होनेवाले गर्भ दीर्घायुषी सुरूप सुखी ऐसे होते हैं अर्थात् चतुर्थ रात्रीके विषे विपरीत होता है ॥२३॥ स्त्रीके दक्षिण कुक्षीमें जो गर्भ रहता है वह पुरुष और वाम कुक्षीमें जो सो कन्या ऐसा जानना दो होय तो वह दूनो कुक्षीमें रहता है जो पेटके (गर्भाशयके मध्यभागमें रहता है वह नपुंसक जानना ॥२४॥ केंद्र १।४।७।१० कोण ९।५ यह स्थानमें शुभ ग्रह (बुध शुक्र गुरु) होंय लग्न और चंद्र यह शुभ ग्रहसे युक्त होंय ३।११।६ यह स्थानमें पापग्रह होंय और पुंजन्म योग रहते स्त्रीसे संभोग करना ॥२५॥ ऋतुकालमें कहिये गर्भसंभव कालमें पुरुषने स्त्रीको कभी ही नख और दंतक्षत न करना नहीं ऋतुकाल रजस्वला होने पर सोल दिन रहता है उसमें पहिली तीन रात्री गमन करना नहीं ॥२६॥ ॥ इति बृहत्संहितायां मंतःपुरचिंतायां पुंस्त्रीसमायोगो नामाष्टासप्ततितमोध्यायः॥७८॥ ॥ अथ शय्यासनलक्षणं॥ ॥ शयनासनलक्षण शास्त्रका सर्व लोकको सर्व काल उपयोग होता है और राजाकोतो विशेष करके होता है इसवास्ते पलंग आदिकके लक्षण कहते हैं ॥१॥ असन वृक्ष स्यंदनवृक्ष चंदनवृक्ष दारुहरदीका वृक्ष देवदारु तेंदुकावृक्ष सागवान शिवनीका वृक्ष अंजन नामक वृक्ष पद्मकाष्ठ वृक्ष शिरीष वृक्ष सीसोंका वृक्ष यह वृक्ष पलंग शय्यादिक और पीढा आदि आसनके बनानेको शुभ होते हैं ॥२॥ बिजुली जल वायु हाथी इन्होंसे गिराये हुये और मधुमक्षी और पक्षीने रहनेके वास्ते गृह किया गांवमें का वृक्ष स्मशान और मार्गके वृक्ष ऊपर शुष्क वेलसे बद्ध ॥३॥

कंटकिनो वा ये स्युर्महानदीसंगमोद्भवा ये च ॥ सुरभवन जाश्च न शुभाः पेचापरयाम्यदिक्पतिताः ॥ ४ ॥ प्रतिषिद्धवृक्षनिर्मितशयना सनसेवनात्कुलविनाशः ॥ व्याधिभयव्ययकलहा भवंत्यनर्थाश्च नैकविधाः ॥ ५ ॥ पूर्वं छिन्नं यदि वा दारु भवेत्तत्परीक्ष्यमारंभे ॥ यद्यारोहेत स्मिन्कुमारकः पुत्रपशुदं तत् ॥ ६ ॥ सितकुसुममत्तवारणदध्यक्षतपूर्णकुंभरत्नानि ॥ मंगल्यान्यन्यानि च दृष्ट्वारंभे शुभं ज्ञेयं ॥ ७ ॥ कर्मांगुलं यवाष्टकमुदरासक्तं तुषैः परित्यक्तं ॥ अंगुलशतं नृपाणां महती शय्या जयाय कृता ॥ ८ ॥ नवतिः सैव षड्ूना द्वादशहीना त्रिषट्कहीना च ॥ नृपपुत्रमंत्रिबलपतिपुरोधसां स्युर्यथासंख्यं ॥ ९ ॥ अर्धमतोंऽशोनं विष्कंभो विश्वकर्मणा प्रोक्तः ॥ आयामत्र्यंशसमः पादोच्छ्रायः सकुक्षिशिराः ॥ १० ॥ यः सर्वः श्रीपर्ण्या पर्यंको निर्मितः स धनदाता ॥ असनकृतो रोगहरस्तिंदुकसारेण वित्तकरः ॥ ११ ॥ ७ ॥ ७ ॥ ॥

---

कांटे का · बडे नदी के संगम के पास उत्पन्न · देवालय के पास का · पश्चिम और दक्षिण दिशा में गिरा · ऐसे वृक्ष शय्या और आसन को शुभ नहीं ॥ ४ ॥ निषिद्ध वृक्ष से निर्मित जो शय्या किंवा आसन उसके सेवन से कुलक्षय होता है · व्याधि भय · द्रव्यहानि · कलह · और नाना प्रकार के अनर्थ यह होते हैं ॥ ५ ॥ पूर्व में तोडा भया काष्ठ होय तो उसकी आरंभ में परीक्षा करना · वह पूर्वछिन्न काष्ठ पर अकस्मात् बालक आयके चढे तो वह काष्ठ से किया जो शयनासन सो पुत्र और पशु इसको देनेवाला होता है ॥ ६ ॥ श्वेत पुष्प · मत्त गज · दधि · अक्षत · पूर्णकुंभ · रत्न · अन्य मांगल्य (शंख शब्द · वेदध्वनि · गौ · चक्रवाक · कोइलइ · ध्वनि) यह शय्यासन आरंभ में दृष्टिगोचर होंय तो शुभ होते हैं ॥ ७ ॥ तुष (भूसी) रहित · मध्य भाग में मिले ऐसे यवाष्टक (आठ यव) कहिये एक कर्मांगुल संज्ञक होता है · वह अंगुल प्रमाण से १०० अंगुल राजा की बडी शय्या करना वह जयकारक होती है ॥ ८ ॥ वह शय्या ९० अंगुल लंबी राजपुत्र की · ८४ अंगुल प्रधान की · ७८ अंगुल सेनापती की · ७२ अंगुल पुरोहित की करना ॥ ९ ॥ पूर्वोक्त अंगुल का अर्ध करके उसमें वह अर्ध का अष्टमांश कम करना उतना अंगुल विस्तार (चौडई) विश्वकर्मा ने कथन किया · लंबाई के तृतीयांश इतनी पाद की (खुर की) ऊंचाई · मस्तक के बाहर के वर्तुल सुद्धा करना ॥ १० ॥ संपूर्ण पलंग · श्रीपर्णी के (सिवनी) काष्ठ में करे तो वह धन देनेवाला होता है · असन के काष्ठ से करे तो वह रोगहरण करता है · तेंदु के काष्ठ का द्रव्यदाता होता है ॥ ११ ॥ जो पर्यंक केवल शीसो के काष्ठ से करे सो नाना प्रकार की वृद्धि करता है · चंदन काष्ठ का शत्रु नाश करता है और धर्म

यः केवलशिंशपया विनिर्मितो बहुविधं स वृद्धिकरः॥ चंदनमयो रिपुघ्नो धर्मयशोदीर्घजीवितकृत्॥१२॥ यः पद्मकपर्यंकः स दीर्घमायुः श्रियं श्रुतं वित्तं॥ कुरुते शालेन कृतः कल्याणं शाकरचितस्य॥१३॥ केवलचंदनरचितं कांचनगुप्तं विचित्ररत्नयुतं॥ अध्यासन्पर्यंकं विबुधैरपि पूज्यते नृपतिः॥१४॥ अन्येन समायुक्ता न तिंदुकी शिंशपा च शुभफलदा॥ न श्रीपर्णी न च देवदारुवृक्षो न चाप्यसनः॥१५॥ शुभदौ तु शाकशालौ परस्परं संयुतौ पृथक्चैव॥ तद्वत्पृथक्प्रशस्तौ सहितौ च हरिद्रककदंबौ॥१६॥ सर्वः स्यंदनरचितो न शुभः प्राणान्हिनस्ति चाम्रकृतः॥ असनोन्यदारुसहितः क्षिप्रं दोषान्करोति बहून्॥१७॥ अंबस्यंदनचंदनवृक्षाणां स्यंदनाच्छुभाः पादाः॥ फलतरूणां शयनासनमिष्टफलं भवति सर्वेण॥१८॥ गजदंतः सर्वेषां प्रोक्ततरूणां प्रशस्यते योगे॥ कार्योलंकारविधिर्गजदंतेन प्रशस्तेन॥१९॥ दंतस्य मूलपरिधिं द्विरायतं प्रोज्झ्य कल्पयेच्छेषं॥ अधिकमनूपचराणां न्यूनं गिरिचारिणां किंचित्॥२०॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

यश· दीर्घजीवित्वकरता है·॥१२॥ पद्मकाष्ठका पलंग दीर्घायुष्य· लक्ष्मी· विद्या· द्रव्य· यह देता है· शाल (सागवान) और शिरीष इनका पलंग कल्याण करता है॥१३॥ केवल चंदनसे करके· सुवर्णसे आच्छादित· नानाप्रकारके रत्नोंसे युक्त· ऐसे पलंगपर राजा बैठे रहते उसकी पूजा देवता भी करते हैं·॥१४॥ तेंदु और सीसो यह दो अन्य वृक्षसे जोडके बनाया पर्यंक शुभफल देते नही· तैसे ही श्रीपर्णी· देवदारु· असन· यह भी दुसरेसे जोडे तो शुभफल देता नही·॥१५॥ शिरीष और सागवान यह परस्पर जोडे होय वा अलग अलग पलंगको होय तो भी शुभफलद होते हैं· तैसे ही दारुहरदी और कदंब यह भी भिन्न भिन्न वा पलंगमे जोडे भए शुभफल देनेवाले होते हैं·॥१६॥ स्यंदनके (तिनिश) काष्ठसे किया जो सर्व पलंग वह प्राणनाशक इसवास्ते शुभ नही· तैसे ही आम्रकृत भी शुभ नही· आसनके काष्ठ अन्य काष्ठसे जोडके पलंग करे तो बहुत दोषकारक होता है·॥१७॥ आम्र· स्यंदन (तिनिश) चंदन यह वृक्षके स्यंदन सेपाद शुभ होते हैं· सर्व फलवृक्षसे किया शय्या किंवा आसन इनके शुभफल होते हैं॥१८॥ सर्व कथित वृक्षोंके योगसे गजदंत प्रशस्त होता है· इसवास्ते प्रशस्त हाथीदांतसे अलंकार विधि करना·॥१९॥ गजदंतकी मूलपरिधी के दूने लंबाई मूलसे त्यागकरके शेष गजदंत अलंकारादिकमे लेना· यह मानसे अधिक सजलदेशमेके हाथीके हैं· और इससे कुछ कमती पर्वतपर फिरनेवाले हाथीके जानना·२०

श्रीवत्सवर्धमानच्छत्रध्वजचामरानुरूपेषु ॥ छेदेदृष्टेष्वारोग्यवि
जयधनवृद्धिसौख्यानि ॥२१॥ प्रहरणसदृशेषु जयो नंद्यावर्तेप्रनष्ट
देशाप्तिः ॥ लोष्टेतुलब्धपूर्वस्यभवनिदेशस्यसंप्राप्तिः ॥२२॥ स्त्रीरू
पेस्वविनाशोभृंगारेभ्युत्थितेसुतोत्पत्तिः ॥ कुंभेननिधिप्राप्तिर्यात्रा
विघ्नंचदंडेन ॥२३॥ कृकलासकपिभुजंगेष्वसुभिक्षव्याधयोरिपु
वशत्वं ॥ गृध्रोलूकध्वांक्षश्येनाकारेषुजनमरकः ॥२४॥ पाशेथवा
कबंधेनृपमृत्युर्जनविपत्स्नुतेरक्ते ॥ कृष्णेश्यावेरूक्षेदुर्गंधेचाशु
भंभवति ॥२५॥ शुक्लःसमःसुगंधिःस्निग्धश्चशुभावहोभवेच्छेदः
॥ अशुभशुभच्छेदायेशयनेष्वपितेनथाफलदाः ॥२६॥ ईषायोगे
दारुप्रदक्षिणाग्रंप्रशस्तमाचार्यैः ॥ अपसव्येकदिगग्रेभवनिभ
यंभूतसंजनितं ॥२७॥ एकेनावाकुशिरसाभवतिहिपादेनपादवै
कल्यं ॥ द्वाभ्यांनजीर्यतेन्नंत्रिचतुर्भिःक्लेशवधबंधाः ॥२८॥ ७॥

---

श्रीवत्स·वर्धमान(मालटीनामक पात्रवि०) यह दो चिन्ह और छत्र·ध्वज·चामर·इन
केसमानगजदंतका छेद दृष्टीगोचर होयतो आरोग्य·विजय·धनवृद्धि·सौख्य·य
ह होताहै·॥२१॥ आयुधसमानहोयतोजयप्राप्ति·नंद्यावर्त(भौरा) इसकेसमान
होयतोनष्टदेशप्राप्ति· मृत्पिंडसदृशहोयतो पूर्वमेलब्धपरंतुहस्तगतनहीऐसे
देशकीप्राप्तिहोतीहै·॥२२॥ स्त्रीरूपछेददृष्टहोयतो अश्वनाश· भृंगार(झारी) स
दृशहोयतोपुत्रप्राप्ति· कुंभसदृशहोयतोनिधिप्राप्ति· दंडसदृशहोयतो यात्रामेंवि
घ्न·॥२३॥ गिरगिटानवानर सर्प·इसकेसमानहोयतो महर्गता·व्याधि·शत्रुवशता·यह
होताहै·गृध्र·उलूक·काक·श्येनपक्षी·इनकेसमानछेदनजरपडेतोजनमृत्युहो
ताहै·॥२४॥ पाश·कबंध·इसकेसमानहोयतोराजमृत्यु· छेदसेरक्तस्रावहोयतो
लोककोदुःखहोताहै· वहछेदकाला·मलीन·रूक्ष·दुर्गंधहोयतोअशुभहोता
है·॥२५॥ शुभ्र·सम·सुगंधि·निर्मल·ऐसागजदंतकाछेदशुभहोताहै·जो अ
शुभकिंवाशुभ·गजदंतकेछेदकथनकियासोवैसेही शय्याकेविषेफलदायक
ऐसेजानना·॥२६॥ पलंगकेचारकाष्ठउसमेदोबाजूकेजडनेकेसोईषा·वहका
ष्ठशिरःपादकाष्ठसेप्रदक्षिणाग्रजोडना वहशुभ ऐसाआचार्यनेकथनकिया·
(पूर्वकेतरफकेकाष्ठकेअग्रदक्षिणतरफकेकाष्ठकेमूलमेजडना· इसीप्रमाण
पश्चिम और उत्तरतरफजानना·) अपसव्यकिंवाशिर·पादकाष्ठएकदिगग्र
करेतोभूतोत्पन्नभयहोताहै·(शिरऔर पाद इनकेकाष्ठकेअग्रबाजूकेकाष्ठके
अग्रसेजोडेहोयतोपिशाचभयहोताहै·)॥२७॥ पलंगकाएकपांवनीचेअग्रकर

सुषिरेऽथ वापि वर्णो ग्रंथो पादस्य शीर्षगे व्याधिः॥ पादे कुंभो यस्य ग्रंथो
न स्थिरस्तु दररोगः॥२९॥ कुंभाधस्ताज्जंघा तत्र कृतो जंघयोः करोति
भयं॥ तस्याश्चाधारोऽधःस्थः क्षयद्रव्यस्य तत्र कृतः॥३०॥ खुरदेशे
यो ग्रंथिः खुरिणां पीडाकरः स निर्दिष्टः॥ ईषाशीर्षण्यांश्रविभा
गसंस्थो भवेन्न शुभः॥३१॥ निष्कुटमथ कोलाक्षं सूकरनयनं च
वत्सनाभं च॥ कालकमन्यद्धुंधुकमिति कथितश्छिद्रसंक्षेपः॥
॥३२॥ घटवत्सुषिरं मध्ये संकटमास्ये च निष्कुटं छिद्रं॥ निष्पाव
माषमात्रं नीलं छिद्रं च कोलाक्षं॥३३॥ सूकरनयनं विषमं विवर्णं
मध्यर्धपर्वदीर्घं च॥ वामावर्तं भिन्नं पर्वमितं वत्सनाभाख्यं॥३४
कालकसंज्ञं कृष्णं धुंधुकमिति यद्भवेद्धि निर्भिन्नं॥ दारुसवर्णं छिद्रं न
तथा पापं समुद्दिष्टम्॥३५॥ निष्कुटसंज्ञे द्रव्यक्षयस्तु कोलेक्षणे कुल
ध्वंसः॥ शस्त्रभयं सूकरके रोगभयं वत्सनाभाख्ये॥३६॥ कालकधुंधुक
संज्ञे कीटैर्विद्धं च न शुभदं छिद्रं॥ सर्वं ग्रंथिप्रचुरं सर्वत्र न शोभनं दारु॥३७

---

केरुगावेतो उस्के स्वामी के पाद विकल होने हैं॰ दो पांव तैसे करे तो स्वामी को अन्न पच
ता नहीं॰ तीन वा चार पांव तैसे करे तो क्लेश॰ वध॰ बंध॰ यह स्वामी को होते हैं॰॥२८॥ पलं
ग के पांव को शिरोगत छिद्र वा भिन्न वर्ण वा ग्रंथी (गाठ) होय तो स्वामी के मस्तक में
व्याधी होती है॰ प॰ पा॰ जो कुंभ भाग उस्के विषे ग्रंथी होय तो स्वा॰ उदर में रोग होता है॰
॥२९॥ कुंभ के नीचे जंघा उहां ग्रंथी होय तो स्वा॰ जंघा को भय करता है॰ वह जंघा के नी
चे जो आधार उहां ग्रंथी होय तो धनक्षय होता है॰॥३०॥ पादस्थान की ग्रंथी॰ अश्वादि
खुर वाले को पीडा करती है॰ ईषा (बाजू के काष्ठ) और शीर्षण्य (मस्तक पांव उस्के का
ष्ठ) यह राख के तीसरे भाग में ग्रंथी होय तो शुभ नहीं॥३१॥ निष्कुट॰ कोलाक्ष॰ सूकरनयन॰
वत्सनाभ॰ कालक॰ धुंधुक॰ यह नाम के छिद्र होते हैं इनका संक्षेप कथन किया॥३२
जो छिद्र घट के समान मध्य भाग में पांव के मुख के विषे छोटा वह निष्कुट संज्ञक हो
ता है॰ निष्पाव (सेम का बीया) और उडदी इन के बराबर नील वर्ण जो छिद्र वह कोला
क्ष संज्ञक होता है॰॥३३॥ समान नहीं॰ विगत वर्ण॰ अर्ध पर्व से दीर्घ॰ ऐसा छिद्र सूकर
नयन संज्ञक होता है॰ वामावर्त॰ पार गया ऐसा॰ पर्व प्रमाण जो छिद्र वह वत्सनाभ
संज्ञक होता है॥३४॥ जो कृष्ण वर्ण छिद्र वह कालक संज्ञक होता है॰ जो दूनों तरफ फूट
गया और कृष्ण वर्ण वह धुंधुक संज्ञक होता है॰ काष्ठ के समान वर्ण के छिद्र बहुत अशुभ
नहीं॥३५॥ निष्कुट सं॰ छिद्र होय तो द्रव्यनाश॰ कोलाक्ष सं॰ हो॰ कुलनाश॰ सूकरनयन
संज्ञक छिद्र होय तो शस्त्र भय॰ वत्सनाभ सं॰ छिद्र से॰ रोग भय॥३६॥ कालक और धुंधुक

एकद्रुमेण धन्यं वृक्षद्वयनिर्मितं च धन्यतरं॥ त्रिभिरात्मजवृद्धिकरं चतु
र्भिरर्थयशस्त्वाग्र्यं॥३८॥ पंचवनस्पतिरचिते पंचत्वं याति तत्र यः शेते
॥षट्सप्ताष्टतरूणां काष्ठैर्घटिते कुलविनाशः॥३९॥ ॥इति शय्यास
नलक्षणं॥ ॥अथ रत्नपरीक्षा॥ ॥रत्नेन शुभेन शुभं भवति नृपाणाम
निष्टमशुभेन॥ यस्मादतः परीक्ष्यं दैवं रत्नाश्रितं तज्ज्ञैः॥१॥ द्विपहयव
नितादीनां स्वगुणविशेषेण रत्नशब्दोऽस्ति॥ इह तूपलरत्नानामधिका
रो वज्रपूर्वाणां॥२॥ रत्नानि बलाद्दैत्याद्दधीचितोऽन्ये वदंति जातानि॥
केचिद्भुवः स्वभावाद्वैचित्र्यं प्राहुरुपलानां॥३॥ वज्रेंद्रनीलमरकतक
र्केतनपद्मरागरुधिराख्याः॥ वैडूर्यपुलकविमलकराजमणिस्फटिक
शशिकांताः॥४॥ सौगंधिकगोमेदकशंखमहानीलपुष्परागाख्याः॥ ब्र
ह्ममणिज्योतीरससस्यकमुक्ताप्रवालानि॥५॥ वेणातटे विशुद्धं शिरीष
कुसुमोपमं च कौशलकं॥ सौराष्ट्रकमाताम्रं कृष्णं सौर्पारकं वज्रं॥६॥ ॥

---

सं॰ छिद्र और कीटक विद्ध छिद्र शुभ नहीं सर्व काष्ठमे बहुत ग्रंथि होय तो सर्व काममे
शुभ नहीं॥३७॥ एक वृक्षके काष्ठका किया पलंग शुभ दोवृक्षके काष्ठका अत्यंत शुभ
तीन वृक्षके का॰ पुत्रवृद्धिकर चार वृक्षके का॰ द्रव्य उत्तम यश इस्को करने वाला हो
ताहै॥३८॥ पांच वृक्षके का॰ पर सूतने वाले को मृत्यु ६।७।८ वृक्षके का॰ पलंग कुल
नाशक होताहै॥३९॥ ॥इति बृहत्संहितायां शय्यासनलक्षणं नामैकोनाशीतित
मोध्यायः॥७९॥ ॥अथ रत्नपरीक्षा॥ शुभलक्षणयुक्त रत्नसे राजाका शुभ होताहै
और अशुभलक्षणयुक्त रत्नसे अशुभ होताहै इसवास्ते हीरकादि रत्नाश्रित देव
ताकी परीक्षा रत्नपरीक्षकने करना॥१॥ गज अश्व स्त्री और जाती जातीमे जो उत्तम
उस्को उस्के उस्के गुणाधिक्यसे रत्न कहतेहैं यह रत्नपरीक्षामे हीरक आदि पाषा
ण रत्नका अधिकार है॥२॥ बलनामक दैत्यसे (उस्को इंद्रने मारा तब उस्के हाड
से) रत्न भए ऐसा कोइक कहतेहैं दधीचि ऋषीके हाड इसे रत्न भए ऐसा अन्य कहतेहैं
कोई भूमीके स्वभावसे पाषाणको नानाप्रकारके रंग होयके वह रत्न भए ऐसा कह
तेहैं॥३॥ वज्र इंद्रनील मरकत कर्केतन पद्मराग रुधिराख्य वैडूर्य पुलक विमल
क राजमणि स्फटिक चंद्रकांत॥४॥ सौगंधिक गोमेदक शंख महानील पुष्परा
ग ब्रह्ममणि ज्योतीरस सस्यक मुक्ताफल प्रवाल यह रत्नोंके भेदहैं इनमे उत्तम
वज्र मुक्ता पद्मराग मरकत यह चार रत्न है इसवास्ते इन्हीके लक्षण और वर्णन कर
तेहैं॥५॥ वेणा नदीके तीरमे उत्पन्न सो वज्र (हीरा) संज्ञक रत्न दोषरहित होतेहैं सिरसी
केपुष्पसमान (श्वेतपीत) वह कोशलदेशोत्पन्न पोड़ताम्रवर्ण जो वज्र॰ वह सौराष्ट्र

ईषत्ताम्रं हिमवति मतंगजं वल्लपुष्पसंकाशं॥ आपीतंच कलिंगे श्यामं पौंड्रेषु संभूतं॥७॥ ऐंद्रं षडस्रि शुक्लं याम्यं सर्पास्यरूपमसितंच॥ कदलीकांडनिकाशं वैष्णवमिति सर्वसंस्थानं॥८॥ वारुणमबलागुह्योपमं भवेत्कर्णिकारपुष्पनिभं॥ शृंगाटकसंस्थानं व्याघ्राक्षिनिभंच हौतभुजं॥९॥ वायव्यंच यवोपम मशोककुसुमप्रभं समुद्दिष्टं॥ स्रोतः खनिः प्रकीर्णकमित्याकरसंभवस्त्रिविधः॥१०॥ रक्तं पीतंच शुभं राजन्यानां सितं द्विजातीनां॥ शैरीषं वैश्यानां शूद्राणां शस्यते सिनिभं॥ ॥११॥ सितसर्षपाष्टकं तंडुलो भवेत्तंडुलैस्तु विंशत्या॥ तुलितस्य द्वेलक्षे मूल्यं द्विद्व्यूनिते चैतत्॥१२॥ पादत्र्यंशार्धौ नं त्रिभाग पंचांश षोडशांशाश्च॥ भागश्च पंचविंशः शतिकः साहस्रिकश्चेति॥१३॥ ॥

---

देशोत्पन्न· कृष्णवर्णजो वज्ररत्न वह सूर्पारकदेशोत्पन्न·॥६॥ ईषत्ताम्रवर्णजो वज्र० वह हिमाचलके विषे उत्पन्न वल्ल (भुट्टा चाल) पुष्पके समान जो वज्र० वह मतंगजदेशोत्पन्न· थोडा पीतवर्णजो वज्र० वह कलिंगदेशोत्पन्न· श्यामवर्णजो वज्ररत्न वह पौंड्रदेशोत्पन्न· ऐसे सात हीरेके उत्पत्तिस्थान है·॥७॥ जो वज्र० षडस्रि (षट्कोण) और श्वेतवर्ण वह इंद्रदैवत्य· जो कृष्णवर्ण और सर्पके मुखसमान वह यमदैवत्य·· जो कदलीशाखावर्ण (नीलपीत) और सर्वाकार (ऊपर कथित २ आकारसे भिन्न अन्यआकारके) वह विष्णुदैवत्य·॥८॥ जो स्त्रीके गुह्यके आकारके और कर्णिकार (वडहर) के पुष्पसमान (ईषत्पीतवर्ण) वह वरुणदैवत्य· जो शृंगाटकसंस्थान (त्रिकोण) और व्याघ्रके नेत्रसमान वह अग्निदैवत्य·॥९॥ जो जवके समान (बीचमें मोटा) और अशोकपुष्पसमान (लोहितवर्ण) वह वायुदैवत्य ऐसी वज्रकी देवता कथन किया है· जलके प्रवाहमे· खानमे और कहीं एक ठिकाने भूमीमे· ऐसे ३ ठिकाने हीरा मिलते है॥१०॥ रक्त और पीतवर्ण हीरा राजाको शुभ होता है· श्वेतवर्ण ब्राह्मणको शुभ· सर्सोंके पुष्पसमान वर्णका वैश्यको शुभ· कृष्णवर्ण शूद्रको शुभ होता है· ॥११॥ आठ श्वेत सर्सोंका १ चावल· २० चावल भर जो हिरा इस्की कीमत दोलक्ष कार्षापण (चवन्नी) होती है· बीस चावलमे दोदो चावल कमती करनेसे जो सो आगेके श्लोकमे कहने प्रमाण कीमत होती है·॥१२॥ १८ चावल वजन हीरेकी कीमत चतुर्थांश कमती दोलक्ष कहिये डेढलक्ष १६ चावल० तृतीयांश कमती दोलक्ष० (१३३३३३⅓) १४ चावल० दोलक्षके अर्ध (१०००००) १२ चावल० दोलक्षका तिसरा हिस्सा (६६६६६⅔) १० चावल० दोलक्षका पंचमांश (४००००) ८ चावल० दो० षोडशांश (१२५००) ६ चावल० दो० पंचविंशांश· (८०००) ४ चावल० दो० शतांश (२०००) २ चा

सर्वद्रव्याभेद्यंलघ्वंभसितरतिरश्मिवत्स्निग्धं॥तडिदनलशक्रचा
पोपमंचवज्रंहितायोक्तं॥१४॥काकपदमक्षिकाकेशधातुयुक्तानि
शर्करविद्धं॥द्विगुणास्रिदग्धकलुषत्रस्तविशीर्णानिनशुभानि॥१५
॥यानिचबुद्बुददलिताग्रचिपिटवासीफलप्रदीर्घाणि॥सर्वेषांचैते
षांमूल्याद्भागोऽष्टमोहानिः॥१६॥वज्रंनकिंचिदपिधारयितव्यमेके
पुत्रार्थिनीभिरबलाभिरुशंतितज्ज्ञाः॥शृंगाटकत्रिपुटधान्यकवत्स्थि
तंयच्छ्रोणीनिभंचशुभदंतनयार्थिनीनां॥१७॥स्वजनविभवजीवि
तक्षयंजनयतिवज्रमनिष्टलक्षणं॥अशनिविषभयारिनाशनंशुभ
मुरुभोगकरंचभूभृतां॥१८॥ ॥इतिवज्रपरीक्षा॥ अथमुक्ताफल
परीक्षा॥द्विपभुजगशुक्तिशंखाभ्रवेणुतिमिसूकरप्रसूतानि॥मुक्ता
फलानितेषांबहुसाधुचशुक्तिजंभवति॥१॥सिंहलकपारलौकिक
सौराष्ट्रकताम्रपर्णिपारशवाः॥कौबेरपाण्ड्यवाटकहैमाइत्याकराह्यष्टौ २

---

वलुभरवजनके हिरेकीकीमत दोलखका संहस्रांश (२००) कार्षापण (चवन्नी) होती
है॥१३॥सर्वप्रकारकेशस्त्रसे अभेद्य· छोटा· जलमेतरनेवाला· किरणयुक्त· स्नि
ग्ध· बिजुली· अग्नि· इंद्रधनुष्य इनके समान तेजस्वी हीरा हितकारक होताहै॥१४
॥काकपदसमानचिन्ह· मक्षिकासमानचिन्ह· केशकेसमानरेषा· मृत्तिकादि धातु
इनकरकेयुक्त· सूक्ष्मकणसे युक्त· वेधित· स्वपकोणके दूनेकोणसे युक्त· अग्निद
ग्ध· कलुष (मटीला) कांतिरहित· विशीर्ण (जीर्ण) ऐसे हीराशुभनहीं॥१५॥पानी
के बुल्लेसमान· विदारितप्रांतभाग· चिपटा· अडूसाके फलसमान लंबा· ऐसे हीरे
की कीमत पूर्वोक्त कीमतके अपेक्षा अष्टमांशकमतीजानना॥१६॥ पुत्रेच्छुस्त्री
ने हीरा कोई भी धारण करना नहीं ऐसा कोई आचार्य कहते हैं· परंतु शृंगाटक (त्रि
कोण) तीन पुटसे युक्त· धान्यक (धनिया) इसके समान· स्त्रीके योनी समान ऐसा हि
रा पुत्रेच्छुस्त्रीको कल्याणकारक होता है॥१७॥अनिष्टलक्षण युक्त हिरा· स्वकी
यजन ऐश्वर्य और आयुष्य इनका नाश करता है· शुभलक्षणयुक्त हीरा बिजुली
का भय· विषभय· शत्रुनाश यह करता है और शुभ· बहुत उपभोग यह राजाको
करता है॥१८॥ ॥इतिबृहत्संहितायां वज्रपरीक्षानामाशीतितमोऽध्यायः॥८०॥
अथमुक्ताफलपरीक्षा॥गज· सर्प· सीप· शंख· मेघ· बांस· मत्स्य सूकर· यह आ
ठसे मोती होते हैं· उसमें सीपमेके मोती बहुत उत्तम (व्यवहारयोग्य) होते हैं॥१॥
सिंहकल (सिलोन) पारलोक· सुराष्ट्र· (काठेवाड) यह देश· ताम्रपर्णी नदी· पारश
वदेश· कौबेर· पांड्यवाट· हैमपत्तदेश· यह आठ मोतीके उत्पत्तिस्थान हैं॥२॥

बहुसंस्थानाः स्निग्धा हंसाभाः सिंहलाकराः स्थूलाः॥ ईषत्ताम्राः श्वे
तास्तमोवियुक्ताश्च ताम्रपर्ण्याः॥३॥ कृष्णाः श्वेताः पीताः सशर्कराः पा
रलौकिका विषमाः॥ नस्थूला नात्यल्पा नवनीतनिभाश्च सौराष्ट्राः॥
४॥ ज्योतिष्मंतः शुभ्रा गुरवोतिमहागुणाश्च पारशवाः॥ लघुजर्जरं द
धिनिभं बृहद्द्विसंस्थानमपि हैमं॥५॥ विषमं कृष्णं श्वेतं लघु कौवेरं प्र
माणतेजोवत्॥ निंबफलत्रिपुटधान्यकचूर्णाः स्युः पांड्यवाटभवाः
॥६॥ अतसीकुसुमश्यामं वैष्णवमैंद्रं शशांकसंकाशं॥ हरितालनि
भं वारुणमसितं यमदैवतं भवति॥७॥ परिणतदाडिमगुलिकागुंजा
ताम्रं च वायुदैवत्यं॥ निर्धूमानलकमलप्रभं च विज्ञेयमाग्नेयं॥८॥ मा
षकचतुष्टयधृतस्यैकस्य शतानाहता त्रिपंचाशत्॥ कार्षापणा निगदि
ता मूल्यं तेजोगुणयुतस्य॥९॥ माषकदलहान्यातो द्वात्रिंशद्विंशति
स्त्रयोदश च॥ अष्टौ शतानि च शतत्रयं त्रिपंचाशता सहितं॥१०॥
पंचत्रिंशच्छतमिति चत्वारः कृष्णला नवति मूल्याः॥ सार्धास्तिस्रो गुं
जाः सप्तति मूल्यं धृतं रूपं॥११॥ गुंजात्रयस्य मूल्यं पंचाशद्रूपका गुण
युतस्य॥ रूपकपंचत्रिंशत्त्रयस्य गुंजार्धहीनस्य॥१२॥ ७॥ ७॥

---

बहुतस्थानमे उत्पन्न होनेवाले· निर्मल हंसतुल्य कांति· स्थूल ऐसे सिंहलद्वीपमे के मो
ती होते हैं· थोडे लाल· श्वेत· निर्मल· ऐसे मोती ताम्रपर्णी नदीमे उत्पन्न होते हैं॥३॥ कृ
ष्ण· श्वेत· पीत· वालुकायुक्त· समान नही· ऐसे पारलौकिक मोती होते हैं· बहुत स्थूल
नही और बहुत लघु नही· नवनीत (मक्खन) केवर्णके मोती सौराष्ट्र देशमे के होते हैं॥
४॥ तेजस्वी· श्वेतवर्ण· भारी· उत्तम गुणसे युक्त ऐसे मोती पारसव देशोत्पन्न होते हैं·
छोटे· रूक्ष· दही समान· बृहत्· द्विसंस्थान· (जुटे समान) ऐसे मोती हिमालयोत्पन्न
होते हैं॥५॥ समान नही· कृष्णवर्ण· श्वेत· छोटे· वडे तेजके ऐसे मोती कौवेर होते हैं·
निंबफल समान· तीनपुटके· धनिया समान· बहुत महीन ऐसे मोती पांड्यवाटोत्पन्न हो
ते हैं॥६॥ नीसीके पुष्पसमान काला मोती विष्णुदैवत्य है· चंद्रसमान श्वेतवर्ण इंद्रदैव
त्य· हरताल समान पीतवर्ण· वरुणदैवत्य· काला· यमदैवत्य होता है॥७॥ पक्के अना
रके दाने समान और घुंकुची समान ताम्रवर्ण· वायुदैवत्य· धूमरहित अग्नि और क
मलदलके समान जिसके तेज वह मोती अग्निदैवत्य जानना॥८॥ तेज और उत्तम गुण
इन करके युक्त ऐसा एक मोती· पांच गुंजाका एक मासा यह प्रमाणसे ४ मासे वजन
होयतो· उसकी कीमत ५३०० कार्षापण (चवन्नी) कथन किया॥९॥ चार मासे से अ· ५
अर्ध मासे कमती करनेसे आगेकी कीमत होती है· कहिये ३॥ मासेको ३२०० का·

पलदशभागो धरणं तद्यदि मुक्तास्त्रयोदश सुरूपाः॥ त्रिशती सपंचविंशा रूपकसंख्याकृतं मूल्यं॥१३॥ षोडशकस्य द्विशती विंशतिरूपस्य सप्ततिः सशता॥ यत्पंचविंशतिधृतं तस्य शतं त्रिंशता सहितं॥
॥१४॥ त्रिंशत्सप्ततिमूल्या चत्वारिंशच्छतार्धमूल्या च॥ षष्टिः पंचोनाया धरणं पंचाष्टकं मूल्यं॥१५॥ मुक्ताशीत्यास्त्रिंशच्छतस्य सा पंचरूपकविहीना॥ द्वित्रिचतुःपंचशता द्वादश षट् पंचकं त्रितयं १६
॥ पिक्कापिच्चार्घार्धा रवकः सिक्थं त्रयोदशाद्यानां॥ संज्ञाः परतो निगराश्चूर्णाश्चाशीतिपूर्वाणां॥१७॥ एतद्गुणयुक्तानां धरणधृतानां प्रकीर्तितं मूल्यं॥ परिकल्प्यमंतराले हीनगुणानां क्षयः कार्यः
॥१८॥ कृष्णश्वेतकपीतकताम्राणामीषदपि च विषमाणां॥ त्र्यंशोनं विषमकपीतयोश्च षड्भागदलहीनं॥१९॥ ऐरावतकुलजानां पुष्यश्रवणेंदुसूर्यदिवसेषु॥ ये चोत्तरायणभवा ग्रहणेर्केंद्वोश्च भद्रेभाः॥
॥२०॥

३मा० २००० का० २॥मा० १३००, २मा०८००; १॥मा० ३५३; १मा० १३५; ४गुंजाको ९०; ३॥गुंजा० ७०, ३गुं० ५०; २॥गुं जाको ३५; कीमत होती है॥१०॥११॥१२
॥पलका दसवा हिस्सा धरणसंज्ञक होता है उतना (३२गुंजा) वजन सुरूप १३ मोती होंय तो उनकी कीमत ३२५ रुपया किया है॥१३॥ सोल मोती सुरूप धरण तुल्य होंय तो २०० रु० कीमत २० मो० १७० रु० २५ मो० १३०;॥१४॥ ३० मो० ७० रु० ४० मो० ५०; ६० वा ५५ मो० उसकी की० ४० रु०;॥१५॥ ८० मो० ३० रु०; १०० मो० ३५ रु०; २०० मो० १२ रु०; ३०० ६ रु०; ४०० ५ रु०; ५०० मोती धरण तुल्य होय तो उसकी की० ३ रु० जानना॥१६॥ १३ मोती भार जो धरण वह पिक्का संज्ञक होता है १६ मो० भा० ध० सो पिच्चा सं०; २० मो० भा० ध० अर्घा सं०; २५ मो० भा० ध० अर्धा सं० ३० मो० भा० ध० रवक सं०; ४० मो० भा० ध० सिक्थ सं०; आगे ५५ मो० भा० ध० निगर सं०; ८० से ५०० तक सर्व धरण को चूर्ण संज्ञा जानना (यह संज्ञा मोतीके उत्पत्तिस्थान में व्यवहार में उपयोग होता है इसवास्ते कथन किया)॥१७॥ यह कीमत गुणयुक्त धरण भार मोती की कथन किया उसे स्वबुद्धी से कीमत कल्पना करना॥१४॥१५ इ० मोतीकी व्यस्त त्रैराशिक से कीमत करना गुणहीन मोती होय तो वस्यमाण क्रमसे कीमत कमती करना॥१८॥ ईषत् कृष्णवर्ण ईषत श्वेतवर्ण ईषत् पीत ईषत् ताम्र ईषत् विषम ऐसे मोती होय तो पूर्वोक्त कीमत त्र्यंशोन कहि पूर्तनी यांश कमती करना अति विषम रहते षड्भाग और अति पीत रहे तो अर्ध पूर्वोक्त कीमत कमती करना॥१९॥ ऐरावत कुलमे उत्पन्न पुष्य नक्षत्र [illegible]

तेषां किल जाः यंते मुक्ताः कुंभेषु सरदकोशेषु ॥ बहवो वृहत्प्रमाणा बहुसंस्थानाः प्रभायुक्ताः ॥ २१ ॥ नैषामर्घः कार्यो न च वेधोनीव ते प्रभायुक्ताः ॥ सुत विजयारोग्य करा महापवित्रा धृता राज्ञां ॥ २२ ॥ दंष्ट्रामूले शशिकांतिसप्रभं बहुगुणं च वाराहं ॥ तिमिजं मत्स्याक्षिनिभं वृहत्पवित्रं बहुगुणं च ॥ २३ ॥ वर्षोपलवज्जातं वायुस्कंधाच्च सप्तमाद्भ्रष्टं ॥ ह्रियते किल खाद्दिव्यैस्तडित्प्रभं मेघसंभूतं ॥ २४ ॥ तक्षकवासुकि कुलजाः कामगमा ये च पन्नगास्तेषां ॥ स्निग्धा नीलद्युतयो भवंति मुक्ताः फणस्यांते ॥ २५ ॥ शस्तेवनिप्रदेशे रजतमये भाजने स्थिते च यदि ॥ वर्षति देवोकस्मात्तज्ज्ञेयं नागसंभूतं ॥ २६ ॥ अपहरति विषमलक्ष्मीं क्षपयति शत्रून्यशो विकाशयति ॥ भौजंगं नृपतीनां धृतमकृतार्घं विजयदं च ॥ २७ ॥ कर्पूरस्फटिकनिभं चिपिटं विषमं च वेणुजं ज्ञेयं ॥ शांखोद्भवं शशिनिभं वृत्तं भ्राजिष्णु रुचिरं च ॥ २८ ॥ ॥ शंखतिमिवेणुवारणवराहभुजगाभ्रजान्यवेध्यानि ॥ अमितगुणत्वाच्चैषामर्घः शास्त्रे न निर्दिष्टः ॥ २९ ॥

---

वण नक्षत्र चंद्रवार रविवार इनके विषे भए उत्तरायणमे भए सूर्यचंद्रके ग्रहणमे भए ऐसे जो हाथी वह भद्र संज्ञक होते है ॥ २० ॥ वह भद्र संज्ञकके गंडस्थलमे और दंतकोशमे बहुत बडे अनेक आकृतीके प्रभायुक्त ऐसे मोती होते हैं ॥ २१ ॥ उनकी कीमत करना नही और वेध भी करना नही कारण वह तेजस्वी और महापवित्र हैं वह राजाने धारण करनेसे पुत्र विजय आरोग्यकारक होते हैं ॥ २२ ॥ सूकरके दाढके मूलमे चंद्र समान तेजस्वी अनेक गुण ऐसे वराहसंभव मोती होते हैं मत्स्यके नेत्रसमान बडा पवित्र बहुगुण ऐसे मत्स्योत्पन्न मोती होते हैं ॥ २३ ॥ वर्षोपल (बनोर) के समान भए सप्तम वायुस्कंधसे गिरे भए देवताने आकाशमे किये विजुलीके समान तेजस्वी ऐसे मेघोत्पन्न मोती होते हैं ॥ २४ ॥ तक्षक और वासुकी इनके वंशमे भए यथेच्छ गमन करनेवाले ऐसे जो सर्प उनके फणाके अंतमे स्वच्छ नीलवर्ण ऐसे मोती होते है ॥ २५ ॥ वह सर्पज मोती शुद्ध भूमीपर चांदीके पात्रमे रक्खे तो इंद्र वृष्टि करता है वह मोती नागज जानना ॥ २६ ॥ वह नागज मोती राजाने कीमत किये विना धारण करे तो अलक्ष्मी का हरण शत्रुनाश यशवृद्धि विजय यह होते हैं ॥ २७ ॥ कपूर और स्फटिकमणीके समान चिपटा असम ऐसे वंशज (बांसके) मोती जानना चंद्रकांती समान गोल तेजस्वी सुंदर ऐसे शंखोत्पन्न मोती जानना ॥ २८ ॥ शंख मत्स्य बांस हाथी सूकर सर्प मेघ इनसे भए जो मोती उनको वेध करना नही बहुत गुणवान इ

एतानि सर्वाणि महागुणानि सुतार्थसौभाग्ययशस्कराणि ॥ रुक्शोकहंतृणि च पार्थिवानां मुक्ताफलानीप्सितकामदानि ॥ ३० ॥ सुरभूषणं लतानां सहस्रमष्टोत्तरं चतुर्हस्तं ॥ इंद्रच्छंदो नाम्ना विजयच्छंदस्तदर्धेन ॥ ३१ ॥ शतमष्टयुतं हारो देवच्छंदो ह्यशीतिरेकयुता ॥ अष्टाष्टकोऽर्धहारो रश्मिकलापश्च नवषट्कः ॥ ३२ ॥ द्वात्रिंशता तु गुच्छो विंशत्या कीर्तितोऽर्धगुच्छाख्यः ॥ षोडशभिर्माणवको द्वादशभिश्चार्धमाणवकः ॥ ३३ ॥ मंदरसंज्ञोऽष्टाभिः पंचलता हारफलकमित्युक्तं ॥ सप्तविंशति मुक्ता हस्तो नक्षत्रमालेति ॥ ३४ ॥ अंतरमणि संयुक्ता मणिसोपानं सुवर्णगुलिकैर्वा ॥ तरलकमणिमध्यं तद्विज्ञेयं चाटुकारमिति ॥ ३५ ॥ एकावली नाम यथेष्टसंख्या हस्तप्रमाणा मणिविप्रयुक्ता ॥ संयोजिता या मणिना तु मध्ये यष्टीति सा भूषणविद्भिरुक्ता ॥ ३६ ॥ ॥ इति मुक्ताफलपरीक्षा ॥ ॥ अथ पद्मरागपरीक्षा ॥ ॥ सौगंधिककुरुविंदस्फटिकेभ्यः पद्मरागसंभूतिः ॥ सौगंधिकजा भ्रमरांजनाब्जजंबूरसद्युतयः ॥ १ ॥ कुरुविंदभवाः शबला मंदद्युतयश्च धातुभिर्विद्धाः ॥ स्फटिकभवा द्युतिमंतो नानावर्णा विशुद्धाश्च ॥ २

॥ २९ ॥

सवास्ते शास्त्रमे इनकी कीमत कहा नही· यह सर्व प्रकार के मोती महागुणवान् पुत्र द्रव्य· सौभाग्य· यश· इनको करनेवाले· रोग और शोक इनका नाश· इच्छितमनोरथ पूर्ण करनेवाले ऐसे राजा को होते हैं ॥ ३० ॥ १००८ लडका ४ हात लंबा ऐसा मोतीका हार देवता को करते हैं उस्का नाम इंद्रछंद है· उस्के आधे लडका करते हैं उस्का नाम विजयच्छंद है· ॥ ३१ ॥ १०८ लडका २ हाथ लंबा और ८१ लडका दो हाथ जो हार उस्का नाम देवच्छंद· ६४ लडका हार अर्धहार संज्ञक· ५४ लडका हार रश्मिकलाप संज्ञक ॥ ३२ ॥ ३२ लडका हार गुच्छसंज्ञक· २० लडका हार अर्धगुच्छसंज्ञक १६ लडका हार माणवकसंज्ञक· १२ लडका हार अर्धमाणवसंज्ञक ॥ ३३ ॥ ८ लडका हार मंदरसंज्ञक ५ लडका हार फलकसंज्ञक· २७ मोती का हस्तप्रमाण जो हार वह नक्षत्रमाला संज्ञक ॥ ३४ ॥ वही नक्षत्रमाला के बीचमे रत्न किंवा सुवर्ण के मणि डाले होय तो वह मणिसोपानसंज्ञक उस्के बीचमे तरलकमणि होय तो उसीको चाटुकार ऐसा कहते है ॥ ३५ ॥ यथेष्ट मौक्तिकसे युक्त हस्तप्रमाण· मणिरहित जो हार सो एकावली सं० जिस्के बीचमे मणि योजना किया वह यष्टि· ऐसा भूषणवेत्ता ने कथन किया ॥ ३६ ॥ इति बृहत्संहितायां मुक्ताफलपरीक्षा नामै काशीतितमोध्यायः ॥ ८१ ॥ अथ पद्मरागपरीक्षा ॥ सौगंधिक और कुरुविंद (धातुविशे०) और

स्निग्धः प्रभानुलेपी स्वच्छोर्चिष्मान्गुरुः सुसंस्थानः॥ अंतःप्रभोतिरा
गा मणिरत्नगुणाः समस्तानां॥३॥ कलुषा मंदद्युतयो लेखाकीर्णाः स
धातवः खंडाः॥ दुर्विद्धा न मनोज्ञाः सशर्कराश्चेति मणिदोषाः॥४॥
भ्रमरशिखिकंठवर्णो दीपशिखासप्रभो भुजंगानां॥ भवति मणिः कि
ल मूर्धनि यो नर्घेयः स विज्ञेयः॥५॥ यस्तं बिभर्ति मनुजाधिपतिर्न त
स्य दोषा भवंति विषरोगकृताः कदाचित्॥ राष्ट्रे च नित्यमभिवर्षति त
स्य देवः शत्रूंश्च नाशयति तस्य मणेः प्रभावात्॥६॥ षड्विंशतिः सहस्रा
ण्येकस्य मणेः पलप्रमाणस्य॥ कर्षत्रयस्य विंशतिरुपदिष्टा पद्मराग
स्य॥७॥ अर्धपलस्य द्वादश कर्षस्यैकस्य षट्सहस्राणि॥ यच्चाष्टमा
षकधृतं तस्य सहस्रत्रयं मूल्यं॥८॥ माषकचतुष्टयं दशशतत्रयं द्वौ
तु पंचशतमूल्यौ॥ परिकल्प्यमंतराले मूल्यं हीनाधिकगुणानां॥९॥

---

स्फटिक रत्नसे पद्मरागमणीकी उत्पत्ति होती है· भ्रमर· कज्जल· नीलकमल· जामु
नके रससमान रंगके जो पद्मराग वह सौगंधिकसे उत्पन्न जानना·॥१॥ शबल (श्वे
त कृष्ण मिश्र वर्ण·) अल्पकांति· मृत्तिकादिकसे विद्ध (सकलंक) ऐसे जो पद्मराग
वह कुरुविंदोत्पन्न जानना· तेजस्वी· अनेक रंगके· स्वच्छ ऐसे जो पद्मराग वह स्फ
टिकसे उत्पन्न ऐसा जानना·॥२॥ स्नेहयुक्त· प्रभायुक्त· स्वच्छ· तेजस्वी गुरु·(भारी)
सुंदर आकृति· मध्यभागमे कांतियुक्त· अतिलोहित वर्ण· यह सर्व पद्मरागमणिरत्न
के गुण होते हैं·॥३॥ कलुष (मैला) अल्पकांति· रेषासे व्याप्त· मृत्तिकादि धातुयुक्त·।
च्छिन्न· अप्रशस्त वेधसे युक्त· सुंदर नही· सूक्ष्म कणीसे युक्त· यह पद्मरागमणिके
दोष होते हैं· ॥४॥ भ्रमर और मयूरकंठ इनके वर्णका· दीपशिखा समान· ऐसा
मणि सर्पके मस्तकमे होता है· वह अमोलिक जानना·॥५॥ ऐसे मणीको जो राजा
धारण करता है उस्को विष और रोग इसे पीडा कधी होती नही· उस्के राज्यमे इन्द्र
राज वृष्टि करता है· वह मणीके सामर्थ्यसे वह राजा शत्रूका नाश भी करता है॥६॥
चार तोले वजन· एक पद्मरागमणीकी कीमत २६ हजार रुपया जानना· ३ तोले व
जन· एक पद्मरागमणीकी कीमत २० हजार रुपया जानना·॥७॥ २ तोले वजनकी·
कीमत १२ हजार रुपया· १ तोले वजनकी कीमत ६ हजार रुपया· आठ मासे वजनकी
कीमत ३ हजार रुपया·॥८॥ चार मासे वजनकी की० १३१०: रुपया· दो मासे वजनकी
कीमत· ५०० रुपया· जानना· इस्के बीचमे वजनकी कमती जास्ती गुणयुक्तकी की
मत बुद्धिसे कल्पना करना·॥९॥ रंग कमती होयतो पूर्वोक्त कीमत आधी जानना·
तेजहीन मणीकी अष्टमांश जानना· अल्पगुणयुक्त और बहुदोषयुक्त मणीकी की

कर्णीमूल्यस्यार्धं तेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः ॥ अल्पगुणो बहुदोषो मूल्यात्प्राप्नोति विंशांशम् ॥१०॥ आधूम्रं व्रणबहुलं स्वल्पगुणं चाप्नुयाद्द्विशतभागं ॥ इति पद्मरागमूल्यं पूर्वाचार्यैः समुद्दिष्टं ॥११॥ ॥ इति पद्मरागपरीक्षा ॥ ॥ अथ मरकतपरीक्षा ॥ ॥ शुकवंशपत्रकदलीशिरीषकुसुमप्रभं गुणोपेतं ॥ सुरपितृकार्ये मरकतमतीव शुभदं नृणां विहितं ॥१॥ इति मरकतपरीक्षा ॥ ॥ अथ दीपलक्षणं ॥ ॥ वामावर्तो मलिनकिरणः सस्फुलिंगोऽल्पमूर्तिः क्षिप्रं नाशं व्रजति विमलस्नेहवर्त्यन्वितोऽपि ॥ दीपः पापं कथयति फलं शब्दवान्वेपनश्च व्याकीर्णार्चिर्विशलभमरुद्यश्च नाशं प्रयाति ॥१॥ दीपः संहतमूर्तिरायततनुर्निर्वेपनो दीप्तिमान् निःशब्दो रुचिरः प्रदक्षिणगतिर्वैडूर्यहेमद्युतिः ॥ लक्ष्मीं क्षिप्रमभिव्यनक्ति रुचिरं यश्चोद्यतं दीप्यते शेषं लक्षणमग्निलक्षणसमं योज्यं यथायुक्तितः ॥२॥ ॥ इति दीपलक्षणम् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

यत पूर्वोक्तसे बीसवां हिस्सा होती है ॥१०॥ ईषत् धूम्रवर्ण · व्रणबहुल व्रण (गड्डा) पड़ा भया · अल्पगुण · ऐसे पद्मरागमणी की कीमत पूर्वोक्तसे दोसे हिस्सा होती है · इसप्रकारसे प्राचीन आचार्यने पद्मरागकी कीमत कथन किया है ॥११॥ यहां ८० गुंजाका तोला और पांच गुंजा का मासा जानना ।) ॥ इति बृहत्संहितायां पद्मरागपरीक्षा नाम द्व्यशीतितमोऽध्यायः ॥८२॥ ॥ अथ मरकतपरीक्षा ॥ सूवेके समान रंग वाले (नीलपीतवर्ण) वंशपत्र (हरनाल) और केला इसके समान · हरे रंग के · पीतवर्णी · सर्सोंके पुष्पसमान (श्वेतपीत ·) इनमेंसे कोई भी रंगके · (अ० ८२ श्लो० ३) इसके गुणसे युक्त ऐसे मरकतरत्न (पाच · पन्ना ·) मनुष्यने धारणकरनेसे देव पितर इनके कार्यमें बहुत शुभदायक होता है ॥१॥ ॥ इति बृहत्संहितायां मरकतपरीक्षा नाम त्र्यशीतितमोऽध्यायः ॥८३॥ ॥ अथ दीपलक्षणं ॥ वामावर्त फिरनेवाला · मलिनकिरण · चिनगी से युक्त · अल्पज्योती · स्वच्छतेल और बत्ती रहते भी जल्दी नाश पावता है · शब्दयुक्त · कंपयुक्त · फैला तेज · पतंग और वायु यह न रहते जो नाश पावता है · यह प्रकारका दीप अशुभफल कथन करता है ॥१॥ घनज्योति · लंबी · कंपरहित तेजस्वी · शब्दरहित · अतिप्रकाश · प्रदक्षिण ज्वाला · वैडूर्यमणी समान (नीलपीत) और सुवर्ण इनके समानकांति · बहुतकाल अति तेजस्वी प्रदीप्त होता है · ऐसा दीप जल्दी लक्ष्मी प्राप्त होगी ऐसा कहता है · यह लक्षण के सिवाय अवशिष्ट रहे लक्षण (अ० ४१ श्लोक ३१ १४) इसके अग्निलक्षण कथन किया उसके समान यथायुक्ति से यहां भी योजना करना ॥२॥ इति बृहत्संहितायां दीपलक्षणं नाम चतुरशीतितमोऽध्यायः ॥८४॥

अथ दंतकाष्ठलक्षणं॥ वल्लीलतागुल्मतरुप्रभेदैः स्युर्दंतकाष्ठान्यमितानि तेषां
फलानि वाच्यान्यतिविस्तरस्य गोमाभूदतो वच्म्यथ कामिकानि॥१॥ अज्ञातपूर्वाणि न दंतकाष्ठान्यद्यान्न पत्रैश्च समन्वितानि॥
न युग्मपर्वाणि न पाटितानि न चोर्ध्वशुष्काणि विना त्वचा वा॥२॥ वैकंकते श्रीफलकाश्मरीषु ब्राह्मी द्युतिः क्षेमतरौ सुदाराः॥ वृद्धिर्वटेऽर्के
प्रचुरं च तेजः पुत्रा मधूके ककुभे प्रियत्वं॥३॥ लक्ष्मीः शिरीषे च तथा करंजे प्लक्षेऽर्थसिद्धिः समभीप्सिता स्यात्॥ मान्यत्वमायाति जनस्य जात्यां
प्राधान्यमश्वत्थतरौ वदंति॥४॥ आरोग्यमायुर्बदरीबृहत्योरैश्वर्यवृद्धिः खदिरे सविल्वे॥ द्रव्याणि चेष्टान्यतिमुक्तके स्युः प्राप्नोति
तान्येव पुनः कदंबे॥५॥ निंबेऽर्थाप्तिः करवीरेऽन्नलब्धिर्भांडीरे स्यादन्नमेव प्रभूतं॥ शम्यां शत्रूनपहंत्यर्जुने च श्यामायां च द्विषतामेव नाशः
॥६॥ शाले सकर्णे च वदंति गौरवं सभद्रदारावपि चाटरूषके॥
वाल्लभ्यमायाति जनस्य सर्वतः प्रियंगवपामार्गसजंबुदाडिमैः॥७॥

---

वल्ली-लता-गुल्म (कंटकादिवृक्षका झुंपड) वृक्ष यह भेदसे दंतकाष्ठ हजारो है. अति प्रसंग न होय इसवास्ते इष्टफलदेनेवालेही कहते है॥१॥ पूर्वमे उत्पत्ति न जाने ऐसे दंतकाष्ठ चबावना नही. पर्णसे युक्त. समपर्व (पोर) फटे भए. ऊपर सुष्क. छाल विना ऐसे दंतकाष्ठ लेना नही॥२॥ वैकंकत. आंवरा. काश्मरी (सेवन वृ॰) यह वृक्षका दंतकाष्ठ करे तो ब्रह्मवर्चस होता है. क्षेमतरुके (वृक्षवि॰) करे तो उत्तम स्त्री प्राप्ति होती है. बडका करे तो अर्थवृद्धि होती है. ककेवृक्षका करे तो तेज होता है. मौहाका करे तो पुत्र प्राप्ति होती है. ककुभवृक्ष (अर्जुन) करे तो लोकप्रिय होता है॥३॥ सिरस वृक्षवि॰ और करंजका दंतकाष्ठ करे तो लक्ष्मी प्राप्ति. प्लक्ष (पाकर) करे तो इच्छित द्रव्य प्राप्ति. जाईका करे तो मान्यत्व प्राप्ति. पीपलके काष्ठसे दंतकाष्ठ करे तो श्रेष्ठत्व होता है॥४॥ बेर और भटकटैया. इनके दंतकाष्ठ करे तो आरोग्य और आयुष्यवृद्धि होती है. खैर और बेल इनके दंतकाष्ठ करे तो ऐश्वर्यवृद्धि होती है. अतिमुक्तक (बेल) और कदंबके दंतकाष्ठ करे तो इष्टद्रव्य प्राप्ति होती है॥५॥ नींबका दंतकाष्ठ करे तो द्रव्य प्राप्ति कनेरका करे तो अन्न प्राप्ति. भांडीरवृक्ष (वृक्षवि॰) का करे तो बहुत अन्न प्राप्ति. शमीका वृक्ष और अर्जुनवृक्षके करे तो शत्रुनाश होता है. मेउडी का दंतकाष्ठ करे तो शत्रुनाश होता है॥६॥ शाकर. साग. देवदार. अडूसा. इनके दंतकाष्ठ करे तो सन्मान प्राप्ति होती है. कंगु. चिचिडा. जामुन. अनार यह वृक्षके करे तो सर्वलोकको प्रिय होता है॥७॥ दंतकाष्ठ भक्षण कर्त्ता कहिये दंतमज्जन करनेवाला. इसने उत्तराभिमुख किंवा

उदङ्मुखः प्राङ्मुख एव वाब्दं कामं यथेष्टं हृदये निवेश्य ॥ अद्याद्विमृद्य च सुखोपविष्टः प्रक्षाल्य जह्याच्च शुचिप्रदेशे ॥८॥ अभिमुखपतितं प्रशांतदिक्स्थं शुभमतिशोभनमूर्ध्वसंस्थितं यत् ॥ अशुभकरमतोऽन्यथा प्रदिष्टं स्थितपतितं च करोति मृष्टमन्नं ॥९॥ ॥इति दंतकाष्ठलक्षणं॥ ॥अथ सर्वशाकुनं॥ ॥ यच्छुक्रशक्रवागीश कपिष्ठलगरुत्मतां ॥ मतेभ्यः प्राह ऋषभो भागुरेर्देवलस्य च ॥१॥ भारद्वाजमतं दृष्ट्वा यच्च श्रीद्रव्यवर्धनः ॥ आवंतिकः प्राह नृपो महाराजाधिराजकः ॥२॥ सप्तर्षीणां मतं यच्च संस्कृतं प्राकृतं च यत् ॥ यानि चोक्तानि गर्गाद्यैर्यात्राकारैश्च भूरिभिः ॥३॥ तानि दृष्ट्वा चकारेमं सर्वशाकुनसंग्रहं ॥ वराहमिहिरः प्रीत्या शिष्याणां ज्ञानमुत्तमं ॥४॥ अन्यजन्मांतरकृतं कर्म पुंसां शुभाशुभं ॥ यत्तस्य शकुनः पाकं निवेदयति गच्छतां ॥५॥ ग्राम्यारण्यांबुभूव्योमद्युनिशोभयचारिणः ॥ रुतयातेक्षितोक्तेषु ग्राह्याः स्त्रीपुंनपुंसकाः ॥६॥

---

पूर्वमुख बैठके वा उत्तरमुख बैठके यथेष्ट इच्छा हृदयमें करके सुखोपविष्ट होयके निःशंक ही ऐसे दंतकाष्ठ भक्षण करना नंतर वह दंतकाष्ठ धोयके शुद्धस्थानमें फेकना ॥८॥ फेंका जो दंतकाष्ठ कर्ताके सन्मुख गिरे किंवा शांत दिशामें गिरे तो शुभ होता है ऊपर रहे तो बहुत शुभ होता है इससे अन्यथा गिरे तो अशुभकारक कथन किया ठहरकर के गिरे तो स्वच्छ अन्न करता है (स्वच्छ अन्नप्राप्ति) ॥९॥ ॥इति बृहत्संहितायां दंतकाष्ठलक्षणं नाम पंचाशीतितमोऽध्यायः ॥८५॥ ॥अथ सर्वशाकुनं॥ ॥जो शाकुन शुक्र इंद्र बृहस्पति कपिष्ठल ऋषि गरुड यह शास्त्रकर्ता इनके और भागुरी और देवल इनके मत देखके ऋषभाचार्य कहते भए ॥१॥ तैसेही भारद्वाज ऋषीके मत देखके महाराजाधिराज श्रीद्रव्यवर्धन नामक उज्जैनका राजा जो शाकुन कहते भए ॥२॥ जो शास्त्र मरीच्यादि सप्तर्षीको मान्य और जो संस्कृत वा प्राकृत शाकुन और शाकुन गर्ग वसिष्ठ पराशर कश्यप ऋषिपुत्र इत्यादि बहुत यात्राकार (यात्राकरनेवाले) ऋषीने कथन किया सो देखके वराहमिहिराचार्य शिष्यके प्रीत्यर्थ उत्तम ज्ञान रूप ऐसा यह सर्वशाकुनसंग्रहको संक्षेपसे करते भए ॥३॥४॥ अन्यजन्ममें किये जो शुभाशुभ कर्म उसके पाकको (भोगको) गमन करनेवाले पुरुषको शकुन कहते हैं ॥५॥ ग्रामचर अरण्य अंबुचर भूमिचर आकाशचर दिनचर रात्रिचर दिनरात्रिचर ऐसे शकुन हैं (इनके लक्षण आगे हैं) उनका शब्द गमन अवलोकन इनपर से कथन किया जो पुं स्त्री नपुंसक वह लेना (शब्दादिकारसे शकुन स्त्री

पृथक् पृथक् त्वत एव स्थानादेषां व्यक्तिर्नरुस्यते ॥ सामान्यलक्षणोद्देशं श्लोकावृषिकृतावि मौ ॥७॥ पीनोन्नतविकृष्टांसाः पृथुग्रीवाः सुवक्षसः ॥ स्वल्पगंभीरविरुताः पुमांसः स्थिरविक्रमाः ॥८॥ तनूरस्कशिरोग्रीवाः सूक्ष्मास्यपदविक्रमाः ॥ प्रशस्तमृदुभाषिण्यः स्त्रियोऽतोऽन्यन्नपुंसकं ॥९॥ ग्रामारण्याप्रचाराद्यल्लोकादेवोपलक्षयेत् ॥ संक्षिप्सुरहं वच्मि यात्रामात्रप्रयोजनं ॥१०॥ पथ्यात्मानं नृपं सैन्ये पुरे चोद्दिश्य देवतां ॥ सार्थे प्रधानं साम्ये स्याज्जातिविद्यावयोधिकं ॥११॥ मुक्तप्राप्तैष्यदर्कासु फलं दिक्षु तथाविधं ॥ अंगारिदीप्तधूमिन्यस्ताश्च शान्तास्ततोऽपराः ॥१२॥

---

पुरुष नपुंसक यह जानना कहिये स्त्रीका शब्द होयतो स्त्रीशकुन इ० ॥६॥ यह शकुनका पृथक् पृथक् जातिदेश नसमझनेसे पुस्त्रीनपुंसक यह स्पष्ट चिन्ह जानने नहीं इसवास्ते सामान्यलक्षण समझनेके विषे वृद्धगर्गऋषीने कथन किये वक्ष्यमाण दो श्लोक देखना ॥७॥ पुष्ट ऊंचे विस्तीर्ण ऐसे स्कंध विस्तीर्ण ग्रीवा सुंदरवक्षस्थल स्वल्प और गंभीर शब्द स्थिर पराक्रम यह पुरुषके लक्षण होतेहैं ॥८॥ छाती मस्तक ग्रीवा यह सूक्ष्म मुख चरण पराक्रम यह सूक्ष्म प्रशस्त मृदुभाषण यह स्त्रीके लक्षण होतेहैं इसे अन्य नपुंसक जानना ॥९॥ यह शकुनके ग्रामचर अरण्यचर इत्यादि लोकप्रचारसे और अन्यशास्त्रसे ही जानना ग्रंथका संक्षेप करनेके वास्ते इच्छा करनेवाले जो हम सो यात्रामे जितना उपयोग तितनाही कहतेहैं ॥१०॥ मार्गमे स्वशरीरको उद्देश करके सेनामे राजाको उ० पुर शब्द उपलक्षणार्थ कहिये गांवमे ग्रामाधिपतीको उ० जनसमूहमे मुख्यको उ० बहवहुतहोयतो जाति विद्या वयस्से अधिक जो होय उस्को उद्देशकरके शकुनका शुभाशुभफल होताहै ॥११॥ मुक्त प्राप्त एष्य है सूर्य जिस्के विषे ऐसे दिशाके विषे भए जो शकुन उनके अशुभफल गत वर्तमान भविष्य ऐसे जानना मुक्त प्राप्त एष्य दिशा अंगारी दीप्त धूमिनी ऐसी होतीहै इसे इतर पांच दिशा शांत होतीहै वह ऐसे सूर्योदयसे प्रहरतक ईशानी मुक्तसूर्या पूर्वप्राप्तसूर्या अग्नेयी एष्यसूर्या दुसरे प्रहरमे पूर्व मुक्तसूर्या आग्नेयी प्राप्तसूर्या दक्षिणा एष्यसूर्या तृतीयप्रहरमे आग्नेयी मुक्तसूर्या दक्षिण प्राप्तसूर्या निर्ऋति एष्यसूर्या चतुर्थप्रहरमे द० मु० नि० प्रा० प० ए० रात्रीके प्रथमप्रहरमे निर्ऋति मु० प० प्रा० वा० ए० द्वि० प्र० पश्चिम मु० वायव्य प्रा० उ० ए० तृती० वा० मु० उ० प्रा० ई० ए० चतुर्थप्रहरमे उत्तर मुक्तसूर्या ईशा० प्रा० पूर्व एष्यसूर्या ऐसी होतीहै इसरीतिसे अशुभ फल सूर्य मुक्त दिशामे शकुनके भूत फल सूर्य प्राप्त

तत्संचभदिशांतुल्यंशुभंत्रैकाल्यमादिशेत्॥ परिशेषयोर्दिशो र्वाच्यंयथासन्नंशुभाशुभं॥१३॥ शीघ्रमासन्ननिम्नस्थैश्चिरादुन्नतदूरगैः॥ स्थानवृद्ध्युपघाताच्चतद्वद्ब्रूयात्फलंपुनः॥१४॥ क्षणतिथ्युडुवातार्कैर्देवदीप्तोयथोत्तरं॥ क्रियादीप्तोगतिस्थानभावस्वरविचेष्टितैः॥१५॥ दशधैवंप्रशांतोपिसौम्यस्तृणफलाशनः॥ मांसामेध्याशनोरौद्रोविमिश्रोन्नाशनःस्मृतः॥१६॥ हर्म्यप्रासादमंगल्यमनोज्ञस्थानसंस्थिताः॥ श्रेष्ठामधुरसक्षीरफलपुष्पद्रुमेषुच॥ १७॥

दिशामे वर्त्तमानफल· सूर्य एष्य दिशामे भविष्यफलजानना· सूर्य मुक्तदिशा अंगारिणी· प्राप्त सूर्यदिशादीप्ता· एष्य सूर्यदिशाधूमिनी इसप्रकारसे ३ और बाकी ५ दिशा शांत होती है ॥१२॥ वह अंगारि· दीप्त· धूमिनी· यह ३ दिशासे उस्केउस्के पांचवे दिशाके भूत· भविष्य· वर्तमान कालमे वहवह दिशामे शुभाशुभफल कहना· रहीजो दो दिशाउस्के समीपदिशा समान शुभाशुभफल कहना ॥१३॥ समीप और नीचे भागमे भए शाकुनके शुभाशुभफल शीघ्रहोते हैं· ऊंचेस्थानमे और दूरभए उनके फलबहुतकालमे होतेहैं और जिसस्थानमे प्रतिदिनमे वृद्धिहोतीहोय उहां भए शुभशाकुनवृद्धीकरतेहैं और जहां नाशहोताहोय उहाका अशुभशकुननाश करतेहैं· नाशस्थानमे भएजो शुभशकुनसो अल्पशुभकरतेहैं ऐसा कहना ॥१४॥ आर्द्रादिमुहूर्त्त· तिथि· नक्षत्र· वायु· सूर्य· यह पांचपर भए शकुन देवदीप्त· गमन· स्थान· भाव· स्वर· विचेष्टित· इसपर भए शाकुन क्रियादीप्त यह उत्तरोत्तर बलिष्ठ होतेहै (क्षणके अपेक्षा तिथि इ०) चतुर्थी· षष्ठी· अष्टमी· नवमी· चतुर्दशी· यह तिथीदीप्त· मूल· ज्येष्ठा· आश्लेषा· आर्द्रा· विशाखा· भरणी· मघा· कृत्तिका· यह नक्षत्र दीप्त· यह पूर्वोक्त नक्षत्रके मुहूर्त (आर्द्रादि) वहक्षणदीप्त· चंड· खर· परुष· प्रतिलोमादिवातदीप्त· सूर्यके सन्मुख और दीप्त दिक्स्थ· अर्कदीप्त· अर्कवायु इनके सन्मुख जो दौडताहै वह गतिदीप्त· कुभूम्यादिस्थ जो वह स्थानदीप्त· स्वल्पसंज्ञक जो सो भावदीप्त· भयंकरस्वरादि जो सो स्वरदीप्त· छिन्नभिन्नादि चेष्टादीप्त· ऐसे दस प्रकारके शाकुन हैं ॥१५॥ यह दसप्रकारका भी शाकुन शांत होय तथा तृणभक्षक किंवा फलभक्षक होय तो शुभ जानना· मांसभक्षक और अमेध्य (विष्ठादि) भक्षक होय तो रौद्र (अतिदीप्त) जानना· अन्नभक्षक होय तो वह मिश्र (शांतदीप्त) कथन किया ॥१६॥ गृह· देवालय· मंगल (देवब्राह्मण गौ· इ० समीप) मनोज्ञ (आ [illegible]) [illegible] युक्त·) ऐसे स्थानमे और मधुर· रसिक फल और पुष्प इसे युक्त ऐसे वृक्षकनिषे भए शकुन श्रेष्ठ (शुभ) होतेहैं ॥१७॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्वकाले गिरिनोयस्था बलिनो युनिशाचराः॥ क्लीबस्त्रीपुरुषाश्चैषां बलिनः स्युर्यथोत्तरं॥१८॥ जवजातिबलस्थानहर्षसत्वस्वरान्विताः॥स्वभूमावनुलोमाश्च नदूनाः स्युर्विवर्जिताः॥१९॥ कुक्कुटेभपिरिल्यश्च शिखिवंजुलछिक्कराः॥बलिनः सिंहनादश्च कूटपूरीच पूर्वतः॥२०॥ क्रोष्टुकोलूकहारीतकाककोकर्क्षपिंगलाः॥ कपोतरुदिताक्रंदक्रूरशब्दाश्च याम्यतः॥२१॥ गोशशक्रौंचलोमाशहंसोत्क्रोशकपिंजलाः॥ विडालोत्सववादित्रगीतहासाश्च वारुणाः॥२२॥ शतपत्रकुरंगाखुमृगैकशफकोकिलाः॥चाषशल्यकपुण्याहघंटाशंखरवाबुदक्॥२३॥ नग्राम्योरण्यगोग्राह्योनारण्योग्रामसंस्थितः॥दिवाचरो नशर्वर्यां नचनक्तंचरोदिवा॥२४॥ द्वंद्वरोगार्दितत्रस्ताः कलहामिषकांक्षिणः॥ आपगांतरिनामत्तान ग्राह्याःशकुनाःक्कचित्॥२५

---

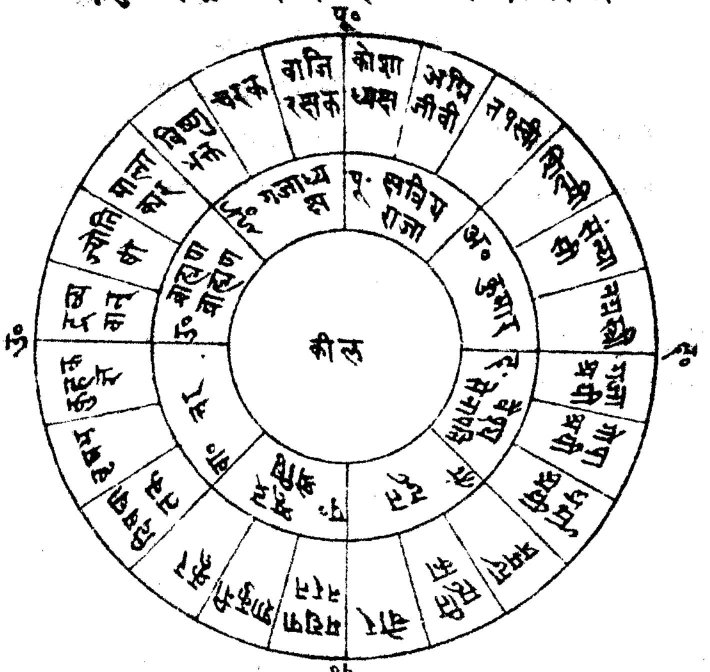
गिरि (पर्वत ऊंचा प्रदेश) इसपर रहनेवाले दिनमे फिरनेवाले दिवा बलवान् और जलमे रहनेवाले रात्रीमे फिरनेवाले रात्रीमे बलवान् शकुन होतेहैं नपुंसक स्त्री पुरुष ऐसे शकुन इनमे उत्तरोत्तर बलिष्ठ होतेहैं कहिये नपुंसकके अपेक्षा स्त्री बलवान् स्त्री अपेक्षा पुरुष बलवान्॥१८॥ वेगयुक्त गति जाति बल स्थान हर्ष धैर्य स्वर इनसे युक्त और स्वभूमीके विषे अनुकूल रहे ऐसे शकुन बलिष्ठ होतेहैं कहिये दो शकुन भएहो पतो जो वेगयुक्त गति इत्यादिकरके अधिक वह बलवान् अन्य निर्बल ऐसा जानना वेगादिकरके जो कमती वह निर्बल शकुन जानना॥१९॥ कुक्कुट हाथी पिरिल्य (पक्षिवि०) मयूर वंजुल (पक्षिवि०) छिक्कर (मृगजाति) सिंहनाद (पक्षिवि०) कूटपूरी (बकपक्षीकी स्त्री) यह शकुन पूर्वदिशामे बलि होतेहैं॥२०॥ सियार उलूक हरा कबूतर कौआ चक्रवाक भालू पिंगलपक्षी गोला कबूतर रोदन चिल्लाना क्रूरशब्द यह दक्षिण दिशामे बलि होतेहैं॥२१॥ गौ खरगोस क्रौंचपक्षी मेढा हंस कुररपक्षी कबूतर बिलार विवाहादि उत्सव वाद्य गायन हास्य यह पश्चिममे बली होतेहैं॥२२॥ कठफोड पक्षी हरिण चूहा मृग एकशफ (अश्वादि) कोकिल नीलकंठ पक्षी शल्यक (साई) आशिर्वाद सूचक शब्द घंटा शंख इनके शब्द यह उत्तरमे बली होतेहैं॥२३॥ ग्राममे के शकुन अरण्यमे होयतो उसका शुभाशुभ फल लेना नहीं तैसे ही अरण्यमे के शकुन ग्राममे लेना नहीं दिवाचरका रात्रीमे रात्रिचरका दिनमे ऐसा शुभफल लेना नहीं॥२४॥ सारस पक्षीके मिथुन बिना द्वंद्व रोगपीडित भीत कलह और मांस इनको इच्छा करनेवाले नदीसे अंतरित (उल्लंघित) मत्त ऐसे शकुन शुभाशुभ फलके बिषे कभी ही लेना नहीं॥२५॥ छ॥

रोहिताश्वाजवालेयकुरंगोष्ट्रमृगाः शशाः॥ निष्फलाः शिशिरे ज्ञेया वसंते काककोकिलौ॥२६॥ न तु भाद्रपदे ग्राह्याः सूकरश्ववृकादयः॥ शरद्यब्जादगोक्रौंचाः श्रावणे हस्तिचातकौ॥२७॥ व्याघ्रर्क्षवानरद्वीपिमहिषाः सबिलेशयाः॥ हेमंते निष्फला ज्ञेया बालाः सर्वे विमानुषाः॥२८॥ ऐंद्रानलदिशोर्मध्ये त्रिभागेषु व्यवस्थिताः॥ कोशाध्यक्षानलाजीवितपोयुक्ताः प्रदक्षिणं॥२९॥ शिल्पीभिक्षुर्विवस्त्रास्त्री याम्यानलदिगंतरे॥ परतश्चापि मातंगगोपधर्मसमाश्रयाः॥३०॥ नैर्ऋतीवारुणीमध्ये प्रमदासूतितस्कराः॥ शौंडिकः शाकुनी हिंस्रो वायव्यपश्चिमांतरे॥३१॥ विषघातकगोस्वामिकुहकज्ञास्ततः परं॥ धनवानीक्षणीकश्च मालाकारस्ततः परं॥३२॥ वैष्णवश्चरकश्चैव वाजिनां रक्षणे रतः॥ एवं द्वात्रिंशतो भेदाः पूर्वदिग्भिः सहोदिताः॥३३॥

---

रोहित (चमरमृग) अश्व· मेढा· खर· कुरंग (मृगवि०) ऊंट· हरिण· खरगोस· यह सर्व शिशिरऋतूमे निष्फल जानना· काक और कोकिल यह वसंतऋतूमे निष्फल जानना ॥२६॥ सूकर· कुत्ता· हुंडार· इ० भाद्रपदमासमे नही लेना· कमलभक्षक (हंस) गौ· क्रौंचपक्षी· यह शरदऋतूमे नही लेना· हाथी और चातक यह श्रावणमे नही लेना· (यह इसमहिनेमे मदयुक्त रहते हैं इस वास्ते शुभाशुभ शकुनके विषे लेना नही·) ॥२७॥ व्याघ्र· रीस· वानर· चित्ता· महिष· बिलेशय· (साई· नेउर इ०) मनुष्यरहित सर्व बालक यह हेमंतऋतूमे निष्फल जानना· ॥२८॥ पूर्व और आग्नेयी इनके बीचमे जो तीन भाग तहां प्रथम भागमे कोशाध्यक्ष· (खजानेवाला·) २ भागमे सुवर्णकारादि अग्निजीवी· ३ भागमे तपस्वी यह प्रदक्षिण रहते हैं ॥२९ दक्षिण और आग्नेयी इनके मध्यभागमे प्रथम शिल्पी· २ संन्यासी· ३ वस्त्ररहित स्त्री· यह रहते हैं· निर्ऋति और दक्षिण इनके मध्यभागमे प्रथम हाथीका आश्रय करनेवाला· २ गोपका आ० ३ धर्मका आश्रय करनेवाले· यह रहते हैं ॥३०॥ नैर्ऋती और पश्चिम इनके बीचमे प्रथम प्रमदा· २ सूतिका· ३ चोर यह रहते हैं· वायव्य और पश्चिम इनके बीचमे प्रथम मद्यपानरत· २ धीवर· ३ क्रूर· यह रहते हैं ॥३१॥ वायव्य और उत्तर इस्मे प्रथम विषघातक· २ वृषभ· ३ गौड बंगाला· जाननेवाला· यह रहते हैं· उत्तर और ईशानी इस्मे प्रथम द्रव्यवान्· २ ज्योतिषी· ३ माली यह रहते हैं· ॥३२॥ ईशानी और पूर्व इस्मे प्रथम भागमे विष्णुभक्त· २ भागमे चरक (गुप्तखबर देनेवाले·) ३ भागमे अश्वरक्षक· यह रहते हैं· यह प्रकारसे यह भेद २४ और पूर्वादि दिशा ८ इनसे युक्त करे तो ३२ भेद प्रदक्षिण कथन किया ॥३३॥

शकुनचक्र आर ३८ श्लो०२९।३०।३१।३२।३३।३४




राजाकुमारो नेता च दूतः श्रेष्ठी चरो द्विजः॥ गजाध्यक्षश्च
पूर्वाद्याः क्षत्रियाद्याश्चतुर्दिशं॥३४॥ गच्छतस्तिष्ठतो वापि
दिशि यस्यां व्यवस्थितः॥ विरौति शाकुनो वाच्यस्तद्दिग्जेन
समागमः॥३५॥ भिन्नभैरवदीनार्तपरुषक्षामजर्जराः॥
स्वरा नेष्टाः शुभाः शान्ता हृष्टप्रकृतिपूरिताः॥३६॥ ७॥

---

पूर्वदिशामे राजा·आग्नेयीमे कुमार·दक्षिणमे सेनापति·नैर्ऋतीमे दूत·पश्चिममे श्रेष्ठी(अत्युत्तमकुलपरंपरागत·शिल्पज्ञ) वायव्यमे हलकारा·उत्तरमे ब्राह्मण·ईशानमे गजाध्यक्ष·ऐसे रहते है·तैसेही पूर्वमे क्षत्रिय·दक्षिणमे वैश्य·पश्चिममे शूद्र·उत्तरमे ब्राह्मण रहते है·॥३४॥ पुरुष गमन करते किंवा स्थिर रहते·जिस पूर्वादि दिशामे रहा जो शकुन(प्राणी किंवा पक्षी) शब्द करे वह दिशाके आश्रय करनेवाले के बराबर समागम वह शकुनको उत्पन्न होगा·कहिये पूर्व और आग्नेयी इसके मध्यमें भागस्थ शकुन होय तो कोशाध्यक्षके बराबर भेट होगी·द्वि भा० शकुन होय तो सुवर्णकारादिकके बराबर·तृ० शकुन होय तो तपस्वीके बराबर इत्यादि जानना॥३५॥ फूटे(विषम) क्रूर·दीन·पीडित·कठोर·म्लान·फूटे स्वर अशुभ जानने ऐसे शब्द शुभ नहीं·शांत दिक्स्थित और मनको सुख·और हर्षयुक्त प्रकृतिसे किये शब्द सब शुभ होते है·॥३६॥

शिवाश्यामारलाछुछुन्दुः पिंगलागृहगोधिकासूकरीपरपुष्टाचपुन्ना
मानश्चवामतः॥३७॥स्त्रीसंज्ञाभासभषकपिश्रीकर्णछिक्कराः॥शि
खिश्रीकंठपिप्पीकरुरुश्येनाश्चदक्षिणाः॥३८॥क्ष्वेडास्फोटितपुण्या
हगीतशंखांबुनिःस्वनाः॥सतूर्याध्ययनाःपुंवत्स्त्रीवदन्यागिरःशु
भाः॥३९॥ग्रामौमध्यमषड्जौतुगांधारश्चेतिशोभनाः॥षड्जमध्य
मगांधाराऋषभश्चस्वराहिताः॥४०॥रुतकीर्तनदृष्टेषुभारद्वाजाज
बर्हिणः॥धन्यानकुलचाषौचसरटःपापदोऽग्रतः॥४१॥जाहकाहिश
शक्रोडगोधानांकीर्त्तनंशुभं॥रुतंसंदर्शनंनेष्टंप्रतीपंवानरर्क्षयोः॥
४२॥ओजाःप्रदक्षिणंशस्ताःमृगाःसनकुलाण्डजाः॥चाषःसनकुलो
वामोभृगुराहापराण्हतः॥४३॥छिकरःकूटपूरीचपिरिलीचान्हिदक्षि
णाः॥अपसव्याःसदाशस्तादंष्ट्रिणःसबिलेशयाः॥४४॥श्वेतेहपक्षिते
प्राच्यांशवमांसेचदक्षिणे॥कन्यकादधिनीपश्चादुदग्गोविप्रसाधवः॥४५

---

सियार· श्यामा(कालेरंगकीगौरय्या) रला (पक्षिवि०) छुछुंदर· पिंगला(उलूकस्त्री)
बिस्तुया· सूकरी· कोइल· पुरुषनामक पक्षी· यह सर्व गमनकर्त्ताके वाम भागमें शुभ
होतेहैं ॥३७॥ स्त्रीसंज्ञकपक्षी· गृध्रपक्षी· कुत्ता· वानर· श्रीपर्ण(पक्षिवि०) छिक्कर·
(मृगवि०) मयूर· श्रीकंठ(पक्षिवि०) पिप्पीक(पक्षिवि०) रुरु(मृगवि०) श्येनपक्षि· यह
दक्षिणभागमें गमनकर्त्ताको शुभहोतेहैं ॥३८॥ क्ष्वेडा(मुखशब्द· सिंहनाद) आस्फो
टित(वक्षस्थल वा बाहु इनका ताडन) आशीर्वादसूचकशब्द· प्रशस्त गायन· शं
ख· जल इनके शब्द वाद्यशब्द· और अध्ययनशब्द यह सर्व पुंवत् कहिये गमन
कर्त्ताके वामभागमेंशुभहोतेहैं· अन्य सर्व शब्द स्त्रीवत् कहिये दक्षिण भागमें शुभ
होतेहैं ॥३९॥ मध्यम षड्ज· गंधार· यह ग्राम शुभहोतेहैं· षड्ज· मध्यम· गंधार·
ऋषभ यह स्वर गमनकर्त्ताको शुभहोतेहैं ॥४०॥ भारद्वाजपक्षी· बकरा· मयूर· नेउर·
चाष· इनकेशब्द· इनकेनाम संकीर्तन· यह देखेतोभी गमनकर्त्ताको शुभहोताहै· गिरगिटा
न आगेदेखैतो अशुभहोताहै ॥४१॥ खिलार· सर्प· खर्गोस· सूकर· गोह· इनकानामग्रहण
शुभहोताहै· शब्द और दर्शन शुभनहीं· वानर और रीछ इनके नामसंकीर्तन· अशुभशब्द औ
र दर्शन शुभहोताहै ॥४२॥ मृग· नेउर· पक्षी यह विषमसंख्याक(१।३।५ इ०) प्रदक्षिणजाय
तो शुभहोताहै· नेउरसे युक्त चाष पक्षी वाम भागमें अपराण्हसे शुभहोतेहैं· ऐसाभृगुऋषी
कहतेभए ॥४३॥ छिक्कर(मृगवि०) कूटपूरी(बकरीकी स्त्री) पिरिली(पक्षिवि०) यह दि
न में दक्षिणभागमें गमनकर्त्ताको शुभहोताहै· सूकरादि दंष्ट्री और साई नेउर इ० बिलेशय
यह वामभागमें तो शुभहोताहै ॥४४॥ अब और श्वेत पदार्थ पूर्वमें· मन और मांस दक्षि

जांबूकश्वचरणौनेष्टौप्राग्याम्यौशस्त्रघातकौ॥षण्ढ्वादासवर्षंढोन्ह
खलासनहलाम्बुदक्॥४६॥कर्मसंगमयुद्धेषुप्रवेशेनष्टमार्गणे॥
यानव्यस्तगताग्राह्याविशेषश्चात्रवक्ष्यते॥४७॥दिवाप्रस्थानवग्रा
ह्याःकुरंगरुरुवानराः॥अन्हश्चप्रथमेभागेचाषवंजुलकुक्कुटाः॥४८
॥पश्चिमेशार्वरीभागेनप्तृकोलूकपिंगलाः॥सर्वएवविपर्यस्ताग्राह्याः
सार्थेषुयोषिताम्॥४९॥नृपसंदर्शनेग्राह्याःप्रवेशेपिप्रयाणवत्॥गि
र्यरण्यप्रवेशेचनदीनांचावगाहने॥५०॥वामदक्षिणगौशस्तौयौतुत
वग्रपृष्ठगौ॥क्रियादीप्तौविनाशाययातुःपरिघसंज्ञितौ॥५१॥नानेव
तुयथाभागंप्रशांतरुतचेष्टितौ॥शाकुनौशाकुनद्वारसंज्ञितावर्थसिद्ध
ये॥५२॥केचित्तुशाकुनंद्वारमिच्छंत्युभयतःस्थितैः॥शाकुनैरेकजा
तीयैःशांतचेष्टाविराविभिः॥५३॥विसर्जयतियद्येकएकश्चप्रति
षेधति॥सविरोधोऽशुभोयातुर्ग्राह्योवाबलवत्तरः॥५४॥ ॥ ॥

---

णमे·कन्यकाऔरदधिपश्चिममे·गौ·ब्राह्मण·औरसाधु·उत्तरमे·यहइसदिशामेशु
भहोतेहै·॥४५॥जालु·औरकुत्ता·बराबरलेकेजानेवाले पूर्वमेअशुभ·शस्त्रधारीऔ
रघातकयहदक्षिणमे·मद्यकारऔरनपुंसकयह पश्चिममे·दुष्टआसन·हल·यह
उत्तरमे·यहइसदिशामेगमनकर्त्ताकोअशुभहोतेहै·॥४६॥जोकुछकियाजाताहै
वहकर्म·बंध्वादिकसे संयोग·युद्ध·गृहप्रवेश·नष्टवस्तुशोधन इस्केविषे·प्रयाणमे
जोशाकुनकथनकियावहविपरीतलेना·कहियेप्रयाणमेजोदक्षिणभागमेशुभसो
इसमेवामभागमेशुभऔरजोपूर्वमेसोपश्चिममेऐसाजानना· इस्केविषेजोविशेष
हेसोआगेकहतेहै॥४७॥दिनमेहरिण·रुरु(मृगवि०) वानरयहप्रयाणसमान औ
रदिनकेप्रथमभागमेचाषवंजुल(पक्षिवि०)मुर्गा·प्रयाणकसमानजानना·॥४८॥
रात्रीकेपश्चिमभागमे चटकपक्षी(चौरा·) घुघु·पिंगल यहप्रस्थानकेसमानलेना·स्त्री
केविषयमेसर्वहीविपरीतलेना·॥४९॥ राजदर्शनकेविषे राजाकेगृहमेप्रवेशकरनेभी
प्रयाणकसमानहीशुभाशुभशकुनलेना·पर्वतऔर अरण्यइनकेविशेप्रवेश·नदी
मेस्नानइनकेविषे॥५०॥ यात्रामेजोशाकुन वामभागमेशुभ वहअग्रभागमे औरजो
दक्षिणभागमेशुभ· वहपृष्ठभागमेशुभहोनेहै·क्रियादीप्त(श्लो०१५ शकुनगमनक
र्त्ताकेदूनोबाजूमेहोयतोमरणहोताहै·॥५१॥ वहीजोशांतशब्दऔरचेष्टायुक्तशकु
नहोयतोशुभशकुनकेमार्गभूतहोके   कार्यसिद्धिकरनेवालेहोतेहै·॥५२॥कोई
आचार्यदूनोबाजूमेरहेऐसे·एकजातीके·शांतहैचेष्टाऔरशब्दजिनकेऐसे(शांतचे
ष्टावस्वरवाण·)शाकुनकरकेशकुनद्वारमे(कार्यसिद्धीमे) इच्छाकरतेहै·॥५३॥एकशकुन

पूर्वंप्रावेशिकोभूत्वापुनःप्रास्थानिकोभवेत्॥सुखेनसिद्धिमाचष्टे
प्रवेशेतद्विपर्ययः॥५५॥विसृज्यशकुनःपूर्वंसएवविरुणद्धिचेत्॥
प्राहयातुररैर्मृत्युंडमरंरोगमेववा॥५६॥अपसव्यास्तुशकुनादी
प्ताभयनिवेदिनः॥आरंभेशकुनोदीप्तोवर्षांनस्तद्भयंकरः॥५७॥ति
थिवाय्वर्कभस्थानचेष्टादीप्तायथाक्रमं॥धनसैन्यबलांगेष्टकर्मणां
स्युर्भयंकराः॥५८॥जीमूतध्वनिदीप्तेषुभयंभवतिमारुतात्॥उभयोः
संध्ययोर्दीप्ताःशस्त्रोद्भवभयंकराः॥५९॥चितिकेशकपालेषुमृत्यु
बंधवधप्रदाः॥कंटकीकाष्ठभस्मस्थाःकलहायासदुःखदाः॥६०॥
अप्रसिद्धिंभयंवापिनिःसाराश्मव्यवस्थिताः॥कुर्वंतिशकुनादीप्ताः
शांतायाप्यफलास्तुते॥६१॥ असिद्धिसिद्धिदौज्ञेयौनिर्ह्रादाहार
कारिणौ॥स्थानाद्रुवन्व्रजेद्यात्राशंसनेतन्यथागमं॥२॥ ॥ ७ ॥

---

शुभऔरएकअशुभऐसेहोयतोवहविरोधगमनकर्त्ताको अशुभहोनाहै·अथवा
उसमेजोबलिष्ट(श्लो०१९)वहलेना·॥५४॥प्रथमप्रवेशसंबंधी(श्लो०५०)शकुन
होयकेनंतरप्रयाणसंबंधी शकुनहोयतोवहशकुनगमनकर्त्ताकोसुखसेसिद्धि
कहताहै·यात्रासेफिरकेगमनकर्त्ताजोगृहप्रवेशकरेतो पूर्वकाविपर्यय कहिये
पहिलेप्रयाणशकुन नंतरप्रवेशशकुनजोहोयतोसुखसेसिद्धिहोतीहै॥५५॥
प्रथम शकुन यात्राकेविषेशुभदेखायके वही शकुनजो यात्राकेविषयमे अशुभसू
चनाकरेतोवहशकुनगमनकर्त्ताकोशत्रूसे मृत्यु·भयसेपलायन·रोग·इस्कोक
हताहै·॥५६॥अपसव्यजा नेवाले औरदीप्त·(दीप्तदिशस्थ·सूर्याभिमुख·)ऐसे
शकुनभयकहतेहै·कार्यकेआरंभमेजोदीप्तशकुन उस्काभय वर्षमेवहकार्यको
होताहै·॥५७॥तिथि·वायु·अर्क· नक्षत्र·स्थान· चेष्टा·यहदीप्तशकुन·धन·सैन्य·ब
ल·शरीर· इष्ट·कर्म· इनकोक्रमसेभयकरतेहै·॥५८॥मेघध्वनीसेदीप्तशकुनहोय
तोवायूसेभयहोताहै·प्रातःसायंसंध्याकेविषेदीप्तशकुनहोयतोशस्त्रोत्पन्नभय
करतेहै·॥५९॥प्रेताग्निसमीप·केश·कपाल·(खोपडी·)इनकेविषेभएजो शकुन
सोक्रमसेमृत्यु· बंधन·वध· यहकरतेहै·कंटकवृक्ष·काष्ठ·भस्म· इनकेविषेभएजो
शकुनसोक्रमसेकलह·उपद्रव·दुःख·इस्कोकरतेहै·॥६०॥निःसार(भीतरपोला)
औरपाषाणइनकेविषेभयजोशकुनसोक्रमसेकार्यकी अप्रसिद्धिऔर भय
करतेहै· यह पूर्वोक्तशकुनदीप्तहोयतोयहपूर्वोक्तफलकरतेहै· शांतहोयतोअ
ल्पफलदेतेहै·॥६१॥मलविसर्जनकरनेवाला शकुनकार्यकी असिद्धिकरनेवाला
भोजनकरनेवालाशकुनसिद्धिकारकहोताहै·जहां शकुन रहताहोय तहांसेशब्द

कलहः स्वरदीप्तेषु स्थानदीप्तेषु विग्रहः॥ उच्चमादौ स्वरं कृत्वा नीचं
पश्चाच्च मोषकृत्॥६३॥ एकस्थाने रुवन् दीप्तः सप्ताहाद्ग्रामघात
कृत्॥ पुरदेशनरेन्द्राणामृत्वयनवत्सरात्॥६४॥ सर्वे दुर्भिक्ष
कर्त्तारः स्वजातिपिशिताशनाः॥ सर्पमूषकमार्जारपृथुरोमविव
र्जिताः॥६५॥ परयोनिषु गच्छन्तो मैथुनं देशनाशनाः॥ अन्यत्र वेस
रोत्पत्तेर्नृणां चान्यजातिमैथुनात्॥६६॥ बंधघातभयानि स्युः पादोरु
मस्तकांतिगैः॥ अप्राश्य पिशितान्नादेर्वर्षमोषक्षतग्रहाः॥६७॥
क्रूरोग्रदोषदुष्टैश्च प्रधाननृपघातकैः॥ चिरकालैश्च दीप्ताद्याः स्वा
गमो दिक्षु तन्नृणां॥६८॥ सद्रव्यो बलवांश्च स्यात्सद्रव्यस्यागमो
भवेत्॥ द्युतिमान् विनतप्रेक्षी सौम्यो दारुणवृत्तकृत्॥६९॥ ७०॥

---

करनेजो गमन करे तो वह यात्रा करनेको कहता है· अन्यथा कहिये शब्दकरने रह
नेके जगह आयके शकुनजो बैठे तो कोईका भी आवना होगा ऐसा कहता है॥६२
॥स्वरदीप्त जिनका ऐसे शकुनसे कलह होता है· दीप्तस्थानमे भए शकुनसे युद्ध
होता है· प्रथम उच्चशब्द करके पश्चात् नीचशब्द करे तो वह शकुन चोरी करनेवाला
होता है· (चोरी होती है·)॥६३॥ दीप्तशकुन एक जगह रोदन शब्द करते सर्व दिन
रहे तो सात दिनसे ग्रामका नाश करेगा· नगरका २ महिनेसे· देशका ३ महिनेसे· रा
जाका एक वर्षसे नाश करेगा·॥६४॥ स्वजातीके मांस खानेवाले ऐसे सर्व शकुन
दुर्भिक्षकारक होते हैं· परंतु सर्प· चूहा· बिलार· मत्स्य इनके विना· (यह स्वजाती
के मांस स्वाभाविक भक्षण करते हैं·॥६५॥ सर्व प्राणी परयोनीके विषे मैथुन करे तो
देशनाश होता है· परंतु खच्चरकी उत्पत्ति और मनुष्यके अन्यजाति मैथुन इनके
विना· (घोडी और खर इनसे खच्चर होता है और मनुष्य· घोडी इत्यादिकसे मैथु
न करते हैं यह स्वाभाविक होते हैं·)॥६६॥ पांव· जंघा· मस्तक· इनके पास आवनेवा
ले शकुन क्रमसे बंध· घात· भय· इसको करते हैं· जल· तृण· मांस· अन्न· इनको भक्ष
ण करनेवाले शकुन क्रमसे वृष्टि· चोरी· अंगमे व्रण· ग्रह (मित्रकी भेट) इसको कर
ते हैं·॥६७॥ दीप्तादि (श्लो०१५) ८ दिशाके विषे स्थित जो शकुन सो अनुक्रमसे क्रूर·
उग्र· दोषी· दुष्ट· प्रधान· नृप· हन्तक· चिरकालगत· इनके सहित कोई मनुष्य· वह
दिशासे आवना है ऐसा कहता है· अथवा दीप्त· धूमित· शांत· अंगारिणी· ऐसे
चार दिशामे स्थित शकुन क्रमसे० क्रूर· उग्रदोषसे दुष्ट· मुख्य राजाका हन्तक ह
नेवाला· चिरकालगत ऐसे पुरुषके सहित कोई मनुष्य वह दिशासे आवता है॥६८॥
कुछ भक्ष्य पदार्थसे सहित और बलिष्ठ ऐसा शकुन होय तो द्रव्ययुक्त पुरुषका·

विदिक्स्थः शकुनो दीप्तो वामस्थेनानुवाशितः॥ स्त्रियाः संग्रहणं प्राह तद्दिग्व्याख्यात योनितः॥७०॥ शांतः पंचमदीप्तेन विरुतो विजयावहः॥ दिग्नरागमकारी वा दोषकृत्तद्विपर्यये॥७१॥ वामसव्यरुतो मध्यः प्राह स्वपरयोर्भयं॥ मरणं कथयंत्येते सर्वे समविराविणः॥७२॥ वृक्षाग्रमध्यमूलेषु गजाश्वरथिकागमः॥ दीर्घोब्जमुषिताग्रेषु नरनौशिबिकागमः॥७३॥ शकटे नोन्नतस्थे च छायास्थे छत्रसंयुतः॥ एकत्रिपंचसप्ताहात्पूर्वाद्यास्वंतरासु च॥७४ सुरपतिहुतवहयमनिर्ऋतिवरुणपवनेंदुशंकराः क्रमशः॥ प्राच्यादीनां पतयो दिशः पुमांसोंगना विदिशः॥७५॥ नरुतालीविदलांबरसलिलजशरचर्मपट्टलेखाः स्युः॥ द्वात्रिंशत्त्वविभक्ते दिक्चक्रे तेषु कार्याणि॥७६॥

---

आगमन होगा तेजस्वी और नीचे देखने वाला ऐसा शकुन सौम्य भी होय तो भी भयंकर कर्म कर्ता है॥६९॥ ईशान्यादि विदिशा मे स्थित जो दीप्त शकुन वह वाम भागस्थ शकुन से युक्त होय तो वह दिशा मे प्रसिद्ध जिसकी उत्पत्ति ऐसे पुरुष के पास से स्त्री की प्राप्ति कहता है॥७०॥ शांत शकुन तत्पंचम दिक्स्थ दीप्त शकुन से शब्दित होय तो विजयप्रद होता है अथवा वह दिशा मे गत मनुष्य का आगमन होता है उसका विपर्यास होय तो दुःख प्राप्त होता है॥७१॥ बीच मे रहने वाला शकुन वामभागस्थ शकुन से शब्दित होय तो स्वकीय को भय होता है और सव्यभागस्थान मे होय तो अन्य को भय कहता है यह पूर्वोक्त तीनो ही शकुन एक काल मे शब्द मरण कहते हैं॥७२॥ वृक्ष के अग्र मध्य मूल इनके विषे स्थित शकुन क्रम से गजारूढ अश्वारूढ रथारूढ इनका आगमन कहता है दीर्घ जलज छिन्नाग्र ऐसे वृक्षादिक के विषे स्थित शकुन क्रम से नरारूढ नौकारूढ शिबिका (पालकी) रूढ इनका आगमन कहता है॥७३॥ ऊंचे प्रदेश मे (पर्वतादिक पर) स्थित शकुन गाडीपर बैठके आवता है ऐसा कहता है छाया मे स्थित शकुन छत्रयुक्त आवता है ऐसा कहता है पूर्वादि दिशा आग्नेयादि विदिशा इनके विषे स्थित शकुन से सूचित शुभाशुभ फल क्रम से १।३।५।७ दिन से होते हैं॥७४॥ इंद्र अग्नि यम निर्ऋति वरुण वायु चंद्र शिव यह क्रम से पूर्वादि आठ दिशा के स्वामी होते हैं पूर्वादि चार दिशा पुरुष आग्नेयादि चार विदिशा स्त्री होती है॥७५॥ पूर्वादि दिशा के विषे शकुन होय तो क्रम से नरु (वृक्षावयव छाल पत्र) ताडपत्र अर्धपत्र वस्त्र कमलपत्र शर (कांड) चर्म पट्ट वस्त्र इस पर लेख (चीठी) आवती है द्वात्रिंशत्त्व विभक्त जो दिक्चक्र (श्लो॰२०) उसके विषे जो का

व्यायामश्चिखिनिकूजितकलहांभोनिगडमंत्रगोशब्दाः॥ वर्णाश्च
रक्तपीतककृष्णशिताःकोणगामिश्राः॥७७॥ चिन्हं ध्वजोदग्धमथ
श्मशानंदरीजलंपर्वतयज्ञघोषाः॥ एतेषुसंयोगभयानिविंद्यादन्या
निवास्थानविकल्पितानि॥७८॥ स्त्रीणांविकल्पेबृहतीकुमारीव्यंग
विगंधा त्वथनीलवस्त्रा॥ कुस्त्रीप्रदीर्घाविधवाचताश्चसंयोगचिं
तापरिवेदिकाःस्युः॥७९॥ पृच्छासुरूप्यकनकातुरभामिनीनांमे षा
श्वयानमखगोकुलसंश्रयासु॥ न्यग्रोधरक्ततरुरोध्रककीचकाम्रा
श्चूतद्रुमाःखदिरबिल्वनगार्जुनाश्च॥८०॥ ॥इतिसर्वशाकुनेमिश्र
काध्यायःप्रथमः॥ ॥अथांतरचक्रं॥ ऐंद्र्यांदिशिशांतनायांविरुवन्नृप
संश्रितागमंवक्ति॥शाकुनिःपूजालाभंमणिरत्नद्रव्यसंप्राप्तिं॥१॥

---

र्पेनह इसपत्रपर लिखकेआवनेहैं॥७६॥ पूर्वादिदिशाकेविषेशकुनहोयनोबा
हुयुद्ध·अग्निसमीप·शब्दश्रवण·कलह·जल·बंधनादि·वेदमंत्र·गोशब्द·यह
जहांहोतेहोयनहां पूर्वादिक्रमसेशुभशकुनोत्पन्नसंयोगादिफलहोताहै·पूर्वा
दिचारदिशाकेविषेशकुनहोयनोक्रमसे वर्णलाल·पीत·कृष्ण·श्वेत·यहहोनेहैं
आग्नेयादिविदिशाकेविषे मिश्रवर्ण·कहिये रक्तपीत पीतरक्त· कृष्णसित·सित
रक्त·ऐसेवर्णजानना·॥७७॥ पूर्वादि ८ दिशाकेविषेक्रमसे ध्वज·दग्ध·भूमी·श्मशा
न·पर्वत·गुहा·जल·पर्वत·यज्ञ·गोपकास्थान· यहचिन्हहोतेहैं· यहस्थानमे·सं
योगभयजानना· अन्य कार्यमेस्थानपरत्वसेकल्पनाकरना·॥७८॥ स्त्रीविषयक
चिंताहोयतो पूर्वादिदिशाकेविषेसंयोगशकुनहोयतोक्रमसे वृद्धस्त्री· कुमारी·
व्यंग·दुर्गंधा·नीलवस्त्रा·कुत्सितस्त्री·प्रदीर्घ(उंच)विधवा·यहस्त्रियोंकासंयोग
होताहै·॥७९॥ प्रश्नकालमेपूर्वादि ८ दिशाकेविषेशकुन किंवापृच्छकरहाहोयतो
क्रमसेरौप्य·सुवर्ण·रोगीस्त्री·माषाद्यधान्य·अश्वादियान किंवागमन·यज्ञ गोकु
लाश्रित इनकी चिंताकहना·तैसेही पूर्वादिदिशाकेविषेक्रमसे वट·रक्तवृक्ष·लो
ध·वांस·आम्रवृक्ष·खैर·बिल्व·अर्जुनवृक्ष किंवा पर्वत यहरहते है·॥८०॥ इतिस
र्वशाकुनेमिश्रकाध्यायः प्रथमः॥ ॥इतिश्रीवराहमिहिरकृतौबृहत्संहितायांष
डशीतितमोध्यायः ८६॥ ॥अथांतरचक्रं॥ शांतपूर्वदिशाकेविषेपक्षीशब्दकरे
किंवाशकुनहोयतोराजाश्रितपुरुष आवेगा· सत्कारप्राप्ती और मणि·रत्न·द्रव्य·
इनकीप्राप्तीयह होगा ऐसाकहताहै· शकुनशुभहोयतो यहफलपूर्ण·मध्यम
होयतो मध्यम· अशुभहोयतोअल्प यह आगेसर्वत्रजानना·(यहवक्ष्यमाण

 विभक्त(श्लो० ५९ पूर्वादिदिशामे फलजानना)॥१॥ ॥ ॥ ॥

तदनंतरदिशि शकुनस्यागमो भवेद्धांछितार्थसिद्धिश्च ॥ आयुधधन
पूगफलागमस्तृतीये भवेद्भागे ॥ २ ॥ स्निग्धद्विजस्य संदर्शनं चतु
र्थे तथाहिताग्नेश्च ॥ कोणेनुजीविभिक्षुप्रदर्शनं कनकलोहाप्तिः ॥ ३
॥ याम्येनाद्ये नृपपुत्रदर्शनं सिद्धिरभिमतस्याप्तिः ॥ परतः स्त्रीधर्मा
प्तिः सर्षपयवलब्धिरप्युक्ता ॥ ४ ॥ कोणाच्चतुर्थखंडे लब्धिर्द्रव्यस्य
पूर्वनष्टस्य ॥ यद्वातद्वा फलमपि यात्रायां प्राप्नुयाद्याता ॥ ५ ॥ यात्रासि
द्धिः समदक्षिणेन शिखिमहिषकुक्कुटाप्तिश्च ॥ याम्याद्वितीयभा
गे चारणसंगः शुभं प्रीतिः ॥ ६ ॥ ऊर्ध्वे सिद्धिः कैवर्तसंगमो मीनति
त्तिराद्याप्तिः ॥ प्रव्रजितदर्शनं तत्परे च पक्वान्नफललब्धिः ॥ ७ ॥ नैर्ऋ
त्यां स्त्रीलाभस्तुरगालंकारदूतलेखाप्तिः ॥ परतोस्य चर्मतच्छि
ल्पिदर्शनं चर्ममयलब्धिः ॥ ८ ॥ वानरभिक्षुश्रवणावलोकनं नैर्ऋता
त्तृतीयांशे ॥ फलकुसुमदंतघटितागमश्च कोणाच्चतुर्थांशे ॥ ९ ॥ ॥

---

वह पूर्वदिशामे ही प्रदक्षिण दुसरे भागमे पक्षि शब्द किंवा शकुन होय तो सुवर्ण
प्राप्ती और इच्छितार्थसिद्धि यह होंगे तृतीय भागमे आयुध धन पूगफल प्राप्ती यह होते हैं
॥ २ ॥ चतुर्थ भागमे शकुन० इष्ट ब्राह्मणका और अग्निहोत्रीका दर्शन होता है आग्नेय कोण
मे श० होय तो अनुजीवी कहिये सेवक इनके दर्शन और सुवर्ण शस्त्र इनकी प्राप्ती होती है
॥ ३ ॥ आग्नेयकोणके आगे दक्षिण तरफ द्वितीय भागमे राजपुत्र दर्शन कार्यसिद्धि इ
च्छित प्राप्ती होती है तिसरे भागमे स्त्री धर्म इनकी प्राप्ती और सर्सो यव इनकी भी प्राप्ति होती है
॥ ४ ॥ कोणसे चतुर्थ भागमे पूर्वमे नष्ट भए द्रव्यकी प्राप्ति होती है और यात्राके वि
षे गमनकर्त्ता कोई भी प्रकारसे फलको प्राप्त होता है ॥ ५ ॥ दक्षिणासम भागमे श
कुन होय तो यात्रासिद्धि मयूर महिष कुक्कुट इनकी प्राप्ती होती है दक्षिणसे
दुसरे भागमे नटनर्तकका संग शुभ कार्य प्रीति यह होते है ॥ ६ ॥ दक्षिणासे ति
सरे भागमे कार्यसिद्धि कैवर्तसंग मत्स्य और तित्तिरपक्षी इत्यादिककी प्राप्ती
यह होते हैं चतुर्थ भागमे संन्यासीके दर्शन पक्व अन्न और फल इनकी प्राप्ती हो
ती है ॥ ७ ॥ नैर्ऋतीमे स्त्रीलाभ अश्व अलंकार दूत लेख इनकी प्राप्ती होती है
नैर्ऋतीसे दुसरे भागमे चर्म और चर्मशिल्पी (चमार) इनके दर्शन और चर्मम
यपात्र (जूता आदि मसक) इनकी प्राप्ति यह होता है ॥ ८ ॥ नैर्ऋति तृ० वान
र संन्यासी बौद्ध (जपन) इनके दर्शन होते हैं नै० चतु० फल पुष्प हाथीदंत
के पदार्थ इनकी प्राप्ती होती है ॥ ९ ॥ पश्चिममे शकुन होय तो समुद्रोत्पन्न वैडू
र्यमणि और मणिमयपात्र इनकी प्राप्ती होती है पश्चिमसे द्वि० शबर (भिलु)

वारुण्यामर्णवजानरत्नवैडूर्यमणिमयप्राप्तिः॥ परतोंऽतः शबरव्याधचौरसंगः पिशितलब्धिः॥१०॥ परतोऽपि दर्शनं वातरोगिणां चंदनागुरुप्राप्तिः॥ आयुधपुस्तकलब्धिस्तद्वृत्तिसमागमश्चोर्ध्वं॥११॥ वायव्ये फेनकचामरौर्णिकाप्तिः समेति कायस्थः॥ मृन्मयलाभोऽन्यस्मिन्वैतालिकडिंडिभांडानां॥१२॥ वायव्याच्च तृतीये मित्रेण समागमो धनप्राप्तिः॥ वस्त्राश्वाप्तिरतः परमिष्टसुहृत्संप्रयोगश्च॥१३॥ दधितंदुललाजानां लब्धिरुदग्दर्शनं च विप्रस्य॥ अर्थाप्तिरनंतरमुपगच्छति सार्थवाहश्च॥१४॥ वेश्यावटुदाससमागमः परे शुक्लपुष्पफललब्धिः॥ अतऊर्ध्वं चित्रकरस्य दर्शनं चित्रवस्त्रसंप्राप्तिः॥१५॥ ऐशान्यां देवलकोपसंगमो धान्यरत्नपशुलब्धिः॥ प्राक्प्रथमे वस्त्राप्तिः समागमश्चापि बंधक्या॥१६॥ रजकेन समायोगो जलजद्रव्यागमश्च परतोंऽतः॥ हस्त्युपजीविसमागमश्चास्माद्धनहस्तिलब्धिश्च॥१७॥ छ॥ छ॥ छ॥ छ॥

---

व्याध·चोरसे संग और मांसप्राप्ती·यह होता है·॥१०॥ पश्चि॰ तृ॰ वातरोगीका दर्शन और चंदन वृक्षकी और सुगंधि द्रव्यकी प्राप्ती होती है· प॰ च॰ आयुध·पुस्तक·इनकी प्राप्ती और आयुधजीवी·पुस्तकजीवी·इनका समागम होता है ॥११॥ वायव्यसे शकुन होय तो समुद्रफेन·चामर·कंबलादिक इनकी प्राप्ती·और कायस्थका संग होता है· द्वि॰ मृन्मयपात्रका लाभ·स्तुतिपाठक·डिंडिभांड·(पटह·मृदंग·करट·यह ३ वाद्यका समुदाय·) इनकी संगती होती है·॥१२॥ वा॰ तृ॰ मित्रके बराबर समागम और धनप्राप्ति होती है· वा॰ चतु॰ वस्त्र अश्व·इनकी प्राप्ती इष्टमित्रका संयोग होता है·॥१३॥ उत्तरमे शकुन होय तो दधि·चावल·लावा इनकी प्राप्ति और ब्राह्मणके दर्शन·यह होता है· उ॰ द्वि॰ द्रव्यप्राप्ति और व्यापारीका संग यह होता है·॥१४॥ उत्तर॰ तृ॰ वेश्या·वटु·दास·इनका समागम और श्वेतपुष्प·फल इनकी प्राप्ति·होती है· उत्तर॰ च॰ चित्रकारका दर्शन और चित्रवस्त्रकी प्राप्ती·होती है·॥१५॥ ईशानी दिशामे शकुन होय तो देवल (महादेवकी पूजा करके जीवन·) इनका समागम और धान्य·रत्न·पशु इनकी प्राप्ति होती है· ईशानीके आगे पूर्वमे प्रथम भागमे वस्त्रप्राप्ति और वेश्याका समागम होता है·॥१६॥ पूर्वमे द्वि॰ रजकसे समागम और जलोत्पन्न द्रव्यकी प्राप्ती·होती है· पू॰ तृ॰ हाथीका व्यापार करनेवालेका समागम और उसीसे धन हाथी इनकी प्राप्ति होती है·॥१७॥ छ॥ छ॥ छ॥

द्वात्रिंशत्प्रविभक्तं दिक्चक्रं वास्तुबंधनेप्युक्तं॥ अरनाभिस्थैरंतः
फलानि नवधा विकल्प्यानि ॥१८॥ नाभिस्थे बंधुसुहृत्समागमस्तु
ष्टिरुत्तमा भवति॥ प्राग्रक्तपट्टवस्त्रागमस्त्वरे नृपतिसंयोगः॥१९॥
आग्नेये कौलिकतक्षपारिकर्माश्वसूतसंयोगः॥ लब्धिश्चनलकृता
नां द्रव्याणामश्वलब्धिर्वा॥२०॥ नेमीभागं बुध्वानाभीभागं च दक्षि
णे योरः॥ धार्मिकजनसंयोगस्तत्र भवेद्धर्मलाभश्च॥२१॥ उस्त्राक्री
डककापालिकागमो नैर्ऋते समुद्दिष्टः॥ वृषभस्य चात्र लब्धिर्मा
षकुलत्थाद्यमशनं च॥२२॥ अपरस्यां दिशि योरस्तत्रासक्तिः कृषी
बलैर्भवति॥ सामुद्रद्रव्यसुसारकाचफलमद्यलब्धिश्च॥२३॥ आ
रवहनस्तभिक्षकसंदर्शनमपि च वायुदिक्संस्थे॥ तिलकबकुसुम
स्य लब्धिः सनागपुन्नागकुसुमस्य॥२४॥ कौबेर्यां दिशि शकुनः शां
तायां वित्तलाभमाख्याति॥ भागवतेन समागममाचष्टे पीतवस्त्रैश्च॥
॥२५॥ ऐशाने व्रतयुक्तावनितासंदर्शनं समुपयाति॥ लब्धिश्च
परिज्ञेया कृष्णायोवस्त्रघंटानां॥२६॥

---

३२ भाग यह दिक्चक्र वास्तुबंधनेमेभी कथन किया है अर और नाभि इनके विषे स्थि
त शकुनसे मध्यमे नव प्रकारसे फलकल्पना करना (वह आगे कहते हैं) १८॥ नव
धा विभक्त चक्रके विषे नाभिस्थ शकुन होयतो बंधु और मित्र इनका समागम उ
त्तमसंतोष होता है पूर्वके आरपर शकुन होयतो लाल पट्टवस्त्रकी प्राप्ति और रा
जाका समागम होता है॥१९॥ आग्नेयीके आरपर शकुन होयतो कौलिक (जोल
हा वस्त्र बीननेवाले) बढई सेवक अश्व सारथी इनका समागम और कौलिक
इत्यादिकनेकिये पदार्थका और अश्वका लाभ होता है॥२०॥ नेमी (चक्रका घेर)
का भाग और नाभी (चक्रका मध्य) का भाग जानके जो दक्षिणमे अर उसपर श
कुन होयतो धार्मिकजनका संयोग और धर्मलाभ होता है॥२१॥ नैर्ऋती दिशा
मेके आरपर शकुन होयतो गौ खेलनेवाला कापालिक (बौद्ध) इनका समागम
वृषभका लाभ माष और कुलित्थ कुलथी इत्यादिकका भक्षण होता है॥२२॥
पश्चिमदिशामे जो अर तहां शकुन कृषीकारसे समागम होता है समुद्रोत्पन्न द्रव्य
सुसार (मणिविशेष) आम्रादि फल मद्य इनका लाभ होता है॥२३ वायव्यमे आ
रापर शकुन होयतो भारवाहक बढई संन्यासी इनके दर्शन तिलपुष्प नागकेसर पुन्ना
ग (...) इनके पुष्पकी प्राप्ति होती है॥२४॥ शांत उत्तरदिशामे शकुन होयतो द्रव्यका
प्राप्त होगा वैष्णव का और पीतवस्त्रका समागम होगा ऐसा कहते हैं॥२५॥ ईशानीमे

याम्ये शांते पश्चाद्दृद्विवद् त्रिसप्ताष्टमेषु मध्यफला॥ सौम्येन्द्र द्वितीयेशेषेष्वनिष्टो भना याचा॥२७॥ अभ्यंतरे तु नाभ्यां शुभफलदा भवंति षट्सु चारेषु॥ वायव्यानैर्ऋतयोरुभयोः क्लेशावहा याचा॥२८॥ शांतासु दिक्षु फलमिदमुक्तं दीप्तास्वतोभिधास्यामि॥ ऐंद्र्यां भयं नरेंद्रात्समागमश्चैव शत्रूणां॥२९॥ तदनंतर दिशि नाशः कनकस्य भयं सुवर्णकाराणां॥ अर्थक्षयस्तृतीये कलहः शस्त्रप्रकोपश्च॥३०॥ अग्निभयं च चतुर्थे भय माग्नेये च भवति चौरेभ्यः॥ कोणाद्द्वितीये धनस्य योनृपसुत विनाशः॥३१॥ प्रमदा गर्भविनाशस्तृतीय भागे भवेच्चतुर्थे च॥ हैरण्यककारुकयोः प्रध्वंसः शस्त्रकोपश्च॥॥३२॥ अथ पंचमे नृपभयं मारी मृतदर्शनं च वक्तव्यं॥ षष्ठे तु भयं ज्ञेयं गंधर्वाणां सडोंबानां॥३३॥ धीवर शाकुनिकानां सप्तम भागे भयं भवति दीप्ते॥ भोजन विघात उक्तो निर्ग्रंथ भयं च तत्परतः॥३४॥ ७॥

---

आरपर शाकुन होय तो व्रतस्थ स्त्रीका दर्शन होता है· शस्त्र·वस्त्र·घंटा इनका लाभ होता है ऐसा जानना॥२६॥ दक्षिणमे ८ वा और पश्चिममे १।६।३।७।८ यह आर और उत्तरमे २ आरपर शांत शाकुन होय तो यात्रा मध्यफल होती है· शेष रहे २५ भागमे शकुन होय तो यात्रा शुभ होती है॥२७॥ अभ्यंतरमे नाभीके विषे ६ आरमे यात्रा शुभ और वायव्य·नैर्ऋती यह दो दिशामे यात्रा क्लेशकारक होती है॥२८॥ शांत दिशाके विषे शकुन होय तो यह पूर्वोक्त फल कथन किया· अब दीप्त दिशाके विषे शकुन होय तो उसका फल आगे कहते हैं· दीप्त पूर्व दिशामे शकुन होय तो राजासे भय और शत्रुसमागम होता है॥२९॥ पूर्व दिशाके तरफ दुसरे भागमे शकुन· सुवर्णनाश और सोनारको भय होता है· तिसरे भागमे शकुन· द्रव्यनाश· कलह·शस्त्रकोप·होता है॥३०॥ चतुर्थ भागमे अग्निभय होता है· आग्नेय भागमे चोरका भय होता है· आग्नेय कोणसे २ भागमे धननाश और राजपुत्रनाश होता है॥३१॥ तृतीय भागमे स्त्रीका गर्भनाश होता है· चतुर्थ भागमे दीप्त शकुन होय तो सोनार और कारूक (बढई) इनका नाश और शस्त्रकोप होता है॥३२॥ आग्नेय कोणसे पंचम भागमे (दक्षिणमे) दीप्त शकुन होय तो राजभय· मरणमुख· और मृत इनके दर्शन होते हैं· ६ भागमे शकुन· गंधर्व और डोंब इनके भय होते हैं॥३३॥ दीप्त सप्तम भागमे शकुन होय तो धीवर और पक्षी धरनेवाला इनसे भय होता है· अष्टम भागमे शकुन· भोजननाश और निर्ग्रंथ (नग्न क्षपणिक और भ्रांतियुक्त) इनसे भय होता है॥३४॥ नैर्ऋत भागमे दीप्त शकुन· कलह·रक्तस्राव·शस्त्रकोप होता है·

कलहोनैर्ऋत भागे रक्तस्रावोऽथ शस्त्रकोपश्च ॥ अपरार्धे चर्मकृ
तं विनश्यते चर्मकार भयं ॥ ३५ ॥ तदनंतरे परिव्राट् क्षपणभयं त
त्परेत्वनशन भयं ॥ वृष्टिभयं वारुण्यां श्वनस्कराणां भयं परतः ॥
॥ ३६ ॥ वायुग्रस्तविनाशः परे परे शस्त्रपुस्तवार्तानां ॥ कोणे पुस्त
कनाशः परे विषस्तेनवायुभयं ॥ ३७ ॥ परतो वित्तविनाशो मित्रैः सह
विग्रहश्च विज्ञेयः ॥ तस्यासन्ने श्ववधो भयमपि च पुरोधसः प्रोक्तं
॥ ३८ ॥ गोहरणशस्त्रघाता वुदक्परे सार्थघातधननाशौ ॥ आस
न्ने च श्वभयं व्रात्यद्विजदासगणिकानां ॥ ३९ ॥ ऐशानस्यासन्ने चि
त्रांबरचित्रकृद्भयं प्रोक्तं ॥ ऐशाने त्वग्निभयं दूषणमप्युत्तमस्त्री
णां ॥ ४० ॥ प्रोक्तस्यैवासन्ने दुःखोत्पत्तिः स्त्रियो विनाशश्च ॥ भय
मूर्ध्वे रजकानां विज्ञेयं कान्छिकानां च ॥ ४१ ॥ हस्त्यारोहभयं स्या
द्द्विरदविनाशश्च मंडलसमाप्तौ ॥ अभ्यंतरे तु दीप्ते पत्नीमरणं ध्रुवं पू
(र्वे ४२

१ भागमे चर्मकृत्य (उपानहादिकका) नाश और चर्मकारसे भय होता है ॥ ३५ ॥
३ भागमे शकुन० संन्यासीके सेवासे भय होता है ४ भागमे शकुन० उपवास भय होता
है पश्चिममे दीप्त शकुन० वृष्टिभय (अवर्षण अतिवृष्टि) होती है २ भागमे शकु
न० कुत्ता और चोर इनका भय होता है ॥ ३६ ॥ पश्चि० भागमे श० वायुग्रस्तका ना
श होता है ४ भागमे शस्त्र और लेप (कहगिल इ०) बनावनेवालेसे भय होता है १
वायुकोणमे पुस्तकनाश होता है २ भागमे श० विष चौर्य वायू इनका भय होता
है ॥ ३७ ॥ वायव्यसे ३ भागमे दीप्त शकुन० द्रव्यनाश मित्रके सह युद्ध होता है
४ भागमे अश्वभय पुरोहितको भय होता है ॥ ३८ ॥ उत्तरमे दीप्त शकुन० गोहरण
शस्त्रघात होता है द्वितीय भागमे सावकारका नाश और धननाश होता है ३ भा
गमे शकुन० कुत्तेका भय व्रात्य (१६ वर्षतक जनेउरहित) ब्राह्मण दास वेश्या
इनसे भय होता है ॥ ३९ ॥ ईशानीसे पूर्वके नगीचके ४ भागमे श० चित्रवस्त्रधा
रण करनेवाला और चित्रकार इनसे भय होता है ॥ ईशानकोणमे शकुन० अ
ग्निभय और उत्तम स्त्रियोंको दूषण होता है ॥ ४० ॥ ईशानकोणसे आगे नगीच
के भागमे श० दुःखोत्पत्ति और स्त्रीनाश होता है उसके आगेके भागमे शकुन०
रजकका और कान्छीका भय होता है ॥ ४१ ॥ ३२ भागके समाप्तीके भागपर
कहिये पूर्वके पीछेका भागपर दीप्त शकुन होय तो हाथीपर बैठनेवालेसे भ
य और हाथीका नाश होता है पूर्वमे मध्य भागमे जो आर उसपर दीप्त शकुन०
स्त्रीमरण होता है ॥ ४२ ॥ आग्नेयकोणमे जो आर तहां दीप्त शकुन होय तो राज

शस्त्रानलप्रकोपावाग्नेयेवाजिमरणशिल्पिभयं॥ याम्येधर्मविनाशः
पैत्र्येन्यवस्कंदचोरवधाः॥४३॥ अपरेतुकर्मिणांभयमथकोणेवा
निलेखरोष्ट्रवधः॥ अत्रैवमनुष्याणांविषूचिकाविषभयंभवति॥
४४॥उदग्गर्थविप्रपीडादिक्षैशान्यांतुचित्तसंतापः॥ग्रामीणगोप
पीडाचतत्रनाभ्यांतथात्मवधः॥४५॥ ॥इतिसर्वशाकुनेनरच
क्रं॥ अथशाकुनरुतं॥श्यामाश्येनशशघ्नवंजुलशिखिश्रीकर्ण
चक्राह्वयाश्चाषांडीरकखंजरीटकशुकध्वांक्षाःकपोतास्त्रयः
॥ भारद्वाजकुलालकुक्कुटखराहारीतगृध्रौकपिःफेंटःकुक्कुटपू
र्णकूटचटकाश्चोक्तादिवासंचराः॥१॥लोमाशिकापिंगलछिप्पि
कारव्योवल्गुलूलूकौशशकश्चरात्रौ॥सर्वेस्वकालोत्क्रमचारि
णःस्युर्देशस्यनाशायनृपानराद्वा॥२॥हयनरभुजगोष्ट्रद्वीपिसिं
हर्क्षगोधावृकनकुलकुरंगश्वाजगोव्याघ्रहंसाः॥ पृषतमृगसृगा
लश्वाविदाख्यान्यपुष्टाद्युनिशमपिविडालःसारसःसूकरश्च ३

---

औरअग्निइनका प्रकोप·अश्वनाश· शिल्पीलोकसेभययहहोताहै· दक्षिणमेश०
धर्मनाशहोताहै· नैर्ऋतकोणमे अग्निभयऔरसत्पुरुषकावधहोताहै·॥४३॥ प
श्चिममेश० कर्मकारकोभयहोताहै·वायुकोणमे आरपरश० खरऔरऊंटइ
नकावध यह औरइहांहीमनुष्यको विषूचिका(अजीर्ण·हैजा) विषइनकाभय
होताहै·॥४४॥उत्तरमेश० द्रव्यऔरब्राह्मणइनकोपीडाहोतीहै· ईशानीमेश०
हो० चित्तसंतापहोताहै· औरगांवमेकेलोक औरगोप इनको पीडाहोतीहै·नाभि
स्थितदीप्तशाकुनहोयतोआत्मघातहोताहै·॥४५॥ ॥इतिसर्वशाकुनेनरचक्रं
नामाध्यायोद्वितीयः॥ ॥इतिबृहत्संहितायांसप्ताशीतितमोध्यायः ८७॥अथ
शाकुनरुतं॥कोकिल·श्येनपक्षी·शशघ्न(पक्षिवि०) वंजुल·(पक्षिवि०) मयूर·श्रीकर्ण·
(पक्षिवि०) चक्रवाक· चाष·बक·खंजन· सुग्गा·काक· तीनकपोत(कागदी·गोला·
सिराजी)भरद्वाज·कुलाल·(पक्षिवि०) कुक्कुट·(वरमुर्गा·)खर·हराकबूतर·गीध·वा
नर·फेंट(पक्षिवि०)ग्रामकुक्कुट·पूर्णकूट·(पक्षिवि०) गोरापक्षी· यहसर्वदिनमेफिर
नेवालेऐसेकथनकियाहै·॥१॥लोमाशिक(यहसियारकेसमानरहकेछोटाहोताहै·)पिं
गलछिप्पिक·(पक्षिवि०) चमगूदर·उलूक· यहसर्वरात्रीमेफिरनेवालेहोवेहै·सर्वअप
नाफिरनेकाकाल छोडकेदुसरेकालमे फिरनेलगेतोदेशनाश अथवा राजाकानाशहो
ताहै·॥२॥अश्व·मनुष्य·सर्प·ऊंट· चित्ता·सिंह· भालू·गोह·हुंडार·नेवर·हरिण·कुत्ता·बकरा·
गौ·बाघ·हंस·हरिणवि० सियार·साई·कोइल·बिलार·सारसपक्षी·सूकर·यहदिनरात्रीमेफि
रनेवालेहोतेहै·॥३॥

अथकूटपूरिकरवककरायिकाः पूर्णकूटसंज्ञाः स्युः॥ नामान्युलूकचे
ट्याः पिंगलिकापेचिकाहक्का॥४॥ कपोतकीच श्यामा वंजुलकः की
र्त्यते खदिरचंचुः॥ छुच्छुंदरी नृपसुता वाले योगर्दभः प्रोक्तः॥५॥
स्रोतस्तडागभेद्येकपुत्रकः कलहकारिका च रला॥ भृंगारवच्च वाश
ति निशि भूमौ द्व्यंगुलशरीरा॥६॥ दुर्बलिको भांडीकः प्राच्यानां दक्षि
णप्रशस्तोसौ॥ छिक्कारो मृगजातिः कृकवाकुः कुक्कुटः प्रोक्तः॥७॥
गर्ताकुक्कुटस्य प्रथितं तु कुलालकुक्कुटो नाम॥ गृहगोधिकेति सं
ज्ञा विज्ञेया कुड्यमत्स्यस्य॥८॥ दिव्यो धन्वन उक्तः क्रोडः स्यात्सूक
रोथ गौरुस्रा॥ श्वा सारमेय उक्तो जात्या चटिका च सूकरिका॥९॥ ए
वं देशे देशे तद्विज्ञ ः समुपलभ्य नामानि॥ शकुनरुतज्ञानार्थे शास्त्रे
संचिंत्य योज्यानि॥१०॥ वंजुलकरुतं तित्तिडिति दीप्तमथ किल्किलीति
तत्पूर्णं॥ श्येनशुकगृध्रकंकाः प्रकृतेरन्यस्वरा दीप्ताः॥११॥ यानास
नशय्यानिलयं कपोतस्य सद्मविशनं वा॥ अशुभप्रदं नराणां जा
तिविभेदेन कालोन्यः॥१२॥ ॥छ॥छ॥छ॥छ॥छ॥छ॥

---

अथ कूटपूरिक रवक करायिक यह पूर्णकूटके नाम होते हैं पिंगलिका पेचिका हृ
क्का यह उलूक चेटी के नाम होते है॥४॥ श्यामा कपोतकी की संज्ञा है वंजुल
क खदिर चंचू का नाम है छुछुंदरी नृपसुतासंज्ञक वाले य गर्दभसंज्ञक॥५॥स्रो
तो भेदी तडागभेदी एकपुत्रक कलहकारिका यह रला इस्के नाम है यह भृंगारी
के समान शब्द रात्री मे भूमी के विषे करती है और इस्के दो अंगुल लंबा शरीर है॥
॥६॥ दुर्बलिक भांडिकसंज्ञक यह पूर्व के तरफ के लोक को वाम शुभ होता है छिक
कार यह मृग है कृकवाक यह कुक्कुट है॥७॥ गर्ता कुक्कुट नाम कुलालकुक्कुट ऐ
सा प्रसिद्ध है कुड्य (भींत) मत्स्य यह नाम गृहगोधा (बिस्तुया) इस्के जानना॥८
दिव्य धन्वनसंज्ञक क्रोड सूकरसंज्ञक उस्रा गोसंज्ञक सारमेय यह श्वा (कुत्ता
संज्ञा जानीसे जो चटका वह सूकरी कथन किया॥९॥ इस प्रकार से देशदेश के वि
षे वह पूर्वोक्त पक्ष्यादिकके नाम जानने वाले पुरुष से नाम उपलब्ध प्राप्त करके श
कुनशब्द के ज्ञानार्थ शास्त्र का विचार करके वह नाम योजना करना॥१०॥ वंजुल पक्षी
का तित्तिड ऐसा शब्द अशुभ होता है और किल्किल ऐसा शब्द शुभ होता है श्येन प
क्षी शुक गीध कंक पक्षी इनका स्वाभाविक शब्द से अन्य शब्द अशुभ होता है॥११
॥ यानादि यान आसन शय्या इनके विषे कपोत का रहना होय अथवा घर मे जाय

आपांडुरस्यवर्षाच्चित्रकपोतस्यचैवषण्मासात्॥ कुंकुमधूम्रस्य फलंसद्यःपाकंकपोतस्य॥१३॥ चिचिदितिशब्दःपूर्णःश्यामायाः शूलिशूलितिचधन्यः॥ चच्चेतिचदीप्तःस्यात्स्वप्रियप्रयोगायचि कुचिगिति॥१४॥ हारीतस्यतुशब्दोगुग्गुःपूर्णोपरेप्रदीप्ताःस्युः॥ स्वरवैचित्र्यंसर्वंभारद्वाज्याःशुभंप्रोक्तं॥१५॥ किष्किषिशब्दःपूर्णः करायिकायाःशुभःकहकहेति॥ क्षेमायकेवलंकरकरेतिनतत्वर्थ सिद्धिकरः॥१६॥ कोटुक्कीतिक्षेम्यःस्वरःकटुक्कीतिदृष्टयेतस्याः॥ अफलःकोटिकिलीतिचदीप्तःखलुगुंकृतःशब्दः॥१७॥ शस्तंवा मेदर्शनंदिव्यकस्यसिद्ध्यैयाहस्तमात्रोच्छ्रितस्य॥ तस्मिन्नेव प्रोन्नतस्थेशरीराद्धात्रीवश्यंसागरांताभ्युपैति॥१८॥ फणिनोभि मुखागमोरिसंगंकथयतिबंधवधात्ययंचयातुः॥ अथवासमुपैति सव्यभागान्नससिद्ध्यैकुशलोगमागमेच॥१९॥ अञ्जोषुमूर्धसु चवाजिगजोरगाणांराज्यप्रदःकुशलकृच्छुचिशाड्वलेषु॥ भस्मा स्थिकाष्ठतुषकेशतृणेषुदुःखदृष्टःकरोतिखलुखंजनकोब्दमेकं॥२०

तो मनुष्यको अशुभफल देताहै· इनके जातिभेदसे फलकाकाल है सो आगे कहते हैं ॥१२॥ थोडा श्वेत जो कपोत उस्का फल वर्ष से· चित्रवर्णकपोतका ६ महिने से· कुंकुमव र्ण और धूम्रवर्ण कपोतका तत्काल शुभाशुभ होता है·॥१३॥ श्यामा (कपोतकी) इ स्का चिचित् ऐसाशब्द शुभहोताहै शूलिशूल ऐसा भीशब्द धन्य (शुभ) होता है· च च्चा ऐसाशब्द अशुभ होता है· चिकूचिकू ऐसाशब्द अपने प्रियपतीके योगार्थ होता है·॥१४॥ हारीतका गुग्गु ऐसाशब्द शुभ होता है· अन्य सर्व शब्द अशुभ होता है भारद्वाजीके नाना प्रकारके सर्व शब्द शुभ कथन किया·॥१५॥ करायिका (पूर्णकूटा) इस्का किष्किषि ऐसा शब्द और कहकह ऐसा शब्द शुभ होता है· करकर ऐसा श ब्द केवल कल्याणकारक होता है· कार्यसिद्धिकारक होता नहीं·॥१६॥ कोटुक्की ऐसा शब्द कल्याणकारक होता है· करायिकाको कटुक्की ऐसा शब्द दृष्टिकारक होता है· कोटिकिली ऐसा शब्द निष्फल होता है· गुं ऐसा किया शब्द अशुभ होता है·॥१७ ॥ दिव्यकका वाम भागमे दर्शन शुभ होता है· हस्तमात्र ऊंचा दिव्यकके दर्शन से सिद्धि होती है· वह बहुत ऊंचा होयतो· सर्व पृथ्वी वश होती है·॥१८॥ गमनकर्त्ताके सर्प स न्मुख आवेतो शत्रुसमागम और बंध· वध इनसे नाश होता है· अथवा दक्षिण अंग से वाम अंगमे आवेतो वह कार्यसिद्धि और जाना आवना इनके विषे शुभ नहीं·॥१९॥ कमल और अश्व· गज सर्प इनके मस्तकपर खंजन पक्षी देखेतो राज्यप्राप्ति होती है

किलिकिल्किलितितिरिस्वनः शांतः शस्तफलोन्यथापरः॥ शशकोनिशि
वामपार्श्वगोवाशंच्छुस्तफलोनिगद्यते॥२१॥ किलिकिलिविरुतंक
पेःप्रदीप्तंनशुभफलप्रदमुद्दिशंतियातुः॥ शुभमपिकथयंतिचु
ग्लुशब्दंकपिसदृशंचकुलालकुक्कुटस्य॥२२॥ पूर्णाननःकृमिप
तंगपिपीलिकाद्यैश्चाषःप्रदक्षिणमुपैतिनरस्ययस्य॥ खेस्वस्तिकं
यदिकरोत्यथवापियासोस्तस्यार्थलाभमचिरात्सुमहत्करोति
॥२३॥ चाषस्यकाकेनविरुध्यतश्चेत्पराजयोदक्षिणभागगस्य॥ व
धःप्रयातस्यतदानरस्यविपर्ययेतस्यजयःप्रदिष्टः॥२४॥ केकेतिपू
र्णकुटवद्यदिवामपार्श्वेचाषःकरोतिविरुतंजयकृत्तदास्यात्॥ क्र
क्रेतितस्यविरुतंनशिवायदीप्तंसंदर्शनंशुभदमस्यसदैवयातुः
॥२५॥ अंडीरकःशीतिरुतेनपूर्णःश्रिट्टिट्टिशब्देनतुदीप्तउक्तः॥ फेंटः
शुभोदक्षिणभागसंस्थोनवाशितेतस्यकृतोविशेषः॥२६॥ श्रीक
र्णरुतंतुदक्षिणेक्वक्वक्वेतिशुभंप्रकीर्तितं॥ मध्यंखलुचिकृचिकी
तियच्छेषंसर्वमुशंतिनिष्फलं॥२७॥

---

शुद्धप्रदेश और दूर्वाइसमेदेखेतोकल्याणकारकहोताहै· भस्म· हाड· काष्ठ· भूसा· के
श· तृण· इनकेबिषेखंजनपक्षीदेखेतोएकवर्षतकदुःखकरताहै॥२०॥ तित्ति
रपक्षीकाकिलिकिल्किलिऐसाशब्दशांत और शुभफलदायकहोताहै· अन्यश
ब्द अशुभहोतेहैं· शशारात्रीमेवामजायकेशब्दकरेतोशुभफलदायकऐसाक
हतेहैं·॥२१॥ वानरकाकिलिकिलिशब्ददीप्त· वहगमनकर्त्ताकोशुभफलदाय
कनहीं· चुग्लुशब्दशुभहै· वानरकेसमानहीकुलालकुक्कुटकेशब्दकाशुभाशुभ
जानना॥२२॥ कृमि· पतंग· चीटी· इत्यादिप्राणीसेपूर्णमुखऐसाचाषजिसमनु
ष्यकेप्रदक्षिणजाय· अथवा आकाशमेस्वस्तिकाकारचाषगमनकरेतोवहम
नुष्यकोबडाअर्थलाभशीघ्रहोताहै·॥२३॥ चाषकाकौवाकेबराबरयुद्धहोनेरह
तेदक्षिणभागमेचाषहोयतोउसकापराजयभया· उसकालमेगमनकर्त्तामनुष्य
कावधहोताहै· उत्तरभागमेचाषहोयतोजयभयातैसेहीगमनकर्त्ताकाजयहो
ताहै·॥२४॥ चाष· केकाऐसा औरपूर्णकुटकेसमान (श्लो०१६।१७) वामतरफश
ब्दकरेतोजयहोताहै· क्रक्रऐसा चाषकाशब्ददीप्त· वहअशुभहोताहै· इसका
दर्शनगमनकर्त्ताकोसर्वकालशुभदायक·॥२५॥ अंडीरकपक्षी टीऐसाशब्दपू
र्ण(शुभ)होताहै· टिट्टिट्टिशब्दसेदीप्त (अशुभ)है· दक्षिणभागमेफेंटशुभहो
ताहै· उसकेशब्दकेविषेविशेषकियानहीं·॥२६॥ श्रीपर्णपक्षीकाक्वक्वक्वऐसाश

दुर्बेलेरपि चिरिल्वि रिल्विति प्रोक्तमिष्टफलदं हि वामतः ॥ वामतश्च यदि दक्षिणं व्रजेत्कार्यसिद्धिमचिरेण यच्छति ॥ २८ ॥ चिकुचिकि वा सितमेव तु कृत्वा दक्षिणभागमुपैति च वामात् ॥ क्षेमकृदेव न साधयते र्थान् व्यत्यय गो वधबंधभयाय ॥ २९ ॥ कक्केति च सारिका तु नन्त्रे त्रेवाप्यभया विरौति या ॥ सा वक्ति यियासतो चिरा द्गात्रेभ्यः क्षतजस्य विश्रुतिं ॥ ३० ॥ फेंटकस्य वामतश्चिरिल्वि रिल्विति स्वनः ॥ शोभनो निगद्यते प्रदीप्त उच्यते परः ॥ ३१ ॥ श्रेष्ठं खरं स्थास्नु मुशंति वामं ओंकारशब्दे न हितं च यातुः ॥ अतः परं गर्दभनादितं यत्सर्वो श्रयंत स्वबृं तिदीप्तं ॥ ३२ ॥ आकाररावी समृगः कुरंग ओकाररावी पृषतश्च पूर्णः ॥ येन्ये स्वरास्ते कथिताः प्रदीप्ताः पूर्णाः शुभाः पापफलाः प्रदीप्ताः ॥ ३३ ॥ भीता रुवंति कुकुकुक्विति ताम्रचूडास्त्यक्त्वा रुतानि भयदान्यपराणि रात्रौ ॥ स्वस्थैः स्वभावविरुतानि निशावसाने तारा णि राष्ट्रपुरपार्थिववृद्धिदानि ॥ ३४ ॥ नानाविधानि विरुतानि हि छिप्पिकायास्तस्याः शुभाः कुलुकुलुर्न शुभास्त शेषाः ॥

---

ब्द दक्षिणभागमे शुभ होताहै चिकुचिकु ऐसा शब्द मध्यम होताहै शेष सर्व शब्द निष्फल होतेहै ॥ २७ ॥ दुर्बेली का (भंडीरक) चिरिल्वि रिल्वि ऐसा शब्द वाम भागमे शुभ होताहै वह बाए अंगसे दहिने नरफ जा यतो शीघ्र कार्य सिद्धि होगी ॥ २८ ॥ भंडीरक चिकुचिकि ऐसा शब्द करके बामसे दक्षिणतरफ जायतो वह कल्याण मात्र करेगा अर्थ साधन करेगा नही इससे विपरीत जायतो वध बंध भय यह होगा ॥ २९ ॥ जो सारिका (सिरोही) कक्क किंवा त्रेत्रे ऐसे शब्द शीघ्र निर्भय हो यके करती है वह गमनकर्ता के अंगसे रक्तस्राव होगा ऐसा कहती है ॥ ३० ॥ फेंटक पक्षी का वाम भागमे चिरिल्वि रिल्वि ऐसा शब्द शुभ होताहै अन्य शब्द दीप्त (अशुभ) होताहै ॥ ३१ वाम भागमे एकस्थान स्थित गर्दभ का शब्द श्रेष्ठ होताहै गर्दभके ओंकार शब्द से गमन कर्त्ता का हित होताहै इससे अन्य गर्दभका सर्व शब्द दीप्त (अशुभ) होतेहै ॥ ३२ ॥ कुरंग (मृगजाति वि०) अन्य मृगके सहित आ ऐसा शब्द करे और पृषत मृग ओ ऐसा शब्द करे तो वह दूनो ही शुभ होतेहै यह मृगके जो अन्य शब्द सो दीप्त होतेहै सब शकुनके जो पूर्ण शब्द वह शुभ और जो दीप्त सो अशुभ होतेहै ३३ ॥ कुक्कुट रात्रीमे भीत होयके कुकुकुकु ऐसे शब्द करतेहै वह छोडके अन्य भयप्रद होतेहै वह स्वस्थ रहते रात्रीके अंतमे स्वाभाविक उच्चस्वरसे करतेहै वह राष्ट्र नगर राजा इनको वृद्धिदायक होतेहै ॥ ३४ ॥ छिप्पिका के नाना प्रकार शब्द हैं

यातुर्विडालविरुतंनशुभंसदैवगोस्तुक्षुतंमरणमेवकरोतियातुः
॥३५॥हुंहुंगुग्लुगितिप्रियामभिलषन्कोशत्युलूकोमुदापूर्णः
स्याद्गुरुलुप्रदीप्तमपिचत्तेयंसदाकिस्किसि॥विज्ञेयःकलहोय
दाबलबलंतस्याःसकृद्वासितंदोषायैवटटट्टटेतिनशुभाःशेषा
श्चदीप्ताःस्वराः॥३६॥सारसकूजितमिष्टफलंतद्युगपद्विरुतं
मिथुनस्य॥एकरुतंनशुभंयदिवास्यादेकरुतेप्रतिरौतिचिरेण॥
३७॥चिरिल्विरिल्विनिस्वनैःशुभंकरोतिपिंगला॥अतोऽपरेतुये
स्वराःप्रदीप्तसंज्ञितास्तुते॥३८॥दृशिविरुतंगमनप्रतिषेधिकुशुकु
शुचेत्कलहंप्रकरोति॥अभिमतकार्यगतिंचयथासाकथयतितद्व
विधिंकथयामि॥३९॥दिनांतसंध्यासमयेनिवासमागम्यतस्याःप्र
यतश्चवृक्षं॥देवान्समभ्यर्च्यपितामहादीन्नवांबरैस्तंचरुतंसुगं
धैः॥४०॥एकोनिशीथेनलदिक्स्थितश्चदिव्येतरैस्तांशपथैर्नियो
ज्य॥पृच्छेद्यथाचिंतितमर्थमेवमनेनमंत्रेणयथाशृणोति॥४१॥

---

इस्से उस्के कुलुकुलु ऐसे शब्द शुभ होते हैं अन्य अशुभ होते हैं गमन कर्त्ता को
विडाल का शब्द सर्वकाल अशुभ है गौ की छींक गमन कर्त्ता को मरण करती है॥
३५॥ उलूक अपने स्त्री की इच्छा करने काल मे आनंद से हुंहुं गुग्लुक ऐसा शब्द कर
ता है और गुरुलु ऐसा शब्द करता है यह शब्द पूर्ण होते हैं उस्का किस्किसि ऐसा
शब्द दीप्त होते हैं जब बलबल ऐसा शब्द स्त्री का होय तब कलह जानना टटट्टट
ऐसा शब्द शुभ ही होते हैं अन्य सर्व शब्द दीप्त वह अशुभ होते हैं (तस्यासकृत्)
ऐसा पाठ है तब वह उलूक का वलवल ऐसा वारंवार शब्द होता है तब कलह जान
ना ऐसा अर्थ होता है॥३६॥ सारस पक्षी का शब्द स्त्री पुरुष का एक काल मे ही होय तो
शुभ होता है एक का अशुभ होता है जो एक ही का शब्द बहुत काल से होय तो अ
शुभ होता है॥३७॥ पिंगल पक्षी चिरिल्विरिल्वि यह शब्द से शुभ करता है इस्से
अन्य जो शब्द वह दीप्तसंज्ञक अशुभ होते हैं॥३८॥ पिंगल पक्षी का दृशि ऐसा श
ब्द गमन निषेध करता है कुशुकुशु ऐसा शब्द कलह कारक है वह पिंगला इष्टका
र्यसिद्धि जैसे कहती है सो प्रकार आगे कहते हैं॥३९॥ सायंसंध्यासमय मे वह पिंग
ल के रहने के वृक्ष के पास जायके नम्र होयके ब्रह्मादि देवता की पूजा करके नूतन व
स्त्र और सुगंधद्रव्य करके वह वृक्ष की भी पूजा करके॥४०॥ नंतर उसी दिन मध्यरात्री
मे अकेला आग्नेयी दिशा मे खड़े होय कोई दिव्य और लौकिक शपथ से उस्को योजना क
रके वह जैसे सुने तैसा चिंतित अर्थ यह वक्ष्यमाण मंत्र से पूछना॥४१॥ ७॥ ८॥

विद्धि भद्रे मयाप्यत्वमिममर्थं प्रचोदिता ॥ कल्याणि सर्ववचसां वेदि-
त्री त्वं प्रकीर्त्यसे ॥ ५२ ॥ आपृच्छेऽद्य गमिष्यामि वेदितव्यं पुनस्त्वहं
॥ प्रातरागम्य पृच्छे त्वामाग्नेयीं दिशमाश्रितः ॥ ५३ ॥ प्रचोदयाम्यहं
यत्त्वां तन्मे व्याख्यातुमर्हसि ॥ स्वचेष्टितेन कल्याणि यथा वेद्मि नि-
राकुलं ॥ ५४ ॥ इत्येवमुक्ते तरुमूर्द्धगा यास्विरिल्विरिल्वीति रुतेऽर्थ-
सिद्धिः ॥ अत्याकुलत्वं दिशिकारशब्दे कुचाकुचेत्येवमुदाहृते वा ॥
अवाक्प्रदाने विहितार्थसिद्धिः पूर्वोक्तदिक्चक्रफलैरथान्यत् ॥ वा-
च्यं फलं चोत्तममध्यनीचशाखास्थितायां वरमध्यनीचं ॥ ५६ ॥ दि-
ग्मंडलेऽभ्यंतरबाह्यभागे फलानि विंद्याद्गृहगोधिकायाः ॥ छुच्छुंदरी
चिच्चिडिति प्रदीप्ता पूर्णा तु सा तित्तिडिति स्वनेन ॥ ५७ ॥ इति सर्वशा-
कुने शाकुनरुताध्यायः ॥ अथश्वचक्रं ॥ नृतुरगकरिकुंभपर्याणसक्षी-
रवृक्षेष्टकासंचयच्छत्रशय्यासनोलूखलानि ध्वजं चामरं शाड्वलं
पुष्पितं वा प्रदेशं यदा श्वावमूत्र्याग्रतो याति यातुस्तदा कार्यसिद्धि
र्भवेदार्द्रके गोमये मिष्टभोज्यागमः शुष्कसंमूत्रणे शुष्कमन्नं गुडो मोदका-
वाप्तिरेवाथवा ॥

---

हे भद्रे यह अर्थको तू जाननी है· इसवास्ते हम प्रेरित तू सर्ववाक्यकी जाननेवाली
ऐसा कहते है·॥ ५२ ॥ तुमको हम पूछते है· आज हम गमन करेंगे पुनः प्रातःकालमे
आपके आग्नेयी दिशामे खडे होयके पूछेंगे ॥ ५३ ॥ जो पूछेंगे सो· हे कल्याणि· जैसे
हम स्पष्ट जाने तैसे अपने शब्दादि व्यापारसे कहनेको योग्य हो·॥ ५४ ॥ पूर्वोक्तप्र-
कारसे कथन किये रहते वृक्षपर रहनेवाली पिंगला चिरिल्विरिल्वि· ऐसा शब्द
करे तो कार्यसिद्धि· दिशिकारशब्दमे और कुचाकुच शब्दमे चित्त व्याकुलत्व· य-
ह होता है·॥ ५५ ॥ कोई भी शब्द करे नही तो कार्यसिद्धि होती है· पूर्व अध्यायोक्त "
ऐश्यां दिशि शांतायां" ऐसे दिक्चक्रफल कथन किये वह इहां भी देखना· वृक्षके
मुख्यडारपर वह होय तो उत्तम मध्यडारपर मध्यम· कनिष्ठ डारपर कनिष्ठ फल
कहना·॥ ५६ ॥ गोधिका (बिस्तुय्या) के शब्द के फल द्वात्रिंशत् प्रविभक्तदिक्चक्रके
समान भीतर बाहर जानना· छुछुंदरीका चिच्चिड ऐसा शब्द प्रदीप्त (अशुभ) ति-
त्तिड ऐसा शब्द पूर्ण (शुभ) होता है·॥ ५७ ॥ इति सर्वशाकुने शाकुनरुताध्यायस्तृतीयः
३॥ ॥ इति श्रीवराहमिहिरकृतौ बृहत्संहितायामष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥ ॥
॥ अथश्वचक्रं ॥ मनुष्य· अश्व· हाथी· कुंभ· खोगीर· मंदारवृ० क्षीरवृक्ष· इंटाकास-
मूह· छत्र· शय्या· आसन· उखरी· ध्वज· चवर· दूर्वादि हरिततृण· पुष्पयुक्तस्थान·

अथविषनस्कंटकीकाष्ठपाषाणशुष्कद्रुमास्थिश्मशानानिमूत्र्या
वहत्याथवायायिनोंग्रेसरोनिष्टमार्त्यातिशय्याकुलालादिभांडान्य
भुक्तान्यभिन्नानिवामूत्रयन्कन्यकादोषकृद्भुज्यमानानिचेद्
श्तांतद्गृहिण्यास्तथास्यादुपानत्फलंगोस्तुसंमूत्रणेवर्णजःसंक
रः॥गमनमुखमुपानहंसंप्रगृह्योपतिष्ठेद्यदास्यान्तदासिद्धये मां
सपूर्णाननेर्थाप्तिरार्द्रेणचास्थ्नाशुभंसाग्न्युल्मुकेनाभिघातोऽथ पुंसःशिरोहस्तपादादिव
क्त्रेभुवोल्यागमोवस्त्रचीरादिभिर्व्यापदःकेचिदाहुःसवस्त्रेशुभं॥
प्रविशतितुगृहंसशुष्कास्थिवक्त्रेप्रधानस्यतस्मिन्वधःशृंखलाशी
र्णवल्लीवरत्रादिवाबंधनंचोपगृह्योपतिष्ठेद्यदास्यान्तदाबंधनंले
ढिपादौविधुन्वन्स्वकर्णावुपर्योक्रमंश्वापिविघ्नाययातुर्विरोधे
विरोधस्तथास्वांगकंडूयनेस्यात्स्वपंश्चोर्ध्वपादःसदादोषकृत् १

इनकेविषे कुत्ता मूतके गमनकर्त्ताके आगे जायतो कार्यसिद्धिहोगी आई गोवरपर
मूतेतोमिष्टान्नप्राप्तिहोगी सूखेगोवरपरमूतेतो शुष्कान्न अथवा गुड मोदक इन
की प्राप्ती होगी॥ विषवृक्ष कंटकवृक्ष काष्ठ पाषाण शुष्कवृक्ष हाड श्मशान
इनकेविषे कुत्ता मूतके अथवा पाँवसे ताडनकरके गमनकर्त्ताके आगेजायतोअ
शुभहोगा शय्या कोंहारनेबनाये मट्टीके पात्र काष्ठके पात्र नए और फूटेनहीऐ
सेपर कुत्ता मूतेतो कन्यादोषकरेगा वहपात्र भुक्तहोयतो स्त्रीको दोषहोताहै ते
सेही उपानत् (जूता खरी इ०) इनकेभी फल पात्रके समान हीजानना गौके
मूतने से वर्णसंकर उसकेगृहमेहोताहै॥ श्व (कुत्ता) उपानह मुखमेलेके ग
मनकर्त्ताकेआगेआवेतो कार्यसिद्धिहोगी मुखमेमांसलेके आवेतो द्रव्यप्राप्ति गी
लाहाडलेके आ० शुभ जरताकाष्ठ अथवा शुष्कहाडलेके० मृत्यु अग्निरहितज
राकाष्ठलेके० घातहोगा पुरुषकामस्तक वा हाथपांव इ० मुखमेलेके आवेतोभूमि
लाभ वस्त्रऔरवल्कल यहलेके० विपत्ति सवस्त्रकुत्ता आवेतो शुभऐसाकोई
ऋषिकहतेहै शुष्कहाड मुखमेलेकेघरमेप्रवेशकरेतो गृहपतीको मृत्युहोगा
शृंखला जीर्णवल्ली वरत्रा (चाबूक) रज्जु डोरी इ० बंधन मुखमेलेकेआवेतो बंध
नहोगा पांवभीजे कानकपावे शरीरपरचढेतोगमनकर्त्ताकोविघ्नहोगा गमनकर्त्ताकेबराबरविरोध
करेतोमार्गमेरोधहोगा कुत्ता अपनाशरीर खजवावेतो चोरादिकसे मार्गरोधहोगा
कुत्तासूतके ऊपर पांवकरेतो सर्वकाल अशुभहोताहै॥१॥ सूर्योदयकालमे
सूर्यकेतरफ मुखकरके ग्रामकेमध्यभागमे जोकुत्ता एककिंवा बहुत एकत्र हो

सूर्योदये ऽर्काभिमुखो विरौति ग्रामस्य मध्ये यदि सारमेयः॥ एको यदा वा बहवः समेताः शंसंति देशाधिपमन्यमाशु॥ २॥ सूर्योन्मुखः श्वानलदिक्स्थितश्च चौरानलत्रासकरो ऽचिरेण॥ मध्यान्हकाले ऽनलमृत्युशंसी सशोणितः स्यात्कलहो ऽपराण्हे॥ ३॥ रुवन्दिनेशाभिमुखो ऽस्तकाले कृषीवलानां भयमाशु धत्ते॥ प्रदोषकाले ऽनिलदिङ्मुखस्तु धत्ते भयं मारुततस्करोत्थं॥ ४॥ उदङ्मुखश्चापि निशार्धकाले विप्रव्यथां गोहरणं च शास्ति॥ निशावसाने शिवदिङ्मुखश्च कन्याभिदूषानलगर्भपातान्॥ ५॥ उच्चैः स्वराः स्युस्तृणकूटसंस्थाः प्रासादवेश्मोत्तमसंस्थिता वा॥ वर्षासु वृष्टिं कथयंति नो ऽन्यत्र मृत्युं दहनं रुजश्च॥ ६॥ प्रावृट्काले ऽवग्रहे ऽभो ऽवगाह्य प्रत्यावृत्तैरेचकैश्चाप्यभीक्ष्णं॥ आधुन्वंतो वा पिबंतश्च तोयं वृष्टिं कुर्वंत्यंतरे द्वादशाहात्॥ ७॥ द्वारे शिरो ऽन्यस्य बहिः शरीरं रोरूयते श्वा गृहिणीं विलोक्य॥ रोगप्रदः स्यादथ मंदिरांतर्बहिर्मुखः शंसति बंधकीं तां॥ ८॥

---

यके रोदनशब्द करे तो जलदीही देशाधिपति दुसरा होगा ऐसा कहते है॥ २॥ कुत्ता सूर्योदयकालमे आग्नेयीदिशामे रहके सूर्याभिमुख रोदनशब्द करे तो चोर और अग्नि इनका भय शीघ्र होगा· मध्यान्हमे अग्नि और मृत्यु होगा अपराण्हमे रक्तस्राव युक्त कलह (युद्ध) होगा ऐसा कहता है॥ ३॥ कुत्ता सूर्यास्तकालमे सूर्याभिमुख रोदनशब्द करे तो कृषीलोकको शीघ्र भय होगा· प्रदोषकालमे वायव्यदिशामे मुख करके रोदनशब्द करे तो वायु और चोर इनका भय होगा·॥ ४॥ कुत्ता मध्यरात्रीमे उत्तरदिशामे मुख करके रोदनश॰ ब्राह्मणको पीडा और गौका हरण यह होगा· रात्रीके अंतमे ईशानीमे मुख करके रोदन॰ कुमारीको दोष· अग्निभय स्त्रियोंके गर्भपात यह होगा॥ ५॥ कुत्ते घास का गंज देवालय मुख्य गृह इस्के ऊपर खडे होयके उच्च स्वरसे रोदनशब्द वर्षाकालमे करे तो महान वृष्टि होगी· अन्य ऋतूमे करे तो मृत्यु· अग्नि· रोग इनका भय होगा॥ ६॥ कुत्ते वर्षाकालमे अवर्षण (वृष्टि बंद भई) रहते पानीमे रहके बाजूसे चारो तरफ बारबार फिरे· पानी हिलावे और पीये तो १२ दिनमे पर्जन्य गिरेगा·॥ ७॥ कुत्ता गृहद्वारमे (भीतर) मुख डालके बाहर शरीर रखके गृहपतीके स्त्रीके तरफ देखके रोदनशब्द करे तो वह स्त्रीको रोग होगा· कुत्ता घरमे रहके बाहर मुख करे और गृ॰ स्त्रीको देखे तो वह स्त्री जारिणी है ऐसा कहता है॥ ८॥ ४॥ ९८॥

कुड्यमुत्किरति वेश्मनो यदा तत्र खानकभयं भवेत्तदा॥ गोष्ठमुत्कि
रति गोप्रदं वदेद्धान्यलब्धिमपि धान्यभूमिषु॥९॥ एकेनाक्ष्णा साश्रुणा
दीनदृष्टिर्मन्दाहारो दुःखकृत्तद्गृहस्य॥ गोभिः सार्धं क्रीडमानः सुभि
क्षक्षेमारोग्यं चाभिधत्ते मुदं च॥१०॥ वामं जिघ्रेज्जानु वित्तागमाय
स्त्रीभिः साकं विग्रहो दक्षिणं चेत्॥ ऊरुं वामं चेन्द्रियार्थोपभोगाः
सव्यं जिघ्रेदिष्टमित्रैर्विरोधः॥११॥ पादौ जिघ्रेद्यायिनश्चेद्यात्रा
भावो ह्यर्थप्राप्तिं वाञ्छितां निश्चलस्य॥ स्थानस्थस्योपानहौ चेद्धि जिघ्रे
त्क्षिप्रं यात्रां सारमेयः करोति॥१२॥ उभयोरपि जिघ्रणे हि बाह्वो
र्विज्ञेयो रिपुचौरसंप्रयोगः॥ अथ भक्ष्यनिगोपपीतभक्ष्यान्नमांसा
स्थीनि चेच्छीघ्रमग्निकोपः॥१३॥ ग्रामे भषित्वा च बहिः श्मशाने
भषंति चेदुत्तमपुंविनाशः॥ पिपासतश्चाभिमुखो विरौति यदा
तदा श्वा निरुणद्धि यात्रां॥१४॥ उकारवर्णेन रुतेऽर्थसिद्धिरोकारवर्णे
न च वामपार्श्वे॥ व्यासेपमौकाररुतेन विद्यान्निषेधकृत्सर्वरुतेश्च पश्चा
त्॥१५॥ खरं रदन्नि चोच्चैश्च मुहुर्मुहुर्ये रुवंति दंडैरिव ताड्यमानाः॥

---

कुत्ता घरका कुड्य (भीत) खोदे तो खानक (चूहा चोर सूकर) इनके भय होंगे
गौस्थान खोदे तो गौका हरण होगा धान्य भूमी खोदे तो धान्य प्राप्ति होगी॥९॥
कुत्ता एकनेत्रमेसे पानी आवते रहते दीनदृष्टि और अल्पाहार ऐसा जो होगा तो
वह गृहको दुःखकारक होता है गौके साथ खेले तो सुभिक्ष कल्याण आरोग्य
और हर्ष इसको देता है॥१०॥ कुत्ता गमनकर्त्ताका वाम ढंउना सूंघे तो द्रव्य प्राप्ति
होगी दक्षिण सूंघे तो स्त्रीके साथ विरोध होगा वामजंघा सूंघे तो द्रव्य प्राप्ति
होयके इंद्रिय सुख भोगेगा दक्षिण जंघा सूंघे तो इष्टमित्रके साथ विरोध होगा
॥११॥ कुत्ता गमनकर्त्ताका पांव सूंघे तो यात्रा होगी नहीं और उहांही रहके इ
च्छित द्रव्य प्राप्ति कहता है स्थानपर गमनकर्त्ता रहते उसका जूता इ॰ सूंघे तो
शीघ्र गमन होगा॥१२॥ कुत्ता गमनकर्त्ताके दूनो बाहू सूंघे तो शत्रु चोर इन
के भय होते हैं अपूपादि भक्ष्य पदार्थ अथवा मांस हाड यह भक्ष्य मेलु काय
के खे तो जल्दीही अग्नि भय होगा॥१३॥ कुत्ते गावमे शब्द करके बाहर श्म
शानमे शब्द करे तो मुख्य पुरुष का नाश होगा कुत्ता गमनकर्त्ताके सन्मुख जो शब्द
करे तो यात्राका रोध (प्रतिबंध) होता है॥१४॥ कुत्ता उ इस वर्णसे शब्द करे तो अ
र्थसिद्धि ओ ऐसा शब्द करे तो वाम भागमे अर्थसिद्धि होगी औ ऐसे शब्दसे रोदन क
रे तो विद्या कुलक्षेमा पूर्वोक्त ऐसे कोई भी शब्द गमनकर्त्ताके पीछे कुत्ता करे तो यात्रा
कानिषेध जानना १५

श्वानोभिधावंतिचमंडलेनतेशून्यतांमृत्युभयंचकुर्युः॥१६॥प्रकाश्य दंतान्यदिलेढिसृक्किणीतदाशनंमिष्टमुशंतितद्विदः॥ यदाननंवाव लिहेनसृक्किणीप्रवृत्तभोज्येपितदान्नविघ्नकृत्॥१७॥ग्रामस्यमध्ये यदिवापुरस्यभषंतिसंहत्यमुहुर्मुहुर्ये॥तेक्लेशमाख्यांतिनदीश्वरस्य श्वारण्यसंस्थोमृगवद्विचिंत्यः॥१८॥ वृक्षोपगेक्रोशतितोयपातः स्यादिंद्रकीलेसचिवस्यपीडा॥वायोर्गृहेसस्यभयंगृहांतःपीडापुर स्यैवचगोपुरस्थे॥१९॥ भयंचशय्यासुनदीश्वराणांयानेभषंतोभ यदाश्चपश्चात्॥अथापसव्याजनसन्निवेशेभयंभषंतःकथयंत्यरी णां॥२०॥ ॥इतिसर्वशाकुनेश्वचक्रं॥ अथशिवारुतं॥ श्वभिःसृगालाः सदृशाःफलेनविशेषएषांशिशिरेमदाप्तिः॥ हूहूरुतांतेपरतश्च टाटा पूर्णःस्वरोन्येकथिताःप्रदीप्ताः॥१॥लोमाशिकायाःखलुकक्कशब्दःपू र्णःस्वभावप्रभवःसतस्याः॥ येन्येस्वरास्तेप्रकृतेरपेताःसर्वेचदीप्ता इतिसंप्रदिष्टाः॥२॥पूर्वोदीच्योःशिवाशस्ताशांतासर्वत्रपूजिता ॥

---

कुत्तेवारंवार उच्चस्वरसे खंख ऐसेशब्दकरेअथवादंडसे मारनेके समान दीनशब्दकरे अथवा मंडलाकारदौडे तोवहनगरशून्यकरेंगे औरमृत्युभयभीकरेंगे॥१६॥ कुत्ता·दंतदेखा यके·ओष्ठप्रांत चाटेतो· मिष्टान्नप्राप्तिहोगी ऐसाशकुनशास्त्रज्ञकहतेहैं· मुखहीचाटे· ओष्ठप्रांतचाटेनही· तोभोजन प्रवृत्तरहनेभी ·अन्नको विघ्नहोगा·॥१७॥ श्वान ग्रामके अथवा नगरके मध्यमे एकत्र मिलकेवारंवार शब्दकरेतो· ग्रामकेवा नगरकेस्वामीको क्लेशहोगा· अरण्यमेकेश्वान के फल मृगकेसमान (अ०९१) मेदेखना·॥१८॥ श्वान वृक्षकेपासखडेहोके चिल्लावे तोवृष्टिहोगी· द्वारकेकीलकेपासशब्द करेतो प्रधानकोपीडाहोगी·॥१९॥ गृहकेवायव्यकोणमे शब्दकरेतो धान्यनाशहोगा·नगर द्वारपरशब्दकरेतो नगरकोपीडाहोगी· शय्यापरशब्दकरेतो शय्याकेस्वामीकोभय होताहै· प्रमाणकालमेपीछे भूंकेतोभयहोगा ·जनसमुदायके वामभागमे शब्दकरे तोशत्रूकाभयहोगा ऐसेकहतेहैं·॥२०॥ ॥इतिसर्वशाकुनेश्वचक्रंनामाध्यायश्चतु र्थः॥४॥ ॥इतिश्रीवरा० बृहत्संहितायामेकोननवतितमोध्यायः॥८९॥ अथशिवारु तं॥श्वानकेसमानहीसियारकेभीशब्दकेफलजानना· परंतुउनको शिशिर (माघऔर फाल्गुन कुंभ औरमीन) ऋतूमेउन्माद (मस्तीमे) आवतेहैं· इसवास्तेउसमे शब्दके फलनही· सियारशब्दकेअंतमे·हूहू· ऐसाशब्दकरके आगे·टाटा· ऐसाशब्दकरेतो· वहशुभहोताहै· इस्से अन्यशब्दअशुभहोते हैं·॥१॥ लोमाशिका (लोकड·यहजानवर सियारकेसमान होताहै) कक्कयहशब्द· स्वाभाविकहै इसवास्तेपूर्ण (शुभ) होतेहैं·

धूमिताभिमुखीहंतिस्वरदीप्तादिगीश्वरान् ॥ ३ ॥ सर्वदिक्ष्वशुभादीप्ता
विशेषेणान्ह्यशोभना ॥ पुरेसैन्येऽपसव्याचकष्टासूर्योन्मुखीशिवा ॥ ४ ॥
याहीत्यग्निभयंशास्तिटाटेतिमृतवेदिका ॥ धिग्धिग्दुःकृतमाचष्टेस
ज्वालादेशनाशिनी ॥ ५ ॥ नैवदारुणतामेकेसज्वालायाःप्रचक्षते ॥
अर्काद्यनलवत्तस्यावक्त्रंलालास्वभावतः ॥ ६ ॥ अन्यप्रतिरुताया
म्यासोद्बंधमृतशंसिनी ॥ वारुण्यनुरुतासैवशंसतेसलिलेमृतं ॥ ७ ॥
अक्षोभःश्रवणंचेष्टं धनप्राप्तिःप्रियागमः ॥ क्षोभःप्रधानभेदश्चवाह
नानांचसंपदः ॥ ८ ॥ फलमासप्तमादेतदग्राह्यंपरतोरुतं ॥ याम्यायां
तद्विपर्यस्तंफलंषट्पंचमादृते ॥ ९ ॥ यारोमांचंमनुष्याणांशकृन्मू
त्रंचवाजिनां ॥ रावात्त्रासंचजनयेत्साशिवानशिवप्रदा ॥ १० ॥ मौनं
गताप्रतिरुतेनरद्विरदवाजिनां ॥ याशिवासाशिवंसैन्येपुरेवासंप्र
यच्छति ॥ ११ ॥

जोअन्यसर्वशब्दसोस्वाभाविकनही· इसवास्तेदीप्त (अशुभ) होतेहै अ॰८६श्लो॰३४
॥ २ ॥ शिवा (भालू) पूर्व और उत्तर· यहदिशामेशुभहोतेहै· उस्काशांतशब्द रहनेसर्वदि
शामेशुभहोताहै· धूमितदिशामे मुख और कठोरस्वर ऐसीहोयतो वहदिशामेकेरा
जाकानाशकरतीहै· ॥ ३ ॥ भालू दीप्तहोयतोसर्वदिशाकोअशुभहोताहै· दिनमेतो
बहुतही अशुभहोतीहै· दक्षिणभागमेरहनेवाली औरसूर्यसन्मुखशब्दकरनेवाली·
ऐसीशिवानगरकोसैन्यकोअशुभहोतीहै· ॥ ४ ॥ भालू याही· ऐसाशब्दकरेतो अग्नि
भय· टाटा· शब्द॰तो बंधुइत्यादिकका मृत्युकहतीहै· धिक्धिक् शब्दकरेतो अशु
भकहतीहै· ज्वालायुक्त भालू देशकानाशकरतीहै (भालूके मुखमेसेज्वालानिकल
तीहैऐसाभालूयहोताहै·) ॥ ५ ॥ कश्यपादि ऋषि· सज्वाला· शिवा अशुभनहीऐसाक
हतेहै· जैसासूर्यादितेजस्वीपदार्थ स्वभावसेही तेजस्वी· तैसे भालूके मुख स्वभाव
सेहीलार युक्तहै· इसवास्तेवहशुभहै· ॥ ६ ॥ भालू· दक्षिणदिशामे रहके दुसरीकेप्र
तिशब्दकरतो फासीसेमृत्युकहतीहै· वह भालू पश्चिमदिशामेरहके प्रतिशब्दकरेतो
जलमेबध्यादि मृत्युभय ऐसाकहतीहै· ॥ ७ ॥ भालूकेप्रथमशब्दमे· निर्भय· २ इष्टके श्र
वण· ३ धनप्राप्ति· ४ प्रियागमन· ५ क्षोभ· ६ प्रधानमेकलह· ७ अश्वादिवाहनवृद्धि· ॥ ८ ॥
सप्तमशब्दतकयहफललेना· आगेअष्टमसेशब्दफललेनानही· भालू दक्षिणदिशामे
रहकेशब्दकरेतो वहीफलविरुद्धजानना· (१ भय· २ अनिष्टश्रवण· ३ धनहानि· ४ प्रिय
वियोग· ५ निर्भय· ६ प्रधानसख्य· ७ वाहननाश·) ॥ ९ ॥ जिसभालूकेशब्दसे मनुष्यकेरोम
खडेरहतेहै· और अश्वविष्ठा· मूत्रछोडतेहै· तैसेहीशब्दसे त्रासहोताहै· वहभालू अशु
भहोताहै· ॥ १० ॥ जो· शिवा· मनुष्य· गज· अश्व· इनकाप्रतिशब्द भएरहते· मौनकरती है

मेमेतिशिवा भयंकरी भोभोव्यापदम्यादिशेच्चस्ता मृतिबंधविवेदिनी
फिफ हूहू चात्वहिता शिवा स्वरे ॥१२॥ शांतात्त्व वर्णोत्पदयो रुवंतीश
टापुदीर्णा मितिवाश्यमाना ॥ टेटेच पूर्वं परतश्चथेथेतस्याः स्वतुष्टि
प्रभवं रुतंनतत् ॥१३॥ उच्चैर्घोरं वर्णमुच्चार्य पूर्वं पश्चात्क्रोशेत्क्रोष्टुकस्यानु
रूपं ॥ यासा क्षेमं प्राहवित्तस्यचाप्तिं संयोगं वाप्रोषितेनप्रियेण ॥१४॥
इतिसर्वशाकुनेशिवारुतं ॥ ॥अथमृगचेष्टितं ॥ सीमागतावन्यमृगा
रुवंतःस्थिता व्रजंतोथसमापतंतः ॥ संप्रत्यतीतैष्यभयानिदीप्ताः
कुर्वंतिशून्यं परितो भ्रमंतः ॥१॥ तेग्राम्यसत्वैरनुवाश्यमाना भयाप
रोधायभवंतिवन्यैः ॥ द्वाभ्यामपि प्रत्यनुवासितास्तेबंदिप्रदायैवमृ
गाभवंति ॥२॥ वन्येसत्वेद्वारसंस्थेपुरस्यरोधोवाच्यःसंप्रविष्टेविना
शः ॥ सूतेमृत्युःस्याद्भयंसंस्थितेनचगेहंयातेबंधनंसंप्रदिष्टं ॥३॥ ॥
इतिसर्वशाकुनेमृगचेष्टितंनामषष्ठोध्यायः ॥६॥ अथगवेंगितम् ॥

---

वह सैन्यमे और नगरमे कल्याण करनीहै ॥११॥ भालू मेमे ऐसा शब्द करेतो भय
कारक भोभो ऐसाशब्द विपत्तिकारक फिफ ऐसाशब्द मृत्यु और बंध कहतेहै
हूहू ऐसाशब्द करेतो कल्याणकारक यह सर्वफल गमनकर्ताको जानना ॥१२॥
जो शिवा शांतदिशामे रहके शांतरहते प्रथम अ ऐसाशब्दकरके आगे औ ऐसा
श० अथवा टाठा ऐसाशब्द करे किंवा प्रथम टेटे ऐसाशब्द आगे थेथे ऐसाश
ब्द करेतो वहशब्द उसने संतोषसे किया इसवास्ते उसके फल नही ॥१३॥ जो भालू प्र
थम भयंकरशब्द करके नंतर सियारके समान शब्द करतेहै वह कल्याण और
द्रव्यप्राप्ति और प्रवासमे गए प्रियका संयोग इसको कहतीहै ॥१४॥ ॥इतिसर्वश
कुने शिवारुतंनामपंचमोध्यायः ॥५॥ ॥इतिबृहत्संहितायां नवतितमोध्यायः ९०॥
वन्य (वनमेके) मृग (जनावर) गांवकेसीमापर खडेहोयके शब्द करे अथवा उहांसेजा
नेके वखत शब्द करे अथवा तहां आवते समय शब्द करे और वह दीप्त (प्रखर) होयतो
क्रमसे वर्तमान भूत भविष्यकालमे भयहोगा ऐसा जानना तैसेही वन्य मृग गांवमे
किंवा नगरमे फिरेतो शून्य (जनरहित) करेंगे ॥१॥ वन्यपशूके पीछेसे ग्राम्यपशु शब्द
करेतो भयहोगा ग्राम्यपशुके पीछेसे वन्यपशु शब्द करेतो शत्रु नगरका रोध करेंगे
वन्य और ग्राम्यपशु सीमापर आयके वनपशुके शब्दकेनंतर (पीछेसे) वन्य और
ग्राम्यपशु शब्द करेतो वह नगर बलसे शत्रु लेंगे ॥२॥ वन्यपशु नगरके द्वारमे रहे
तो नगरका रोध शत्रु करेंगे नगरके मध्यमे प्रवेश करेतो नाश होगा प्रसूत होयतो
मरण होगा मरेतो भयहोगा गृहमे प्रवेश करेतो गृहस्वामीको बंधन होगा ॥३॥ ॥

गावो दीनाः पार्थिवस्याशिवाय पादैर्भूमिं कुट्टयंत्यश्च रोगान् मृत्युं कुर्वंत्यश्रुपूर्णायताक्ष्यः पत्युर्भीतास्तस्करानारुवंत्यः॥१॥ अकार णे क्रोशति चेदनर्थो भयाय रात्रौ वृषभः शिवाय॥ भृशं निरुद्धा यदि म क्षिकाभिस्तदाशु वृष्टिं सरमात्मजैर्वा॥२॥ आगच्छंत्यो वेश्म बंभा रवेण संसे वंत्यो गोष्ठवृद्ध्यै गवां गाः॥ आर्द्रांग्यो वा हृष्टरोम्ण्यः प्रहृ ष्टा धन्या गावः स्युर्महिष्योपि चैवं॥३॥ इति गवेंगितं॥ ॥अथ अश्व चेष्टितं॥ ॥उत्सर्गान्न शुभदमासनापरस्थं वामे च ज्वलनमतोन्यथा प्र शस्तं॥ सर्वांगज्वलनमवृद्धिदं हयानां द्वे वर्षे दहन कणाश्च धूपनं वा॥१॥ अंतःपुरं नाशमुपैति मेढ्रे कोशः क्षयं यात्युदरे प्रदीप्ते॥ पायौ च पुच्छे च पराजयः स्याद्वक्त्रोत्तमांगज्वलने जयश्च॥२॥ ९१॥ ९२॥

---

॥ इति सर्वशाकुने मृगचेष्टितं नाम षष्ठोध्यायः॥६॥ ॥ इति बृहत्संहितायामेक नवतितमोध्यायः॥९१॥ ॥अथ गवेंगितं॥ ॥ गौ दीन होय तो राजाका अनिष्ट हो ता है· पांव से भूमी को विदारण करे तो रोग होंगे· जलधारा से पूर्ण नयन हो॰ उस्के स्वामी को मृत्यु होता है· भययुक्त होयके शब्द करे तो चोरभय होगा·॥१॥ गौ· का रणके विना·(वत्स·पानी· तृण इस्के विना·) शब्द करे तो अनर्थ होगा· रात्री मे श ब्द करे तो भय होगा· बैल रात्री मे शब्द करे तो कल्याण होगा· गौ· मक्षिका से अथ वा श्वान से अत्यंत रोधित होय तो· शीघ्र बहुत वृष्टि कृत उपद्रव होंगे॥२॥ गौ शब्द करते गृह मे आवे तो अपने गोष्ठ की वृद्धी करेंगे· गौ· आर्द्रांग· आनंदित· आनंद से शरीर पर के केश उभरे· ऐसे रहते शुभ होता है· भैंस का भी गौ के समान ही शुभाशुभ फल जानना·॥३॥ ॥इति सर्वशाकुने गवेंगितं नाम सप्तमोध्यायः७॥ ॥इति वराह॰ बृहत्संहितायां द्वानवतितमोध्यायः॥९२॥ ॥अथ अश्वचेष्टितं॥ आगे कथन कि ये नियम सामान्य है· अश्व के खोगिर के पीछे कहिये पोठपर और वाम अंगमे अग्नि नजर पडे तो शुभ नही· आगे और दक्षिण अंगमे शुभ है (उत्पात वश से अश्व के अंग पर ज्वाला रूप अग्नि नजर पडता है) घोडे के सर्वांग ज्वलन वृद्धिकारक नहीं और नि रंतर दो वर्ष अग्निकण और धूम घोडे के अंगमे से निकले तो नाश होता है·॥१॥ अश्व के लिंग मे दीप्ति दिखाई देय तो राजा के अंतःपुर के स्त्रियों का नाश होता है· उदर मे दीप्त हो य तो कोश (खजाना) क्षय होता है· गुद· पुच्छ· ये प्रदीप्त हो॰ पराजय होता है· मुख और मस्तक ये प्रदीप्त होय तो जय होता है·॥२॥ घोडे के गरदन के दोनों तरफ के भा ग (स्कंध) और उसके नीचे के भाग (अंस) और खोगीर रखने की जगह इस्के विषे ज्व लन होय तो जय होता है· घर के विषे ज्वलन होय तो स्वामी को बंधन होता है· कपाट

स्कंधासनांसज्वलनंजयायवंधायपादज्वलनंप्रदिष्टं॥ललाटवक्षो॥
क्षिभुजेषु धूमः पराभवाय ज्वलनंजयाय॥३॥नासापुटप्रोथशिरो:
श्रुपातनेत्रेषुरात्रौज्वलनंजयाय॥पालाशताम्रासितकर्बुराणां नित्यं
शुकाभस्यसितस्यचेष्टं॥४॥प्रद्वेषोयवसांभसांप्रपतनंस्वेदोनिमि
त्ताद्विनाकंपोवावदनाच्चरक्तपतनंधूमस्यवासंभवः॥अस्वप्नश्चविरो
धितानिशिदिवानिद्रालसध्यानता सादोधोमुखताविचेष्टितमिदंनेष्टं
स्मृतंवाजिनां॥५॥आरोहणमन्यवाजिनां पर्याणादियुतस्यवाजिनः
॥उपवाह्यतुरंगमस्यवाकल्यस्यैवविपन्नशोभना॥६॥क्रौंचवद्रिपु
वधायहेषितंग्रीवयाच चलयाचसोन्मुखं॥स्निग्धमुच्चमनुनादिहृ
ष्टवद्ग्रासरुद्धवदनैश्चवाजिभिः॥७॥पूर्णपात्रदधिविप्रदेवतागंधपु
ष्पफलकांचनादिवा॥द्रव्यमिष्टमथवापरंभवेद्धेषतांयदिसमीपतोजयः
॥८॥भक्ष्यपानखलिनाभिनंदिनःपत्युरौपयिकनंदिनोऽथवा॥सव्यपा
र्श्वगतदृष्टयोऽथवावांछितार्थफलदास्तुरंगमाः॥९॥ ॥ ॥ ॥

---

हृदय·नेत्र·भुज·इनकेविषेधूमदृष्टिगोचरहोयतोपराजयहोताहै औरज्वलन
(अग्नि) नजरपडेतोजयहोताहै॥३॥घोडेकेनाकके छिद्र·नाक·मस्तक·नेत्रोदकगि
रनेकास्थान·नेत्र·इनकेविषेरात्रीमेअग्निनजरपडेतोजयहोगा·पलासकेफूलका
लाल·काला·चित्रवर्ण·शुकवर्ण·श्वेत इसरंगके घोडोंको सर्वकालज्वलनशुभहो
ताहै॥४॥दानाऔरपानीनलेना·गिरना·पसीनाआवना·निमित्तकेविनाकंप·मुख
मेसेरक्तस्रावकिंवाधूमआवना·रात्रीमेनिद्रानआवना·वैरकरना·दिनमेनिद्रायु
क्तआलस्य·चिंता·(ऊपरदेखना·) ग्लानि·अधोमुख यहघोडेकेचेष्टितअशुभहोतेहैं
॥५॥खोगीर अथवाजुरूप इसकरयुक्त अश्व अन्य अश्वपरचढे·निरंतरबैठनेके घो
डेको किंवा निरोगी घोडेको रोगहोयतो अशुभहोताहै॥६॥ अश्वका क्रौंचपक्षी
केसमानशब्द·गरदन नहिलते ऊपर मुखकरके शब्दकरना· जयदायकहोतेहै·
मधुर·उच्चस्वर·घंटाकानादसमानके शब्दकरना·आनन्दयुक्त·ग्रास मुखमे रह
ते शब्द·ऐसेजो अश्वकेशब्द वहजयप्रदहोतेहैं॥७॥ पूर्णपात्र(तंदुलादिककेसे
संपूर्ण) दही·ब्राह्मण·देव·गंध·पुष्प·फल·सुवर्ण·रौप्य·मौक्तिकादि·अथवा दु
सरा कोई इष्टद्रव्य·यहशब्दकरनेवाले घोडेकेपास होयतोजयहोताहै॥८॥ भ
क्षणीयपदार्थ·जल·लगाम·इसकरके आनंदयुक्त अथवा स्वामीको आनंदका
रक अथवा वामभागमे देखनेवाले ऐसेघोडे इच्छितफलदायकहोतेहैं॥९॥
घोडा वामपादसे भूमीका ताडनकरे तो पतीको प्रवासहोगा·चारसंध्या(सूर्योद

वामेश्वपादेर्भिताड्यंतोमहीं प्रवासाय भवंति भर्तुः॥ संध्यासुदीप्ता मवलोकयंतो हेषंतिचेद्बंधपराजयाय॥१०॥ अतीवहेषंति किरंति वालान्निद्रारताश्च प्रवदंति यात्रां॥ रोमत्यजोदीनस्वरस्त्वशश्वपासून्ग्रसंतश्च भयाप्रदृष्टाः॥११॥ समुन्नवद्दक्षिणपार्श्वशायिनः पदं समुत्क्षिप्य च दक्षिणं स्थिताः॥ जयाय शेषेष्वपि वाहनेष्विदं फलं यथासंभवमादिशेद्बुधः॥१२॥ आरोहति क्षितिपतौ विनयोपपन्नो यात्रानुगोन्यतुरगं प्रतिहेषते च॥ वक्त्रेण वा स्पृशति दक्षिणमात्मपार्श्वं योऽश्वः स भर्तुरचिरात्प्रचिनोति लक्ष्मीं॥१३॥ मुहुर्मुहुर्मूत्रशकृत्करोति नताड्यमानोप्यनुलोमयायी॥ अकार्यभीतोऽश्रुविलोचनश्च शुभं न भर्तुस्तुरगोभिधत्ते॥१४॥ उक्तमिदं हयचेष्टितमत ऊर्ध्वं दंतिनां प्रवक्ष्यामि॥ तेषां तु दंतकल्पनभंगम्लानादिचेष्टाभिः॥१५॥ ॥इति सर्वशाकुने अश्वचेष्टितं॥ ॥अथ हस्तीगितं॥ ॥दंतस्य मूलपरिधिं द्विगुणं प्रमाय्य कल्पयेच्छेषं॥ अधिकमनूपचराणां न्यूनं गिरिचारिणां किंचित्॥१॥

य-मध्यान्ह-अस्तमय-अर्धरात्र) इनके विषे दीप्तदिशामे देखके घोडाशब्द करे तो पतीको बंध और पराजय यह होंगे॥१०॥ घोडा अतिशब्द करे-और शरीरपरके केश फैलावे-निरंतर निद्रस्थ ऐसे घोडे होयतो पतीकी यात्रा होगी-घोडा अंगपरके केश त्यागकरे-दीन और कठिन शब्दकरे-धूली खाय-तो भय होगा॥११॥ दक्षिण अंगपर सूतनेवाले-दक्षिण पाद उठायके खडे होनेवाले ऐसे घोडे जयप्रद होते हैं-अन्य वाहनको भी यह फल यथासंभव पंडितने योजना करना-॥१२॥ जो घोडा-राजा ऊपर बैठे रहने नीतियुक्त-जिस दिशामे जानेको वही दिशामे जाता है-दूसरा घोडा शब्द करे पर शब्द करता है-मुखसे अपने दक्षिण भागमे स्पर्श करता है-ऐसा घोडा पतीको शीघ्र लक्ष्मी देता है-॥१३॥ जो घोडा बारंवार मूत्र और विष्टा करता है-चाबुकसे मारनेपर भी जानेके दिशामे जाता नही-कारणके विना भीत होता है (यहि पसूकरादि दर्शन यह कारण)-नेत्रमे जलधार-ऐसा घोडा धनीका कल्याण करता नही-॥१४॥ यह घोडेके चेष्टित कथन किया-इसके आगे गजके इंगित कहते है-उसके चेष्टित दंतकल्पन-दंतभंग-म्लान इत्यादि चेष्टासे कथन करेंगे-॥१५॥ इति सर्वशाकुने अश्वचेष्टितं नामाष्टमोध्यायः॥८॥ ॥इति बृहत्संहितायां त्रयोनवतितमोध्यायः॥९३॥ ॥अथ हस्तींगितम्॥ ॥ हाथीके दंतके मूलका घेर दूना करके उतना छोडके बाकी दंत रखना-आगे काटना-परंतु बहूदक देशमे के हाथीके किंचित् इससे अधिक होय और पर्वतनके ऊपरके हाथीके किंचित् अल्प होय-॥१॥

श्रीवत्सवर्धमानच्छत्रध्वजचामरानुरूपेषु॥ छेदे दृष्टे ह्यारोग्यविज
यधनवृद्धिसौख्यानि॥२॥ प्रहरणसदृशेषु जयो नंद्यावर्ते प्रनष्टदेश
प्राप्तिः॥ लोष्टे तु लब्धपूर्वस्य भवति देशस्य संप्राप्तिः॥३॥ स्त्रीरूपेस्व
विनाशो भृंगारेभ्युत्थिते सुतोत्पत्तिः॥ कुंभेन निधिप्राप्तिर्यात्राविघ्नं
च दंडेन॥४॥ कृकलासकपिभुजंगेष्वसुभिक्षव्याधयो रिपुवशत्वं
॥गृध्रोलूकध्वांक्षश्येनाकारेषु जनमरकः॥५॥ पाशेथवा कबंधे नृ
पमृत्युर्जनविपत्तु नेरक्ते॥ कृष्णे श्यावे रूक्षे दुर्गंधे चाशुभं भवति॥
॥६॥ शुक्लः समः सुगंधिः स्निग्धश्च शुभावहो भवेच्छेदः॥ गलनम्लान
फलानि च दंतस्य समानि भंगेन॥७॥ मूलमध्यदशनाग्रसंस्थिता दे
वदैत्यमनुजाः क्रमात्ततः॥ स्फीतमध्यपरिपेलवं फलं शीघ्रमध्य
चिरकालसंभवं॥८॥ दंतभंगफलमत्र दक्षिणे भूपदेशबलविद्रव
प्रदं॥ वामतः सुतपुरोहितेभपान् हंति साटविकदारनायकान्॥९॥

---

श्रीवत्स· स्वस्तिक· छत्र· ध्वज· चामर· इनके समान हाथी के दंत का छेदन जर पडे तो
आरोग्य· विजय· धनवृद्धि· सौख्य· यह होता है ॥२॥ वह छेद खड्ग के समान होय
तो जय प्राप्ति· नंद्यावर्त (भौंरा जलका) गोल) इसके समान होयतो नष्टदेशकी प्राप्ती
मट्टिड के समान होयतो पूर्वमे प्राप्त भए देशकी प्राप्ती होगी ॥३॥ वह छेद स्त्री
रूप के समान होयतो हाथीका नाश· भृंगार (झारी· कमंडलु) होयतो पुत्रोत्पत्ति·
कुंभसदृश होयतो द्रव्य मिलेगा· दंड के समान होयतो यात्रा मे विघ्न होगा ॥४॥
वह छेद गिर्गिटान· वानर· सर्प· इनके समान नजर पडे तो दुर्भिक्ष· व्याधि· शत्रूके
स्वाधीन होना· यह होता है· गीध· उलूक· काक· श्येनपक्षी इनके समान होयतो लोके
को मृत्यु होगा ॥५॥ वह छेद पाश और कबंध (छिन्नमस्तक पुरुष) इनके समान होय
तो राजाको मृत्यु· रक्तस्राव होयतो लोकको विपत्ति· यह होंगे· वह छेद कृष्णवर्ण· म
लिन· अग्निदग्ध· दुर्गंध· ऐसा होयतो अशुभ होता है ॥६॥ वह छेद श्वेतवर्ण· सर्वत्र
समान· सुगंधि· स्निग्ध होयतो शुभकारक होता है· हाथीके दंत काटने के जैसे फल है
सेही दंतगलने के और विवर्ण होनेके भी फल जानना ॥७॥ हाथीके दंतमूलमे देव· मध्य
भागमे दैत्य· दंतके अग्रमे मनुष्य· यह रहते हैं· इसवास्ते उनके फल क्रमसे पूर्ण· मध्यम·
अल्प· ऐसे और शीघ्र· मध्यम· चिरकाल· ऐसे होते है ॥८॥ दक्षिण दंतभंगके फल· मूल·
मध्य· अग्र· इनके विषे भंग होयतो क्रमसे राजा· देश· सैन्य· इनका पलायन होगा· वाम दंतका फल·
मूल· मध्य· अग्र· इनके विषे क्रमसे· पुत्र· पुरोहित· माहोत· इनको मृत्यु और क्रमसे
वनचारी· स्त्री· मुख्य पुरुष इनका नाश यह होता है ॥९॥ ॥ ९४ ॥ [illegible]

आदिशेद्भयकृद्भंगदर्शनात्पार्थिवस्य सकलं कुलक्षयं ॥ सौम्यलग्न
तिथिभादिभिः शुभं वर्धते शुभमतोन्यथा भवेत् ॥१०॥ क्षीरवृक्षफल
पुष्पपादपेष्वापगातटविघट्टितेन वा ॥ वाममध्यरदभंगखंडने शत्रु
नाशकृदतोन्यथापरं ॥११॥ स्खलितगतिरकस्मात्त्रस्तकर्णोतिदी
नः श्वसिति मृदु सुदीर्घं न्यस्तहस्तः पृथिव्यां ॥ द्रुतमुकुलितदृष्टिः
स्वप्नशीलो विलोमो भयकृदहितभक्षी नैकशोसृक्छकृच्च ॥१२॥ व
ल्मीकस्थाणुगुल्मक्षुपतरुमथनः स्वेच्छया हृष्टदृष्टिर्यायाद्यात्रा
नुलोमं त्वरितपदगतिर्वक्त्रमुन्नाम्य चोच्चैः ॥ कक्षासन्नाहकाले ज
नयति च मुहुः शीकरं बृंहितं वा तत्काले वा मदाप्तिर्जयकृदथ रदं वे
ष्टयन्दक्षिणं वा ॥१३॥ प्रवेशनं वारिणि वारणस्य ग्राहेण नाशाय भवे
न्नृपस्य ॥ ग्राहं गृहीत्वोत्तरणं द्विपस्य तोयात्स्थलं वृद्धिकरं नृभर्तुः
॥१४॥ इति सर्वशाकुने हस्तींगितं ॥ अथ वायसरुतं ॥ प्राच्यानां दक्षिण
तः शुभदः काकः करायिका वामा ॥ विपरीतमन्यदेशेष्ववधिर्लोक
प्रसिध्यैव ॥१

---

दोनोही दंतका भंग एकही कालमे होय तो राजाका कुलक्षय होगा· शुभग्रहके लग्न· शुभ
तिथी· शुभनक्षत्रइ० होय तो शुभ होता है अन्यथा अशुभ होता है ॥१०॥ क्षीरका वृक्ष
औरफल पुष्पइनकरके युक्त वृक्ष अथवा नदीतीर इसमे घर्षण करनेसे हाथीका वाम दंत
बीचमे टूटे किंवा फूटे तो शत्रुनाश होगा· इस्से अन्यथा होय तो शत्रुवृद्धि होती है ॥११॥
अडते अडतेचलनेवाला· अकस्मात्त्रस्तकर्ण(ताडित) अतिदीन· मृदु और लंबा श्वा
सछोडनेवाला· पृथ्वीपर शुंडाटेकनेवाला· चकित और तुळमूदी ऐसीदृष्टीजिस्की ऐसा·
निद्रायुक्त विरुद्धदिशामे जानेवाला· अपथ्य खानेवाला· बहुत काल रक्तस्राव और विष्टा
करनेवाला· ऐसा हाथी भयकारक होता है ॥१२॥ वल्मीक डारकेविना वृक्ष· गुल्म· छोटे
डारके वृक्षको तोडनेवाला· स्वेच्छासे आनंदितदृष्टि· यात्रामे अनुकूल जानेवाला
शीघ्रगमन करनेवाला· मुख ऊपर करकेजानेवाला· पेटमेडोरी बांधनेके कालमे वारं
वार मुखमेसे पानीफेकनेवाला और शब्द करे· सवारी करनेके कालमे मस्त होनेवाला
अथवा दक्षिणदंतको शुंडासे वेष्टन करनेवाला· ऐसा हाथी जयकारक होता है ॥१३॥ जलमे
ग्राह(मगरी) हाथीका ग्रहण करे तो राजाका नाश होता है· वह मगरीको लेके जलके
बाहर भूमीपर हाथी आवे तो राजाकी वृद्धी होगी· ॥१४॥ इति सर्वशाकुने हस्तींगितं ना
माध्यायो नवमः ॥९॥ इति श्रीवराहमिहिरकृतौ बृहत्संहितायां चतुर्नवतितमोध्यायः
॥९४॥ अथ वायसरुतं ॥ पूर्वके देशमे दक्षिण अंगमे काक औ वाम अंगमे करायिका(व
ककी स्त्री) शुभ है· अन्यदेशमे वाम अंगमे काक और दक्षिण अंगमे बक स्त्री शुभ· प्राच्या

वैशाखेनिरूपहतेवृक्षेनीडःसुभिक्षशिवदाता॥ निंदितकंटकिशुष्के सुभिक्षभयानितद्देशे॥२॥ नीडेप्राक्शाखायांशरदिभवेत्प्रथमवृष्टि रपरस्यां॥ याम्योत्तरयोर्मध्याप्रधानवृष्टिस्तरोरुपरि॥३॥ शिखिदिशि मंडलवृष्टिर्नैर्ऋत्यांशारदस्यनिष्पत्तिः॥ परिशेषयोःसुभिक्षंमूषक संपत्तुवायव्ये॥४॥ शरदर्भगुल्मवल्लीधान्यप्रासादगेहनिम्नेषु॥ शून्योभवतिसदेशश्चौरानावृष्टिरोगार्तः॥५॥ द्वित्रिचतुःशावत्वंसु भिक्षदंपंचभिर्नृपान्यत्वं॥ अंडाव किरणमेकाण्डताप्रसूतिश्चनशि वाय॥६॥ चौरकवर्णैश्चौराश्चित्रैर्मृत्युःसितैश्चवन्हिभयं॥ विकलैर्दु र्भिक्षभयंकाकानांनिर्दिशेच्छिशुभिः॥७॥ अनिमित्तसंहतैर्ग्राममध्य गैःक्षुद्भयंप्रवाशद्भिः॥ रोधश्चक्राकारैरभिघातोवर्गवर्गस्थैः॥८॥ अभयाश्चतुंडपक्षैश्चरणविघातैर्जनानभिभवंतः॥ कुर्वंतिशत्रुवृद्धिं निशिविचरंतोजनविनाशं॥९॥

---

दिमर्यादालोकप्रसिद्धीसेहीलेना॥१॥ वैशाखमासमेनिरुपद्रववृक्षपर काक घरक रेतो सुभिक्षऔरकल्याणहोगा· निंदित·कांटेका·शुष्क·ऐसेवृक्षपरघरकरेतो दुर्भि क्षऔरभय·यहबहदेशमेहोंगे॥२॥ काककाघरवृक्षकेपूर्वके अथवापश्चिमतरफ केडारपरहोयतोशरदऋतूमे(आश्विन कार्त्तिक) प्रथमवृष्टिहोगी· दक्षिण औरउत्तर यहदिशाकेतरफहोयतो भाद्रपद और आश्विन इसमेवृष्टि होगी· वृक्षकेअग्रपरहोय तोश्रावणादिचार ही महीनेमे वृष्टिहोगी॥३॥ आग्नेयीदिशामेहोयतो कहींकहींवृ ष्टिहोगी· निर्ऋतीमेहोयतोशरदऋतूमेकेधान्यहोंगे·वायव्यऔरईशानीमेहोयतो सुभिक्षहोगा· वायव्यमेहोयतो मूसकीवृद्धि·यहहोगा·॥४॥ शर·(तृणवि०) दर्भ· गुल्म·वल्ली·धान्य·देवालय·गृह·निम्नभूमी·इसमेकाककाघरहोयतो·चोर·अवर्षण रोग·इनकरकेवहदेशमनुष्यरहितहोताहै·॥५॥ काकको २।३।४। पिल्ले होंयतो सुभिक्ष होगा· पांचपिल्लेहोयतोराजादुसराहोताहै· अंडचारोतरफफैले· एकअं डहोय·किंवाअंडहीहोयवहीतोअकल्याणहोगा·॥६॥ काकके पिल्लेका चोरक(गंधद्र व्य)इसकेसमानवर्णहोयतो चोरभय·चित्रवर्णहोयतो मृत्यु·श्वेतहोयतो अग्निभय विकल(अंगहीन)रहने·दुर्भिक्षभय·होताहै·॥७॥ कौवागांवके मध्यभागमेनिमि त्तकेबिनाजमाहोयकेशब्दकरेतो दुर्भिक्ष·चक्राकारफिरेतोगांवकारोध·समूहस मूहबैठेतोग्रामनाशहोगा·॥८॥ काकनिर्भयहोयके चोंच·पक्ष·पांव·मारकेलोक कोत्रासदेंतोशत्रुवृद्धिहोगी·रात्रीमेफिरेतोलोककानाशहोगा·॥९॥ काक आका शमेसव्यभ्रमणकरेतो स्वकीयसेभयहोताहै·अपसव्यभ्रमणकरेतोशत्रूसेभय

सव्येनखे भ्रमद्भिःस्वभयं विपरीतमंडलेश्चपरान्॥ अत्याकुलंभ्रम
द्भिर्वातोद्भ्रामो भवतिकाकैः॥१०॥ ऊर्ध्वमुखाश्च लपस्याः पथिभ
यदाःक्षुद्भयाय धान्यमुषः॥ सेनांगस्था युद्धंपरिपोषं चान्यभृनपक्षाः
॥११॥ भस्मास्थिकेशपत्राणिविन्यसन्पतिवधाय शय्यायां॥ मणिकु
सुमाद्यवहननसुतस्यजन्मान्ययांगनायाश्च॥१२॥ पूर्णाननेर्थला
भःसिकताधान्यार्द्रमृत्कुसुमपूर्वैः॥ भयदोजनसंवासाद्यदि भांडा
न्यपनयेत्काकः॥१३॥ वाहनशस्त्रोपानच्छत्रच्छायांगकुट्टनेमरणं
॥तत्पूजायां पूजाविष्टाकरणेन्नसंप्राप्तिः॥१४॥ यद्द्रव्यमुपनयेत्त
स्यलब्धिरंपहरतिचेत्प्रणाशःस्यात्॥ पीतद्रव्येकनकंवस्त्रंकार्पा
सिके सितेरूप्यं॥१५॥ सक्षीरार्जुनवंजुलकूलद्वयपुलिनगारुवंतश्च
॥प्रावृषिवृष्टिं दुर्दिनमनृतौ स्नाताश्च पांशुजलैः॥१६॥ दारुणनादस्तरु
कोटरोपगोवायसोमहाभयदः॥ सलिलमवलोक्यविरुवन्वृष्टिकरोब्दानुरा
वीवा॥१७

होताहै बहुतव्याकुलतासेफिरेतोवायुबहुत चलेगा ॥१०॥ काकऊपरमुखकरके पक्षहि
लावेतो मार्गमे भयहोगा धान्य चोरायकेलेजायतो दुर्भिक्ष होगा सेनांग (खोगीर लु
गाम इत्यादि) इसपर बैठेतो युद्ध होगा कोइलकेसमान बहुतकाला कौवाकापंख
होयतो चोरभयहोगा ॥११॥ कौवा शय्यापर भस्म हाड केश पत्ता यह गिरावेतो प
तिवधहोगा मणि पुष्प फल इत्यादि बिछौनेपर गिरावेतोपुत्रहोगा तृणकाष्ठादि
गिरावेतोकन्याहोगी ॥१२॥ कौवेका मुख रेती धान्य गीली मट्टी पुष्पफल गीलातृ
ण इत्यादिकसे भरेहोयतो अर्थलाभहोगा (यह प्रयाणकालमे देखना ऐसामालू
म होताहै) कौवा जनके सहवाससे पात्रलेजायतो भयहोगा ॥१३॥ अश्वादिवाहन
खड्गादिशस्त्र उपानत् छत्र छाया अंग इनके कुट्टन (टुकडे) कौवाकरेतो उसकेस्वा
मीको मृत्युहोगा वाहनादिककी पुष्पादिककरके कौवा पूजाकरेतो उसके स्वामीकास
त्कारहोगा वाहनादिकपर विष्टाकरेतो अन्नप्राप्तिहोगी ॥१४॥ कौवा जो पदार्थ ल्यायके
छोडताहै उसकी प्राप्तिहोतीहै जो पदार्थ लेकेजाताहै उसकानाशहोताहै पीत (पीला) द्रव्य
लेआवेतो सुवर्णकालाभ और उसका हरणकरेतो उसकानाशहोगा कपासमंबंधि लेआ
वेतोवस्त्र श्वेतपदार्थलेआवेतो रौप्य इसकालाभ और हरणकरेतो नाशहोताहै ॥१५॥
काक मंदार इ० दुग्धके वृक्ष अर्जुन अशोक इन वृक्षपर और नदीके दोनो तीरमे बैठके
वर्षाऋतूमे शब्दकरेगे तो वृष्टिहोगी अन्यऋतूमे दुर्दिन (अभ्रसे अच्छादित) होगा
काक धूलीमे और जलमे वर्षाऋतूमे स्नानकरेतो वृष्टि और अन्यऋतूमे दुर्दिन होगा ॥१६
कौवा वृक्षके कोटरमे बैठके बडा शब्दकरेतो बडा भयहोगा जलके तरफ देखके शब्द

दीप्तेऽह्नि गोविरुत्वे विकुट्टयन् वह्निकृद्द्विधुतपक्षः॥ रक्तं द्रव्यं न्यस्यं ज्वलितं काष्ठं वा गृहे विदधत्॥१८॥ ऐन्द्र्यादिदिगवलोकी सूर्याभिमुखो रुवन् गृहे गृहिणः॥ राजभयचोरबंधनकलहाः स्युः पशुभयं चेति॥१९॥ शान्तामैन्द्रीमवलोकयन् रुयाद्राजपुरुषमित्राप्तिः॥ भवति च सुवर्णलब्धिः शाल्यन्नगुडाशनाप्तिश्च॥२०॥ आग्नेय्यामनलाजीविकयुवतिप्रवरधातुलाभश्च॥ याम्ये माषकुलत्थाभोज्यं गांधर्विकैर्योगः॥२१॥ नैर्ऋत्यां दूताश्वोपकरणदधितैलपललभोज्याप्तिः॥ वारुण्यां मांससुरासवधान्यसमुद्ररत्नाप्तिः॥

॥ ॥२२॥ मारुत्यां शस्त्रायुधसरोजवल्लीफलाशनाप्तिश्च॥ सौम्यायां परमान्नाशनतुरंगांवरप्राप्तिः॥२३॥ ऐशान्यां संप्राप्तिर्घृतपूर्णानां भवेदनडुहश्च॥ एवं फलं गृहपतेर्गृहपृष्ठे समाश्रिते भवति॥२४॥ गमने कर्णसमश्चेत्सैन्यायनकार्यसिद्धये भवति॥ अभिमुखमुपैति यातुर्विरुवन् विनिवर्तयेद्यात्रां॥२५॥

---

करे किंवा मेघके समान शब्द करे तो पर्जन्य होगा॥१७॥ कौवा पंख हिलायके सूर्याभिमुख दुःखित होयके वृक्षपर टोंकसे खोदे तो अग्निभय होगा घर पर लाल द्रव्य (पदार्थ) वा जरा तृण काष्ठ रखे तो अग्निभय होगा॥१८॥ काक पूर्वादि दीप्त दिशामे देखके सूर्य सन्मुख रहते घरपर बैठके शब्द करे तो गृहस्वामीको यह फल होंगे (पूर्वमे राजभय दक्षिणमे चोरभय पश्चिममे बंधन उत्तरमे कलह और आग्नेयादि विदिशामे पशुभय होता है॥१९॥ कौवा शांत पूर्वादि दिशामे देखके शब्द करे तो राजपुरुषका मित्रका आगमन सुवर्णलाभ शाल्यन्न और गुड इनका भोजन प्राप्त होता है॥२०॥ काक शांत आग्नेयीमे देखके शब्द करे तो सुवर्णकारादि अग्निजीवी स्त्री श्रेष्ठधातु (सुवर्णादि) इनका लाभ होता है दक्षिणमे देखके उडदी कुलथी इनके भोजन और गांधर्विक (गैडवं गाला) इनसे योग यह होयगे॥२१॥ काक निर्ऋतीमे देखके शब्द करे तो दूत अश्व अश्वोपयोगी पात्र दही तेल मांस भोजन इनकी प्राप्ति होगी पश्चिममे देखके मांस मद्य पान धान्य समुद्रमेके रत्न इनकी प्राप्ति होगी॥२२॥ कौवा वायव्यमे देखके शस्त्र (लोह) खड्गादि आयुध कमल बल्लीके फल (कूष्मांडादि) भोजन इनकी प्राप्ति होती है उत्तरमे देखके खीर भक्षण अश्व वस्त्र इनकी प्राप्ति होगी॥२३॥ कौवा ईशानीमे देखके शब्द करे तो घृतपूर्ण और बैल (अनड्वान्) इनकी प्राप्ति और बैलका लाभ यह होगा गृहके पृष्ठभागमे काक बैठे तो गृहस्वामीको ऐसे ही फल होंगे॥२४॥ काक प्रयाणकालमे यात्राकर्त्ताके मनके अनुसार

गमने प्रविल्लसेर्दक्षिण भागे [illegible] यातेयस्तु [illegible] अर्थ [illegible] विवृद्धि
मती वाऽर्थ सिद्धिकरः॥२५॥ यदि वाम स्वं विरुत्य सुहुर्मुहुः प्रतिलो
मगतिः॥ अर्थस्य भवति सिद्धेः प्राच्यानां दक्षिणे वं॥२७॥ वाम
प्रतिलोमगतिर्वाश नृगमनस्य विघ्नकृद्भवति॥ तत्रस्यस्यैव फल
कथयति तद्वाञ्छितं गमने॥२८॥ दक्षिणविरुतं कृत्वा वामे विरुत्य
यथेप्सितावाप्तिः॥ प्रतिवाश्य पुरो यायाद्द्रुतमग्रे र्थागमोऽति म
हान्॥२९॥ प्रतिवाश्य पृष्ठतो दक्षिणेन यायाद्द्रुतं क्षतज कर्त्ता॥ ए
कचरणोऽर्कमीक्षन्विरुवंश्च पुरो रुधिरहेतुः॥३०॥ दृष्टार्कमेकपा
दस्तुंडेन लिखेद्यदा स्वपिच्छानि॥ पुरतो जनस्य महतो वधमभिध
त्ते तदा बलिभुक्॥३१॥ सस्योपेते क्षेत्रे विरुवति शांते ससस्य भूल
ब्धिः॥ आकुलचेष्टो विरुवन्सीमांते क्लेशकृद्यातुः॥३२॥ सुस्निग्धपत्र
पल्लवकुसुमफलानम्रसुरभिमधुरेषु॥ सक्षीराव्रणसुस्थितमनो
ज्ञरक्षेषु चार्थकरः॥३३॥

---

जायतो कल्याण होगा· कार्यसिद्धि होगी नहीं· गमन कर्त्ताके सन्मुख काक आयके श
ब्द करे तो गमन होगा नहीं·॥२५॥ काक प्रयाण कर्त्ताके वामभाग मे प्रथम शब्द कर
के नंतर दक्षिण भागमे शब्द करे तो द्रव्य हरण होगा· इससे विपरीत (दक्षिण भागमे
प्रथम शब्द करके नंतर वाम भागमे करे तो) अर्थसिद्धि होगी·॥२६॥ गमन कर्त्ताके
वाम अंगमे ही पीछेसे जायके वारंवार शब्द करे तो अर्थकी सिद्धि होती है· यह फल
पूर्वके लोककी दक्षिण तरफकौवाके होते है॥२७॥ काक गमन कर्त्ताके सन्मुख आ
यके वाम अंगमे शब्द करे तो गमनको विघ्न करेगा· जिस वास्ते जाता वह फल उ
हांही रहके मिलेगा ऐसा कहता है·॥२८॥ काक गमन कर्त्ताके दक्षिण अंगमे श
ब्द करके वाम अंगमे शब्द करे तो इच्छित अर्थकी प्राप्ति होगी· काक शब्द करके शीघ्र
आगे जाय तो गमन कर्त्ताको आगे बडी द्रव्य प्राप्ति होगी·॥२९॥ कौवा गमन कर्त्ताके
पीछे शब्द करके दक्षिण अंगसे शीघ्र जाय तो रक्तस्राव होगा· एक पांव पर खडे हो
यके सूर्यके तरफ देखके शब्द करे तो आगे रक्तस्रावका कारण होगा·॥३०॥ काक सूर्य
के तरफ देखके एक पांव पर खडे होयके अपने पंख परके
पसे खोदि डाले तो आगे महाजनका वध होगा·॥३१॥ कौवा धान्ययुक्त खेतमे शांत
होयके शब्द करे तो धान्ययुक्त भूमीकी प्राप्ति होगी· सीमाके अंतमे उद्योग युक्त
शब्द करे तो गमन कर्त्ताको दुःख होगा·॥३२॥ सुस्निग्ध पत्र· पल्लव· पुष्प· फल
इन्होंकरके नम्र· सुगंध· मधुर· दुग्धयुक्त· अच्छिद्र· उत्तम मनको हर्षित· सुंदर·

स्निग्धमधुरस्य ... प्रासादहर्म्यहरितेषु॥ धान्योच्छ्रयमंगल्येषु चैव विरुवन् धनागमदः॥३४॥ गोपुच्छस्थे वल्मीकगेऽथवा दर्शनं भुजंगस्य॥ सद्यो ज्वरो महिषगे विरुवति गुल्मे फलं स्वल्पं॥३५॥ कार्यस्य व्याघातस्तृणकूटे वामगेऽस्थिसंस्थे वा॥ दुर्जाग्निप्लुष्टाशनिहते च काके वधो भवति॥३६॥ कंटकिमिश्रे सौम्ये सिद्धिः कार्यस्य भवति कलहश्च॥ कंटकिनि भवति कलहो वल्लीपरिवेष्टिते बंध॥३७॥ छिन्नाग्रेऽंगच्छेदः कलहः शुष्कद्रुमस्थिते ध्वांक्षे॥ पुरतश्च पृष्ठतो वा गोमयसंस्थे धनप्राप्तिः॥३८॥ मृतपुरुषांगावयवस्थितोऽभिवाशन् करोति मृत्युभयं॥ भंजन्नस्थि च चंच्वा यदि वा शल्यस्थिभंगाय॥३९॥ रज्ज्वस्थिकाष्ठकंटकिनिःसारशिरोरुहानने रुवति॥ भुजगगददंष्ट्रितस्करशस्त्राग्निभयान्यनुक्रमशः॥४०॥ सितकुसुमाशुचिमांसानने ऽर्थसिद्धिर्यथेप्सिता यातुः॥ धुन्वन् पक्षावूर्ध्वानने च विघ्नं मुहुः क्वणति॥४१॥

---

ऐसे वृक्षपर काक होय तो कार्यसिद्धि होगी॥३३॥ धान्योत्पन्नक्षेत्र कोमलतृण गृह देवालय गृहपृष्ठ हराप्रदेश धान्य ऊंचा प्रदेश शुभस्थान इनके विषे काक शब्द करे तो द्रव्यप्राप्ति होगी॥३४॥ गौके पुच्छपर किंवा वल्मीकपर काक बैठे तो सर्प का दर्शन होगा महिषपर बैठके शब्द करे तो तत्काल ज्वर होगा गुल्मवृक्ष झुंपडपर बैठके शब्द करे तो शुभाशुभ फल स्वल्प होता है॥३५॥ गमनकर्त्ताके वाम अंगमे तृणके गंजके ऊपर अथवा हाडपर काक बैठके शब्द करे तो नाश होगा जरे किंवा बिजुली गिरे वृक्षपर बैठके काक शब्द करे तो वध होता है॥३६॥ कंटकवृक्षसे युक्त शुभवृक्षपर काक शब्द करे तो कार्यसिद्धि और कलह होंगे केवल कंटकी वृक्षपर बैठके शब्द करे तो कलह होगा वल्लीसे वेष्टित वृक्षपर बैठके शब्द करे तो बंधन होगा॥३७॥ काक अग्रतूटे वृक्षपर बैठे तो अंगच्छेदन शुष्कवृक्षपर बैठे तो कलह गमनकर्त्ताके आगे वा पीछे गोबर पर बैठे तो धनप्राप्ति होगी॥३८॥ काक मृत पुरुषके अंगके अवयव पर बैठके शब्द करे तो मृत्युभय होता है चोंचसे हाड फोडके शब्द करे तो गमनकर्त्ताके हाडका भंग होता है॥३९॥ काक डोरी हाड काष्ठ असार (सत्वहीन पदार्थ) केश यह मुखमे लेके शब्द करे तो अनुक्रमसे सर्प रोग सूकरादि दंष्ट्री चोर शस्त्र अग्नि इनका भय होगा (डोरी मुखमे लेतो सर्पभय इत्यादि)॥४०॥ काक श्वेतपुष्प अशुद्धपदार्थ मांस यह मुखमे लेके शब्द करे तो गमनकर्त्ताकी यथा इच्छा सिद्धि होगी पंख हिलायके ऊपर मुखकरके वारंवार शब्द करे तो गमनकर्त्ताको विघ्न होगा॥४१॥ ॥

यदि संस्थस्तांबरत्वां वल्लीं वारायवा भ्रतेबंधः॥पाषाणस्थश्च भयं क्लि
शपूर्वाध्विकयुतिश्च॥४२॥अन्योन्य भक्षसंक्रामितान्ननेतुष्टिरुत्त
माभवति॥विज्ञेयः स्त्रीलाभोदंपत्योर्वाशतो युगपत्॥४३॥प्रमदा
शिर उपगत पूर्णकुंभसंस्थेंगनार्थसंप्राप्तिः॥घटकुट्टने सुतविप
द् घटोपदहनेन्नसंप्राप्तिः॥४४॥स्कंधावारादीनांनिवेशसमयेक
वंचलत क्षः॥सूचयतेन्यस्थानं निश्चलपक्षस्तु भयमात्रं॥४५॥
प्रविशद्भिः सैन्यादीन् सगृध्रकंकैर्विनामिषं ध्वांक्षैः॥अविरुद्धैस्तैः
प्रीतिर्द्विषतां युद्धं विरुद्धैश्च॥४६॥ बंधः सूकरसंस्थे पंकाक्ते सूक
रे द्विकेर्थाप्तिः॥ क्षेमं खरोष्ट्रसंस्थेकेचित्प्राहुर्वधं तु खरे॥४७॥ वाह
नलाभोश्वगते विरुवत्यनुयायिनिक्षतजपातः॥ अन्येप्यनुव्रजं
तो यातारं काकवद्विहगाः॥४८॥ द्वात्रिंशत्प्रविभक्ते दिक्चक्रे यथा
थासमुद्दिष्टं॥ नत्ततथाविधेयं गुणदोषफलं यियासूनां॥४९॥
का इति काकस्य रुतं स्वनिलयसंस्थस्य निष्फलं प्रोक्तं॥

---

काक वेडी · चमडेकी डोरी · वल्ली · यह मुखमेलेके शब्द करे तो बंध न होता है पाषाणपर
बैठके शब्द करे तो भय और क्लेशयुक्त · अपूर्व ऐसे मार्गस्थका योग होता है ·॥४२॥का
क अन्योन्यके मुखमे भक्ष्यपदार्थ डालते हो यतो गमनकर्त्ताको उत्तम संतोष होता
है · स्त्री पुरुष काक एककालमे शब्द करें तो स्त्री लाभ होगा ·॥४३॥स्त्रीके मस्तकपर
के पूर्णकुंभपर काक बैठे तो स्त्री और द्रव्य इनकी प्राप्ती गमनकर्ताको होगी · काक घटको
ताडन करे तो पुत्रको दुःख होगा · घटमे काक प्रवेश करे तो भोजन प्राप्ति होगी ·॥४४॥ स्कं
धावार (तंबू) मे प्रवेश समयमे चंचलपक्ष काक शब्द करे तो अन्यस्थानको जाना सू
चन करता है · निश्चलपक्ष करके शब्द करे तो भयमात्र सूचक होता है ·॥४५॥ गृध्र औ
र कंक (पक्षिविशेष उनके पक्षके बाणको पक्ष करते है) इनकर के युक्त काक सैन्य · नगर ·
मंदिर इनमे प्रवेश करे और उनका विरोध न होय तो शत्रूकी प्राप्ती होगी और विरोध हो
य तो युद्ध होगा ·॥४६॥ काक सूकरपर बैठे तो बंधन होगा · कीचड से भरे सूकरपर बै
ठे तो द्रव्य प्राप्ति होगी · द्विक कहिये काक · खर और ऊंट इनपर बैठे तो कल्याण होगा · ख
रपर बैठे तो वध होगा ऐसा कोई कहते हैं ·॥४७॥ काक अश्वपर बैठके शब्द करे तो वाह
नका लाभ होगा · गमनकर्ताके पीछेसे काक शब्द करने जाय तो रक्तपतन होगा · पीछेसे
जानेवाले अन्यपक्षीके भी फल गमनकर्त्ताको काकके समान ही जानना ·॥४८॥ ३२
का इनके भेदमे जैसे फल कथन किया है से ही काक शब्दके फल गमनकर्त्ताको होता
है ·॥४९॥ काक अपने घरवोलेमे रहके · का ऐसा शब्द करे तो वह शब्द निष्फल (उ

कवइति स्वस्त्रप्रीत्यै कइति रुते स्निग्धमित्राप्तिः॥५०॥ करइति कलहं कुरुकुरु च हर्षमथ कटकटेति दधिभक्तं॥ केकेविरुतं कुकु वाथ नलाभं यायिनः प्राह॥५१॥ खरेखरे पथिकागममाह करखा केति यायिनो मृत्युं॥ गमनप्रतिषेधिकमा खलखल सद्योभिवर्षाय॥ ५२॥ काकेति विघातं काकटीति चाहारदूषणं प्राह॥ शीत्याः स्पदं बवकवेति बंधमेवं कगाकुरिति॥५३॥ करकेति विरुते वर्षे गुडवत्त्रासा यवडिति वस्त्राप्तिः॥ कलयेति च संयोगः शूद्रस्य ब्राह्मणैः सार्कं॥५४॥ फडिति फलाप्तिः फलवाहि दर्शनं टडिति प्रहाराः स्युः॥ स्त्रीलाभः स्त्रीति रुते गडिति गवां पुडिति पुष्पाणां॥५५॥ युद्धाय टाकुटाक्विति गुलु वन्हिभयं कटेकटे कलहः॥ टाकुलि चिटिचि केकेकेति पुरं चेति दोषाय॥५६॥ काकूयस्यापि समानमेतत्फलं यदुक्तं रुतचेष्टिताद्यैः॥ पतत्रिणोऽन्येपि यथैव काकावन्याः श्ववच्चोपरिदंष्ट्रिणो ये॥५७

---

स्का शुभाशुभफल नहीं) कव ऐसा शब्द स्वप्रीतीसे करता है क ऐसा शब्द करे तो प्रियमित्रकी प्राप्ति होगी॥५०॥ कर ऐसा शब्द० कलह कुरुकुरु ऐसा शब्द० आनंद कटकट ऐसा शब्द० दही भात का भोजन केके किंवा कुकु ऐसा शब्द करे तो गमनकर्त्ताको धनलाभ होगा॥५१॥ काक खरेखरे ऐसा शब्द करे तो मार्गस्थ आवेगा करवाख ऐसा शब्द० गमनकर्त्ताको मृत्यु होगा आ ऐसा शब्द० जाना बंद होगा खलखल ऐसा शब्द० तत्काल दृष्टि होगी॥५२॥ काका ऐसा शब्द० नाश होगा काकटी ऐसा शब्द० विषादिकसे अन्नदूषित करता है कवकव ऐसा शब्द० स्नेहस्थान प्राप्ति कगाकु ऐसा शब्द करे तो बंधन होगा॥५३॥ काक करके ऐसा शब्द करे तो पर्जन्य दृष्टि होगी गुडवत् ऐसा शब्द करे तो भय होगा वड ऐसा शब्द० वस्त्र प्राप्ति होगी करुय ऐसा शब्द करे तो शूद्रकी ब्राह्मण से भेट होगी॥५४॥ काक फड ऐसा शब्द करे तो फलप्राप्ति और फल लेके आनेवाले का दर्शन होता है टड ऐसा शब्द० प्रहार (युद्ध) होगा स्त्री ऐसा शब्द० स्त्री प्राप्ती होगी गड ऐसा शब्द करे तो गौकी प्राप्ती पुड ऐसा शब्द० पुष्पकी प्राप्ती होगी॥५५॥ काक टाकुटाकु ऐसा शब्द० युद्ध होता है गुलु ऐसा शब्द० अग्निभय कटेकटे ऐसा शब्द० कलह होता है टाकुलि चिटिचि केकेके पुरंच ऐसे शब्द करे तो अशुभ होता है॥५६॥ यह काकके विषयमें जो फल कथन किया वही कहते तीन चार काक शब्द इत्यादि करे तो जानना जो काकके फल वही इतर पक्षियों के फल जानना वन्य पशु के सियार के समान जानना और ऊर्ध्व दांत

स्थलचरादिक जलसप्पांस्थलयो मेघकाले प्रचुरमसिकवृष्टयो ऽन्यकाले भयाय॥ मधुभवनिलीनं तत्करोत्याशु शून्यं मरणमपि निलीना मक्षिका मूर्ध्नि नीला॥५८॥ विनिक्षिपंत्यः सलिले ऽंडकानि पिपीलिका वृष्टिनिरोधमाहुः॥ तरुस्थलं वापि नयंति निम्नाद्यदा तदा ताः कथयंति वृष्टिं॥५९॥ कार्यं तु मूलशकुनें ऽतरजे तदन्हि विद्यात्फलं नियतमेवमिमे विचिंत्याः॥ प्रारंभयानसमयेषु तथा प्रवेशे ग्राह्यं स्तु तं न शुभदं क्वचिदप्युशंति॥६०॥ शुभं दशा पाकमविघ्नसिद्धिं मूलाभिरक्षामथवा सहायान्॥ इष्टस्य संसिद्धिमनामयत्वं वदंति तेमानयितुर्नृपस्य॥६१॥ क्रोशादूर्ध्वं शकुनिविरुतं निष्फलं प्राहुरेके तत्रानिष्टे प्रथमशकुने मानयेत्पंच षट् च॥ प्राणायामान्नृपतिरशुभे षोडशैव द्वितीये प्रत्यागच्छेत्स्वभवनमतो यद्यनिष्टस्तृतीयः॥६२॥ ॥इति वायसरुतं॥ ॥अथ शाकुनोत्तराध्यायः॥ दिग्देशचेष्टास्वरवासरर्क्षमुहूर्तहोराकरणोदयांशान्॥ चरस्थिरोन्मिश्रबलाबलं च बुध्वा फलानि प्रवदेद्गुतज्ञः॥१॥

के सूकर इ० पशूके भी फल कुत्तेके समान जानना॥५७॥ वर्षाकालमे पृथ्वीपरके प्राणी मेंडक इ० पानीमे जाय और पानीमेके प्राणी मच्छ इत्यादि पृथ्वीपर आवे तो बहुत वृष्टि होगी॰ अन्यकालमे भय होगा॰ मधुमक्षिका जाल॰ घरपर बैठे तो वह घर मनुष्यरहित होगा॰ वह मक्षिका मस्तकमे नीलवर्ण होय तो प्राणीको मृत्युकारक॥५८॥ पिपीलिका (चीटी) अंडजलमे रक्खे तो वृष्टि बंद होगी॰ ऐसा कहते हैं॰ निम्नभूमीसे ऊपर किंवा ऊंचे प्रदेशपर ले जाय तो वृष्टि होगी॰ ऐसे वह कहती हैं॥५९॥ पहिले शकुनसे यात्राके शुभाशुभ फल देखना॰ निकलने पर मध्यमे जो शकुन होगा॰ उसका फल वही दिन जानना॰ यह अध्यायमे कथित जो शकुन वह सर्वकाल देखना॰ सर्व कार्यका आरंभ॰ यात्रा॰ गृहप्रवेश इत्यादिकके विषे सर्व शकुन देखना॰ छींक कोई भी कार्यमे शुभ नहीं ऐसे कहते हैं॥६०॥ शुभ शकुन होय तो दशाका फल॰ निर्विघ्न कार्यसिद्धि॰ मूलस्थानका पालन॰ मार्गमे सहाय॰ इच्छित कार्यसिद्धि॰ नीरोगत्व॰ यह फल लोकका सत्कार करनेवाले राजाको होता है ऐसे कथन किया॥६१॥ १ कोसके आगे पक्षीका शब्द निष्फल (व्यर्थ) ऐसा कश्यपादिको ई ऋषि कहते हैं॰ राजाने प्रथम अपशकुन होय तो अवश्य कार्यके विषे ११ प्राणायाम करना नंतर जाना॰ दूसरा अपशकुन होय तो १६ प्राणायाम करके प्रयाण करना॰ तिसरा होय तो पीछे स्वगृहमे आवना॰ (राजाको कथन) सो सर्वने करना॥६२॥ इति सर्वशाकुने वायसरुतं नाम द्वा॰

द्विविधं कथयंति संस्थितानामागामि स्थिरसंज्ञितं च कार्यं॥ नृपदूतचरान्यदेशजातान्यभिधानास्वजनादिचागमाख्यं॥२॥ उद्बंधसंप्रहृष्टाभोजनचोरवन्हिवर्षोत्सवात्मजवधाः कलहो भयं च॥ वर्गः स्थिरोयमुदयेंदुयुते स्थिरर्क्षे विंद्यात्स्थिरं चरगृहे च चरं यदुक्तं॥३॥ स्थिरप्रदेशोपलमंदिरेषु सुरालये भूजलसन्निधौ च॥ स्थिराणि कार्याणि चराणि यानि चलप्रदेशादिषु चागमाय॥४॥ आप्योदयर्क्षक्षणदिग्जलेषु पक्षावसानेषु च ये प्रदीप्ताः॥ सर्वेऽपि ते वृष्टिकरा रुवंतः शांतोपि वृष्टिं कुरुतेंबुचारी॥५॥ आग्नेयदिग्लग्नमुहूर्तदेशधर्क्षे प्रदीप्तोऽग्निभयाय रौति॥ विष्ट्यां यमर्क्षोदयकंटकेषु निष्पत्रवल्लीषु च मोषकृत्स्यात्॥६॥ ग्राम्यः प्रदीप्तः स्वरचेष्टिताभ्यामुग्रो रुवन्कंटकिनि स्थितश्च॥ भौमर्क्षलग्ने यदि नैर्ऋतीं च स्थितोऽभितश्चोत्कलहाय दृष्टः॥७

ध्यायः॥१०॥ ॥इतिश्रीवरा० बृहत्सं० पंचनवतितमोध्यायः॥९५॥ ॥अथशाकुनोत्तराध्यायः॥ ॥अंगारितादिदिशा·शुभाशुभस्थान·व्यापार·दीप्तादिशब्द·वार·नक्षत्र·शिवादिमुहूर्त·होरा·ववादिकरण·लग्न·नवांश·द्रेष्काणादि·चर·स्थिरद्विस्वभाव·शकुनके बलाबल·यहजानके पक्ष्यादिकके शब्दजाननेवालेने फलकथनकरना॥१॥ संस्थित कहिये प्रश्नकर्ता· इनकी चर और स्थिर ऐसे प्रश्न कार्य होतेहैं· राजादूत·मजूर·परदेश संबंधि उपद्रव·बंधुसुहृदादिकका आवना·यह संबंधमे प्रश्नरहतेहैं॥२॥ उद्बंध(टांगाभया) संयोग·सह भोजन·चोर·अग्नि·वृष्टि·विवाहादि उत्सव·अपत्य·मरण·कलह·भय यह संबंधके प्रश्न·स्थिरलग्नमे·स्थिरनक्षत्रमे और स्थिरराशीका चंद्र रहने होयतो वह·स्थिरफल(इस्के फल भए हैं किंवा आजही होनेवाला है) समझना· चरलग्नमे·चरनक्षत्रमे·चरराशीका चंद्र रहते प्रश्न होयतो वह चरफल·आगे होनेवाला है·ऐसा जानना॥३॥ स्थिरप्रदेश·पाषाण·गृह·देवालय भूमी जलसमीप भाग यह स्थानमे शकुन होयतो कार्य स्थिर(होगए किंवा आगे होंगे) ऐसा कहना·चलप्रदेशादिकके विषे शकुन होयतो कार्य आगे होगा ऐसा कहना॥४॥ जललग्न·जलनक्षत्र·जलमुहूर्त·जलदिशा(पश्चिम) और अमावास्या पूर्णिमा इनके विषे स्थित और प्रदीप्त ऐसे जो शकुन वह सर्व वृष्टिकारक होते हैं· जलचारी शांतभी शकुन वृष्टि करता है॥५॥ आग्नेयी दिशा·क्रूरग्रहके लग्न·आग्नेयमुहूर्त·कृत्तिका नक्षत्र·उग्रदेश·इनके विषे अर्कप्रदीप्त शकुन होयतो अग्निभय होता है·भद्रा·शनीके लग्न(मकर कुंभ) कंटकवृक्ष·पत्ररहित वृक्ष·वल्ली·इनके विषे शकुन होयतो चोरी होगी॥६॥ गांवमे भया·शब्द और चेष्टा इनकरके दीप्त·उग्रशब्द करने·

त्सुमेषवेंसे भृगुभांशसंस्थेविदिक्स्थितोधोवदनश्चरौति॥दीप्तःसचे त्संग्रहणंकरोतियोन्यातयायाविदिशिप्रदिष्टा॥८॥पुंराशिलग्नेविष मेतिथौचदिक्स्थःप्रदीप्तःशकुनोनराख्यः॥वाच्यंतदासंग्रहणंनरा णांमिश्रेभवेत्षंडकसंप्रयोगः॥९॥एवंरवेःक्षेत्रनवांशलग्नेलग्नेस्थि तेवास्वयमेवसूर्ये॥दीप्तोभिधत्तेशकुनोविवासंपुंसःप्रधानस्यहि कारणंतत्॥१०॥प्रारभ्यमाणेषुचसर्वकार्येष्वर्कान्विनाड्या क्र ण येद्विलग्नं॥संपद्विपच्चेतियथाक्रमेणसंपद्विपद्वापितथैववाच्या॥ ॥११॥काणेनाक्ष्णादक्षिणेनैतिसूर्येचंद्रेलग्नाद्वादशेचेतरेण॥लग्नस्थेर्केपापदृष्टेंधएवकुब्जःस्वर्क्षेश्रोत्रहीनोजडोवा॥१२॥क्रूरःष ष्ठेक्रूरदृष्टोविलग्नाद्यस्मिन्राशौतद्गृहांगेव्रणःस्यात्॥एवंप्रोक्ते यन्मयाजन्मकालेचिन्हंरूपंतत्तदस्मिन्विचिंत्यं॥१३॥ ॥८६॥ ॥

---

वाले - कंटकन्क्षत्रपरस्थित - भौमके लग्नमे (मेष वृश्चिक) अथा - निर्जनीमे स्थित ऐसा शकुन सन्मुख देखे तो कलह होता है॥७॥ चंद्रके लग्नमे (कर्क) शुक्रके राशीमे और नवांशमे शकुन आग्नेयादि विदिशामे रहके अधोमुख शब्द करे और दीप्त होय तो स्त्रीका ग्रहण करेगा - जिस विदिशामे जो योनी (उत्पत्ति) कथन किया उसके ग्रहण (संयोग) करता है॥८॥ पुंराशि - विषम लग्न - और विषम तिथि इनके विषे प्रदीप्त दिशामे रहनेवाला शकुन पुरुषाख्य होता है - जैसा होय तो पुरुषका संग्रहण - (संयोग) होगा - ऐसा कहना - मिश्र होय तो नपुंसक योग होगा॥९॥ ऐसेही सूर्यके क्षेत्र (सिंह) उसका नवांश और तात्कालिक लग्न होय - अथवा लग्नमे सूर्य होय और दीप्त शकुन होगा तो मुख्य पुरुषके प्रवासका यही कारण है - (प्रवास होगा)॥१०॥ सर्वकार्यके प्रारंभमे सूर्ययुक्त राशीसे लग्न गिनना - १ संपत् - २ विपत् इत्यादि जो आवे उसीके प्रमाण संपत् किंवा विपत् ऐसे लग्नके फल कहना॥११॥ प्रश्नसमयमे जो लग्न उससे सूर्य १२ वे होय तो जिसका संयोग होगा वह दक्षिण नेत्रसे काणा होगा - १२ वे स्थानमे चंद्र होय तो वामनेत्रसे काणा होगा - चंद्र सूर्य दोनोही १२ वे होय तो अंधही होगा - प्रश्नलग्नमे सूर्य होय और वह पापग्रहसे दृष्ट होय तो अंध होगा - स्वराशीमे (सिंहमे) सूर्य होय तो कर्णहीन (बधिर) किंवा जड (मूर्ख) होगा॥१२॥ प्रश्नलग्नसे ६ स्थानमे पापग्रह और उसपर पापग्रहकी दृष्टि होय - तो षष्ठस्थानस्थ राशि - कालपुरुषके जिस अंगमे होय - वह अंगमे व्रण होगा - जो हमने जन्मकालमे चिन्ह - रूप कथन किया वह इहाभी देखना॥१३॥ चरलग्नमे चरनवांश होय तो आवनेवालेका किंवा प्रश्नकर्ताका दो अक्षरका नाम है ऐसा कहना - स्थिरलग्नमे स्थिरन

द्व्यक्षरं च त्र्यक्षरं शकेर स्येनामचास्य चतुरक्षरं स्थिरे॥ नाम युग्मम पिच हि मूर्तिषु न्यस्य रं भवति चास्य पंचभिः॥१४॥ कादयास्तु वर्गाः कुजशुक्रसौम्यजीवार्कजानां क्रमशः प्रदिष्टाः॥ वर्णाष्टकं यादि च शीतरश्मेः रवेरकाराक्रमशः स्वराः स्युः॥१५॥ नामानि चाग्न्यंबुकुमार विष्णुशक्रेंद्रपत्नीचतुराननानां॥ तुल्यानि सूर्यात्क्रमशो विचिंत्य द्व्यादिवर्णैर्घटयेत्स्व बुध्या॥१६॥ वर्षांसि तेषां स्तनपानबाल्यव्रतस्थिता यौवनमध्यवृद्धाः॥ अतीववृद्धा इति चंद्रभौमज्ञशुक्रजीवार्कशनैश्वराणां॥१७॥ ॥इति शाकुनोत्तराध्यायः॥ अथपाकाध्यायः॥ पक्षाद्भानोः सोमस्य मासिकोंगारकस्य वक्रोक्तः॥ आदर्शनाच्च पाको बुधस्य जीवस्य वर्षेण॥१॥ षड्भिः सितस्य मासैरब्देन शनेः सुरद्विषोब्दार्धात्॥ वर्षात्सूर्यग्रहणे सद्यः स्यात्त्वाष्ट्रकीलकयोः॥२॥ त्रिभिरेव धूमकेतोर्मासैः श्वेतस्य सप्तरात्रांते॥ सप्ताहात्परिवेषेंद्रचापसंध्याभ्र सूचीनां॥३॥ छ ॥ छ ॥ छ ॥ ॥

---

वांश होय तो ४ अक्षर का नाम है द्विस्वभावलग्नमे द्विस्वभावनवांश होय तो दो नाम है पहिला तीन अक्षरका और दुसरा पांच अक्षरका ऐसा कहना॥१४॥ कादिवर्ण कुज·शुक्र·बुध·शनी इनके अनुक्रमसे कथन किया· कहिये क ख ग घ ङ इनका मंगल· च छ ज झ ञ इनका शुक्र· ट ठ ड ढ ण इनका बुध· त थ द ध न इनका गुरु· प फ ब भ म इनका शनि· य र ल व श ष स ह यह आठ वर्णका चंद्र और अकारादि १६ स्वरका सूर्य स्वामी है॥१५॥ सूर्य आदि क्रमसे· अग्नि· उदक कुमार विष्णु· इन्द्र· इंद्राणी· ब्रह्मा यह सात देवता सात होते है· सूर्यादि ग्रहयोग का स्व बुद्धीसे विचार करके द्व्यादि वर्णोका नाम योजना करना॥१६॥ चंद्र· बालक भौम ८ वर्षतक· बुध व्रतस्थ १६ वर्षतक· शुक्र ३० वर्षतक· गुरु ५० वर्षतक· शनि ८० वर्षतक ऐसे इनकी अवस्था होती है प्रश्नकालमे जो ग्रह होय उसकी वय अवस्था कहना॥१७॥ इति शाकुनोत्तराध्यायः॥ ॥इति वराहमिहिरकृतौ बृहत्संहितायां षण्णवतितमोध्यायः॥९६॥ ॥अथपाकाध्यायः॥ अर्कचारमे सूर्यके जो शुभाशुभ फल कहा· वही सर्व १५ दिनमे होता है चंद्रका एक महीनेमे होता है· भौमका फल वक्रानुवक्र मुखमुद्रये इ० ग्रंथसे (अ०६ श्लो०१) मे कथन किया· बुधका शुभाशुभ फल वह नजर पडता है तब तक होता है· गुरुका एक वर्षमे होता है· शुक्रका ६ महिनेमे पाक (फल) होता है· शनीका एक वर्षसे होता है· राहुका छ महिनेका होता· सूर्य ग्रहणका वर्षके होते· त्वाष्ट्र और कीलक यह केतूका तत्काल होता है दि

शीतोष्णाविपर्यासः फलपुष्पमकालजं दिशां दाहः ॥ स्थिरचरयोरन्य
त्वं प्रसूतिविकृतिश्च षण्मासात् ॥ ४ ॥ अक्रियमाणककरणं भूकंपोनु
त्सवोद्दिष्टं च ॥ शोषश्चाशोष्याणां स्रोतोन्यत्वं च वर्षाधीत् ॥ ५ ॥
स्तंभकुसूलार्चानां जल्पितरुदितप्रकंपितस्वेदाः ॥ मासत्रयेण क
लहेंद्रचापनिर्घातपाकाश्च ॥ ६ ॥ कीटाखुमक्षिकोरगबाहुल्यं मृगवि
हंगमरुतं च ॥ लोष्टस्य चाप्सु तरणं त्रिभिरेव विपच्यते मासैः ॥ ७ ॥ प्र
सवः श्वनामरण्ये वन्यानां ग्रामसंप्रवेशश्च ॥ मधुनिलयतोरणेंद्र
ध्वजाश्च वर्षात्समधिकाद्वा ॥ ८ ॥ गोमायुगृध्रसंघा दशाहिकाः स
द्य एव तूर्यरवः ॥ आकृष्टं पक्षफलं वल्मीकोविदरणं च भुवः ॥ ९ ॥
अहुताशप्रज्वलनं घृततैलवसादिवर्षणं चापि ॥ सद्यः परिपच्यंते
मासेध्यर्धे च जनवादः ॥ १० ॥ छत्रचितियूपहुतवहबीजानां सप्तभि
र्भवति पक्षैः ॥ छत्रस्य तोरणस्य च केचिन्मासात्फलं प्राहुः ॥ ११ ॥ ७ ॥

---

पाक होता है · धूमकेतूका ३ महिनेसे हो० श्वेतकेतूका ७ दिनसे पाक हो० मंडल · इंद्र
धनुष्य · संध्याभ्रसूचन इनका ७ दिनसे पाक होता है ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ शीत और उष्ण इन
का विपर्यास (शीतकालमे उष्णता और उष्णकाले सीतता · अथवा स्वभावसे शीत
पदार्थ उष्ण होना इ०) अकालमे फल और पुष्प आवना · दिक् दाह · स्थिर और चर
पदार्थका अन्यत्व (वृक्षादि स्थिर पदार्थ चर होना इ०) प्रसवविकार इनके शुभाशु
भफल ६ महीनेसे होते है · ॥ ४ ॥ कार्यविशेष न कियेरहते होना · भूमिकंप · प्राप्त उ
त्साहमे आकारण · बहुत अशोभन · शुष्क न होनेवालेका शोष · नदी इत्यादिकका
प्रवाह दूसरी तरफ जाना · इनके फल ६ महीनेसे होने है ॥ ५ ॥ स्तंभ · कुसूल (कुठा
र) प्रतिमा इनका भाषण रोदन · कंपन · घर्म यह और कलह · इंद्रधनुष्य · निर्घात इ
नका पाक ३ तीन महिनेसे होता है (इंद्रधनुष्यका · पूर्वमे ७ दिन कहा सो न होय तो
तीन महिनेसे होता है) ॥ ६ ॥ कीटक · मूस · मक्षिका · सर्प यह बहुत होना · पशु औ
र पक्षि इनका रोदन शब्द · मृत्पिंड (मट्टीका ढेला) जलमे तरना · यह सबका पाक
३ महिनेसे होता है · ॥ ७ ॥ कुत्तेकी अरण्यमे प्रसूति · वन्यपशूका गावमे प्रवेश · सह
नका छत्ता धरना · तोरण · इंद्रध्वज इनका पाक एक वर्षसे अथवा कुछ अधिक दि
नसे भी होता है · ॥ ८ ॥ सियार · गृध्र · इनके समूहके फल १० दिनसे · बाद्यके शब्दके
फल तत्काल · खिल्हाना · वल्मीक · भूमिविदार इनके फल १५ दिनसे होते है · ॥ ९ ॥ अ
ग्नि न रहते ज्वाला · घृत · तेल · मांस · रक्तादिक इनकी वृष्टि · इनके वही दिन फल · ज
नवाद (लोकापवाद) इसके फल ३ महिनेसे होते है · ॥ १० ॥ छत्र · चिति · यज्ञस्तंभ · अ

अत्यंतविरुद्धानांस्नेहःशब्दश्चवियतिभूतानां॥मार्जारनकुलयो र्मूषकेणसंगश्चमासेन॥१२॥गंधर्वपुरंमासाद्रसवैकृत्यंहिरण्य विकृतिश्च॥ध्वजवेश्मपांशुधूमाकुलादिशश्चापिमासफलाः॥१३ नवकैकाष्टदशैकैकषट्त्रिकत्रिकसंख्यमासपाकानि॥नक्षत्राण्य श्विनिपूर्वकाणिसद्यःफलाश्लेषा॥१४॥पित्र्यान्मासःषट्षट्त्रयो ऽर्धमष्टौचत्रिषडेकैकाः॥मासचतुष्कंपादेसद्यःपाकाभिजितारा॥ १५॥सप्ताष्टावध्यर्धंत्रयस्त्रयःपंचचैवमासाःस्युः॥श्रवणादीनां पाकोनक्षत्राणांयथासंख्यं॥१६॥निगदितसमयेनदृश्यतेचेदधि कतरंद्विगुणेप्रपच्यतेतत्॥यदिनकनकरत्नगोप्रदानैरुपशमि तंविधिवद्द्विजैश्चशांत्या॥१७॥ ॥इतिपाकाध्यायः॥ अथनक्ष त्रगुणाः॥त्रिशिखिगुणरसेंद्रियानलशशिविषयगुणर्तुपंचवसुप क्षाः॥विषयैकचंद्रभूतार्णवाग्निरुद्राश्विवसुदहनाः॥१॥ ९८॥ ॥

---

मिबीज इनकेविकारकेफलसाढेतीनमहिनेसेहोताहै·छत्रऔरतोरणइनकेफल महिनेसेहोताहै·ऐसाकोईऋषीकहतेहैं॥११॥बहुतद्वेषीप्राणीकापरस्परस्नेह· भूतकाआकाशमेशब्द·विडालऔरनेउरइनका मूषककेबराबरसंगयहवैकृत वेफलमहिनेसेहोतेहैं॥१२॥गंधर्वनगरकाफलएकमहिनेसेहोताहै·रसविकार सुवर्णविकार·ध्वजभंग·गृहविकार·धूलीऔरधूमइनकरकेव्याप्तदिशा·इसकाएकमहि नेसेहोताहै॥१३॥अश्विन्यादिनक्षत्रकीयोगताराको उपसर्ग(दोष)होयतोउसकेफल९ इ०मासमेहोतेहैं·अश्विनी९भरणी१कृत्तिका८रोहिणी१०मृग१आर्द्रा६पुनर्वसु३पुष्य३इत नेमहिनेसेफलपाकहोताहै·आश्लेषाकाफलवहीदिनहोताहै॥१४॥मघादिनक्षत्रकेयोगतारा कोउपसर्ग·(दोष)होयतोउसकापाकएकमहिनाइत्यादिकसेहोताहै· मघा१पू र्वा६उत्तरा६हस्त३चित्राअर्धमास(१५दि०)स्वाती८विशाखा३अनुराधा६ज्येष्ठा१ मूल१पूर्वाषाढा·४उत्तराषाढा४ इतनेमहिनेसेफलपाकहोताहै· अभिजित्ताराकाफ लपाकतत्कालहोताहै॥१५॥श्रवणादिनक्षत्रकापाकसप्तादिमाससेहोताहै·श्रवण ७धनिष्ठा८शततारका१॥मास·पूर्वाभाद्रपदा३उत्तराभा०३रेवती५इतनेमहि· नेसेफलपाकहोताहै॥१६॥ जिसअद्भुतकाजोफलपाकका कालकथनकिया उस कालमे वहपाकनभयातोद्विगुणितकालमेफलपाकहोगा·(शुभाशुभहोगा·) परं तुजोब्राह्मणसेयथाशास्त्रशांतीसेअथवासुवर्ण·रत्न·गौ·यहदानसेवहअद्भुत शमनकियानहीं·(जोशमनकरेतोशांतहोंगे·)॥१७॥ इतिबृहत्संहितायांपाकाध्यायो नामसप्तनवतितमोध्यायः॥९७॥ अथनक्षत्रगुणाः॥ अश्विन्यादि नक्षत्रोंकी तारा-

मूलयाम्यपसस्रसवोह्यान्त्रिंशच्चेतितारकामानं॥क्रमशोश्विन्यादीनांका
लस्तारप्रमाणेन॥२॥नक्षत्रजमुद्वाहे फलमब्दैस्तारकामितैःसदृ
सत्॥दिवसैर्ज्वरस्यनाशोव्याधेरन्यस्यवावाच्यः॥३॥अश्वियम
दहनकमलजशशिशूलभृददितिजीवफणिपितरः॥योन्यर्यम
दिनकृत्त्वष्टृपवनशक्राग्निमित्राश्च॥४॥शक्रोनिर्ऋतिस्तोयंविश्वे
ब्रह्माहरिर्वसुर्वरुणः॥अजपादोहिर्बुध्न्यःपूषाचेतीश्वराभानां॥५
॥त्रीण्युत्तराणितेभ्योरोहिण्यश्चध्रुवाणितैःकुर्यात्॥अभिषेकशां
तितरुनगरधर्मबीजध्रुवारंभान्॥६॥मूलशिवशक्रभुजगाधिपा
नितीक्ष्णानितेषुसिध्यंति॥अभिघातमंत्रवेतालबंधवधभेदसंबं
धाः॥७॥उग्राणिपूर्वभरणीपित्र्याण्युत्सादनाशशाठ्येषु॥योज्या
निबंधविषदहनशस्त्रघातादिषुचसिध्यै॥८॥लघुहस्ताश्विन
पुष्याःपण्यरतिज्ञानभूषणकलासु॥शिल्पौषधयानादिषुसिद्धि
कराणिप्रदिष्टानि॥९॥

---

अश्विनी३ भरणी३ कृत्तिका६ रोहिणी५ मृग३ आर्द्रा१ पुनर्वसु५ पुष्य३ आश्लेषा
६ मघा५ पूर्वा८ उत्तरा२ हस्त५ चित्रा१ स्वाती१ विशाखा५ अनुराधा७ ज्येष्ठा३ मूल
११ पू०षा०२ उ०षा०८ श्रवण३ धनिष्ठा५ शततारका१०० पूर्वाभाद्रपदा२ उ०भा०८
रेवती३२ ताराहैं· ताराप्रमाणसेकालभीजानना (वहप्रकारआगेकहतेहैं॥१
॥२॥विवाहकेविषेनक्षत्रसेहोनेवालाशुभाशुभफलसोतारासंख्यावर्षसेहोते
हैं· अश्विन्यादिनक्षत्रपरआयाजोज्वरउसकानाशपूर्वोक्ततारांकेसंख्याकेदिन
सेहोताहै· तैसेहीअन्यव्याधीकाभीनाशहोताहै· ॥३॥ १अश्विनीकुमार· २यम·
३अग्नि· ४ब्रह्मा· ५इंद्र ६शिव· ७अदिति· ८जीव· ९सर्प १०पितर ११योनि· १२अ
र्यमा· १३सूर्य· १४त्वष्टा· १५वायु· १६इंद्राग्नी· १७मित्र १८इंद्र· १९निर्ऋति· २०जल
२१विश्वेदेव· २२ब्रह्मा २३हरि· २४वसु· २५वरुण २६अजपाद २७अहिर्बुध्न्य २८पू
षा यह अश्विन्यादिनक्षत्रकेस्वामीहोतेहैं· ॥४॥५॥उ०फा० उ०षा० उत्तराभाद्रपदा
रोहिणी· यह ध्रुवसंज्ञकहैं· यहनक्षत्रमेराज्याभिषेक· उत्पातशांती· वृक्षारोपण·
नगरप्रतिष्ठा· धर्मक्रिया· बीजवाप(बोना) स्थिरकार्यकाआरंभ यहकरना· ॥६॥
मूल· आर्द्रा· ज्येष्ठा· आश्लेषा यहतीक्ष्णसंज्ञक होने हैं· इनकेविषे अभिघात· मंत्रप्र
योग· वेताल बंधन· वध· संबंध· यहसिद्धहोनेहैं ॥७॥ पूर्वाफा० पूर्वाषा० पूर्वाभा०
भरणी· मघा· यहउग्रसंज्ञकहोतेहैं· यहउत्सादन· नाश· शठभाव· बंधन· विषप्र
योग· अग्निकर्म· शस्त्रप्रयोग· घात· इत्यादिकर्ममेयोजनाकरनी· ॥८॥हस्त·अ

मृदुवर्गस्त्वनुराधाचित्रापौष्णैन्दवानिमित्रार्थे॥ सुरतविधिवस्त्रभूषणमंगलगीतेषु च हितानि॥१०॥ हौतभुजं सविशाखं मृदुतीक्ष्णं तद्धि मिश्रफलकारि॥ श्रवणात्त्रयमादित्यानिले च चरकर्मणि हितानि॥११॥ हस्तात्त्रयं मृगशिरः श्रवणात्त्रयं च पूषाश्विशक्रगुरुभानि पुनर्वसुश्च॥ क्षौरे तु कर्मणि हितान्युदये क्षणे वा युक्तानि चोडुपतिना शुभतारया च॥१२॥ नस्नातमात्रगमनोत्सुकभूषितानामभ्यक्तभुक्तरणकालनिरासनानां॥ संध्यानिशोः कुजयमार्कदिने च रिक्ते क्षौरं हितं न नवमेन्हि न चापि विष्ट्यां॥१३॥ नृपाज्ञया ब्राह्मणसंमते च विवाहकाले मृतसूतके च॥ बद्धस्य मोक्षे क्रतुदीक्षणासु सर्वेषु शस्तं क्षुरकर्म भेषु॥१४॥ (हस्तो मूलं श्रवणः पुनर्वसु मृगशिरस्तथा पुष्यः॥ पुंसंज्ञितेषु कार्येष्वेतानि शुभानि धिष्ण्यानि॥१५) ॥ सावित्रपौष्णानिलमैत्रतिष्यत्वाष्ट्रं तथा चोडुगणाधिपर्क्षं॥ ॥ ॥

---

श्विनी· पुष्य· यह लघुसंज्ञक होते है· (कोई इहां अभिजित् लेते है·) इनके विषे क्रयविक्रय· सुरत· शास्त्रारंभ· अलंकार· गीतवाद्यादि· शिल्पकर्म· औषधप्रयोग· यात्रा इत्यादिक में सिद्धि कारक होते है·॥९॥ अनुराधा· चित्रा· रेवती· मृग· यह मृदुसंज्ञक होते है· यह मैत्रीकरण· सुरतविधि· वस्त्रधारण· भूषण· मंगलकार्य· गीत· इनके विषे हितकारक होते है·॥१०॥ कृत्तिका और विशाखा यह मृदुतीक्ष्ण (मिश्र) संज्ञक होते है· इनके विषे मिश्र फल होते है· श्रवण· धनिष्ठा· शततारका· हस्त· स्वाती· यह चरकर्म के विषे हितकारक होते है·॥११॥ हस्त· चित्रा· स्वाती· मृगशीर्ष· श्रवण· धनिष्ठा· शततारका· रेवती· अश्विनी· ज्येष्ठा· पुष्य· पुनर्वसु· यह नक्षत्र क्षौरकर्म मे शुभ होते है· उक्त नक्षत्र न मिले तो दिन के लग्न १२ उस्मे २७ नक्षत्र भोगते है· इस वास्ते उस्के प्रमाण से वा दिलग्न मे उक्त नक्षत्र निकाल के बदलेना· अथवा यह नक्षत्र के मुहूर्त्त मे अथवा यह नक्षत्र मे चंद्रबल किंवा ताराबल रहते क्षौर कर्म करना·॥१२॥ स्नान करने पर· यात्रोत्सुक· अलंकारयुक्त· अभ्यंग करने पर· भोजन करने पर· युद्धोन्मुख· आसनरहित· संध्या· रात्रि· मंगल· शनि· कवित् रवि· यह वार मे· रिक्ता (४।९।१४) यह तिथी मे· नवम दिन मे· विष्टि (भद्रा) करण मे क्षौर शुभ नहीं·॥१३॥ राजा की आज्ञा· ब्राह्मण की आज्ञा· विवाहकाल· मृतसूतक· बंधमोक्ष· यज्ञदीक्षा· इनके विषे सर्व नक्षत्र क्षौर को शुभ होता है·॥१४॥ हस्त· मूल· श्रवण· पुनर्वसु· मृग· पुष्य· यह नक्षत्र पुंसवनादि कर्म मे शुभ होते है॥१५॥ हस्त· रेवती· स्वाती· अनुराधा· पुष्य· चित्रा· मृगशिर· यह नक्षत्र मे· गुरु· शुक्र· बुध· चंद्र· यह वार मे नामकरणादि संस्कार· यज्ञदीक्षा· व्रत· मेखला· बंधन·

संस्कारसीमंतकचौलकर्मस्वसादिकुर्यान्मृदुभेषु चैषु ध्रुवेषु भेषु ॥ स्वाभे
तृणीषे च मृदुभे स्वभेतेपापैर्विहीनेशुभराशिलग्ने॥ वेधोऽनुकर्णी
त्रिदशोऽत्यरूपेति ष्येंदुचित्राहरिरेवतीषु॥१७॥ शुद्धे द्वादशकेंद्रनैध
नगृहेः पापैस्त्रिषष्ठायगैर्लग्ने केंद्रगते गुरौवासुरगुरौ हे केंद्रकूनेपि
वा॥सर्वारंभफलप्रसिद्धिरुदये राशौच कर्तुः शुभे सग्राम्यस्थिर
भोदयेच भवनं कार्यं प्रवेशोपिवा॥॥१८॥ ॥इतिनक्षत्रगुणाः॥ ॥
अथतिथिकरणगुणाः॥ कमलजविधातृहरियमशशांकषड्वक्त्र
शक्रवसुभुजगाः॥धर्मेशसवितृमन्मथकलयोविश्वे च तिथिपतयः
॥१॥ पितरोऽमावास्यायां संज्ञासदृशाश्चनेः क्रियाः कार्याः॥नंदाभद्रा
विजयारिक्तापूर्णाश्चतास्त्रिविधाः॥२॥ यत्कार्यं नक्षत्रेनद्दैवत्या
स्कतिथिषुतत्कार्यं॥ करणमुहूर्तेष्वपितत्सिद्धिकरं देवतासदृशं॥३
॥ ववबालवकौलवतैतिलाख्यगरवणिजविष्टिसंज्ञानां॥ पतयः
स्युरिंद्रकमलजमित्रार्यमभूश्रियःसयमाः॥४॥ ७॥ ७॥ ७॥

---

दिकर्मकरना॥१६॥११।२ यहस्थानमे शुभग्रहहोय॰ पापग्रहसेरहितशुभग्रहकेल
ग्नमे पूर्वोक्तनामकरणादिकर्मकरना॰ गुरुकेलग्नमे पुष्य॰ मृग॰ चित्रा॰ श्रवण॰ रेव
ती यहनक्षत्रमेकर्णवेधकरना॥१७॥द्वादशा॰ केंद्र(१।४।७।१०) मेधन(८) यहस्था
नशुद्ध(पापग्रहरहित) होय॰ ३।६।११ यहस्थानमेपापग्रह होय॰ लग्नमेकिंवा
केंद्रमे बृहस्पतिकिंवाशुक्रहोय रहतेसर्वारंभकेफलकी प्रसिद्धि होतीहै॰ य
हीलग्नमेकर्त्ताकी जन्मराशि और जन्मलग्न शुभग्रहयुक्त रहतेसग्राम्य(अ
नुकूलग्राम्य) स्थिरलग्नमे गृहारंभ और गृहप्रवेश करना॰॥१८॥ इतिबृहत्सं
हितायांनक्षत्रगुणोनामाष्टानवतितमोध्यायः॥९८॥ ॥अथतिथिकरणगुणाः
॥१ ब्रह्मा २ विधाता ३ हरि ४ यम ५ चंद्र ६ स्कंद ७ इंद्र ८ वसु ९ भुजग॰ १० धर्म ११ ई
श १२ सूर्य १३ काम १४ कलि १५ विश्वेदेव॰ यह प्रतिपदादितिथीकेस्वामीहोतेहै॰
॥१॥ अमावास्याकास्वामीपितरहोतेहैं॰ यहतिथीकेविषे नामकेसमानका
र्यकरना॰ नंदा॰ भद्रा॰ विजया॰ रिक्ता॰ पूर्णा यहप्रकारसे तिथीहोतीहै॰ १ नंदा २ भ
द्रा ३ विजया ४ रिक्ता ५ पूर्णा ६ नंदा ७ भद्रा ८ विजया ९ रिक्ता १० पूर्णा ११ नंदा
१२ भद्रा १३ विजया १४ रिक्ता १५ पूर्णा और अमावास्या ऐसी जानना॰॥२॥ जो
कार्यजिसनक्षत्रमेकरनाहै वहनक्षत्रनमिलेतो उसनक्षत्रकी देवतादेसके
तुल्यदेवताकीतिथीमे वहकार्यकरना॰ ऐसेही करण और मुहूर्तइनकेविषेदे
वताकेसमान कार्यसिद्धिकारक होताहै॥३॥ १ बव २ बालव ३ कौलव ४ तैति

कृष्णचतुर्दश्यपरार्द्धतः शकुनिश्चतुष्पदं नागं ॥ किंस्तुघ्नमि
ति चतेषां कलिवृषफणिमारुताः पतयः ॥५॥ कुर्याद्बवे शुभचरस्थि
रपौष्टिकानि धर्मक्रियाद्विजहितानि च बालवाख्ये ॥ संप्रीतिमित्र
वरणानि च कौलवे स्युः सौभाग्यसंश्रयगृहाणि च तैतिलाख्ये ॥
॥६॥ कृषिबीजगृहाश्रयजानि गरे वणिजि ध्रुवकार्यवणिग्युत
यः ॥ नहि विष्टिकृतं विदधाति शुभं परघातविषादिषु सिद्धिकरं
॥७॥ कार्यं पौष्टिकमौषधादि शकुनौ मूलानि मंत्रास्तथा गोकार्याणि
चतुष्पदे द्विजपितॄनुद्दिश्य राज्यानि च ॥ नागे स्थावरदारुणानि ह
रणं दौर्भाग्यकर्माण्यतः किंस्तुघ्ने शुभमिष्टपुष्टिकरणं मंगल्यसि
द्धिक्रियाः ॥८॥ इति तिथिकरणगुणाः ॥ अथ विवाहनक्षत्रलग्न
निर्णयः ॥ रोहिण्युत्तररेवतीमृगशिरोमूलानुराधामघाहस्तस्वा
तिषु षष्ठतौलिमिथुनेषूद्यत्सु पाणिग्रहः ॥ सप्ताष्टान्त्यबहिः शुभैरुडु
पतावेकादशद्वित्रिगे क्रूरैस्त्र्यायषडष्टगैर्न तु भृगौ षष्ठे कुजे चाष्टमे ॥
॥१॥

ल ५ गर ६ वणिज ७ विष्टि· यह करण· इसके क्रमसे इंद्र· ब्रह्मा· मित्र· अर्यमा· भूमि·
लक्ष्मी· यम· यह स्वामी जानना· ॥४॥ कृष्णपक्षमे चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध से· उत्तरा
र्धमें शकुनि· अमावास्या के पूर्वार्धमे चतुष्पात्· उत्तरार्धमे नाग· प्रतिपदा के पूर्वा
र्ध किंस्तुघ्न· यह चार करणके क्रमसे कलि· वृष· सर्प· वायु· यह स्वामी होते है· ॥५
॥ शुभकार्य· स्वल्पकालसे साध्य· कालांतरमे रहनेवाला· शरीर पुष्टिकारक· ऐ
से कार्य बवकरणमे करना· धर्मक्रिया और ब्राह्मणके हित ऐसे बालव करणमे क
रना· संप्रीति ·मित्रवरण यह कौलव करणमे करना· सौभाग्य ·आश्रय· गृह
कर्म· यह तैतिलकरणमे करना· ॥६॥ कृषिकर्म· बीजवाप· गृहकर्म· आश्रयसे
होनेवाले कार्य· यह गरकरणमे करना· स्थिरकार्य· वाणिज्ययोग· यह वणिक
करणमे करना· विष्टिकरणमे किये कार्य शुभकारक होते नही· परंतु शत्रूका घा
त और विष· अग्नि· इनके प्रयोग· यह क्रूरकर्म सिद्धिकारक होते हैं· ॥७॥ शरीर
पुष्टिकारक· औषध तयार करना और देना इ० शकुनिकरणके विषे करना· मूल
(औषधी निकालना) मंत्रप्रयोग इत्यादि· गोकार्य· ब्राह्मण और पितर इनके नि
मित्त कर्म· राजकार्य· यह चतुष्पदकरणमे करना· स्थिरकार्य क्रूरकर्म· परधनग्र
हण· दुर्भगत्व (सर्वजनसे द्वेष) यह कर्म नागकरणमे करना· शुभकर्म· पुत्रकाम्या
दि इष्टि शरीर पुष्टि करण· विवाहादि मंगलकार्यसिद्धि· यह किंस्तुघ्नकरणमे कर
ना· ॥८॥ इति वृहत्संहितायां तिथिकरणगुणा नामैकोनशततमोऽध्यायः ॥९९॥

दंपत्योर्द्विनवाष्टराशिरहिते चारानुकूले रवौ चंद्रे चार्कबुधार्कि शु
क्रविधुने मध्येथवा पापयोः॥ त्यक्त्वा च व्यतिपात वैधृतदिनं विष्टिं
च रिक्तां तिथिं क्रूराहायन चैत्रपौषविरहे लग्नांशके मानुषे॥२॥ इ
तिविवाहनक्षत्रलग्ननिर्णयः॥ अथनक्षत्रजातकं॥ प्रियभूषणः सु
रूपः सुभगो दक्षोश्विनीषु मतिमांश्च॥ कृतनिश्चयसत्याकरुग्दक्षः
सुखितश्च भरणीषु॥१॥ बहुभुक्परदाररतस्तेजस्वी कृत्तिकासुवि
ख्यातः॥ रोहिण्यां सत्यशुचिः प्रियंवदः स्थिरसुरूपश्च॥२॥ चपल
श्चतुरो भीरुः पटुरुत्साही धनी मृगे भोगी॥ शठगर्वितचंडकृत
घ्नहिंस्र पापश्च रौद्रर्क्षे॥३॥ दांतः सुखी सुशीलो दुर्मेधा रोगभाक्
पिपासुश्च॥ अल्पेन च संतुष्टः पुनर्वसौ जायते मनुजः॥४॥ शांता
त्मा सुभगः पंडितो धनी धर्मसंश्रितः पुष्ये॥ शठसर्वभक्षपापः कृतघ्नधू
र्तश्च भौजंगे॥५॥ बहुभृत्यधनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्र्ये॥

---

अथविवाहनक्षत्रलग्ननिर्णयः॥ रोहिणी·उ·फा·उ·षा·उ·भा·रेवती·मृगशीर्ष·मूल·अनु
राधा·मघा·हस्त·स्वाती यह नक्षत्रमे·कन्या·तुला·मिथुन यह लग्नमे विवाह करना·ल
ग्नसे ७।८।१२ यह स्थानके विना शुभग्रह होय।११।२।३ यह स्थानमे चंद्र होय ३।११।
६।८ यह स्थानमे पापग्रह होय तो विवाह करना· शुक्र६ वा और भौम८ शुभ नही·
॥१॥ कन्या के राशीसे वरकी और वरके राशीसे कन्याकी राशी·द्वितीय·नवम·और अष्ट
म न होय·सूर्यबल होय·सूर्य·भौम·शनि·शुक्र इनसे युक्त चंद्र न होय·और पाप
ग्रहके मध्यमे चंद्र न होय·व्यतिपात·वैधृति·भद्रा·रिक्तातिथि·यह त्याग करना·पा
पग्रहके वार·दक्षिणायन·चैत्र·पौष·इनके विना·लग्न और नवमांश यह द्विपद
राशीके रहते विवाह करना·॥२॥ इतिबृहत्संहितायां विवाहनक्षत्रलग्ननिर्णयो ना
म शततमोऽध्यायः॥१००॥ अथ नक्षत्रजातकं॥ अलंकारप्रिय·उत्तमरूपवान्·भाग्य
वान्·चतुर·बुद्धिवान्·ऐसा अश्विनी नक्षत्रमे उत्पन्न प्राणी होता है·कृतनिश्चय(का
र्यका अंत करनेवाला) सत्यभाषी·रोगरहित·चतुर·सुखी·ऐसा भरणी नक्षत्रमे हो
ता है·॥१॥ बहुत भक्षण करनेवाला·परस्त्रीरत·तेजस्वी·कीर्तिवान् ऐसा कृत्तिका न
क्षत्रमे होता है·सत्यवक्ता·शुद्ध·प्रिय बोलनेवाला·स्थिरबुद्धि·सुरूप ऐसा रोहिणी
नक्षत्रमे होता है॥२॥ चंचलबुद्धि·चतुर·भीत·कुशल·आनंदी·धनवान्·भोगयुक्त·
ऐसा मृग नक्षत्रमे होता है·पापकार्य विमुख·गर्वित·क्रोधी·कृतघ्न·हिंसा करनेवाला·पा
पी·ऐसा आर्द्रा नक्षत्रमे होता है·॥३॥ जितेंद्रिय·सुखी·उत्तम स्वभाव·दुष्टबुद्धि·रोगी·
तृषार्त·थोडे से संतुष्ट ऐसा पुनर्वसु नक्षत्रमे मनुष्य होता है·॥४॥ जितेंद्रिय·सर्वजन

प्रियवाग्दाता द्युतिमान्दनो नृपसेवको भाग्ये॥६॥स्त्रीभगोविद्वान्
धनी भोगी सुखभाक् द्वितीयफल्गुन्यां॥ उत्साही धृष्टः पानपो घृणी
नस्करो हस्ते॥७॥ चित्रांबरमाल्यधरः सुलोचनांगश्च भवति चित्रा
यां॥ दांतो वणिक् कृपालुः प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ॥८॥ ईर्षुर्लुब्धो
द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु॥ आढ्यो विदेशवासी
क्षुधालुरटनोनुराधासु॥९॥ ज्येष्ठासु न बहुमित्रः संतुष्टो धर्मकृत्प्र
चुरकोपः॥ मूले मानी धनवान्सुखी न हिंस्रः स्थिरो भोगी॥१०॥ इ
ष्टानंदकलत्रो वीरो दृढसौहृदश्च जलदेवे॥ वैश्वे विनीत धार्मिक
बहुमित्र कृतज्ञ सुभगश्च॥११॥ श्रीमान्श्रवणे श्रुतवानुदारस
रो धनान्वितः ख्यातः॥ दाताढ्यः शूरो गीतप्रियो धनिष्ठासु धनलुब्धः॥
॥१२॥ स्फुटवाग्व्यसनी रिपुहा साहसिकः शतभिषसु दुर्ग्राह्यः॥ ॥

---

प्रिय·पंडित·धनवान्·धार्मिक·ऐसा पुष्यनक्षत्रमे होताहै·परकार्येविमुख·संग्रह
नकरनेवाला·पापी·दुर्जन·परवंचक·ऐसा आश्लेषा नक्षत्रमे होताहै·॥५॥ बहु
तसेवक·बहुतधन·भोगयुक्त·देव और पितर इनका भक्त·महोत्साह·ऐसा मघा
नक्षत्रमे होताहै·प्रियभाषण·दाता·तेजस्वी·भ्रमणशील·राजसेवक·ऐसा पूर्वा
फाल्गुनीनक्षत्रमे होताहै·॥६॥ सर्वजनप्रिय·विद्यासे प्राप्तधन·भोगयुक्त·सु
खी·ऐसा उ॰फा॰नक्षत्रमे होताहै·आनंदी·धैर्यवान्·मद्यपानासक्त·निर्दय·चोर·
ऐसा हस्तनक्षत्रमे होताहै·॥७॥ चित्रवर्णवस्त्र और मालाधारक·सुंदरनेत्र औ
र शरीर·ऐसा चित्रानक्षत्रमे होताहै·इंद्रियदमनशील·क्रयविक्रयजाननेवाला·
कृपालु·प्रियभाषण·धार्मिक·ऐसा स्वातीनक्षत्रमे होताहै·॥८॥ परवृद्धि न स
ह नकरनेवाला·लोभी·तेजस्वी·वक्ता·कलहकर्त्ता·ऐसा विशाखानक्षत्रमे हो
ताहै·धनी·परदेशमे रहनेवाला·क्षुधायुक्त·भ्रमणशील·ऐसा अनुराधानक्षत्र
मे होताहै·॥९॥ अल्पमित्र·संतुष्ट·धर्मपर·बहुक्रोधवान्·ऐसा ज्येष्ठानक्षत्रमे हो
ताहै·अभिमानी·धनवान्·सुखी·क्रूर नही·स्थिरबुद्धि·भोगयुक्त·ऐसा मूलनक्षत्र
मे होताहै·॥१०॥ आनंद और स्त्री यह प्रिय जिसको ऐसा·संग्रामशूर·स्थिरमित्र·ऐ
सा पूर्वाषा॰ नक्षत्रमे होताहै·नम्र·धार्मिक·बहुमित्र·प्रत्युपकारी·सर्वलोकप्रिय
ऐसा उ॰षा॰ नक्षत्रमे होताहै·॥११॥ लक्ष्मीवान्·पंडित·उदार है स्त्री जिसकी ऐसा·
द्रव्यवान्·कीर्तियुक्त·ऐसा श्रवणनक्षत्रमे होताहै·दानशूर·अभिमानी·शूर·गा
यनप्रिय·धनलोभी·ऐसा धनिष्ठानक्षत्रमे होताहै·॥१२॥ निष्ठुरभाषणकर्त्ता·विप
त्तिव्यसनी·शत्रुहंता·साहसकर्मकर्त्ता·दुराराध्य (कोई उससे मेल करसक्ता
नही·)

यद्यपि सुहृत्प्रियः स्त्रीजितधनपटुसत्यतान्वा ॥१२॥ वक्ता सुखी प्रजा
वान् जितशत्रुर्धार्मिको द्वितीयासु ॥ संपूर्णाङ्गः सुभगः शूरः शुचि
रर्थवान् पौष्णे ॥१४॥ इति नक्षत्रजातकं ॥ अथ राशिप्रविभागः ॥
अश्विन्योथ भरण्यो बहुलापादश्च कीर्त्यते मेषः ॥ वृषभो बहुला
शेषं रोहिण्यर्धं च मृगशिरसः ॥१॥ मृगशिरसोर्धं रौद्रं पुनर्वसोश्चां
शकत्रयं मिथुनं ॥ पादश्च पुनर्वसोः सतिष्योऽश्लेषा च कर्कटकः ॥२॥
॥ सिंहोथ मघा पूर्वा च फल्गुनी पाद उत्तरायाश्च ॥ तत्परिशेषं हस्त
श्चित्राद्यर्धं च कन्याख्यः ॥ ३॥ तौलिनि चित्रान्त्यार्धं स्वातिः पादत्रयं
विशाखायाः ॥ अलिनि विशाखापादस्तथानुराधान्विता ज्येष्ठा ॥४॥
मूलमषाढा पूर्वा प्रथमश्चाप्युत्तरांशको धन्वी ॥ मकरस्तत्परिशेषं
श्रवणः पूर्वं धनिष्ठार्धं ॥५॥ कुंभोंत्यधनिष्ठार्धं शतभिषगंशत्रयं च पू
र्वायाः ॥ भद्रपदायाः शेषं तथोत्तरा रेवती च झषः ॥६॥ अश्विनीपित्र्यमू
लाद्या मेषसिंहहयादयः ॥ विषमर्क्षाण्निवर्तन्ते पादवृद्ध्या यथोत्तरं ॥७॥

---

ऐसा शततारका नक्षत्रमे होता है. दुःखी. स्त्रीने जीता है धन जिस्का ऐसा. कुशल. लो
भी. ऐसा पू० भा० नक्षत्र मे होता है ॥१३॥ वक्ता. सुखी. पुत्रपौत्रसे युक्त. शत्रुको जीत
नेवाला. धार्मिक. ऐसा उ० भा० नक्षत्र मे होता है. अविकलशरीर. सौभाग्यवान्. शूर.
पवित्र. द्रव्यवान्. ऐसे रेवती नक्षत्र मे जन्म होय तो फल होते हैं ॥१४॥ इति
बृहत्संहितायां नक्षत्रजातकनामैकोत्तरशततमोध्यायः ॥१०१॥ अथ राशिवि
भागः ॥ अश्विनी. भरणी. कृत्तिका का प्रथम पाद मेषराशी होती है. कृत्तिकाके ती
न चरण. रोहिणी. मृगशीर्षका पूर्वार्ध वृषभराशि होती है ॥१॥ मृगशीर्षके उत्तरा
र्ध. आर्द्रा. पुनर्वसूके प्रथम तीन चरण मिथुनराशि होती है. पुनर्वसूका अंत्य च
रण. पुष्य. आश्लेषा. कर्कराशि होती है ॥२॥ मघा. पूर्वा. उत्तराका प्रथम चरण
सिंहराशि. उत्तराके तीन चरण. हस्त. चित्राका पूर्वार्ध. कन्याराशि होती है ॥३॥
चित्राका अंत्यार्ध. स्वाती. विशाखाके प्रथम तीन चरण तुलाराशि. विशाखाका अं
त्यचरण. अनुराधा. ज्येष्ठा. वृश्चिकराशि ॥४॥ मूल. पू० षा० उत्तराषा० का प्रथ
म चरण. धनराशि. उ० षाढाके अंत्य तीन चरण. श्रवण. धनिष्ठाका पूर्वार्ध. मक
रराशि ॥५॥ धनिष्ठा अंत्य अर्ध. शततारका. पू० भाद्रपदाका प्रथम तीन चरण. कुं
भराशि. पूर्वाभाद्रपदका अंत्य चरण. उत्तराभाद्रपदा. रेवती. ऐसे मीनराशि हो
ती है ॥६॥ अश्विनी. मघा. मूल. यह नक्षत्र से क्रमसे मेष. सिंह. धन. यह राशी वि
षम (तिसरे. पांचवे और सप्तम) नक्षत्र पर उत्तरोत्तर नवांशसे १ पद २ पद

नाइतिराशिप्रविभागाः॥ अथविवाहपटलं॥ मूर्तौकरोतिदिनकृद्विध वांकुजश्चराहुर्विपन्नतनयांरविजोदरिद्रां॥ शुक्रःशशांकतनयश्च गुरुश्चसाध्वीमायुःक्षयंप्रकुरुतेथविभावरीशः॥१॥कुर्वंतिभास्क रशनैश्चरराहुभौमादारिद्र्यदुःखमतुलंनियतंद्वितीये॥ वित्तेश्व रीमविधवांगुरुशुक्रसौम्यानारींप्रभूततनयांकुरुतेशशांकः॥२॥ सूर्येंदुभौमगुरुशुक्रबुधास्तृतीयेकुर्युःसदाबहुसुतांधनभागिनीं च॥व्यक्तंदिवाकरसुतःसुभगांकरोतिमृत्युंददातिनियमात्खलुसैं हिकेयः॥३॥स्वल्पंपयःस्रवतिसूर्यसुतेचतुर्थेदौर्भाग्यमुष्णकिरणः कुरुतेशशीच॥ राहुःसपत्न्यमपिचक्षितिजोल्पवित्तांदद्याद्भृगुःसु रगुरुश्चबुधश्चसौख्यं॥४॥नष्टात्मजांरविकुजौखलुपंचमस्थौचन्द्रा त्मजोबहुसुतांगुरुभार्गवौच॥राहुर्ददातिमरणंशनिरुग्ररोगंक न्याप्रसूतिमचिरात्कुरुतेशशांकः॥५॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

२पाद४पाद-इसप्रमाणसे) समाप्तहोतेहै-(कृत्तिका१पादमेष-मृग२पादवृष भ-पुनर्वसु३पादमिथुन-आश्लेषा४पाद-कर्क-उत्तरा१पाद-सिंह-चित्रा२पाद कन्या-विशाखा३पाद तुला-ज्येष्ठा४पाद वृश्चिक-उ०षा०१पाद धन-धनिष्ठा२ पाद मकर-पू०भा०३पाद कुंभ-रेवती४पाद मीन)॥७॥ इतिबृहत्संहितायांरा शिप्रविभागोन्याममद्युत्तरशततमोध्यायः॥१०२॥अथविवाहपटलं॥ विवाहमुहू र्तलग्नमेसूर्य अथवा मंगलहोयतोकन्याविधवाहोतीहै-राहुहोयतोमृतपुत्रा-शनिहोयतोनिर्धना-शुक्र-बुध-गुरु-यहहोयतो पतिव्रता-चंद्रहोयतोआयुष्य नाश-यहफलहोतेहै-॥१॥ विवाहलग्नसेद्वितीयस्थानमे सूर्य-शनि-राहु-मंगल इनमेकेहोयतो बहुतदारिद्र्यदुःखहोताहै-गुरु-शुक्र-बुध-इनमेसेहोयतो धनयु क्त और सौभाग्यवतीहोतीहै- चंद्रहोयतोबहुतपुत्रवतीकन्याहोतीहै-॥२॥वि वाहलग्नसे तृतीयस्थानमे सूर्य-चंद्र-मंगल-गुरु-शुक्र-बुध-इनमेसेकोईहोय तो बहुपुत्रवती और धनवती ऐसी कन्याहोतीहै-शनिहोयतोसौभाग्ययुक्त हो तीहै-राहुहोयतोनियमसेमृत्युहोताहै-॥३॥ विवाहलग्नसे चतुर्थस्थानमे शनि होयतो अल्पदुग्धवतीहोतीहै-सूर्य अथवा चंद्रहोयतो दुर्भगत्वहोताहै- राहु होयतोशत्रुत्वहोताहै-मंगलहोयतोअल्पधनवतीहोतीहै-शुक्र-गुरु-बुध-इ नमेसेकोईहोयतोसौख्ययुक्तकन्याहोतीहै-॥४॥विवाहलग्नसे पंचमस्थानमेसू र्यकिंवामंगलहोयतोनष्टपुत्रा-बुध-गुरु-शुक्र-इनमेसेहोयतोबहुसुता-राहुहो यतो मरण।शनिहोयतोभयंकररोग-चंद्रहोयतोकन्याप्रसूति-यहफलहोतेहैं-॥५॥

[illegible]शनिदिवाकरराहुजीवाः कुर्युः कुजश्च सुभगांच सुखेसुभक्ताम्॥ चंद्रश्चकरोतिविधवांसुशनादरिद्रांमृद्वींशशांकतनयःकलहप्रियांच॥६॥सौरारजीवबुधराहुरवींदुशुक्राः कुर्युःप्रसह्यखलुसप्तमराशिसंस्थाः॥ वैधव्यबंधनवधक्षयमर्थनाशंव्याधिप्रवासमरणानियथाक्रमेण॥७॥स्थानेष्टमेगुरुबुधौनियतंवियोगंमृत्युंशशीभृगुसुतश्चतथैवराहुः॥ सूर्यःकरोत्यविधवांसरुजंमहीजःसूर्यात्मजोधनवतींपतिवल्लभांच॥८॥धर्मेस्थिताभृगुदिवाकरभूमिपुत्राजीवश्चधर्मनिरतांशशिजस्त्वरोगां॥ राहुश्चसूर्यतनयश्चकरोतिवंध्यांकन्याप्रसूतिमटनंकुरुतेशशांकः॥९॥ राहुर्नभस्तलगतोविधवांकरोतिपापेरतांदिनकरश्चशनैश्चरश्च॥ मृत्युंकुजोर्थरहितांकुलटांचचंद्रःशेषाग्रहाधनवतींसुभगांचकुर्युः॥१०॥आयेरविर्बहुसुतांधनिनींशशांकःपुत्रान्वितांक्षितिसुतोरविजोधनाढ्यां॥ आयुष्मतींसुरगुरुःशशिजःसमृद्धांराहुःकरोत्यविधवांभृगुरर्थयुक्तां॥११॥

विवाह० षष्ठस्थानमे शनि·सूर्य·राहु·गुरु·मंगल इन्मेसेकोई होयतो सुभगा और सास ससुर इत्यादिकी भक्त ऐसी कन्याहोतीहै· चंद्रहोयतो·विधवा·शुक्रहोयतो दरिद्रा·बुधहोयतो सधना और कलहप्रिया·ऐसी कन्याहोतीहै ॥६॥विवाह०से सप्तमस्थानमेशनि·मंगल·गुरु·बुध·राहु·सूर्य·चंद्र·शुक्र·यह ग्रह होयतो क्रमसे वैधव्य·बंधन·वध·नाश·अर्थनाश·रोग·प्रवास·मरण यह फलहोतेहै·॥७॥विवाह० अष्टमस्थानमे गुरुकिंवा बुधहोयतो निरंतर स्त्रीपुरुषका वियोगहोताहै·चंद्र·शुक्र·राहु·यहहोयतोमृत्युहोताहै·सूर्यहोयतो सौभाग्यवती·मंगलहोयतोरोगयुक्त·शनिहोयतो धनवती और पतिप्रिय·ऐसी होतीहै·॥८॥विवाहलग्नसे नवमस्थानमे शुक्र·सूर्य·मंगल·गुरु·यह होयतो धर्मपर·बुधहोयतो रोगरहित राहु किंवा शनिहोयतो वंध्या·चंद्रहोयतो कन्याप्रसूति और भ्रमणशील होतीहै·॥९॥ विवाहलग्नसे दशमस्थानमे राहु होयतो·विधवा·सूर्य किंवा शनिहोयतो पापरत·मंगलहोयतो मृत्यु·चंद्रहोयतो द्रव्यरहित और कुलटा (जारिणी) शेष रहे ग्रह·(बुध·गुरु·शुक्र·)होयतो धनवती और सुभगा·ऐसी कन्याहोतीहै·॥११॥विवाहलग्नसे एकादशस्थानमे सूर्यहोयतो बहुपुत्रवती·चंद्रहोयतो धनयुक्त·मंगलहोयतो पुत्रयुक्त·शनिहोयतो धनयुक्त·गुरुहोयतो चिरजीवी·बुधहोयतो धनयुक्त· राहुहोयतो अविधवा·शुक्रहोयतो द्रव्ययुक्त·ऐसी कन्याहोतीहै·॥११॥ [illegible]॥

अंत्ये गुरुर्धनवती दिनकृद्दरिद्रा चंद्रे धनव्ययकरी कुलटा च राहौ ॥
साध्वी भृगौ शशिसुते बहुपुत्रपौत्रा पानप्रसक्तहृदया रविजार्कि कु
जन्मा ॥१२॥ गोपैर्यष्ट्याहतानां खुरपुटदलिता या तु धूलिर्दिनांते
सोद्वाहे सुंदरीणां विपुलधनसुतारोग्यसौभाग्यकर्त्री ॥ तस्मिन्का
ले न च ऋक्षं न च तिथि करणं नैव लग्नं न योगः ख्यातः पुंसां सुखार्थं शम
यति दुरितान्युत्थितं गोरजस्तु ॥१३॥ इति विवाहपटलं ॥ अथ ग्र
हगोचराध्यायः ॥ प्रायेण सूत्रेण विना कृतानि प्रकाशमर्थाणि चिरं
तनानि ॥ रत्नानि शास्त्राणि च योजितानि नवैर्गुणैर्भूषयितुं क्षमा
णि ॥१॥ प्रायेण गोचरो व्यवहार्यो ऽतस्तत्फलानि वक्ष्यामि ॥ नाना
रत्नैस्तन्नो मुखचपलत्वं क्षमंत्वार्याः ॥२॥ मांडव्यगिरं श्रुत्वा न मदी
यां रोचते ऽथवा नैवं ॥ साध्वीनयानपुंसां प्रिया यथा स्याज्जघनचपला ॥
॥३॥

---

विवाहलग्नसे द्वादशस्थानमे गुरु होय तो धनयुक्त· सूर्य होय तो दरिद्री· चंद्र होय
तो द्रव्यनाश करनेवाली· राहु होय तो जारिणी· शुक्र होय तो पतिव्रता· बुध हो
य तो बहुत पुत्र पौत्र इस्से युक्त· शनि किंवा मंगल होय तो मद्यपानरत· ऐसी क
न्या होती है· ॥१२॥ गौ चरावनेवालेने लाठीसे ताडित जो गौ उनके खुराग्रसे
विदारित जो सायंकालमे धूली वह (सो गोधूली मुहूर्त) कन्याके विवाहमे ब
हुत धन पुत्र आरोग्य सौभाग्य· इस्को करती है· वह गोधूलिमुहूर्तमे विवा
होक्त नक्षत्र· तिथि· करण· लग्न· योग· यह देखना नही· वह मुहूर्त पुरुषके
सुखार्थ कथन किया है· उस मुहूर्तमे उत्पन्न दोष गोरज नाश करते है· ॥१३
॥ ॥इति बृहत्संहितायां विवाहपटलं नाम त्र्युत्तरशततमोऽध्यायः॥१०३॥
॥अथ ग्रहगोचराध्यायः॥ बहुत करके सूत्रसे (सूतसे) रहित· प्राचीन (जीर्ण
प्रकट छिद्र) ऐसे रत्न नवीन गुणसे (सूतसे) युक्त करे तो· शोभाके विषे योग्य हो
ते है· तैसे बहुत करके सूत्रसे रहित· प्रकाशित है· अपशब्द (अशुद्ध) जिनके
ऐसे प्राचीन शास्त्र नवीन श्रवणीय वस्तु शब्दरचनासे योजना किया रहे तो प
ठन करनेको योग्य होता है· ॥१॥ बहुत करके ग्रहगोचरका (ग्रह देखनेका व्यव
हारमे उपयोग बहुत होता है· इसवास्ते उस्के फल अनेक वृत्तसे कहते है· यह
हमारे मुखचपलत्वको (बहुभाषणको) पंडित सहन करें· (यह आर्याका मुख
चपला छंद यह भी इस्मे सूचना किया तैसे आगे भी है·) ॥२॥ मांडव्य ऋषीके
भाषण श्रवण करके हमारा भाषण लोकको प्रिय लगे न लगे· अथवा ऐसा न
होय· जैसी जघनचपला (वेश्या) प्रिय होती है तैसे पतिव्रता स्त्री पुरुषको प्रि

सूर्यः षट्त्रिदशस्थितस्त्रिदशषट्सप्ताद्यगश्चन्द्रमाजीवः सप्तनव
द्विपंचमगतोवक्रार्कजौषट्त्रिगौ॥सौम्यःषड्द्विचतुर्दशाष्टमगतःस
र्वेप्युपांतेशुभाःशुक्रःसप्तमषड्दशार्क्षसहितःशार्दूलवत्त्रासकृत्
॥४॥जन्मन्यायासदोर्कःक्षपयतिविभवान्कोष्ठरोगाध्वदानाविन
भ्रंशंद्वितीयेदिशतिचनसुखंवंचनांदृग्रुजंच॥स्थानप्राप्तिंतृतीये
धननिचयमुदाकल्यकृच्चारिहंतारोगान्धत्तेचतुर्थेजनयतिचमुहुः
स्रग्धराभोगविघ्नं॥५॥पीडाःस्युःपंचमस्थेसवितरिबहुशोरोगारि
जनिताःषष्ठेर्कोहंतिरोगान्क्षपयतिचरिपून्छोकांश्चनुदति॥अ
ध्वानंसप्तमस्थोजठरगदभयंदैन्यंचकुरुतेरुक्कासौचाष्टमस्थेभ
वतिसुवदनानस्यापिवनिता॥६॥रवावापद्दैन्यरुग्नवमेवि
त्तचेष्टाविरोधोजयंप्राप्नोत्युग्रंदशमगृहगेकर्मसिद्धिंक्रमेण॥ज
यंस्थानंमानंविभवमपिचैकादशेरोगनाशःस्रग्वृत्तानांचेष्टाभवति
सफलाद्वादशेनेतरेषां॥७॥

---

यहोनीनहीं-(ऐसास्वभावहीहै-इसवास्तेहमारेनीरस यह भाषण प्रियहोगा ऐसा
अभिप्रायजानना-॥३॥ सूर्यजन्मराशीसे ६।३।१० यहस्थानमेशुभहोताहै-चंद्र ३।१०
।६।७।१ यहस्थानमेशुभ-गुरु ७।९।२।५ यहस्थानमेशुभ-मंगल औरशनि ६।३।स्था
नमेशुभ-बुध ६।२।४।१०।८ स्थानमेशुभ-सूर्यादिसर्वग्रह एकादश शुभहोतेहैं-शु
क्र ७।६।१० स्थानमेहोयतो सिंहकेसमानत्रासकरताहै-इसवास्ते अशुभहै-अर्था
त् अन्यस्थानमेशुभहै-(यहशार्दूलविक्रीडितवृत्त-)॥४॥ सूर्यजन्मराशीमेहोयतो
उपद्रवदेताहै-ऐश्वर्यनाशकरताहै-उदररोग औरमार्गगमन करताहै-जन्मराशी
सेद्वितीयस्थानमेहोयतोद्रव्यनाशकारक-सुखदेतानहीं-वंचना औरनेत्ररोगदेता
है-तृतीयस्थानमेहोयतोस्थानलाभ-द्रव्यसमूहसे आनंदऔर अरोगित्वकरता
है-शत्रूकानाशकरताहै-चतुर्थस्थानमेहोयतोरोगकरताहै-वारंवारस्त्रीसंभोगमे
विघ्नउत्पन्नकरताहै-(यहस्रग्धरावृत्त)॥५॥ सूर्यपंचमस्थानमेहोयतो रोग औरशत्रू
सेबहुतपीडाहोतीहै-सूर्यषष्ठस्थानमेहोयतो रोगनाशशत्रुक्षय-शोकनाश करताहै
सूर्यसप्तमस्थानमेहोयतो मार्गगमन-उदररोगकाभय-दैन्यकरताहै-सूर्यअष्टम
स्थानमेहोयतोरोगऔरभयहोताहै-अपनीस्त्रीवहशोभनमुखी(आनंदयुक्त)
होतीनहीं-(यहसुवदनावृत्त-)॥६॥ सूर्यनवमस्थानमेहोयतो विपत्ति-दैन्य-रोग
चित्तव्यापारकानाश होताहै-सूर्यदशमस्थानमेहोयतो उत्तमजय-क्रमसेकार्यकी
सिद्धि-प्राप्तहोतीहै-सूर्यएकादशस्थानमेहोयतो जय-स्थान-मान-ऐश्वर्य-रोगनाश-

शशीजन्मन्यन्नप्रवरशयनाच्छादनकरो द्वितीये मानार्थौ स्खलयति
सविघ्नश्च भवति॥ तृतीये वस्त्रस्त्रीधननिचयसौख्यानि लभते चतुर्थे वि
श्वासः शिखरिणि भुजंगेन सदृशः॥८॥ दैन्यं व्याधिं शुचमपि शशी पंच
मे मार्गविघ्नं षष्ठे वित्तं जनयति सुखं शत्रुरोगक्षयं च॥ यानं मानं शयन
मशनं सप्तमे वित्तलाभं मंदाक्रांते फणिनि हिमगो चाष्टमे भीर्न कस्य॥
९॥ नवमगृहगो बंधोद्वेगश्रमोदररोगकृद्दशम भवने चाज्ञाकर्म प्रसि
द्धिकरः॥ उपचयसुहृत्संयोगार्थ प्रमोदमुपात्यगो वृषभचरितान्दोष
नंते करोति हि सव्ययान्॥१०॥ कुजेभिघातः प्रथमे द्वितीये नरेंद्रपीड
कलहारि दोषैः॥ भृशं च पित्तानल रोगचौरै रुपेंद्रवज्रप्रतिमोपि यःस्या
त्॥११॥ तृतीयगश्चोरकुमारकेभ्यो भौमः सकाशात्फलमादधाति॥
प्रदीप्तिमाज्ञां धनमौर्णिकानि धात्वाकराख्यानि किलापराणि॥१२॥ ॥

---

होताहै· द्वादशस्थानमे होयतो सुखभाव पुरुषके कर्म सफल होतेहै· अन्यके सफल
होते नही· (स्रुतबंद)॥७॥ चंद्रजन्मराशीमे होयतो भोजन उत्तमशय्या· वस्त्र
यह प्राप्त होताहै· चंद्र द्वितीयस्थानमे होयतो मान और द्रव्य इनका नाश करताहै·
और विघ्न होतेहै· चंद्र तृतीयस्थानमे होयतो वस्त्र· स्त्री· द्रव्यसमूह· सौख्य प्रा
प्त होताहै· चंद्र चतुर्थस्थानमे होयतो पर्वतपर सर्प रहते तहांजानेका जैसा अवि
श्वास तैसा· लोकका अविश्वास होताहै· (यह शिखरिणी वृत्त)॥८॥ चंद्र जन्म
राशीसे पंचमस्थानमे होयतो दैन्य व्याधि· शोक· मार्गमे विघ्न· होतेहै· चंद्र षष्ठ
स्थानमे होयतो द्रव्य· सुख· शत्रु· रोग इनका नाश होताहै· चंद्र सप्तमस्थानमे हो
यतो वाहन· पूजा· शय्या· भोजन· द्रव्य इनका लाभ होताहै· चंद्र अष्टमस्थान
मे होयतो अल्पजोरसे सर्प धरे तो किसको भय कर्त्ता नही· अर्थात् सर्वको भय क
रताहै· तैसे भय करताहै· (यह मंदाक्रांता वृत्त)॥९॥ चंद्र नवमस्थानमे होयतो
बंधन· उद्वेग· श्रम· उदररोग· यह करताहै· चंद्र दशमस्थानमे होयतो प्रभुत्व
और कर्मसिद्धि· यह करताहै· एकादशस्थानमे होयतो वृद्धि· मित्रप्राप्ति· अर्थ
लाभ आनंद करताहै· चंद्र द्वादशस्थानमे होयतो वृषभके पादताडन· शृंगसे ता
डन इ· दुःख और व्यय करताहै· (यह वृषभचरित वृत्त)॥१०॥ मंगल जन्मरा
शीमे होयतो उपद्रव होताहै· मंगल द्वितीयस्थानमे होयतो राजासे पीडा· कलह
इ· दोषसे और पित्त· अग्नि· रोग· चोर इनसे अत्यंत उपद्रव जो भी नारायण
और वज्र इनके समान होय तथापि होगा· (यह उपेंद्रवज्रा वृत्त)॥११॥ मंगल तृ
तीयस्थानमे होयतो चोर और कुमार (८ वर्षतक) इनसे शुभफल करताहै· कांति·

भवति धरणिजे चतुर्थे ज्वरजठरगदास्रजुद्भवः ॥ कुपुरुषजनिताच्च संगमात्प्रसभमपिकरोतिचाशुभं ॥१३॥ रिपुगदक्रोधभयानि पंचमे तनयकृतान्यशुचो महीसुते ॥ द्युतिरपिनास्यचिरं भवेत्स्थिरा शिरसिकपेरिवमालतीकृता ॥१४॥ रिपुभयकलहैर्विवर्जितः सकनकविद्रुमताम्रकागमः ॥ रिपुभवनगते महीसुते किमपरवक्त्रविकाररमीक्षते ॥१५॥ कलत्रकलहाक्षिरुग्जठररोगकृत्सप्तमेस्रुतस्रुतनुक्षितःक्षपितवित्तमानोष्टमे ॥ कुजेनवमसंस्थितेपरिभवार्थनाशादिभिर्विलंबितगतिर्भवत्यबलदेहधातुक्षयैः ॥१६॥ दशमगृहगते समं महीजे विविधधनाप्तिरुपात्यगजयश्च ॥ जनपदमुपरिस्थितश्च भुंक्ते वनमिवषट्चरणः सुपुष्पिताग्रं ॥१७॥ नानाव्ययैर्हृदयगे महीसुते संताप्यते नर्थशतैश्च मानवः ॥ स्त्रीकोपपित्तैश्च स नेव वेदनैर्यःपीड्यंशाभिजनेन गर्वितः ॥१८॥

---

प्रभुत्व·धन·कंबलादिवस्त्र·सुवर्णादि धातूके उत्पत्तिस्थान और अन्यस्थान देताहै·(उपजातिवृत्त)॥१२॥ मंगल चतुर्थस्थानमेहोयतो ज्वर·उदररोग·रक्तस्राव·यह उत्पन्न होतेहैं· और दुष्टपुरुषके संगसे बहुत अकल्याण भीहोताहै (यह प्रमभवृत्त)॥१३॥ मंगल पंचमस्थानमेहोयतो शत्रु·रोग·क्रोध·भय·पुत्रसेकिये शोक· यह होतेहैं· औरजैसे वानरके मस्तकपर रक्खा मालतीका पुष्पचंचल स्थिररहतानहीं तैसे इसके तेजभी चिरकालस्थिररहतानहीं· करिके तेजहीन होताहै·(यह मालतीवृत्त)॥१४॥ मंगल षष्ठ स्थानमेहोयतो शत्रु·भय·कलह इनसेरहितहोताहै· और सुवर्ण·मूंगा·तांबा इनकी प्राप्ति होतीहै ऐसा पुरुष अन्यका दुर्मुख कभीहीदेखेगा नहीं·(यह अपरवक्त्रवृत्त)॥१५॥ मंगलसप्तम स्थानमेहोयतो स्त्रीबराबर कलह·नेत्ररोग उदररोग·यह होताहै· मंगल अष्टम स्थानमेहोयतो स्रवितरक्तसे विवर्ण (तेजरहित) धनऔर मानइनकरके रहित होताहै· मंगलनवमस्थानमेहोयतो· पराजय·द्रव्यनाश· पीडा इत्यादिकसे और निर्बलत्वसे औरशरीरकेधातुक्षयसे विलंबित (विप्रयुक्त) है गति (गमन) जिसकी ऐसा होताहै·(यह विलंबितगतिवृत्त)॥१६॥ मंगल दशमस्थानमेहोयतो सम (बहुत शुभ और बहुत अशुभ नहीं) होताहै· मंगल एकादशस्थानमे होयतो नानाप्रकारके द्रव्यकी प्राप्ति और जय होताहै और श्रेष्ठत्वसे सर्वलोकके मस्तकपर रहके भ्रमर बहुत फूले है अग्र जिनके ऐसे अरण्य को जैसे भोगकरताहै तैसे देशका उपभोग करताहै·(यह पुष्पिताग्रवृत्त)॥१७॥ मंगल द्वादशस्थानमे होयतो अनेक

दुष्टवाक्यपिशुनाहितभेदैर्बुधनैःसकलहैश्चहृतस्वः॥जन्मगेश
शिसुतेपथिगच्छन्स्वागतंनपिकुशलंनशृणोति॥१९॥परिभवोध
नगतेधनलब्धिःसहजगेशशिसुतेसुहृदाप्तिः॥नृपतिशत्रुभय
शंकितचित्तोद्रुतपदंव्रजतिदुश्चरितैःस्वैः॥२०॥चतुर्थगेस्वजन
कुटुंबवृद्धयो धनागमोभवतिचशीतरश्मिजे॥सुतस्थितेतनयक
लत्रविग्रहोनिषेवतेनचरुचिरामपिस्त्रियं॥२१॥सौभाग्यंविजय
मथोन्नतिंचषष्ठेवैवर्ण्यंकलहमतीवसप्तमेज्ञः॥मृत्युस्थेसुतज
यवस्त्रवित्तलाभानैपुण्यंभवतिमतिप्रहर्षणीयं॥२२॥विघ्नकारी
नवमःशशिपुत्रःकर्मगतोरिपुहाधनदश्च॥सप्तमदंशयनंचविध
त्तेतगृहदीर्थकथास्तरणंच॥२३॥धनसुखसुतयोषिन्मित्रवाह्या
प्तितुष्टिस्तुहिनकिरणपुत्रेलाभगेमृष्टवाक्यः॥रिपुपरिभवरोगैः
पीडितोद्वादशस्थेनसहतिपरिभोक्तुंमालिनीयोगसौख्यं॥२४॥

---

प्रकारके खर्चसे और शतशः अनर्थसे (उपद्रवसे) मनुष्य संतापपावताहै· और
श्रेष्ठवंशकेसंबधसेगर्वित भीमनुष्य स्त्रीका कोप·पित्त·नेत्रपीडा इसकरके संताप
प्राप्तहोताहै·(यहइंद्रवंशवृत्त·)॥१८॥ बुधजन्मराशीमेहोयतो दुष्टवाक्य·दुर्जे
न·शत्रु·भेद·(फूट) बंधन·कलह·इनकरकेनिर्धनहोताहै· औरमार्गमेजातेर
हते·खुसीसेआये·ऐसेकहाभी कोई श्रवणकरतेनही·(यहस्वागतावृत्त·)॥१९
॥बुधद्वितीयस्थानमेहोयतोपराजय औरधनलाभहोताहै· बुधतृतीयस्थानमे
होयतोमित्रप्राप्तिहोतीहै· अपनेबुरेआचरणसे औरराजा·शत्रु इनकेभयसेशंकि
तचित्तरहतेशीघ्रगमनकरताहै·(अपराधीइसवास्ते भागताहै)(यहद्रुतपदवृ
त्त·)॥२०॥बुधचतुर्थस्थानमेहोयतोस्वजनऔरकुटुंबइनकीवृद्धिऔरद्रव्यलाभ·
यहहोताहै· बुधपंचमस्थानमेहोयतो पुत्र और स्त्री इनकेसाथकलहहोताहै
औरसुंदरभीस्त्रीकाग्रहणचित्तोद्वेगकेवास्तेकरतानही·(यहरुचिरावृत्त·)॥२१
॥बुधषष्ठस्थानमेहोयतोसौभाग्य·विजय·उन्नति·होतेहै बुधसप्तमस्थानमेहोय
तोविवर्णत्व·कलह·यहअतिशयहोताहै· बुधअष्टमस्थानमेहोयतो सुत·जय·व
स्त्र·द्रव्यइनकालाभहोताहै और·जिसकरकेबुद्धिको आनंदहोताहै ऐसेनिपुण
त्वहोताहै·(यहप्रहर्षणीयवृत्त·)॥२२॥ बुधनवमस्थानमेहोयतो सर्वकार्यकोविघ्नक
रताहै· बुधदशमस्थानमेहोयतोशत्रुहंता और धनदाता होताहै· स्त्री पुरुष·प्य
स्त्रीयहइसकोदेताहै· अनेकरंगकेकंबलके आस्तरण(शय्या) यहदेताहै(यहदो
धकवृत्त·)॥२३॥ बुधएकादशस्थानमेहोयतो धन·सुख·पुत्र·स्त्री·मित्र·अश्वा

जीवेजन्मन्यपगतधनधीः स्थानभ्रंशोबहुकलहयुतः॥ प्राप्यार्थैः
र्योन्यथीरपिकुरुतेकांतास्यांभोजेभ्रमरविलसितं॥२५॥ स्थानभ्रंशा
त्कार्यविघाताच्चतृतीयेनैकैःक्लेशैर्बंधुजनोत्थैश्चचतुर्थे॥ जीवे
शांतिंपीडितचित्तश्चसविंदेन्नैवग्रामेनापिवनेमत्तमयूरे॥२६॥ ज
नयतिचतनयभवनमुपगतःपरिजनशुभसुतकरितुरगवृषान्॥
सकनकपुरगृहयुवतिवसनकृन्मणिगुणनिकरकृदपिविबुधगुरुः
॥२७॥ नसखीवदनंतिलकोज्ज्वलंनभवनंशिखिकोकिलनादितं॥
हरिणप्लुतशावविचित्रितंरिपुगतेमनसःसुखदंगुरौ॥२८॥ त्रिद
शगुरुःशयनंरतिभोगंधनमशनंकुसुमान्युपवाह्यं॥ जनयतिस
प्तमराशिमुपेतोललितपदांचगिरंधिषणांच॥२९॥ बंधंव्याधिंचा
ष्टमेशोकमुग्रंमार्गेक्लेशंमृत्युतुल्यांश्चरोगान्॥ नैपुण्याज्ञापुत्रक
र्मार्थसिद्धिंधर्मेजीवःशालिनीनांचलाभं॥३०॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

दिवाहन-इनकेलाभसेसंतोषहोताहै औरसुंदरभाषणहोतेहैं- बुधद्वादशस्था
नमेंहोयतो शत्रु-पराजय-रोग-इनकरकेपीडितहोतेरहतेस्त्रीभोगकेसौख्यभो
गनेकेवास्तेसमर्थहोतेनही-(यहमालिनीवृत्त-)॥२४॥ गुरुजन्मराशीमेंहोयतो
धनऔरबुद्धि-जातीहै- स्थानच्युतऔरबहुतकलहयुक्तहोताहै- गुरुद्वितीयस्था
नमेंहोयतोधनप्राप्तहोयके- पुनीभीस्त्रीकेमुखकमलमेंभ्रमरकेसमानविलसि
त-(विलासचुंबनादि-)करताहै-(यहभ्रमरविलसितवृत्त-)॥२५॥ गुरुतृतीय-
स्थानमेंहोयतोस्थानभ्रंशऔरकार्यनाशइसकरकेपीडितचित्तहोताहै- गुरु
चतुर्थस्थानमेंहोयतोबंधूजनसेभएअनेकक्लेशसेपीडितचित्तहोयके गांवमें
किंवामत्तमयूरऐसेवनमेंभीशांतीकोप्राप्तहोतानही-(यहमत्तमयूरवृत्त-)॥२६॥
गुरुपंचमस्थानमेंहोयतोसेवकजन-धर्मादिशुभकर्म-पुत्र-गज-अश्व-बैलइन
कोउत्पन्नकरताहै-(लाभहोताहै-)सुवर्णयुक्तनगर-गृह-स्त्री-वस्त्र-इनकोकरता
है-रत्नऔरविद्यादिगुणकरताहै- कहिये यहसर्वकालाभहोताहै-(यहमणिगु
णनिकरवृत्त-)२७॥ गुरुषष्ठस्थानमेंहोयतोतिलकसे उज्ज्वल ऐसेसखीके(स्त्री
के)मुखऔरमोर-कोइलइनकेशब्दसेनादयुक्त-हरिणकेउड्डानमारनेवालेबा
लकसेशोभितऐसाअरण्यभी-मनकोसुखदेनेवालाहोतानही-(यहहरिणप्लुत
वृत्त-)॥२८॥ गुरुसप्तमस्थानमेंहोयतो शय्या-रतिसुख-धनभोजन-पुष्प-अश्वा
दिवाहन-सुंदरपदयुक्तवाणी-बुद्धि-इनकोउत्पन्नकरताहै-(देताहै)(यहललित
पदवृत्त-)॥२९॥ गुरुअष्टमस्थानमेंहोयतो-बंधन-पीडा-बडाशोक-मार्गमेंक्लेश-
मृत्युतुल्यरोगहोतेहैं-

स्थानमानं धनं हाद्यपार्श्वगस्तत्त्वं दोभवविलासभगो गुरुर्भद्रास्ये ॥ धनिषिलोभ दुःखभागयाति मद्यपिजनो रथोद्धतः ॥ ३१ ॥ प्रथमगृहोपगो भृगुसुतः स्मरोपकरणैः सुरभिमनोज्ञगंधकुसुमांबरैरुपनयं ॥ शयनगृहासनाशनयुतस्य चानुकुरुते समदविलासिनीमुखसरोजपट्चरणतां ॥ ३२ ॥ शुक्रे द्वितीयगृहगे प्रसवार्थधान्यभूपाल सन्नतिकुटुंबहितान्यवाप्य ॥ संसेवते कुसुमरत्नविभूषितश्च कामं वसंततिलकद्युतिमूर्धजोपि ॥ ३३ ॥ आज्ञार्थमानास्पदभूतिवस्त्रशत्रुक्षयान्दैत्यगुरुस्तृतीये ॥ धत्ते चतुर्थश्च सुहृत्समाजं रुद्रेंद्रवज्रप्रतिमां च शक्तिं ॥ ३४ ॥ जनयति शुक्रः पंचमसंस्थो गुरुपरितोषं बंधुजनाप्तिं ॥ सुतधनलब्धिं मित्रसहायान्ननवसितत्वं चारिबलेषु ॥ ३५ ॥ षष्ठो भृगुः परिभवरोगतापदः स्त्रीहेतुकं जनयति सप्तमोऽशुभं ॥ यातोऽष्टमं भवनपरिच्छदप्रदो लक्ष्मीवतीमुपनयति त्रियं च सः ॥ ३६ ॥

---

नवमस्थानमेंहो॰ सर्वकार्यकानिपुणत्व प्रभुत्व॰ पुत्र॰ कर्म॰ अर्थ॰ इनकी सिद्धि॰ और शालिनी कहिये धानके उत्तम भूमीका लाभ होताहै॰ (यह शालिनीवृत्त) ॥ ३० ॥ गुरु दशमस्थानमें होयतो स्थान॰ आरोग्य॰ धन॰ इनका नाश करताहै॰ एकादशस्थानमें होयतो॰ स्थान॰ आरोग्य॰ धन॰ यह देताहै॰ गुरु द्वादशस्थानमें होयतो मनुष्य वेगयुक्त रथसे गमनकर्त्ता होयतोभी मार्गमें प्रतिकूल दुःखप्राप्त होताहै॰ (यह रथोद्धतवृत्त) ॥ ३१ ॥ शुक्र जन्मराशीमें होयतो कामोद्दीपन॰ सुगंध॰ मनको आनंदकारक॰ ऐसे गंधद्रव्य॰ पुष्प॰ वस्त्र इनका लाभ होताहै॰ शय्या॰ गृह॰ आसन॰ भोजन॰ इससे युक्त पुरुष मद्यपानसे मत्त स्त्रीके मुखकमलपर भ्रमरके समान होताहै॰ (चुंबन करताहै॰) (यह विलासिनीद्विपदीवृत्त) ॥ ३२ ॥ शुक्र द्वितीयस्थानमें होयतो अपत्य॰ द्रव्य॰ धान्य॰ राजाकी प्रीति॰ कुटुंबके कल्याण इनप्राप्त होयके पुष्प॰ रत्न॰ इनकरके अलंकृत होय वसंतमेंके तिलके पुष्पके कांती समान (श्वेत) केशभया (वृद्ध) भी पुरुष स्त्रीविलासको करताहै॰ (यह वसंततिलकवृत्त॰) ॥ ३३ ॥ शुक्र तृतीयस्थानमें होयतो प्रभुत्व॰ धन॰ मान॰ स्थान॰ ऐश्वर्य॰ वस्त्र॰ शत्रुनाश॰ यह करताहै॰ शुक्र चतुर्थस्थानमें होयतो मित्रप्राप्ति॰ और रुद्र॰ इंद्र॰ वज्र॰ इनके समान शक्ति देताहै॰ (यह इंद्रवज्रवृत्त॰) ॥ ३४ ॥ शुक्र पंचमस्थानमें होयतो बहुत संतोष॰ बंधुजनप्राप्ति॰ पुत्र॰ धन॰ इनका लाभ॰ मित्र॰ सहाय॰ शत्रुसैन्यमें अनवस्था यह होताहै॰ (यह अनवसितवृत्त॰) ॥ ३५ ॥ शुक्र षष्ठस्थानमें होयतो पराजय॰ रोग॰ संताप यह देताहै॰

नवमेतु धर्मवनितासुखभाग्भृगुजैर्दशस्त्वितिनयनकमलेन॥ १६ ॥ एकादशे
च धनकारकत्वान्नियमादपि तादृशाण्यमिवरन् मतेः॥ १७॥ उपांत्य
गो भृगोः सुतः सुहृज्जनान्नगंधदः ॥ धनांबरागमोव्ययेस्थिरस्तु नां व
शामयः॥ १८॥ प्रथमेरविजेविषवह्निहतः स्वजनैर्विपुनः कृतबंध
वधः॥ परदेशमुपैत्यसुहृद्भवनो विमुखार्थसुतो टकदीनमुखः॥ १९
॥ आखशात द्वितीयगृहगेदिनकरतनये रूपसुखापवर्जिततनुर्वि
गतमदबलः॥ अन्यगुणेकृतं वसुचयंनदपिखलुभवत्यविवंशप
त्रपतितं नवहुनचचिरं॥ ५०॥ सूर्यसुतेतृतीयगृहगे धनानिलभतेदा
सपरिच्छदोष्ट्र महिषाश्वकुंजरखरान्॥ सद्मविभूतिसौख्यमविनंप
स्त्युपरमं भीरुरपिप्रशास्त्यधिरिपूंश्चवीरललितैः॥ ५१॥ चतुर्थगृ
हं सूर्यपुत्रेभ्युपेते सुहृद्धिनभार्यादिभिर्विप्रयुक्तः॥ भवत्यस्यसर्वे
त्रचासाधुदुष्टभुजंगप्रपातानुकारंचचित्तं॥ ५२॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शुक्रसप्तमस्थानमेहोयतोस्त्रीकेनिमित्तसे अनिष्टहोताहै· शुक्रअष्टमस्थानमेहोयतो
गृह परिवार देताहै· औरलक्ष्मीयुक्तस्त्रीदेताहै·(यहलक्ष्मीरत्न)॥ १६॥ शुक्रनव
मस्थानमेहोयतो धर्म·स्त्री·सुख इनकाउपभोगकरताहै· औरधन·वस्त्र इनकास
मूहप्राप्तहोताहै· शुक्रदशमस्थानमेहोयतो अपित(अल्प) असरजो भी वोलेतो भी
अपमान·कलह यह निश्चयसेहोताहै·(यहप्रमिताक्षरवृत्त)॥ १७॥ शुक्रएकाद
शस्थानमेहोयतो मित्र·धन·अन्न· सुगंधद्रव्य·यहप्राप्तहोताहै· शुक्रद्वादशस्थान
मेहोयतोद्रव्य·वस्त्र इसकालाभहोताहै औरवस्त्रलाभस्थिरहोतानहीं·(यहस्थि
रवृत्त)॥ १८॥ शनिजन्मराशीमेहोयतो विष·अग्नि इनकरके पीडित· स्वजनसेरहि
त·बंधवध इनसेयुक्त·मित्र·गृह इनकरकेरहित· द्रव्य·पुत्र यह विमुख(नहीं)
परिभ्रमणसे दीनमुख ऐसाहोते परदेशमेप्राप्तहोताहै·(यहतोटकवृत्त)॥ १९
॥ शनिद्वितीयस्थानमेहोयतोरूप·सुख इसे रहित शरीर· गर्वबल·इसेरहित·वि
द्यादिगुणसेकियाद्रव्यसंचय बांसकेपत्रपरगिरेजलकेसमान बहुत नरहते
बहुतदिनभीरहतानहीं·(यहवंशपत्रपतितवृत्त)॥ ५०॥ शनितृतीयस्थानमेहोयतो
धन·दास·परिवार·ऊंट·महिष·अश्व·गज·खर·गृह·ऐश्वर्य· बहुतसुख·रोगनाश·प
राक्रमहोताहै· भीतियुक्तरहते भी मूरके सहायतासे बडेशत्रूकोशिक्षाकरताहै·
(यहललितवृत्त)॥ ५१॥ शनिचतुर्थस्थानमेहोयतो· मित्र·धन·स्त्री·पुत्र इत्यादि
कसेरहितहोताहै· यहपुरुषका चित्त सर्वत्र असाधु·पापानुरत(पापकारी)
सर्पकेगतिसमान(कुटिल)होताहै·(यहभुजंगप्रयातवृत्त)॥ ५२॥ ॥ ॥

सुतधनपरिहीनः पंचमस्थेप्रचुरकलहयुक्तश्चार्कपुत्रे॥ विजितरिपुरोगः षष्ठयातेपिवतिचवनितास्यंश्रीपुटोष्टं॥४३॥ गच्छत्यध्वानंसप्तमेचाष्टमेचहीनस्त्रीपुत्रैःसूर्यजे दीनचेष्टः॥ तद्वद्धर्मस्थेवैरहृद्रोगबंधैर्धर्मोच्छित्तिर्वैश्वदेवीक्रियाद्यः॥४४॥ कर्मप्राप्तिर्दशमेर्थक्षयश्चविद्याकीर्त्योःपरिहाणिश्चसौरे॥ तैक्ष्ण्यंलाभेपरयोषार्थलाभश्चांतेप्राप्नोत्यपिशोकोर्मिमालां॥४५॥ अपिकालमपेक्ष्यचपात्रंशुभकृद्दधात्यनुरूपं॥ नमघौवहुकंकुडवेचविसृजत्यपिमेघवितानः॥४६॥ रक्तैःपुष्पैर्गंधैस्ताम्रैःकनकवृषवकुलकुसुमैर्दिवाकरभूसुनौभक्त्यापूज्याविंदुर्धेन्वासितकुसुमरजतमधुरैःसितश्चमदप्रदैः॥ कृष्णाद्रव्यैःसौरिःसौम्योमणिरजततिलककुसुमैर्गुरुःपरिपीतवैःपीतैःपीडानस्याद्यद्यपतति विशतियदिवाभुजंगविजृंभितं॥४७॥

शनि पंचमस्थान मे होयतो पुत्र और धन इसकरके रहित · बहुतकलह से युक्त · ऐसा होता है · शनि षष्ठस्थान मे होयतो शत्रु और रोग इनकानाशकरके श्रीपुटोष्ठ (शोभाकेपात्रऐसे ओष्ठसेयुक्त) ऐसेस्त्रीके मुखकाचुंबनकरताहै (यहपुटवृत्त)॥ ४३॥ शनिसप्तमस्थानमे होयतो मार्गकेविषे गमनकर्त्ताहै · शनि अष्टमस्थान मे होयतो प्रवासहोताहै · और स्त्रीपुत्रसे रहित · दीन चेष्ट होताहै · शनिनवमस्थान मेहोयतो गमन · स्त्रीपुत्रहीन · दीनचेष्ट ऐसाहोताहै · और वैर · हृद्रोग (चित्तरोग) बंधन इत्यादिकरके वैश्वदेव इत्यादिकर्मका विच्छेद होताहै · (यहवैश्वदेवीवृत्त) ॥४४॥ शनिदशमस्थानमे होयतो कर्मकी प्राप्ती द्रव्यनाश · विद्या और कीर्ति इसकी हानि (नाश) होताहै · शनि एकादशस्थानमे होयतो तीक्ष्ण (उग्र ·) स्वभाव · दुसरे की स्त्री और दुसरे का धन इस्का लाभ · होताहै · शनि द्वादशस्थानमे होयतो शोककी बहुतलहरी प्राप्तहोती है · (यहऊर्मिमालावृत्त)॥४५॥ शुभकारकग्रह · शुभदशादिकाल और मनुष्य देखके यह पूर्वोक्त गोचरशुभाशुभफल देते है इस्को दृष्टान्त-मेघसमूह वसंतऋतूमे कुडव (धान्यमापनेकापात्र) इस्मेबहुतजल छोडता न हो · कारण– वसंतपर्जन्यकालनही और कुडव यहजलपात्र (विस्तृत) नही छोटापात्र है (यहमेघवितानवृत्त)॥४६॥ सूर्य और मंगल ग्रह लालपुष्प · सुगंधद्रव्य · रक्तचंदनादि · लालवर्ण चंदन · सुवर्ण · वृषभ · वकुलवृक्षकेपुष्प इनकरके भक्तीसे पूजाकरना · चंद्र · धेनु · श्वेतपुष्प · रौप्य · दधि · मधु · घृत · शर्करादि मधुरद्रव्य इनकरके पूजाकरना कामोद्दीपक गंधपुष्पादिकसे शुक्रकी पूजाकरना · कृष्णवर्ण गंधपुष्पादिकसे शनीकी पूजाकरना · मणि · रौप्य · तिलकेपुष्पसे बुधकी पूजाकरना · पीतवर्ण गंधपु

शमयेद्ग्रहानपशुभदृष्टिपमपि विबुधविप्रपूजया ॥ शांतिजपनियमदानदमैः सुजनाभिभाषणसमागमैस्तथा ॥४८॥ रविभौमौ पूर्वार्धे शशिसौरौ कथयतोऽन्त्यगौ राशेः ॥ सदसल्लक्षणमार्यागीत्युपगीत्योर्यथासंख्यं ॥४९॥ आदौ पादकसौम्यः पश्चादपि तादृशो भवति ॥ उपगीतेर्मात्राणां गणवत्तत्संप्रयोगो वा ॥५०॥ आर्याणामपि कुरुते विनाशमंतर्गुरुर्विषमसंस्थः ॥ गण इव षष्ठे दुष्टश्च सर्वलघुतां गतो नयति ॥५१॥ अशुभनिरीक्षितः शुभफलो बलिना बलवानशुभफलप्रदश्च शुभदृग्विषयोपगतः ॥ अशुभशुभावपि स्वफलयोर्व्रजतः समतामिदमपि गीतकं च खलु नर्कुटकं च यथा ॥५२॥ नीचैरिभैस्तेचारिदृष्टस्य सर्वं वृथा यत्परिकीर्तितं ॥ पुरतोंधस्येव भामिन्याः सविलासकटाक्षनिरीक्षणं ॥५३॥ ॥ ॥

---

ध्यादिकसे गुरूकी पूजा करना इसप्रकारसे सूर्यादिग्रहोंकी पूजा करनेवालापुरुष ऊंचेसे गिरे अथवा सर्पखेलनेरहने उस्मे प्रवेश करेगा तथापि ग्रह संतुष्ट भए होय उसको पीडा (दुःख) होगा नही (यह भुजंगविजृंभितवृत्त) ॥४७॥ देव और ब्राह्मणइनका पूजन शांति मंत्रजप जिताहार और ब्रह्मचर्यादि नियम दान इंद्रियनिग्रह साधुजनके साथ भाषण और समागम इत्यादिकसे पापग्रहके उत्पन्न भए दृष्टीको भी निवारण कारक (पापदृष्टीकी शांतिकर) (यह उद्गतवृत्त) ॥४८॥ सूर्य और मंगल यह राशीके पूर्वार्धमे चंद्र और शनि यह राशीके उत्तरार्द्धमे शुभाशुभफल देते हैं (इस्मे गीति और उपगीति आर्याके लक्षण कहते हैं) आर्याके पूर्वार्धके समान ही उत्तरार्द्ध होता है गीति और उत्तरार्धके समान ही पूर्वार्ध हो ० उपगीति ऐसे क्रमसे लक्षण जानना (यह गीतिवृत्त) ॥४९॥ बुध राशिप्रवेशकालमे (पूर्वार्ध) जैसे शुभाशुभफल देता है तैसे ही राशीके अंतमे (उत्तरार्ध) भी देता है उपगीतिछंदके मात्राकी जैसी समता होती है तैसे राशीके पूर्वपश्चार्धमे बुध समफल देता है (यह उपगीतिवृत्त) ॥५०॥ गणनामक देवविशेष उस्की पूजा न करनेसे वह साधुका भी जैसा नाश करता है तैसे गुरु (बृहस्पति और शुक्र) अशुभस्थानमे राशीके मध्यभागमे रहते साधुका भी नाश करता है वही गुरु षष्ठस्थानमे होय तो सर्वत्र गौरव (सत्कार) हीनपुरुष होता है आर्याछंदके गणके मध्यमे गुरु अक्षर होय तो वह आर्याका नाश होता है (यह आर्यावृत्त) ॥५१॥ शुभफल देनेवाला बलवान् ग्रह अशुभफल देनेवाले बलिष्ठ ग्रहसे दृष्ट अथवा अशुभ बलवान् ग्रह

सूर्यसुतोर्कफलसमश्चंद्रसुतश्छंदतः समनुयाति ॥ यथास्कंध
कमार्यगीतिर्वैतालीयं च मागधीगाथार्या ॥ ५४ ॥ सौरोर्करश्मियोगा
त्सविकारो लब्धवृद्धिरधिकतरं ॥ पित्तवदाचरति नृणां पथ्यकृतां
ननु तथार्याणां ॥ ५५ ॥ यादृशेन ग्रहेणेंदुर्युक्तस्तादृग्भवेत्सोपि ॥ मनो
वृत्तिसमायोगाद्विकार इव वल्कस्य ॥ ५६ ॥ पंचमं सर्वपादेषु सप्तमं
हि चतुर्थयोः ॥ यद्वत् श्लोकाक्षरं तद्वल्लघुतां याति दुःस्थितैः ॥ ५७ ॥
प्रकृत्यापि लघुर्यश्च वृत्तबाह्ये व्यवस्थितः ॥ स याति गुरुतां लोके यदा
स्युः सुस्थिता ग्रहाः ॥ ५८ ॥ प्रारब्धमसुस्थिते ग्रहे यत्कर्मात्यविरुद्
मैर्बुधैः ॥ विनिहंति तदेव कर्म तान्वैतालीयमिवापथाकृतं ॥ ५९ ॥

---

शुभफलदेनेवाले वलिष्टग्रहसे दृष्ट होयतो शुभकिंवा अशुभफलकी समताहो
तीहै कोई भी फलहोता नहीं यह नर्कुटकवृत्त प्राकृतमे औरसंस्कृतमे समान
ही होता है (यह नर्कुटकवृत्त) ॥ ५२ ॥ नीचस्थानमे शत्रुग्रहमे सप्तमस्थानमे
शत्रु दृष्टग्रहके फलव्यर्थ होते है अंधके आगे सुंदरस्त्रीका विलासयुक्त कटाक्ष
सेदेखना जैसा व्यर्थ होता है (यह विलासवृत्त) ॥ ५३ ॥ शनि सूर्यके समानही
शुभाशुभ है कहिये ३।६।१०।११ यह स्थानमे शुभ होता है बुध समीप रहनेवा
लेके ग्रहके अनुसार (ग्रहके गुणप्रमाण) शुभाशुभफल देता है जैसे संस्कृ
तमे आर्यागीति वृत्त वही प्राकृत (बालभाषा) मे स्कंधकवृत्त तैसेही वैताली
यवृत्त मागधीगाथा आर्यामे छंदसे अनुगमकरती है कहिये संस्कृतमे जो
वैतालीयवृत्त वही छंदसे प्राकृतमे मागधीगाथा आर्यामे अनुगम करती है
॥ ५४ ॥ शनि सूर्यकिरणके योगसे (अस्तंगतत्वसे) सविकार होते कोपकर
के पथ्यभोजन करनेवाले मनुष्यको पित्तके समान बहुत अशुभफल देता है
तैसे साधूको देता नही (यह पथ्या आर्यावृत्त) ॥ ५५ ॥ चंद्र शुभाशुभग्रहयोग
से शुभाशुभफल देता है जैसे मनोवृत्तीके योगसे मुखको विकार होता है (यह
वल्कवृत्त) ॥ ५६ ॥ श्लोकछंदमे सर्वचरणमे पंचम अक्षर और दुसरे और च
तुर्थपादमे सप्तम अक्षर जैसे लघुत्वको प्राप्त होता है तैसे अशुभस्थानमे ग्रहहो
यतो पुरुषको लघुत्व हो
ता है (यह श्लोकवृत्त) ॥ ५७ ॥ स्वभावसे लघु (असत्कुलोत्पन्न) और दुर्वाचार (दुः
शील) ऐसा भी पुरुष शुभस्थानमे ग्रह आवे तो लोकमे श्रेष्ठत्व प्राप्त होता है प्रकृतीसे
लघुवर्ण रहते चरणके अंतमे होय तो गुरु होता है ॥ ५८ ॥ पंडित अपनी वृद्धिहोनेके
कारण अशुभस्थानमे ग्रह रहते आरंभ किये कर्मही उसका नाश करता है जैसे

श्रीस्वित्वमवेक्ष्य योग्रहेभ्यः काले प्रक्रमणं करोति राजा ॥ अपुनापि स पौरुषेण वृत्तस्यौपच्छंदसिकस्य यातिपारं ॥ ६९ ॥ उपचयभवनोपयातस्य भानोर्दिने कारयेद्धेमताम्राश्वकाष्ठास्थिचर्मोर्णिकाद्रिद्रुमत्वङ्नखव्यालचौरायुधीयाटवीक्रूरराजोपसेवाभिषेकौषधक्षौमपण्यादिगोपालकांतारवैद्याश्मकूटावदानाभिविख्यानशूराहवश्लाघ्ययाज्याग्निकार्याणि सिध्यंति लग्नस्थिते वा रवौ ॥ शिशिरकिरणवासरे तस्य वाप्युद्गमे केंद्रसंस्थे यवाभूषणं शंखमुक्ताब्जरूप्यांबुयज्ञेक्षुभोज्यांगनाक्षीरसुस्निग्धवृक्षक्षुपानूपधान्यद्रवद्रव्यविप्राश्वशीतक्रियाश्रृंगिकृष्यादिसेनाधिपाक्रंदभूपालसौभाग्यनक्तंचरश्लैष्मिकद्रव्यमातंगपुष्पांबरारंभसिद्धिर्भवेत् ॥ क्षितितनयदिने प्रसिध्यंति धात्वाकरादीनि सर्वाणि कार्याणि चामीकराग्निप्रवालायुधक्रौर्यचौर्याभिघाताटवीदुर्गसेनाधिकारास्तथा रक्तपुष्पद्रुमारक्तमन्यच्च तिक्तं कटुद्रव्यकूटाहिपाशार्जितस्वाकुमाराभिषक्‌शाक्यभिक्षुक्षपावृत्तिकोशेयशाठ्यानि सिध्यंति दंभास्तथा

---

यथाशास्त्र नकिये वेताल पूजनादि कर्मनाश करताहै (यह वैतालीयवृत्त) ॥ ५९ ॥ जोराजा ग्रहोंका सुस्थितत्व (सुभत्व) देखके यात्राकालमे यात्रा करताहै वह अल्पही पराक्रमसे वैरीके वृत्तका (कार्यका) पार कहिये अंत पावताहै (यह औपच्छंदसिकवृत्त) ॥ ६० ॥ उपचय ३।६।१०।११ यह स्थानमे सूर्य रहते रविवारमे अथवा लग्नमे सूर्य रहते सुवर्ण·ताम्र·अश्व·काष्ठ·अस्थि·चर्म·कंबलादि ऊर्णावस्त्र·पर्वत·वृक्ष·त्वचा (छाल) नख·व्याल (सर्प·सिंह·वाघ·उन्मत्त हाथी·हिंस्रपशु·चित्रक) चोर शस्त्रसंबंधी·अरण्य·क्रूर·राजोपसेवा·अभिषेक·औषध·सौमवस्त्र·(छालका सणका वस्त्र) पण्यादि (बेजारसंबंधी) अहिर·कांतार (कठिनमार्ग) वैद्य·अश्मकूट·(पत्थर फोडना) अवदान (श्लाघ्य) प्रख्यानशूर·युद्ध स्तुत्य·याज्य (यज्ञियकर्म) अग्निकार्य·यह संबंधके कार्य करना तो सिद्ध होते हैं ॥ सोमवारमे और कर्कलग्नमे और चंद्र केंद्र १।४।७।१० रहते अलंकार·शंख·मोती·कमल·रौप्य·जल·यज्ञ·ऊख·भोजन·स्त्री·क्षीर·सजीववृक्ष·क्षुप·पानीके स्थल·देशधान्य·पतलपदार्थ ब्राह्मण·अश्व·शीतद्रव्यसेवन·बैल·जोतनाइत्यादि·सेनापति·आक्रंद (वीरोंका शब्द) राजा·सौभाग्यकरण·चोर·श्लैष्मिक द्रव्य (रसार पदार्थ) पुष्प·वस्त्र इनके विषय कार्यका आरंभ करे—नेउनकी सिद्धि होती है ॥ मंगलवारमे धातूके खाणसंबंधी कार्य·सुवर्ण·अग्नि·मूंगा·आयुध·क्रूरत्व·चौर्य·उपद्रव·अरण्य·पर्वतादिदुर्ग·

हरितमणिमहीसुगंधीनिवस्त्राणिसाधारणनाटकशास्त्रविज्ञान
काव्यानिसर्वाःकलायुक्तयोमंत्रधातुक्रियावादनैपुण्यपुण्यव्रत
योमदूतास्तथायुष्यमायानृतस्नानह्रस्वानिदीर्घाणिमध्यानिच्छं
दनश्चंडवृष्टिप्रयातानुकारीणिकार्याणिसिध्यंतिसौम्यस्यलग्नेह्नि
वा॥६१॥सुरगुरुदिवसेकनकरजततुरगाःकरिणोवृषभाभिषगौष
धयःद्विजपितृसुरकार्यपुरःस्थितघर्मनिवारणचामरभूषणभूप
तयः॥विबुधभवनधर्मसमाश्रयमंगलशास्त्रमनोज्ञबलप्रदसत्य
गिरःव्रतहवनधनानिचसिद्धिकराणितथारुचिराणिचवर्णकदंड
कवृत्त॥६२॥भृगुसुतदिवसेचचित्रवस्त्रद्रव्यवेश्याकामिनीवि
लासहासयौवनोपभोगरम्यभूमयः॥स्फटिकरजतमन्मथोप-
चारवाहनेक्षुशारदप्रकारगोवणिक्कृषीवलौषधांबुजानिच॥स
विततुतदिनेचकारयेन्महिष्यजोष्ट्रकृष्णलोहदासवृद्धनीचकर्म
पक्षिचोरपाशिकान्॥

---

सेनाधिकार·लालपुष्पकेवृक्ष·अम्ललारद्रव्य·निंबादिकटु·मरिचइत्यादितिक्त
तीता·दंभऔरसर्पकाटनेसेसंपादितद्रव्य·कुमार·वैद्य·शाक्यभिक्षु(जैनमती·)
रात्रीमेंपिकरना·पट्टवस्त्र·शठस्वभाव(परकार्यविमुखत्व·दंभ·यहसंबंधकेसर्व
कार्यसिद्धहोतेहैं॥बुधकेलग्नमेऔरवारमेहरेरत्न·भूमि·सुगंधितद्रव्य·वस्त्र·
साधारण·(उग्रसौम्य)नाटकशास्त्र·आध्यात्मिक(वेदांत)काव्य·सर्वकलायु
क्ति·मंत्रऔरधातुइनकीक्रिया·वाद·निपुणता·पुण्य·व्रतग्रहण·दूत·आयुष्य
वर्धक·छलव्यवहार·असत्य·स्नान·ह्रस्व·दीर्घ·मध्य·परचित्तग्रहण·अतिवृ
ष्टि·गमनकोअनुकारी(आगमनादि)कार्य·यहसर्व क रे तोसिद्धहोतेहैं·
(यहचंडवृष्टिप्रयातछंदकवृत्त·)॥६१॥गुरुवारमेसुवर्ण·रौप्य·अश्व·गज·बै
ल·वैद्य·औषधी·ब्राह्मण·पितर·देवइनकेकार्य·पुरस्थित(सिपाही)छत्रादिघर्म
वारण·चंवर·अलंकार·राजा·देवगृह·धर्माश्रय·शुभकार्य·शास्त्र·मनोज्ञ·बल
प्रद·सत्यवाणी·व्रत·होम·धन·यहऔररंगादिकसेपताकाकेलाठीप्रमाणसुंदर·
इनकीसिद्धहोतीहै·(यहवर्णकदंडकवृत्त·)॥६२॥शुक्रवारमे·चित्रवर्णवस्त्र·
द्रव्यप्रयोग(रंगोदृष्टिकर)वेश्यास्त्री·क्रीडा·हास्य·सुरतादि·यौवनोपभोगरम्य
भूमि(बाग०)स्फटिक·रूप्य·कामोपचार·वाहन·ऊख·शरदऋतुसंबंधी·गौ·वणि
ज·कृषी·औषध·कमल·यहसंबंधकेकार्यकरना॥शनिश्चरकेवारमे·[illegible]
[illegible]·ऊंट·कृष्ण·दास·वृद्ध·नीचकर्म·पक्षी·चोर·बहेलिया·[illegible]

स्युरतिनयविद्यविपुलेभां तु हस्त्वेस विप्रभयाज्याबिल्वान्यादानसोय पेत्समुद्रगेप्यपांकणं॥६३॥विपुलामपिबुध्वा छंदोविचितिं भवति कार्यमेतावत्॥श्रुतिसुखदवृत्तसंग्रहमिममाह वराहमिहिरोतः॥६४॥ ॥इति ग्रहगोचराध्यायः॥ ॥अथ नक्षत्रपुरुषव्रतं॥ पादौ मूलं जंघे च रोहिणी जानुनी तथाश्विन्यः॥ऊरू चाषाढाद्वयमथ गुह्यं फल्गुनी युग्मं॥१॥कटिरपि च कृत्तिका पार्श्वयोश्च यमला भवंति भद्रपदाः॥कुक्षिस्था रेवत्यो विज्ञेयमुरोनुराधा च॥२॥पृष्ठं विद्धि धनिष्ठा भुजौ विशाखा स्मृतौ करौ हस्तः॥अंगुल्यश्च पुनर्वसुराश्लेषा संज्ञिताश्च नखाः॥३॥ग्रीवा ज्येष्ठा श्रवणौ श्रवणः पुष्यो मुखं द्विजाः स्वातिः॥हसितं शतभिषग्घ्रनासिका मघा मृगशिरो नेत्रे॥४॥चित्रा ललाटसंस्था शिरो भरण्यः शिरोरुहाश्चार्द्रा॥नक्षत्रपुरुषकोयं कर्तव्यो रूपमिच्छद्भिः॥५॥चैत्रस्य बहुलपक्षे ह्यष्टम्यां मूलसंयुते चंद्रे॥उपवासः कर्तव्यो विष्णुं संपूज्य धिष्ण्यं च॥६॥दद्याद्व्रते समाप्ते घृतपूर्णभाजनं सुवर्णयुतं॥विप्राय कालविदुषे सरत्नवस्त्रं स्वशक्त्या वा॥ ॥७॥

---

तन गजसंबंधी विघ्नकारण यह करे नो सिद्ध होने दे अन्यकार्य सिद्ध होने नहीं समुद्रनीरमे जायके उस्का थोडाभी पानी जैसे उपयोगी नही तैसे इस्के बिना दुसरे कार्य सिद्ध होतेनही (यह समुद्रदंडकवृत्त)॥६३॥ बहुतछंदका बिस्तार जानके हमने यह कार्य किया सो यह कर्णको प्रिय ऐसा वृत्तसंग्रह वराहमिहिर कहते भए (यह विपुलार्यावृत्त)॥६४॥ ॥इति बृहत्संहितायां ग्रहगोचराध्यायो नाम चतुरुत्तरशततमोध्याय॥१०४॥ अथ नक्षत्रपुरुषव्रतं॥ नक्षत्र पुरुषके पाद मूलनक्षत्र पेंडुरीमे रोहिणी ठेउना अश्विनी जंघा पूर्वाषाढा और उत्तराषाढा गुह्य पूर्वाफा० और उत्तराफा०॥१॥ कमर कृत्तिका पार्श्वभाग पूर्वाभा० और उ०भा० कुक्षि रेवती छाती अनुराधा॥२॥ पृष्ठ धनिष्ठा भुज विशाखा हाथ हस्त अंगुली पुनर्वसु नख आश्लेषा॥३॥ कंठ गरदन ज्येष्ठा कान श्रवण मुख पुष्य दांत स्वाती हास्य शततारका नाक मघा नेत्र मृगशीर्ष॥४॥ ललाट चित्रा मस्तक भरणी केश आर्द्रा यह नक्षत्र पुरुषका व्रत सुंदररूप इच्छा वालेने करना॥५॥ चैत्रकृष्ण अष्टमीको मूलनक्षत्र चंद्रमा रहे तो उपवास करके विष्णुकी और नक्षत्रोंकी पूजा करना॥६॥ पूर्वोक्त व्रत समाप्त होनेपर ज्योतिषी ब्राह्मण इनको सुवर्णयुक्त घृतसे पूर्ण ऐसा पात्र और हीरा आदि रत्नयुक्त वस्त्र यह अपने शक्तिप्रमाणसे देना॥७॥ बहुत दूध घृत गुड इनके सहित अन्नादिके ब्राह्मणको पूजन करना और उनको वस्त्र चांदी यह सुंदररूप इच्छा

अन्नैः क्षीरघृतोत्कटैः सगुडैर्विद्वान् समभ्यर्चयेद्यानेपुनरेवम्
स्वरजनं लावण्यमिच्छन्नरः ॥ पादस्रोतभूतिकपादुपवसन्नंगर्क्ष
नामस्वपिकुर्यात्केशवपूजनं स्वविधिना धिष्ण्यस्य पूजां तथा ॥ ८ ॥ प्र
लंबबाहुः पृथुपीनवक्षाः क्षपाकरास्यः सितचारुदंतः ॥ गजेंद्रगामी
कमलायताक्षः स्त्रीचित्तहारी स्मरतुल्यमूर्तिः ॥ ९ ॥ शारदमलपू
र्णचंद्रद्युतिसदृशमुखी सरोजदलनेत्रा ॥ रुचिरदशना सुकर्णा भ्र
मरोदरसन्निभैः केशैः ॥ १० ॥ पुंस्कोकिलसमवाणी ताम्रोष्ठी पद्मपत्र
करचरणा ॥ स्तनभारानतमध्या प्रदक्षिणावर्तयानाभ्या ॥ ११ ॥ कद
लीकांडनिभोरूः सुश्रोणी वरकुकुंदरा सुभगा ॥ सुश्लिष्टांगुलिपादा
भवति प्रमदा मनुष्यस्य ॥ १२ ॥ यावन्नक्षत्रमाला विचरति गगने भू
षयंतीह भासा तावन्नक्षत्रभूतो विचरति सह तैर्ब्रह्मणो न्हो वशेषं ॥

---

वालेपुरुषने देना · मूलनक्षत्रसे · सर्व अंगनक्षत्रमे उपवास करके अपनेको योग्य
ऐसे विधीसे नारायणको पूजे — तैसेही नक्षत्र देवताका भी पूजन करना · (ऐसे व्रत
करनेवाला पुरुष अन्यजन्ममे कैसा होना है वह आगेके श्लोकमे कहते हैं ·) ॥ ८ ॥ लं
बाभुज (आजानुबाहू) बडा · पुष्टवक्षस्थल चंद्रके समान मुख · श्वेत और सुंद
रदंत · गजके समान गमन · कमलके समान विस्तीर्ण नेत्र · स्त्रियोंका चित्त हरण
करनेवाला · मदनके समान मूर्ती (देह) ऐसा पूर्वोक्त नक्षत्रपुरुषव्रत करनेवाला
पुरुष अन्यजन्ममे होता है ॥ ९ ॥ शरदऋतूमेके स्वच्छ पूर्णचंद्रके तेज समान मु
खतेज · कमलपत्रके समान नेत्र · सुंदर दंत · उत्तम कान · भ्रमरके उदर समान काले
केश · ॥ १० ॥ कोइलके समान स्वर · लाल ओठ · कमलपत्रके समान हाथ और पांव ·
स्तनभारसे थोडा नम्र मध्यभाग · प्रदक्षिण भौ — रे से युक्त नाभि · ॥ ११ ॥ केलाके स्तं
भ समान जंघा · उत्तम कमर · उत्तम चूतर · सुंदर योनी · मिली भई अंगुली ऐसे पांव
ऐसी नक्षत्रव्रत करनेवाले पुरुषकी स्त्री होती है · (मनुष्योवा) ऐसा पाठ है · तब स्त्री
यह व्रत करे तो ऐसा रूप आगेके जन्ममे होता है · और श्लो० ९ उस्मे कथित प्रमाण पु
रुषके रूप होता है ऐसा अर्थ · ॥ १२ ॥ नक्षत्रपुरुष व्रत करनेवाला पुरुष किंवा स्त्री
जितने दिन नक्षत्र आकाशमे है और अपने तेजसे प्रकाश करते है उतने दिन
नक्षत्ररूप होयके नक्षत्रके बराबर कल्पन किरना है · नंतर कल्पके आरं
भमे सार्वभौम बुद्धिमान् राजा होता है · दुसरे जन्ममे संसारमे पुनः अथवा
राजा किंवा धनाढ्य ब्राह्मण होता है · ॥ १३ ॥ मार्गशीर्षादि मासके केशवादि
क्रमसे स्वामी होते है · मार्गशीर्षका केशव · पौषका नारायण · माघका माधव

कल्पान्तरेषु च चक्रवर्ती भवति हि मतिमांस्तत्र यास्त्वापि भूयः संसारे जायमानो भवति नरपति ब्राह्मणो वा धनाढ्यः ॥१३॥ मृगशीर्षाद्याः केशवनारायणमाधवाः सगोविन्दाः ॥ विष्णुमधुसूदनाख्यौ त्रिविक्रमो वामनश्चैव ॥१४॥ श्रीधरनामा तस्मात्सहृषीकेशश्च पद्मनाभश्च ॥ दामोदर इत्येते मासाः प्रोक्ता यथासंख्यं ॥१५॥ मासनामसमुपोषितो नरो द्वादशीषु विधिवत्प्रकीर्तयन् ॥ केशवं समभिपूज्य तत्पदं याति यत्र न हि जन्मजं भयं ॥१६॥ इति नक्षत्रव्रतं ॥ ॥अथ उपसंहाराध्यायः ॥ ज्योतिःशास्त्रसमुद्रं प्रमथ्य मतिमंदराद्रिणाथ मया ॥ लोकस्यालोककरः शास्त्रशशांकः समुत्क्षिप्तः ॥१॥ पूर्वाचार्यग्रंथानोत्सृष्टाः कुर्वता मया शास्त्रं ॥ तानवलोक्येदं च प्रयतध्वं कामतः सुजनाः ॥२॥ अथवा भृशमपि सुजनः प्रथयति दोषार्णवाद्गुणं दृष्ट्वा ॥ नीचस्तद्विपरीतः प्रकृतिरियं साध्वसाधूनां ॥३॥ दुर्जनहुताशतप्तं काव्यसुवर्णं विशुद्धिमायाति ॥ श्रावयितव्यं तस्माद्दुष्टजनस्य प्रयत्नेन ॥४॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

---

फाल्गुनका गोविंद · चैत्रका विष्णु · वैशाखका मधुसूदन ज्येष्ठका त्रिविक्रम · आषाढका वामन श्रावणका श्रीधर · भाद्रपदका हृषीकेश · आश्विनका पद्मनाभ · कार्तिकका दामोदर · ऐसे होते हैं · ॥१४॥१५॥ पुरुष उपवास करके मासस्वामीके वह महिनेके द्वादशीको यथाशास्त्र कीर्तन करके मासनामक देवताका पूजन करे तो जहां पुनर्जन्मके भय नहीं ऐसे ईश्वरपदमे जाता है (मोक्षप्राप्त होता है ·) ॥१६॥ इति बृहत्संहितायां नक्षत्रपुरुषव्रतं नाम पंचोनरशततमोध्यायः ॥१०५॥ अथ उपसंहाराध्यायः ॥ हम वराहमिहिरने ज्योतिषशास्त्ररूप समुद्रको बुद्धिरूप मंदरपर्वतसे मंथन करके लोकको प्रकाश करनेवाला ऐसा यह शास्त्ररूप चन्द्र निकाला · ॥१॥ यह शास्त्र करनेवाले जो हम इसने प्राचीन आचार्योंके ग्रंथ छोडे नहीं · उनको देखकेही यह शास्त्र किया · इसवास्ते हे सुजन हो · इच्छा प्रमाण जो उत्तम वह सेवन करो ॥२॥ अथवा सुजन दोषसमुद्रसे अल्प भी गुण देखके वह प्रसिद्ध करते हैं · नीच उस्के विपरीत कहिये गुणसमुद्रसे अल्प भी दोष देखके वह प्रसिद्ध करता है · ऐसे यह साधु और असाधु इनकी प्रकृति (स्वभाव) ही है · ॥३॥ दुर्जन यही अग्नि इस्से तप्त किया ऐसा काव्यरूप सुवर्ण शुद्ध होता है इसवास्ते दुष्टजनको प्रयत्नसे श्रवण करावना · ॥४॥ अब सर्वत्र प्रचलित रहते (प्रतीत होते होते) पद कान्यमें होता है · (अशुद्ध होय) वह हरेक सीमें अ म मा

ग्रंथस्य यत्प्रचरतोऽस्य विनाशमेति लेख्याद्बहुश्रुतमुखाधिगमः क्रमेण॥ यद्वा मया कुकृतमल्पमिहाकृतं वा कार्यं तदत्र विदुषा परिहृत्य रागं ॥५॥ दिनकरमुनिगुरुचरणप्रणिपातकृतप्रसादमतिनेदं ॥शास्त्रमुपसंगृहीतं नमोऽस्तु पूर्वप्रणेतृभ्यः॥६॥ इतिउपसंहाराध्यायः ॥ अथग्रंथानुक्रमणिका॥ शास्त्रोपनयः पूर्वं सांवत्सरसूत्रमर्कचारश्च॥ शशिराहुभौमबुधगुरुसितमंदशिखिग्रहाणां च ॥१॥ चारश्चागस्त्यमुनेः सप्तर्षीणां च कूर्मयोगश्च॥ नक्षत्राणां व्यूहो ग्रहभक्तिर्ग्रहविमर्दश्च ॥२॥ ग्रहशशियोगः सम्यग्ग्रहवर्षफलं ग्रहाणां च ॥ शृंगाटसंस्थितानां मेघानां गर्भधारणं चैव ॥३॥ धारणवर्षणरोहिणिस्वात्याषाढभाद्रपदयोगाः॥ क्षणवृष्टिः कुसुमलताः संध्याचिन्हं दिशां दाहः॥४॥ भूकंपोल्कापरिवेषलक्षणं शक्रचापखपुरं च॥ प्रतिसूर्यो निर्घातः सस्यद्रव्यार्घकांडं च॥५॥ इंद्रध्वजनीराजनखंजनकोत्पातबर्हिचित्रं च॥ पुष्याभिषेकपट्टप्रमाणमसिलक्षणं वास्तु॥६॥ उदगार्गलमारामिकममरालयलक्षणं कुलिशालेपः॥ प्रतिमावनप्रवेशः सुरभवनानां प्रतिष्ठा च॥७॥ ॥

---

बहुश्रुतपंडितोंके मुखसे पूर्वापरसंगतीसे अपशब्द होतेहैं· वह अथवा हम· अल्पभी अशुद्ध कियाहोय किंवा कमती कियाहो यसो विद्वानने द्वेषभाव छोडके पूर्णकरना·॥५॥ सूर्यादिग्रह· वसिष्ठादिमुनि· गुरु· (आदित्यदासाख्य हमारा पिता) इनके चरणमें नमस्कारसे प्राप्त· जो प्रसाद उससे भई है बुद्धि जिस्को· ऐसे जो हम वराहमिहिर इन्ने यह ज्योतिषशास्त्र संक्षेपसे किया· इसवास्ते पूर्वाचार्यको हमारा नमस्कार रहे·॥६॥ इतिबृहत्संहितायामुपसंहारोनाम षडुत्तरशततमोध्यायः॥१०६॥ अथग्रंथानुक्रमणिका॥ प्रथमशास्त्रोपनय· सांवत्सरसूत्र· अर्कचार· चंद्रचा· राहुचा० भौमचार· बुधचार· गुरुचार· शुक्रचार· शनिचार· केतुचार·॥१॥ अगस्त्यचार· सप्तर्षिचार· कूर्मविभाग· नक्षत्रव्यूह· ग्रहभक्ति· ग्रहयुद्ध·॥२॥ शशिग्रहसमागम· ग्रहवर्षफल· ग्रहशृंगाटक· मेघकागर्भधारण·॥३॥ धारणा· प्रवर्षण· रोहिणीयोग· स्वातियोग· आषाढीयोग· भाद्रपदयोग· सद्योवृष्टि· कुसुमलता संध्यालक्षण· दिग्दाह·॥४॥ भूमिकंप· उल्कालक्षण· परिवेषल० इंद्रायुध· गंधर्वनगर· प्रतिसूर्य· निर्घातलक्षण· सस्यजात· द्रव्यनिश्चय· अर्घकांड·॥५॥ इंद्रध्वज· नीराजन· खंजन· उत्पातल० मयूरचित्रक· पुष्यस्नान· पट्टप्रमाण· खड्गल० वास्तुविद्या॥६॥ उदगार्गल· आरामिक (वृक्षायुर्वेद) प्रासादल० वज्रलेप· प्रतिमाल० वनप्रवेश· देवालयप्रतिष्ठा॥७॥

॥८॥ ...न्दवस्त्रविच्छेदः॥ चामरदंडपरीक्षा स्त्रीस्तोत्रं चापि सु
...करणं च॥ कान्दर्पिकानुलेपनपूं स्त्रीकाध्याय शयनविधिः॥९॥
रत्नपरीक्षा मौक्तिकलक्षणमथ पद्मरागमरकतयोः॥ दीपस्य ल
क्षणं दंतधावनं शाकुनं मिश्रं॥१०॥ अंतरचक्रं विरुतं श्वचेष्टितं वि
रुतमथ शिवायाश्च॥ चरितं मृगाश्वकरिणां वायसविद्योत्तरं च त
तः॥११॥ पाको नक्षत्रगुणास्तिथिकरणगुणाः सधिष्ण्यजन्मगु
णाः॥ गोचरस्तथा ग्रहाणां कथितो नक्षत्रपुरुषश्च॥१२॥ शतमिद
मध्यायानामनुपरिपाटिक्रमादनुक्रांतं॥ अत्र श्लोकसहस्राण्य
ब्दान्यूनचत्वारि॥१३॥ ॥इति ग्रंथानुक्रमणिका समाप्ता॥ ॥ ॥
फाल्गुनस्य द्वितीयायामसितायां गुरोर्दिने॥ वस्वष्ट ८८८ मिते
शाके कृतेयं विवृतिर्मया॥१॥ वराहमिहिराचार्यरचिते संहितार्ण
वे॥ अर्थिनामुत्पलश्चक्रे योग्यपेविवृतिप्लवं॥२॥ ॥ ॥ ॥

---

गोलक्षण· श्वल॰ कुक्कुटल॰ कूर्मल॰ छागल॰ पुरुषल॰ पंचमहापुरुषल॰ स्त्रील॰
वस्त्रच्छेदल॰ ॥८॥ चामरल॰ दंडपरीक्षा (छत्रल॰) स्त्रीप्रशंसा· सौभाग्यकरण·
कांदर्पिक· गंधयुक्ति· पुंस्त्रीसमायोग· शय्यासनलक्षण ॥९॥ वस्त्रपरीक्षा· मौ
क्तिकपरीक्षा॰ पद्मरागप॰ मरकतप॰ दीपल॰ दंतकाष्ठल॰ शाकुन· मिश्र· (मिश्र
काध्याय)॥१०॥ अंतरचक्र· शाकुनरुत· श्वचक्र· शिवारुत· मृगचेष्टित· अश्व
चेष्टित· हस्तीगित· वायसरुत· शाकुनोत्तराध्याय ११॥ पाक· नक्षत्रगुण· ति
थिकरणगुण· सधिष्ण्यजन्मगुण (नक्षत्रजातक) ग्रहगोचर· नक्षत्रपुरुषव्रत
॥१२॥ यह १०० अध्याय पाठक्रमसे किया· इसके किंचित्कमती ४ हजार (श्लो
कछंदसे) श्लोक बांधे है· ॥१३॥ ॥इति ग्रंथानुक्रमणी॥ ॥इति वराहमिहिरकृ
ता बृहत्संहिता समाप्ता॥ ॥ २७ वातचक्र ३८ रजोलक्षण· ५१ अंगविद्या·
५२ पिटकलक्षण· यह चार अध्याय वराहमिहिरकृत नहीं· व्यवहारमे वह
विषयका उपयोग है· इसवास्ते टीकाकारने लिखे है·